महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
वडोदरा-संचालित

प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला

सामान्य संपादक
डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा,
एम. ए., पीएच. डी.
अध्यक्ष, गुजराती विभाग,
म. स. विश्वविद्यालय, वडोदरा

ग्रन्थ ४

वर्णक-समुच्चय

भाग १—मूल पाठ

वर्णक-समुच्चय

सांस्कृतिक अने साहित्यिक इतिहास माटे महत्त्वना
पद्यानुकारी गद्य-वर्णकोनो समुच्चय

भाग १—मूल पाठ

संपादक

डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, वडोदरा

प्रकाशक

डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा,

अध्यक्ष, गुजराती विभाग,

म. स. विश्वविद्यालय, वडोदरा

आवृत्ति पहेली, वि. सं. २०१२

प्रत ५०० ई. स. १९५६

मूल्य साडासात रूपिया

प्राप्तिस्थान

प्राच्य विद्यामन्दिर,

वडोदरा

मुद्रक

रमणलाल जी. पटेल, व्यवस्थापक,

म. स. युनिवर्सिटी ऑफ बरोडा प्रेस

(साधना प्रेस), रावपुरा, वडोदरा

निवेदन

जूना गुजराती गद्यसाहित्यना वर्णनप्रधान रसप्रद प्रकार—वर्णकना केटलाक नमूनाओनुं संपादन 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना आ चोथा ग्रन्थ द्वारा रजू थाय छे. आ पुस्तकमांनी साहित्यसामग्री अने निरूपणरीति साथे सरखावी शकाय एवी प्रकट कृतिओमां सं. १४७८मां रचायेली माणिक्यसुन्दरसूरिकृत गद्यकथा 'पृथ्वीचन्द्रचरित्र' (बे वार प्रकाशित; प्रथम वार संपादक स्व. चिमनलाल दलाल, 'प्राचीन गुर्जर काव्यसंग्रह'मां, गायकवाड्झ ओरियेन्टल सिरीझ ग्रन्थांक १३, वडोदरा, ई. स. १९२०; ए पछी संपादक आचार्य जिनविजयजी, 'प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ'मां, गुजरात विद्यापीठ, अमदावाद, सं. १९८६) अने अन्य भारतीय आर्यभाषाओनी प्रकाशित कृतिओमां मात्र जूनी मैथिली भाषामां अनुमाने १४मा सैकामां रचायेल ज्योतिरीश्वर कविशेखरकृत 'वर्ण-रत्नाकर' (संपादको–डॉ. सुनीतिकुमार चेटरजी अने पं. बबुआ मिश्र, रॉयल एशियाटिक सोसायटी ऑफ बेंगाल, कलकत्ता, ई. स. १९४०) छे.

'वर्णक-समुच्चय'ना आ पहेला भागमां संपादित रचनाओनो मात्र मूल पाठ, प्रतिपरिचय सहित, आपवामां आव्यो छे. सांस्कृतिक इतिहास तेम ज साहित्यनी दृष्टिए आ वर्णकोनुं अध्ययन तथा शब्दसूचिओ आदि हवे पछी जुदा पुस्तकरूपे प्रकट करवामां आवशे.

आ पुस्तक माटे तेम ज प्रस्तुत ग्रन्थमाला माटे हस्तप्रतो तथा बीजी आवश्यक सहाय पू. मुनिश्री पुण्यविजयजी तथा पू. पं. रमणिकविजयजीए आपी छे ए माटे अमे तेमना ऋणी छीए. वडोदरा प्राच्य विद्यामन्दिरना नियामक प्रो. गोविन्दलाल भट्टे तथा वडोदराना श्रीआत्मारामजी ज्ञानमन्दिरना व्यवस्थापकोए आ कार्य माटे अमने करी आपेली अनुकूळतानी पण सहर्ष नोंध लईए छीए.

गुजरातना तेम ज गुजरात बहारना आरूढ विद्वानोए आ प्रकाशनोमां सर्व भारतीय आर्यभाषाओना समन्वित अभ्यासनी दृष्टिए रस लईने आ संशोधनप्रवृत्तिने प्रोत्साहन आप्युं छे एमना पण अमे आभारी छीए.

'अध्यापकनिवास,'
वडोदरा.
मकर संक्रान्ति, सं. २०१२

भोगीलाल जयचंदभाई सांडेसरा
सामान्य संपादक

संपादकनां अन्य पुस्तको

संघविजयकृत सिंहासनबत्रीसी (१९३३)
माधवकृत रूपसुन्दर कथा (१९३४)
वीरसिंहकृत उषाहरण (१९३८)
वाघेलाओनुं गुजरात (१९३९)
मतिसारकृत कर्पूरमंजरी (१९४१)
प्राचीन गुजराती साहित्यमां वृत्तरचना (१९४१)
इतिहासनी केडी—लेखसंग्रह (१९४५)
संघदासगणिकृत वसुदेव-हिंडी—अनुवाद (१९४६)
वस्तुपाल का विद्यामण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९४७)
वस्तुपालनुं विद्यामंडळ अने बीजा लेखो (१९४८)
सत्तरमा शतकनां प्राचीन गुर्जर काव्य (१९४८)
ज्येष्ठीमल्ल ज्ञाति अने मल्लपुराण (१९४८)
पंचतंत्र (१९४९)
जगन्नाथपुरी अने ओरिसाना पुरातन अवशेषो (१९५१)
हेमचन्द्राचार्य का शिष्यमण्डल—हिन्दी अनुवाद (१९५१)
जैन आगमसाहित्यमां गुजरात (१९५२)
उत्तराध्ययन सूत्र, अध्ययन १-१८ (१९५२)
भारतीय आर्यभाषा अने हिन्दी (१९५२)
नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित षष्टिशतक प्रकरण, त्रण बालावबोध सहित (१९५३)
Literary Circle of Mahāmātya Vastupāla and Its Contribution to Sanskrit Literature (1953)
महीराजकृत नल-दवदंती रास (१९५४)
शब्द अने अर्थ—ऐतिहासिक शब्दार्थशास्त्र विषे पांच व्याख्यानो (१९५४)
प्राचीन फागु-संग्रह (१९५५)
नन्दोपाख्यानम् (छपाय छे)
सोमेश्वरकृत उल्लाघराघव नाटक (हवे पछी)

अनुक्रम

	निवेदन	
	प्रतिपरिचय	१-१२
[१]	विविध वर्णक	३-१०४
[२]	सभाशृंगार	१०५-१५६
[३]	वर्ण्यवस्तुवर्णनपद्धति	१५७-१६६
[४]	प्रकीर्ण वर्णक	१६७-१७०
[५]	जिमणवार-परिधान विधि	१७१-१८२
[६]	भोजनविच्छित्ति	१८३-१८८
[७]	वीरभोजन वर्णक	१८९-१९२
[८]	भोजनभक्ति	१९३-१९४
[९]	'अहो श्यालक बोलि' वर्णक	१९५-२०१
[१०]	गुजराती सुलतानोनुं प्रशस्तिकाव्य अने अमदावादनुं वर्णन	२०२-२०५
[११]	हस्तिवर्णन	२०६

परिशिष्ट

परिशिष्ट १—प्रयागदासकृत कपडाकुतूहल २०७-२१२

परिशिष्ट २—क्रयाणक-वस्त्र-आभरण नामावलि २१३-२१८

शुद्धिपत्र २१९-२२०

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रथम प्रकाशन विषे केटलाक अभिप्रायो

मुखपृष्ठ—'विविध वर्णक' (अनुक्रमांक १)नी हस्तप्रतना प्रथम अने अंतिम पृष्ठना फोटा

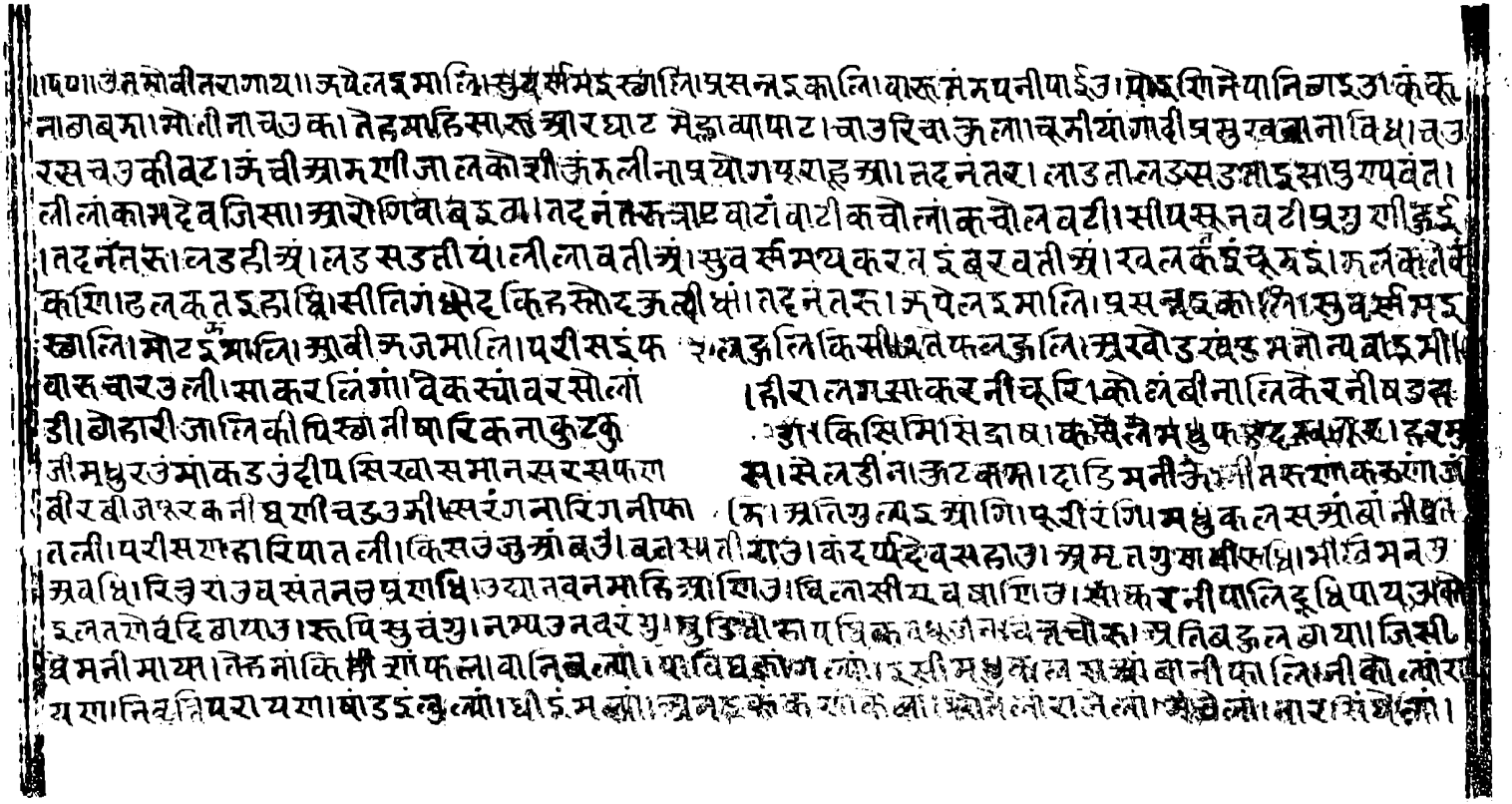

'विविध वर्णक' (अनुक्रमांक १)नी हस्तप्रतनुं प्रथम पत्र

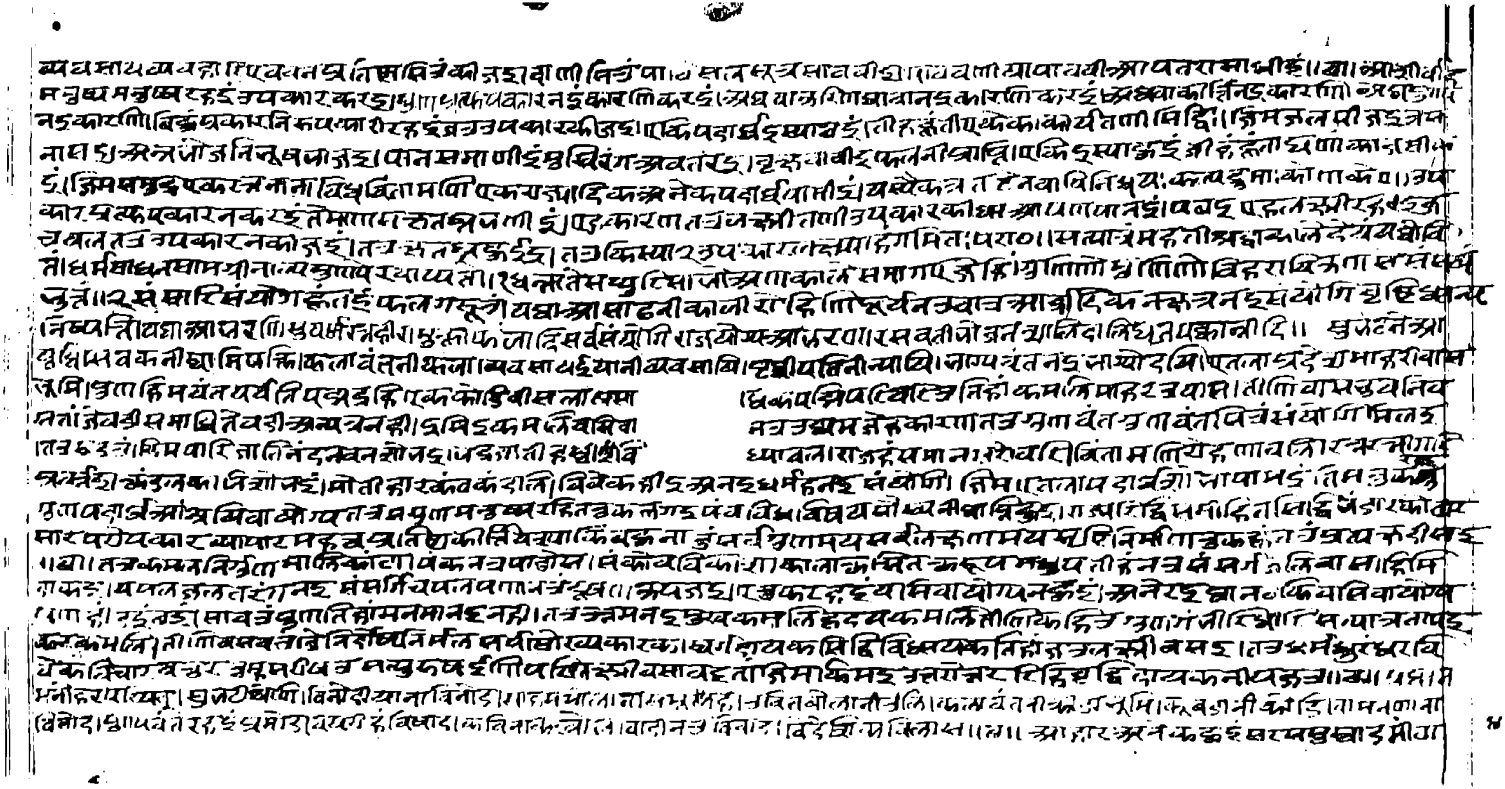

'विविध वर्णक' (अनुक्रमांक १)नी हस्तप्रतनुं अंतिम पत्र

प्रतिपरिचय

जूना गुजराती साहित्यमां गद्यना जे विविध प्रकारो मळे छे ('षष्टिशतक प्रकरण'—त्रण बालावबोध सहित, प्रस्तावना, पृ. ४-५) तेमां 'वर्णक' एक विशिष्ट प्रकार छे. 'वर्णक' एटले कोई पण विषयना वर्णननी परंपराथी लगभग निश्चित थयेली एक धाटी. अक्षरना रूपना मात्राना अने लयना बंधनथी मुक्त छतां पद्यमां लेवाती बधी छूट भोगवता प्रासयुक्त गद्य—'बोली'मां घणुंखरुं वर्णकोनी रचना थयेली होय छे. परन्तु एमां वच्चे वच्चे संस्कृत वर्णको अथवा जेने एकंदरे संस्कृत गणवो जोईए एवो मिश्रभाषामय भाग पण आवे छे. आ संस्कृत अंश व्याकरणमान्य प्रशिष्ट संस्कृतमां नहि, पण प्राकृत अने लोकभाषाना प्रयोगोथी तरबोळ थयेली संस्कृत, जेने साधारण रीते 'जैन संस्कृत' तरीके ओळखवामां आवे छे, पण जर्मन विद्वान डॉ. हर्टले जेने 'लोकभाषामय संस्कृत' (Vernacular Sanskrit) एवुं अर्थवाहक नाम आप्युं हतुं एवी संस्कृतमां रचायेलो छे ए ध्यानमां राखवानुं छे. कथाकारो अने प्रवचनकारो श्रोताओना मनोरंजन अने उद्‌बोधन अर्थे आवा वर्णकोनो उपयोग करता हशे. जुदा जुदा वर्णकोमां जे समान अथवा समान जेवो अंश मळे छे ते उपरथी चोक्कस जणाय छे के ए वर्णको परंपराथी ऊतरी आव्या छे. प्राचीन भारतीय साहित्यप्रणालिमां–संस्कृत, पालि तेम ज प्राकृतमां–वर्णकनी परिपाटीनां मूळ शोधी शकाय एम छे. वस्त्रालंकार अने भोजनादिना तथा शस्त्रास्त्रोना विगतवार वर्णकोने कारणे मध्यकालीन गुजरातना सांस्कृतिक अभ्यास माटे पण आ रचनाओ घणी महत्त्वनी छे. प्रस्तुत 'वर्णक-समुच्चय'मां जुदा जुदा हस्तलिखित

ग्रंथसंग्रहोमांथी पसंद करीने केटलाक वर्णको आप्या छे. साहित्यिक तेम ज सांस्कृतिक दृष्टिए एमनुं अध्ययन तथा ए साथे संबंध धरावती शब्दसूचिओ स्वतन्त्र ग्रन्थरूपे बहार पाडवानो ख्याल छे. आ 'वर्णक-समुच्चय'ना संपादनमां उपयोगमां लेवायेली हस्तप्रतोनो परिचय आ संक्षिप्त प्रास्ताविकमां आप्यो छे.

[१] 'विविध वर्णक'

आ हस्तप्रतनां ४० पत्र मारा संग्रहमां छे. पानांनुं माप १०.३"×४" छे. ४०मा पत्रथी प्रत अधूरी रहेती होई अंतमां एने शुं नाम आपवामां आव्युं हशे ए जाणी शकातुं नथी. आरंभमां पण कृतिनुं नाम नथी. एमांना विषयो उपरथी ए प्रतिने में अहीं 'विविध वर्णक' एवुं नाम आप्युं छे. एक वर्णकने बीजा वर्णक साथे सातत्यनो संबंध नथी, एटले प्रति अपूर्ण होवा छतां वस्तु-दृष्टिए कशुं अपूर्ण रहेतुं नथी. प्रतिनो अंतभाग नथी, एटले लेखनसंवत मळतो नथी, पण लिपि उपरथी ते विक्रमना सोळमा शतकमां लखायेली जणाय छे. पत्र १-२३ उपर १६, १७ के १८ पंक्तिओ लखेली छे, ज्यारे पत्र २४-४० उपर कोई वार १८ पंक्ति के कोई वार १९ थी मांडी २४ पंक्तिओ लखेली छे.

आ पोथीनां १ थी २३ सुधीनां पानां एक हस्ताक्षरमां छे, ज्यारे ए पछीनां पानां बीजा हस्ताक्षरोमां छे. लिपि जैन पद्धतिनी देव-नागरी छे. १ थी २३ पान सुधीना अक्षरो सुवाच्य छे, ज्यारे पछीनां पानांनुं लखाण एटलुं सुवाच्य नथी; त्यां २४ थी ४० पानांमां 'व' अने 'च' नो, 'स' अने 'म' नो, 'ब' अने 'छ' नो तफावत स्पष्ट रीते जणातो नथी; 'त' अने 'न' घणी वार एक जेवा लखेला छे. जूनी गुजरातीना गद्य-वर्णकोमां वच्चे वच्चे उपर सूचव्या छे तेवा लोकभाषामय संस्कृतना खंडको आवे छे, केटलाक वर्णकोमां एकना एक फकरा नजीवा फेरफार साथे फरी वार

पण आवे छे. भोजननी वानगीओ, आभूषणो अने हथियारोना वर्णको अने बीजी महत्त्वनी सांस्कृतिक सामग्री आमां छे. वस्तुपाल, कुमारपाल, आभड अने कपर्दी जेवां ऐतिहासिक पात्रो विषेना वर्णको पण आ कृतिमां छे. जुदा जुदा अनेक वर्णकोने अंते विविध प्रकारे धर्मोपदेश अने धर्मोपदेशनुं सूचन आवे छे. आ संग्रहमांनी अन्य कृतिओमां पण आ लक्षण सामान्यपणे जोवामां आवे छे.

[२] 'सभाशृंगार'

वडोदरा युनिवर्सिटीना प्राच्य विद्यामन्दिरना हस्तलिखित पुस्तक-संग्रहनी नं. ६०७२नी आ पोथी छे. एनां पानांनुं माप १०·२" × ४·२" छे. दरेक पत्र उपर नियमित रीते १५ पंक्तिओ लखेली छे. पोथीना पत्रांक १ थी २२ छे, पण तेमां बीजुं पान नथी. वच्चे १९ पत्रांक बे पत्र उपर लखेलो छे, ए भूल छे. खरेखर तो, १९ पछी २०, २१, २२ अने २३ ए प्रमाणे पत्रांक होवा जोईए; एटले मुद्रण माटेनी नकलमां ए प्रमाणे पत्रांक नोंध्या छे. आखी प्रत एक ज हाथे जैन देवनागरी लिपिमां लखाई छे. अक्षरो सारा होवा छतां प्रति, 'विविध वर्णक'नी तुलनाए, अशुद्ध छे ए बतावे छे के जे प्रतीक उपरथी एनी नकल थई हशे ते अशुद्ध हशे. कर्ता के संग्रहकारनुं नाम एमां नथी. अंतमांनी पुष्पिका अनुसार, एनी नकल सं. १६७५मां थयेली छे.

आ प्रकारना वर्णकसंग्रहोने 'सभाशृंगार' नाम आपवामां आव्युं छे ए सूचक छे. वर्णननी आ सभारंजनी शैली छे अने आ प्रकारना वर्णकोनुं सभा समक्ष पठन ए विदग्धतानुं चिह्न गणातुं एवुं अनुमान ते उपरथी थई शके.

[३] 'वर्ण्यवस्तुवर्णनपद्धति'

वडोदराना श्रीआत्मारामजी जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्तिविजयजी महाराजना शास्त्रसंग्रहना गुजराती विभागमांना

क्रमांक २६८८नी आ पोथी छे. पोथीनुं माप १०·२" × ४·४" छे. पोथीनां कुल त्रण पत्र छे; प्रथम पाननी बन्ने बाजुए १८ पंक्ति लखेली छे; ए सिवायनां दरेक पान उपर १७ पंक्तिओ छे. सुन्दर देवनागरी लिपिमां सुवाच्य रीते प्रत लखाई छे. एमां कोई स्थळे कृतिनी रचनासाल, रचयितानुं नाम के हस्तप्रतनी नकल कर्यानी साल आपी नथी, पण लिपि उपरथी निदान विक्रमना सत्तरमा शतकना पूर्वार्धमां ते लखायेली जणाय छे. छेल्ले के प्रारंभमां कृतिनुं नाम पण आपेल नथी. एना विषयने अनुलक्षीने प्रस्तुत ज्ञानमन्दिरनी सूचिमां 'वर्ण्यवस्तुवर्णनपद्धति' एवुं नाम आपवामां आव्युं छे, जे अहीं स्वीकार्युं छे.

आमांना केटलाक वर्णकोनुं 'विविध वर्णक' तथा 'सभाशृंगार' साथे गणनापात्र साम्य छे (उदाहरण तरीके रावणनी समृद्धिनो वर्णक, दुष्ट स्त्रीनुं वर्णन, आस्थानसभा, कलिकाल अने गढनो वर्णक, लीला तो महेश्वरनी० ए पंक्तिथी शरू थतो वर्णक, इत्यादि).

[४] 'प्रकीर्ण वर्णक'

मारी पासेना एक छूटा हस्तलिखित पत्रमांथी आ प्रकीर्ण वर्णको लेवामां आव्या छे. पत्रनुं माप १०·५" × ४·५" छे. कुल नव वर्णको अने थोडुंक प्रकीर्ण लखाण एमां छे. सुवाच्य देवनागरीमां लखायेलुं आ पानुं लिपि उपरथी विक्रमना सोळमा सैकामां लखायेलुं जणाय छे.

[५] 'जिमणवार-परिधान विधि'

'जिमणवार-परिधान विधि'नी बे हस्तप्रतो पू. मुनिश्री पुण्यविजयजी पासेथी मळेली छे. एमांनी ३ पत्रनी एक प्रत सं. १६७५मां देवनागरी लिपिमां लखायेली छे. एनुं माप ९$\frac{१}{२}$" × ४" छे. दरेक पत्र उपर पंक्तिओनी संख्या सरखी नथी; कोई वार १६ पंक्तिओ तो कोई वार १७ के १८ पंक्तिओ लखेली छे.

लख्या संवत विनानी बीजी हस्तप्रत छ पत्रनी छे. एनुं माप १०" × ४" छे, अने सुवाच्य मोटा अक्षरोए, देवनागरी लिपिमां ते लखायेली छे. दरेक पत्र उपर नियमित रीते बार पंक्तिओ लखेली छे.

संपादनमां सं. १६७५मां लखायेली हस्तप्रतने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारीने संवत विनानी प्रतनां पाठान्तरो टिप्पणमां नोंध्यां छे. प्रथम प्रतना लखाणमां ज्यां 'ष' छे त्यां बीजी प्रतमां घणी वार 'ख' होय छे; उपरांत 'लिखीइ छइ,' 'बइसवानइ' आवा प्रयोगो के शब्दोमां बीजी प्रतमां दरेक स्थळे 'इ' उपर अनुस्वार करेलो होय छे, तेम ज 'कपुरवेलिआं' जेवा शब्दोमां छेल्ला 'आं' ने बदले बीजी प्रतमां दरेक स्थळे 'यां' छे; एटले 'ष' ने बदले 'ख', 'इ'ने बदले 'इं' अने वस्त्रोनां नाममां 'आं'ने बदले 'यां' छे ते पाठान्तर नोंध्यां नथी.

भोजननी वानीओ तथा विविध प्रकारनां वस्त्रोनां नाम सोळमा सैकामां के कदाच तेनी ये पहेलां रचायेली जणाती आ कृतिमां आप्यां होई सांस्कृतिक इतिहास माटे ते अगत्यनी छे.

[६] 'भोजनविच्छित्ति'

'भोजनविच्छित्ति'नी हस्तप्रत पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीना संग्रहमां नं. ८३७ उपर नोंधायेली छे. एनां बे पत्र छे तथा दरेक पृष्ठ उपर नियमित रीते १८ पंक्तिओ लखायेली छे. प्रतनुं माप १०.३" × ४" छे. देवनागरी लिपिमां एक ज हाथे सुन्दर अक्षरोमां ते लखाई छे. लिपि तेम ज भाषा उपरथी ते विक्रमना सत्तरमा शतकना उत्तरार्धमां लखाई हशे एवुं अनुमान थाय छे.

आमां पण भोजनविधिनो वर्णक छे तथा अंते विविध प्रकारनां वस्त्रोनो उल्लेख छे.

[७] 'वीरभोजन वर्णक'

वडोदराना श्रीआत्माराम जैन ज्ञानमन्दिरमां राखवामां आवेला स्व. मुनिश्री हंसविजयजीना हस्तलिखित पुस्तकसंग्रहमां नं. २०६५ उपर आ प्रत नोंधाई छे. आ प्रतनां कुल चार पत्र छे अने तेनुं माप १०·५" × ४·५" छे. देवनागरी लिपिमां, कंईक अणघड मोटा अक्षरोए प्रत लखाई छे अने दरेक पृष्ठ उपर नियमित १० पंक्तिओ लखेली छे. लिपि उपरथी एनी नकल सत्तरमा शतकना अंतमां थयेली जणाय छे.

'भोजनविच्छित्ति' साथे आ वर्णकनुं घणुं साम्य छे—'भोजन-विच्छित्ति'नो आ जाणे के संक्षेप होय एम लागे छे. एक ज मूळ रचनानी बे स्वतंत्र पाठपरंपराओ—एक विस्तृत अने बीजी संक्षिप्त—होय ए प्रकारनुं आ बे कृतिओनुं परस्परनुं साम्य छे.

[८] 'भोजनभक्ति'

अमदावाद जैन प्राच्य विद्याभवनमांना श्रीचारित्रविजयजी ज्ञान-मन्दिरनी नं. ३६६नी आ हस्तप्रत पू. पं. श्रीरमणिकविजयजी द्वारा मळेली छे. एनां बे पत्र छे. पहेला पत्रनुं प्रथम पृष्ठ कोरुं छे, ज्यारे बीजा पृष्ठ उपर दश पंक्तिओ छे; बीजा पत्रना प्रथम पृष्ठ उपर नव पंक्ति छे अने बीजा पृष्ठ उपर आ कृति पूरी थती होई त्यां त्रण पंक्तिओ लखेली छे. प्रतनुं माप १०" × ४$\frac{1}{2}$"नुं छे. सुवाच्य देवनागरीमां ते लखाई छे.

प्रतने अंते पुष्पिका के लेखनसंवत नथी, पण लिपि अने भाषा जोतां विक्रमना अराढमा शतकना अंतमां के ओगणीसमा शतकना प्रारंभमां तेनी नकल थई होय एम अनुमान थाय छे.

[९] 'अहो श्यालक बोलि' वर्णक

वडोदराना श्रीआत्माराम जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्रीकान्ति-विजयजीना हस्तलिखित पुस्तकसंग्रहना गुजराती विभागमां नं. १८५३ उपर आ हस्तप्रत नोंधायेली छे. एनां त्रण पत्र छे, अने तेनुं माप १०·३" × ४·५" छे. प्रत देवनागरी लिपिमां लखायेली छे, अने दरेक पृष्ठ उपर १४ के १५ पंक्तिओ लखायेली छे. कृतिनी रच्यासाल के कर्तानुं नाम नथी, पण तत्कालीन राजकर्ता तरीके एमां अकबरनुं नाम तथा एना प्रभावनुं वर्णन आवे छे, तेथी ई. स. १५७३ (सं. १६२९)मां अकबरे गुजरात जीतीने मुगल साम्राज्यमां भेळवी दीधुं त्यार पछी, पण ई. स. १६०५ (सं. १६६१)मां जहांगीर राज्यगादी उपर आव्यो त्यार पहेलां एनी रचना थई होवी जोईए. लिपि उपरथी एनी हस्तप्रत विक्रमना सत्तरमा शतकना उत्तरार्धमां थई होय एम जणाय छे.

आ कृतिना प्रत्येक वर्णनखंडने अंते 'अहो सीआलक बोलि' अथवा 'अहो शालिक बोलि' एवुं संबोधन आवे छे, ए पहेली नजरे विलक्षण लागवा संभव छे. परन्तु आ प्रकारना बीजा वर्णको पण अन्यत्र जोवामां आव्या छे,[1] तेथी आवी रचनाओनी पण एक परंपरा हती ए स्पष्ट थाय छे. जूना समयमां गुजरात अने राजस्थानमां विवाहित पुरुषनी बुद्धिनी परीक्षा एना श्वसुरपक्षनां सगांओ समस्याओ आदि द्वारा करतां हतां, अने हजी पण कोई कोई स्थळे ए प्रथाना अवशेषो छे. 'अहो श्यालक बोलि' जेवी साळाने संबोधायेली रचनाओ ए लोकरूढिने कंईक साहित्यिक स्वरूप आपीने रचाई

१ आ संग्रहमांनी [१०]मी कृति 'गुजराती सुलतानोनुं प्रशस्तिकाव्य अने अमदावादनुं वर्णन' एमां पण 'अहो श्यालक बोलि' एवुं संबोधन आवे छे (पृ. २०५). आ प्रकारनी 'अहो श्यालक' संबोधनवाळी बीजी बे प्रकाशित कृतिओ माटे जुओ श्री. भँवरलाल नाहटा, 'राजस्थानी' त्रैमासिक, भाग २, अंक २, 'दो पद्यानुकारी कृतियें'.

जणाय छे. प्रस्तुत कृतिमां पहेलां गणेश अने सरस्वतीनुं स्मरण कर्ता करे छे; नवकार मंत्रनुं माहात्म्य वर्णवे छे. पछी सासुना शणगार वर्णव्या छे. पछी 'अह्मारूं अणहीलपुर पाटण वर्णवूं' एम कहीने पाटणनुं संक्षिप्त वर्णन आप्युं छे, तेथी आनो रचयिता पाटणनो होय ए संभवे छे. ए पछी गुजरातना तत्कालीन पाटनगर अमदावादनुं अने राजकर्ता अकबरनुं वर्णन छे. छेले 'अहमारी रसवती वर्णवू' एवा निर्देशपूर्वक आ पहेलांना अनेक वर्णकोमां छे तेवुं भोजनविधिनुं संक्षिप्त वर्णन अने वरनी बेसवानी पाटनुं वर्णन आप्युं छे. अंतमां शुभ शकुननो उल्लेख छे. 'जैन संस्कृत'मां रचायेला संस्कृत श्लोको आ कृतिमां वच्चे वच्चे आवे छे. आखी ये कृति, एना शीर्षकने सार्थक ठरावे ए रीते, वरना मुखमां मूकवामां आवी छे.

[१०] 'गुजराती सुलतानोनुं प्रशस्तिकाव्य अने अमदावादनुं वर्णन'

आ कृति पू. मुनिश्री पुण्यविजयजी पासेना एक जूना हस्त-लिखित पानामांथी मने मळी हती, अने तेनुं प्रथम प्रकाशन अमदावादना गत साप्ताहिक 'भारती'ना सं. २००४ना दीपोत्सवी अंकमां में प्रथम वार कर्युं हतुं. अमदावादना स्थानिक इतिहासनी दृष्टिए आ कृति नोंधपात्र छे, ते साथे एनुं साहित्यस्वरूप पण ध्यान खेंचे एवुं छे. अमदावाद वसावनार सुलतान अहमदशाह (ई. स. १४११-१४४१), एनो पौत्र 'महिमुद सुरताण'—महमूद बेगडो (ई. स. १४५९-१५१३) तथा एनो पुत्र 'मदाफर'—मुझफर २जो (ई. स. १५१३-१५२६) ए त्रण गुजराती सुलतानो विषेनां प्रशस्तिकाव्य एमां छे. प्रारंभनी ११ कडीओमां अहमदशाहनी प्रशस्ति छे. ए पछी महमूदनी प्रशंसानो एक संस्कृत श्लोक छे अने उपर जेनो निर्देश थयो छे एवा अलंकृत गद्य 'बोली'मां महमूदना प्रभावनुं तथा अमदावादना वैभवनुं वर्णन छे. ए पछी आवतां

छप्पय छंदनां बे पद्यो घणुं करीने महमूद विषेनां छे; जो के एनो स्पष्ट नामनिर्देश त्यां नथी. छेल्ले एक पद्य सुलतान 'मदाफर'— मुझफर विषेनुं छे.

मुझफर २जानो राज्यकाळ ई. स. १५१३ थी १५२६(=सं. १५६९-१५८२) सुधीनो छे, एटले आ प्रशस्तिनी रचना त्यार पहेलांनी न होई शके. हस्तलिखित प्रतनी लिपि तथा कृतिनुं भाषास्वरूप जोतां विक्रमना सत्तरमा सैका करतां अर्वाचीन ए रचना नथी. सोळमा शतकना उत्तरार्धमां मुझफरना राज्य-काळमां एनी रचना थई होय ए शक्य छे. अंबदेवसूरिकृत 'समरा-रास,' श्रीधर व्यासकृत 'रणमल्ल छंद' अने पद्मनाभकृत 'कान्हडदे-प्रबन्ध'[1] जेवां थोडां जूनां काव्योनी जेम आ प्रशस्तिमां पण फारसी-अरबी मूळना शब्दोनो प्रयोग बहोळा प्रमाणमां थयेलो छे.

आ प्रशस्तिमां कर्तानो नामोल्लेख नथी, पण एमां महमूद बेगडा विषेना गद्य-वर्णकना प्रारंभमां (पृ. २०४) 'अहो वर, जिन-धर्मधुरंधर! सांभलि' एवा शब्दो छे ते उपरथी एनो कर्ता जैन होवानुं अनुमान थाय छे.

[११] 'हस्तिवर्णन'

मत्त हाथी विषेनो आ संक्षिप्त वर्णक दशेक वर्ष पहेलां पू. मुनि पुण्यविजयजी पासेना एक हस्तलिखित पत्र उपरथी मैं उतारी लीधो हतो. लिपि उपरथी पत्र विक्रमना सत्तरमा शतकमां लखायेलुं जणाय छे.

---

१ 'कान्हडदेप्रबन्ध'मां प्रयोजायेला फारसी-अरबी मूळना शब्दोनी संपूर्ण सूचि माटे जुओ 'बुद्धिप्रकाश,' जून १९५४ मां 'कान्हडदेप्रबन्धमां फारसी-अरबी मूळना शब्दप्रयोगो,' ए मारो लेख.

परिशिष्टो

वर्णकशैलीए नहि रचायेली छतां आ 'वर्णक-समुच्चय'ना अमुक अंशोनो--खास करीने वस्त्र अने अलंकारने लगता अंशोनो--अभ्यास करवामां उपयोगी थाय एवी बे कृतिओने अहीं परिशिष्टमां स्थान आप्युं छे. वस्त्र अने अलंकारोने लगती केटलीक पूरक सामग्री पण एमांथी मळे छे. आ बे कृतिओ ते प्रयागदासकृत 'कपडाकुतूहल' तथा कोई अज्ञात लेखके तैयार करेली 'क्याणक-वस्त्र-आभरण नामावलि'.

[१] प्रयागदासकृत 'कपडाकुतूहल'

आनी बे हस्तप्रतो मळी छे, अने ते बन्नेय वडोदरा युनिवार्सिटीना गुजराती विभागना संग्रहनी छे.

एमांनी पहेली प्रतनां कुल १५ पत्र छे, अने तेनुं माप १०.१" × ४.५" छे. प्रत्येक पृष्ठ उपर पंक्तिओनी संख्यानो कोई खास नियम जळवायो नथी; कोई पृष्ठ उपर ११ के १२ पंक्ति तो कोई पृष्ठ उपर १६ के १७ पंक्तिओ लखेली छे. एमां त्रण कृतिओनी नकल करेली छे:—(१) पत्र १ थी १२ सुधी अज्ञात कविकृत 'ढोला-मारवणीनी वार्ता', (२) पत्र १२ थी १४ सुधी 'कपडाकुतूहल,' अने (३) पत्र १४ थी १५मां 'फूलकुतूहल.' 'कपडाकुतूहल'ने अंते पुष्पिकामां नकल कर्यानुं वर्ष नथी, पण राधनपुरमां नकल थवानो उल्लेख छे. परन्तु 'ढोला-मारवणीनी वार्ता'नी अंतिम पुष्पिकामां लेखनवर्ष सं. १८०२ आप्युं छे:—

"इति श्रीढोलामारवणी वारताबंध दूहा संपूर्ण संपूणात् श्रेयोर्थं संवत् १८०२ना वर्षे प्रथम चैत्र वदि १४ दिने लीषीतं भांणोजी प्रतापसागर माणिक्यसागर त्रणें दीन ३ मध्यें लख्युं छे

श्रीराधनपूरमध्ये श्रीआदीश्वर प्रसादात् । दूहा । जब लग मेरु स्तिर रहें जयवंता शशिभांण । तब लग एही दूहरा वांचो चतुर-सुजांण १ "

बीजी हस्तप्रतमां आ कृतिनुं नाम 'कपडबत्तीसी' आप्युं छे. पोथी त्रण पत्रनी छे; एनुं माप १०" × ४.३" छे अने कोई पृष्ठ उपर आठ तो कोई उपर नव पंक्तिओ लखेली छे. प्रतमां लेखनसंवत नथी, पण ते गणोदमां लखाई होवानो उल्लेख छे. विक्रमना ओगणीसमा सैकामां ते लखायेली जणाय छे.

पहेली प्रतने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारीने आ बीजी प्रतनां पाठान्तरो टिप्पणमां नोंध्यां छे.

'कपडाकुतूहल' मारवाडीमिश्रित हिन्दी भाषामां दूहा छंदमां रचायुं छे. एनी रचना, अंतमां उल्लेख छे तेम, उदयपुरमां थई छे. नायक-नायिकाना प्रणयना वर्णनपूर्वक एमां विविध प्रकारनां वस्त्रोनो कर्ताए उल्लेख कर्यो छे. पहेली हस्तप्रतमां छेल्ले जेनी नकल छे ते 'फूल-कुतूहल' पण आ ज कर्तानी रचना छे अने तेमां विविध पुष्पोनुं एवुं ज शृंगारिक वर्णन छे. कर्ताना समय विषे जाणवामां नथी, पण बहु जूना समयमां ते थयो नथी ए नक्की छे.

[२] 'क्याणक-वस्त्र-आभरण नामावलि'

वडोदराना श्रीआत्मारामजी जैन ज्ञानमन्दिरमांना प्रवर्तक श्री-कान्तिविजयजीना हस्तलिखित पुस्तकसंग्रहना गुजराती विभागमां नं. २७९० उपर आ पोथी नोंधायेली छे. एनां कुल चार पत्र छे अने तेनुं माप १०" × ४.२ " छे. एमांना पहेला पत्र उपर दश, बीजा पत्र उपर अगियार अने त्रीजा तथा चोथा पत्र उपर नव पंक्तिओ लखेली छे. अंते पुष्पिका के लेखनसंवत नथी, पण लिपि उपरथी विक्रमना अराढमा सैकामां नकल थई जणाय छे.

कोई कुतूहलप्रिय व्यक्तिए आ प्रतमां ३६० करियाणांनां नाम, ६८ वस्त्रनां नाम, १४२ आभरणनां नामनी सूचि लखी छे. कोई प्रकारनां साहित्यिक के भाषाकीय अलंकरणो विनानी आ मात्र सादी टीप छे, पण आटलां वस्त्रो अने अलंकारोनां नाम एमां एक साथे मळतां होई सांस्कृतिक इतिहास माटे एनुं महत्त्व छे. आभरणोनी सूचिमां ६० सुधीनां नामो संस्कृत छे, ज्यारे ए पछीनां लौकिक छे.

वर्णक-समुच्चय

विविध वर्णक

[1-A] ॥ द०॥ॐ नमो वीतरागाय ॥ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, वारू मंडप नीपाईउ, पोइणिने पानि छाइउ, कंकूना छाबडा, मोतीना चउक, तेहमाहि सारूआर घाट, मेल्हाव्या पाट, चाउरि चाकुला, चूडीयां गादी प्रमुख नानाविध चउरस चउकीवट, ऊंची आडणी जालकोशी कुंडलीना प्रयोग पूरा हूआ. तदनंतर लाडता लडसडता इसा पुण्यवंत, लीलां कामदेव जिसा, आरोगिवा बइठा. तदनंतरु त्राट वाटां वाटी कचोलां कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई. तदनंतरु लडहीअं, लडसडतीयं, लीलावतीअं सुवर्णमय करवइं बरवतीअं, खलकतइं चूडइं, झलकते कंकणि, ढलकतइ हाथि, सीति गंधोदकि हस्तोदकु दीधां. तदनंतरु ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, सुवर्णमइ स्थालि, मोटइ झमालि, आवी ऊजमालि, परीसइं फलहुलि. किसी किसी ते फलहुलि, अखोड खंड मनोन्य वाइमी, वारु चारउली, साकरलिंगां, वेकर्यां बरसोलां, हीरालग साकरनी चूरि, कोलंबी नालिकेरनी षडहडी, छोहारी जालिकी पिस्थानी षारिकना कुटकुडा, किसिमिसि द्राष, फडद खजूर हरमुजी, मधुरउं मांकडउं दीपसिखा समान सरस फणस, सेलडींना कुटकडा, दाडिमनी कुली, तरुणां करुणां जंबीर, बीजपूरकनी घणी चडउडी, सरंग नारिंगनी फाडि; अति गुल्यइ आंगि, पूरी रंगि, मधुकलस आंबांनी चउतली, परीसणहारि पातली; किसउं जु आंबुउं, वनस्पतिराउ, कंदर्प्पदेवसहाउ, अमृतगुणनीरधि, मीठि मनउ अवधि, रितुराउ वसंतनउ प्रणधि, उद्यान वनमाहि आणिउ, विलासीए वषाणिउ, साकरनी पालि दूधि पायउ, कोइलतणे वृंदि

छायाउ, रूपि सुचंगु नम्युउ, नवरंगु, थुडि थोरु पथिकवधूजनचित्तचोरु; अतिबहुल छायां, जिसी प्रेमनी माया; तेहनां किशां फल, वानि वल्यां वावि थक्कां गल्यां, इसी मधुकलस आंबानी फालि. निकोल्यां रायण, निवृत्तिपरायण, षांडइं लुल्यां, घीइं मल्यां; अनइ कंकणां केलां, सोनेलां राजेलां सूठेलां नारसिंघेलां, [1-B] वाथमां केलांनी पातली कातली, वीटि थक्कां गल्यां, लीलां लीलावतीना हाथतउ दल्यां, नीपनां अमृतहल, पुणि सरस सकोमल, ज्येष्ट मसवाडानी काकडीनइ अनुमानि, सोवन रेषनइ वानि, गात्रि वांकां भलां पाकां, गोल्यु वास, जिसउ अमृतनउ अल्हासु, खादि सीधां, कापि कीधां, सुवर्ण्णमइ त्राटि, शिखरनइ घाटि, विभ्रमइ मनु, इसी कूंकणांनी कातली. नीपनां दूधहल, ऊतरयां पटल, ऊएषनी जाति, विपरीतिनी भाति, नमतइं हाथि मेल्हां, त्राटि शोभइं, तीहनी परीसणहारि श्यामांग वरनारि, संपन्न शृंगारि, कंठाभरण हारि, जिसी रंभानइ वंशि, देवकन्यानइं अंशि. निउंजां रायणप्रभृति स्वदेशपरदेश फलावली, इसी फलहुलि, वर सीमंतिनी परीसइ, जइ देवाधिदेव श्रीसर्वज्ञ तूसइ. तदनंतरु सप्तपुडां षाजां, किशां ति षाजां, जिसां प्रासादनां छाजां, पवित्र प्रधान देवनउं धानु, मालवी गोधूम हाथि मल्या, धोई दल्या, एनी पडसूधी, खइ सवि वार सूधी, आले वालउ वाकु, अहिठाणउ आंकु, तीणइं वाली, माहि थूली टाली, घीइं मोई, डाहीयारइं जोई, एकल पाट सारूयार घाट, माहि साठी चोषानउ वाकु, तीण समारी, नगरमाहि नीवेडी, लडूआरी तेडी, नीपजइं पक्कानु पणि अतिहिं सुवानु, जोईनइ मली, इसुं कहीइ पक्कान्न, सामान्य नही, तीह पाषइ नोही पाटणना कंदोई, आगरना जाण, परिकरनां प्रमाण, चीत्रामनी जाति, माहि बत्रीस फूदडीनी भाति, चहु अंगि ताडी, अभ्यासिस्यउं ऊपाडी मउडांस्यउं मेल्हीयइ, चालने ढेलीइ, लोह घटित तावा, कडे सहावा, निर्धूम वह्नि ज्वलइं, हेठि कयठाडि बलइं. घीइं तल्यां, दृष्टि कल्यां, ऊतारिवानी तकं छाब भरी निष्कासि

करी, एकि अंगि बाई, ऊपरि गुलरेष लाई, जिशां अमृत तणां, पुणि टलवाडइ घणां रूप्पोज्वल, काविलउ घाट, जिशउं ढांकइ त्राट, इशां साजां सातपुडां षाजां, वरनारि परीसइ, जइ लीला विलास तूसइ. तदनंतरु भलभला लाडू, जिशा रसवती लक्ष्मीना अमीना गाडू, घृतमइ पाकि तल्या, साकरस्यउं आधि मिल्या, मिरिचना चमत्कार, अत्यं[2-A]त सुकमार कर्पूरपरिमलसार स्थूल बहुलाकार, महोज्वला ईशा सेवईआ लाडू, मोतीआ लाडू, दल लाडू, बीबा लाडू, झगर लाडू, सिंहकेसरा लाडू, अमृतहल, खलषड, भलषंड प्रभृति मोदक मूक्यां, जेहे मुह मिलइं, घणउं किसुं वर्ण्णवीइ, देषी दाढ गलइं, जाणीइ किरि भोज्यलक्ष्मी तणा क्रीडाकुंदक हुइं जिशा, अथवा सुकृत द्रुम तणा परिणाममनोहर फल हुइं जिशा, अथवा स्मर तणी गोला धणुही प्रति नवतरुणी करविमुक्त गोला हुइं जिशा, एवं विध अमृतघट मन-प्रमोदक मोदक शोभइं. तदनंतर सुसमुसती मरकी शिशिविशद मुंहाली, चंद्रकिरणोज्वलगुणा, फगफगां फीणां, दुग्धवर्ण्ण दहीथरां, घृतवर्ण्ण घारी, सुकुमाल साकुली, सेव साकुली, परीसणहारि नही आकुली, अखंड मांडी, सउंतल्यां सेवत्र्यां प्रभृति पक्वान्न परीस्यां, खांड मांडा, पूरण मांडा, कुरुकुरा मांडा, पत्रवेटीया मांडा, आकासीआ मांडा, आछा मांडा, खाटउं चूरिमउं, गुलिउं चूरिमउं, प्रधान पनोली, रोटी बाटी, ठोठि अंगार करि वेढमी, मारुयाडिनी पंचधार लपनश्री, सुदलित सुललित वरनारि परीसी. तदनंतरु शालि, महाशालि, कलम शालि, तिलवासी शालि, सुगंध सालि, सुवर्ण्ण शालि, राजान्न शालि, कुंयारी सालि, चंद्राणी शालि, पंच शालि, साठियां प्रमुख मनीप्सित अखंड शालिना चोषा, हलूइं हाथिइं षांड्यां, बलीइं हाथि छड्या, निषूतीइं वीण्या, अलवेश्वरइं आण्या, सुमइतींयं सोह्या, भगतीइ समारयउ, कांसा भाणा-माहिं, त्रिसक तीनह सति (?)कडयडि मोडि वीणिउ, फुटस्सणि धोइउ, हितूईइं ऊर गढी बेडं पग देउन्हइ उसाविउ, उन्हउ तीन्हउ सरहरउ,

भरहरउ आंहसिउ नीलसिउ अणीआलउ सूंआलु सरसु सकोमल वीषरिउ वीणिउ ऊजलउ जिसउ केवडउ, ऊंदेली जेवडउ, दूबल पेटि पइसइ, फूटी नीसरइ इशउ कूर परीसिउं. अनइ घृतमय पुहतिनइ संयोगि, मननइ ऊलटि, मंडोरा मगनी दालि, बुभक्षानी कालि, फोतिरे छांडी, हलू हथीयं षांडी, त्रिछड कीधी, [2-B] घणइं पाणी सीधी, वानि पीयली. परिणामि सीयली, जिमतां स्वादिष्ट, परीसणहार अभीष्ट. इसी दालि परीसी, सद्यस्तापितु, परमामृत घृतु, सद्य ताविउं, घाइं नामिउं, मांजिष्टा वर्ण्ण, अवधारइ कर्ण्ण, सरहरी धार, प्रीणइं जिमणहार, सौभाग्य अजेय, नाशापटु पेउ, साक्षात् अमृत एवंविध घृत. तदनंतर वडां आव्यां, घणइ तेलइं सीना, घोलि भीनां, ऊपरि आगलु वाटु, जाणीइ किरि अमृतनउ घाटु. मरिचना चमत्कार, अत्यंत सुकमार, हस्तिपद प्रमाण, प्रीणतां घ्राण, हाथितउ वलइं, मुहि पड्यां गलइं, स्वर्गि थिका देव देषी टलवलइं, इशां अनेक प्रकारि वडां, थुठि वडां, मोतीयां वडां, कांजी वडां, हस्तपद वडां, मिरी वडां, राई वडां, हलद्रूयां वडां, वाट वड्यां, थाल वडां, सउंतल्यां वडां, सीलीयां वडां, दालीयां वडां, षांड वडां, कुहाडीयां वडां प्रभृति. तदनंतर मुग वडी, उडद वडी, छमका वडी, पलेह वडी, सउंतली वडी, माहिनु चीर, छमकावी डोडी, खाईयां टलटलतां टींडरां, भली वालहुलि, कलकलतां कोसंभां, सुडहडती सांफली, डसडसतां डोडिकां, छमछमती भाजी, चमचमतां चीभडां, सुडहडेती फली, मिरीभरी षांडिमी, वारु ईडरी, रुडां राईतां, संडेरी सांगरी, एकि वघारयां शाक, एकि मोकलीयां शाक, च्युहउवानी पहलेह कडूयां कसायलां तीषां मधुरा जिसी पडोसणि तणी जीभ इशा कडुया, जिशउ सद्गुरुनउ उपदेश इस्या कसायला, जिसी सउकिनी जीभ इशा तींषा, जिसउं मानउं चित्त इशा मधुरा, अनइ एकिं पलेह शिषामय मूलमय त्वग्मय पत्रमय फलमय वातहर पित्तहर श्लेष्महर रोचक दीपक आप्यायक बृंहण समरस

कटु तिक्त कषाय, क्षार अम्ल मधुर, षट्रस प्रसर. तदनंतर कउठ कउठवडी कयर करमदां कोठीभडां कालिंगडां पापड सालेवड आंबहुलि. पूरण प्रभृति शाक मूक्यां. तदनंतरु द्राष वाणां, साकर वाणां, दाडिम वाणां, आंबिली वाणां, विचि सांचरयां. पछइ वारु कोसूना कूर परीस्या, साल्योदन तणा करंबा, कर्पूर तणउ वासु, एलचीनउ उल्हासु, भोज्यलक्ष्मी तणउ निवासु, माहि दही तणउ प्रयोग, जीणइ हुइ जिमणहारनइं अभिओग, इशउ करंबउ; अमृतमय घोल, क्षीरसमुद्रना कल्लोल, अत्यंत धवल, प्रीणइं मुखकमल; तदनंतरु [3-A] प्रधान पीपलि, आषी आंबी, नलोडानी कयरी, आबूआं आबां, मलबारी मिरी-मंजरि, छूहारां लीबूआं, गिरनारी गिरमर, मारुयाडां मुगीयां कयर, पर्वती राई प्रमुख शाक पीरीस्यां. तदनंतरु कर्पूर पाडल चंपक सुगंध सीकिरी वास्यां पाणी तेहे मुख पवित्र करी, हाथसाडइ हाथ लूही, बीडां आप्यां; नागरषंडां कपूरीयां चेउलीयां आधीगामां मांगलउरी बिटीसीआ बीटि सांकडां अल्प तसा जालमनोहर पान, वारु राजोगर. अथ पूग सोपारां, अति फारां, प्रधान रसनिधान, श्रीषंडि षरड्यां, कर्पूर-धवलां, त्रांबावनां वाटुलां सुरंग सुभंग चीकणां कोचडीयालां, चाव्यां रस मूंकइं, इश्यां अपूर्वोत्तम पूग. अथ षांडी ईसउरी हीउरी वाकनउरी चीकणी, नीली त्रोडी, नीली फोडी, केलिनइ पानि छांह सूकवी, चतुर्जातकि भरहरावी उदय भास्कर कर्पूरशुद्ध आरासनउ चूनउ, इसी षांडी. कपूर लविंगा एलची खदिरवटिका सहित बीडां कीधां, मुख-वासि दीधां.

अथ वृष्टिर्जवासकानां न सुखायते. चंद्रोदयश्चक्रवाकाणां न, सुभिक्षं धान्यसंग्राहकाणां न, गर्जितं शरभाणानां न, चंदनं विरहिणां न, वर्षा प्रवासिकानां न, मृदंगशब्दोक्षरोगिणां न, तथा जिनवचनं अभव्यानां न सुखायते ।

शुष्कनदीतरणमिव, सुप्तसंवादनमिव, ऊषरे कर्षणमिव, तुषखंडनमिव, अरण्यरुदितमिव, स्थले कमलरोपणमिव, लावणागारे बीजरोपणमिव, तथा मूर्खे जने भाषितं ।

समुद्राच्चंद्रमिव, सरसः सरोजमिव, चंद्रकांतादमृतमिव, धर्माच्चित्तवांछितानीव, सर्वज्ञाराधनान्मुक्तिपदमिव ।

चंद्रात्कलंकमिव, प्रदीपात्कज्जलमिव, मेघाद्विद्युत्पातमिव, थुंबकादग्निरिव, जलात्सेव्वाल इव विभवान् मदस्तथा भवति ।

पाषाणात्सुवर्ण्ण इव, सर्प्पान्मणिरिव, मृगात्कस्तूरिका [इ]व, पंकात्कमलमिव, क्षारसमुद्राच्चंद्रमिव, कृमेः कौशेयमिव, विषधराद्विषमिव, वैश्वानराद्दाह इव, तथा दुर्जनादलीकवचनं प्रभवति ।

दुग्धधौतोपि काकः किं हंसायते, पुष्टोपि बकः किं हंसगतिं जानाति, सुघटितोपि काचः किं मणीयते, सुशृंगारितोपि करभः किं गजायते, इक्षुरससिक्तोपि निंबः किं द्राक्षाफलानि सूते, सुस्नातोपि चंडालश्चंडाल एव, धौतमपि सुराभांडमपवित्रमेव, उपकृतोपि दु[र्ज]नो दुर्जन एव ।

[3-B] विदेशगमन अनइ पिशुनसमागमं, दूरे गमनं संबलं विना, बेडाभंगो मकरोपद्रवः, एकं दारिद्र्यं दुर्मुखं कलत्रं, अग्रे भोजनाप्राप्तिः प्राघुणकागमनं ।

यदि मेघस्य धारासंख्या भवति, दिवि तारासंख्या भवति, भूतले रेणुसंख्या, समुद्रे मत्स्यसंख्या, मेरुगिरौ सुवर्ण्णसंख्या, मातरि स्नेहसंख्या, तदा श्रीसर्वज्ञगुणसंख्या भवति ।

कः शशिनं शिशिरं करोति, को दुग्धं धवलयति, को मयूरं चित्रयति, कः शर्करां मधुरयति, कोऽमृतं सर्वरसमयं करोति, को गंगां पवित्रयति, को मेघमभ्यर्चयति, को हंसान् श्वेतयति, को हंसीं गतिं शिक्षयति, को मौक्तिकान् वृत्तान् करोति, कः पद्मरागं रंजयति, कश्चंपकं सुरभयति, कः कोकिलां मधुरस्वरां विदधाति ।

दुग्धधौतोपि काकः किं हंसायते, सुपुष्टोपि श्वा किं सिंहायते, सुष्ठु उपचितोपि खरः किं अश्वायते, सुघटितोपि काचो नीलमणिलीलां किं वहति, सुष्ठुशृंगारितउष्ट्रः किं गजलीलां वहति, इक्षुरसैः सिक्तः किं निंबोपि द्राक्षाफलानि प्रसूते, सम्यक् उत्तेजितोपि रीरी किं सुवर्ण-च्छायां बिभर्त्ति । 5

सुशिक्षितोपि कपिः चपल एव, सुस्नातोपि चांडालो मलिन एव, सुधौतमपि सुराभांडमपवित्रमेव, सुष्ठु उपचितोपि दुर्जनो दुर्जन एव ।

अन्यत् सर्वत्र सुवर्णं कषे, दानं दुर्भिक्षे, पौरुषं रणे, स्त्रीशीलं संगमे, धौरेयं पथे, वाग्मिता सदसि, साहसं दुर्दशायां, मित्रं व्यसने, कलत्रमापदि, पुत्रो वृद्धत्वे ज्ञायते । 10

जिम वनह नंदनवन, चंदनह गोसीर्ष चंदन, सरोवरहं मानससर, आगरहं वइरागर, समुद्रहं स्वयंभूरमण समुद्र, पर्वतहं मेरुपर्वत, हस्तिहिं ऐरावत, रत्नहं चिंतामणि, आभरणहं चूडामणि, मूर्षहं ब्रह्मलोक, जल्पहं संस्कृतजल्प, तरवरहं कल्पतरु, देवहं जिनवर, ध्यानहं शुक्लध्यान, दानहं अभयदान, तिम धर्म्महं जिनधर्म्म प्रधान. 15

परार्थे मरणं श्लाघ्यं, दाने दारिद्र्यं श्लाघ्यं, तपसि कृशता, विद्यार्थे लघुत्वं, पथिकोपभोगे वृक्षस्य फलानि, परोपभोगे सरसः शोषः श्लाघ्यः ।

यथा सूर्य विना दि[4-A]वसो नहि, पुण्यं विना सुखं नहि, सुपुत्रं विना कुलं नहि, गुरूपदेशं विना विद्या नहि, हृदयशुद्धि विना 20 धर्म्मो नहि, धनं विना प्रभुत्वं नहि, दानं विना कीर्त्तिर्नहि, भोजनं विना तृप्तिर्नहि, श्रीवीतरागं विना मुक्तिर्नहि, साहसं विना सिद्धिर्नहि, जलं विना पवित्रता नहि, उद्यमं विना धनं नहि, कुलस्त्रीं विना गृहं नहि, वृष्टिं विना सुभिक्षं नहि ।

कमलेनातपत्रं करोति, चंदनेन लांगलं, सुवर्णेन कुशं, रत्नेन काकोड्डायनं, अमृतेन पादशौचं, गजेन इंधनाहरणं, गवा कर्षणं, कस्तूरिकाया मषी, मौक्तिकैर्भूषणाभरणं, पट्टकूलेन गडूवंधनं करोति ।

कर्प्पासो विडंबनं परार्थे सहते, मौक्तिकानि वेधं, सुवर्णं तापताडनानि, अगरुर्दाहं, चंदनं घर्षणं, कस्तूरिका विमर्दनं, नागवल्ली दंतपीडनं, तरवस्तापं, दधि मथनानि, ओषधयः छेदं, इक्षुर्यंत्रपीडनं, जलधराः पानीयवहनं, मंजिष्टा वेदनां, कुंकुमं परार्थे विमर्द्दनं सहते ।

बदरी परफलरक्षणार्थं समूलोच्छेदं सहते, कृपाणः शाणघर्षणं, कुठारो घनघातान्, निगडः पादघातं, राहुः शिरसः च्छेदं, वडवाग्निर्जलमज्जनं परार्थे सहते ।

कर्पूरलवणयोः, कुंकुमकुसंभयोर्महदंतरं, कस्तूरिकाकज्जलयोः, पाणीकर्द्दमयोः, दिवसरात्र्योः, चंदनकदंबयोः, सुवर्णपित्तलयोः, काचनीलमणयोः, समुद्रगोपदयोः, सूर्यखद्योतयोः, अशोकशाल्मल्योः, हंसबकयोः, काककोकिलयोः, हस्तिगर्द्दभयोः, सिंहशृंगालयोः, खराऽश्वयोः, राजरंकयोः, तथा सम्यक्त्वमिथ्यात्वयोर्महदंतरं ।

दंताश्चर्वेति उपकारो रसनायाः, क्रमेलको भारं वहति उपकारः पुण्यवतां, खरश्चंदनं वहति उपकारो व्यवहारिणां, लेखनं लेखकस्य फलं आगमवेदिनां, मृदंगो घनघातान् सहते सुखं श्रोत्रयोः, युद्धंते सेवका जयः स्वामिनः ।

अनभ्यासेन विद्या नश्यति, तपः क्रोधेन, हिंसयाः धर्म्मः, गर्वेण गुणाः, प्रमादेन द्रव्यं, दुर्वचनेन मैत्री, लोभेन विवेकः, अनौचित्येन महत्त्वं, अन्यायेन यशो नश्यति ।

सहजं वैरं नकुलसर्प्पाणां, जलवैश्वानरयोः, देवदैत्ययोः, सारमेयमार्जारयोः, सिंहगजयोः, व्याघ्रगवोः, काकघूकयोः, पंडितमूर्खयोः, पतिवृत्तास्वैरिण्योः, सज्जनदुर्जनयोः सहजं वैरं ।

यदि समुद्रस्य तृषा तदा कः स्फेटयति, यदि मेदिनी कं[4-B]पते तदा कः स्तंभः, यदा नभः स्फाटयति तदा कीदृशं रहणं, यदि राजा चोरैर्गृह्यते तदा को रक्षकः, यदि हिमाचलः शीतेन म्रियते तदा कीदृशं आवरणं, यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा क उपचारः, यदि सरस्वती संदेहं न भंजयति तदा को भंजयति, यदि लक्ष्मी भांडागारे द्रव्यं सत्रुटं करोति तदा कः पूरयिष्यति, यदि बृहस्पतिर्मतिहीनो भवति तदा को दक्षः, यदि सत्पुरुष उचितरहितः तदा कः शिक्षां दास्यति ।

सुवचनेन मैत्री वर्धते, इंदुदर्शनेन समुद्रः, शृंगारेण रागः, विनयेन गुणाः, दानेन कीर्त्तिः, उद्यमेन श्रीः, सत्येन धर्मः, पालनेन उद्यानं, समाचारेण विश्वासः, अभ्यासेन विद्या, न्यायेन राज्यं, औचित्येन महत्त्वं, औदार्येण प्रभुत्वं, क्षमया तपः, पूर्ववायुना जलदः, वृष्टिभिर्धान्यानि, घृताहुत्या वैश्वानरः, भोजनेन शरीरं, पूरेण नदी, लाभेन लोभः, ताडनेन कर्णः, पुत्रदर्शनेन हर्षः, मित्रदर्शनेन आह्लादो वर्धते.

दुर्वचनेन कलहो वर्धते, तृणैर्वैश्वानरः, नीचसंगमेन दुःशीलता, उपेक्षया रिपुः, कुटुंबकलहेन दुक्खानि, दुष्टहृदयेन दुर्गतिः, अशौचेन दारिद्र्यं, अपथ्येन रोगः, कंडूयमानेन कंडूः, असंतोषेन तृष्णा, व्यसनेन विषयाः, निन्दया पापं, प्रवासेन जरा, विरहेण रात्रिः, शोकेन दुक्खं, ज्वरो घृतेन वर्द्धते ।

तपः क्रोधेन नश्यति, स्नेहो विरहेण, व्यवहारो विश्वासेन, धान्यं वर्षेण, कुलस्त्री अरक्षणेन, रूपं दौर्भाग्येन, मनो विकल्पेन, गर्वेण गुणाः, भोजनं तैलेन, शरीरं अयत्नेन ।

चंद्रस्य दूषणं कलंकः, समुद्रस्य दूषणं क्षारता, सूर्यस्य दूषणं आतपः, शरीरस्य दूषणं रोगाः, तपसो दूषणं क्रोधः, जलधरस्य श्यामलता, संसारस्य दूषणं दुक्खानि, धनवतां कृपणत्वं, मुनीनामब्रह्मत्वं, स्त्रियो यदृच्छा, धर्मस्य विषयाः दूषणं ।

पद्मरागेण गुंजां क्रीणाति, वाजिना खरं, सुवर्णेन पित्तलं, पट्टकूलेन गूणीं, पीयूषेन गरलं, चंदनेन पंकं, कल्पतरुणा एरंडं क्रीणाति ।

वामन आम्रफलानि ग्रहीतुं न शक्नोति, अंधः चित्रशालां समवलोकयितुं न शक्नोति, बधिरो वीणानिनादं श्रोतुं न शक्नोति, पंगुस्तीर्थाणि गंतुं न, लिंबो मधुरी स्थातुं न, काको हंसी स्थातुं न, मूर्खो विचक्षणी स्थातुं न शक्नोति ।

दरिद्रस्य मनोरथा हृदये विलीयंते, कूपस्य च्छाया, सुरंगस्य धूली, सत्पुरुषस्य कोपः ।

वृथा वृष्टिः समु[5-A]द्रेषु, वृथा भुक्तस्य भोजनं, वृथा धनाढ्येषु दानं, वृथा श्रुतविचिंतनं मद्यपेषु, वृथा उप्तं ऊषरेषु, वृथा दत्तं पयः सर्पस्य, वृथा व्रतं कुशिक्षया, कुपात्रस्य वृथा विद्या, मुनये आभरणानि वृथा, बधिरस्य अंधस्य प्रेक्षणीयकं वृथा ।

यदि शत्रवो बहवस्तदा किं समुद्रे निक्षेपणीयाः, यदि तैलं बहु तदा किं पर्वता लेप्याः, यदि बीजं बहु तदा किं ऊषरे वपनीयं, यदि सुवर्णं बहु तदा किं गोहेतोः शृंखला कर्त्तव्या, यदि चंदनं बहु तदा किं कपाटयुग्मं कार्यं, यदा पयो बहु तदा किं सर्प्पस्य क्षेपणीयं, यदा रत्नानि बहूनि तदा किं काककुलस्य उड्डायनाय, यदि गजा बहवः तदा किं इंधनाहरणं क्रियते ।

रविः अंधकारविघ्नं निवारयति पुनरात्मीयमस्तं न, वृक्षं अन्येभ्यो च्छायां ददाति पुनः स्वयं चातपे, खड्गो मारणाय अन्येषां समर्थः पुनः शाणघर्षणे न, वैद्या अन्यचिकित्सां समाचरंति पुनरात्मीयां न ।

प्रत्यक्षे मधुरया गिरा अमृतं वर्षतां परोक्षे दोषं जल्पतां, नीचानां व्यसनैर्वशीकृतानां, इंद्रियैः पराभूतानां, पल्वलजलादपि निर्मलानां, मुनिहृदयादपि स्नेहरहितानां, निदाघकालादपि तापकराणां, कालकूटादपि प्राणहराणां, शक्तकरणादपि असंबद्धानां, दवाग्नेरपि दहनस्वभावानां,

अमावास्याया अपि अंधकारमुखानां, गुरुषु विद्वेषिणां, शास्त्रेषु वास्त्र-हस्तानां, बंधुषु बद्धवैरिणां, पितृमातृद्रोहकारिणां, मातृशूलानां, श्वपुच्छा-दपि वक्त्राणां, समुद्रजलादपि अनुपभोग्यानां, अंत्यजचरित्रादपि मलिन-चरित्राणां, सर्प्पजातेरपि अनात्मीयानां, प्रदीपनादपि आश्रयविध्वंसिनां, नदीकूलादपि नीचगामिनां, मृतपात्रादपि भंगुराणां, हरिद्रारागादपि क्षण- 5 विनश्वराणां, उदया न दृश्यंते कुपुरुषाणां ।

राजा जुवराजकुमार राजेश्वर महामंडलेश्वर सामंत लघुसामंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक ताडकपति मंत्रि महामंत्रि गृहवाहक श्रीकर[5-B]णिक व्ययकरणि राजकार० धर्माधिक० सौवर्ण्णक देवक० मंडलक० गडुरक उष्टक० इष्टिकाक० घोडकाक० यमक० पुरोहित दंड-10 नायिक सेनापति पुंतार अश्ववाहक प्रतीकारआरिक भांडागारिक महाभांडारिक माणिक्यभांडारिक कर्प्पटभांडारिक तंडभाडारिक कर्पूर-पट्टिक कोष्टाकारिक पारिग्रहिक प्रतिहार चतुद्धरिक काष्टिक राज-द्वारिक संधिविग्रहिक भांडपति श्रेष्टि महाजनिक दूत दालिउद्द कटुक भट्टपुत्र नट विट भट्ट नगारिय नागुड मुखमांगलिक अंगमर्द15 कूटिकार चाटुकार उपानहधर भृंगारधर स्थगिताधर चित्रक देशा-लिक मसूरिक अंककार फलिहकार मल्लयोद्ध शप्यापाल बालबंध अंगरक्ष वीरमहर धनुर्द्धर खड्गधर दीपवर्त्तिक भोजिक सूयकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य वृषभवैद्य मांत्रिक तंत्रिक गाडरिक मेखलिक लेखक कथक कविकर तालवर कविराज सभ्य सभापति20 लाक्षणिक साहित्तिक तार्किक च्छांदसिक अलंकारिक योतिषिक चामरधारिणी वारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्याय गायन बइकार आलवणिकार वीणकार वंशकार उतिकार मानतालकार अडाउजिय पखाउजिय पाटलिहिक प्रमुख राजलोक पौरलोक इति.

महान्यायपालकु, धर्म्ममय मूर्त्ति, मकरध्वजावतारु, श्रीसर्वज्ञभाव-25 भावितु, दुष्टापहारु, विक्रमनिवासु, सप्तव्यसननिषेध[त]त्पर सर्वदा

सदसि उपविष्ट, पुरुषप्रमाणु सिंहासनु, कटिप्रमाण पादपीठ, आजानु-बाहु उपविष्ट, देवतावसर, मंत्रअखुर, तिलककउ अवसर, आरतीयावसरु, युवराजकुमार राजेश्वर मंडलेश्वर महामंडलेश्वर सामंत लघुसामंत अमात्य सभ्य महासभ्य प्रधान प्रमाणीक सेनापति मंत्रि महामंत्रि राणा श्रीगरणा वयगरणा रायगरणा धर्माधिगरणा देवगरणा नायक दंडनायक अंगलेखक भांडागारिक संधिविग्रही साहणी मसाहणी पडसाहणी तलदग्गी दंडाधिपति प्रतिहार आरक्षक कडूवहक राजद्वारिक लेखक कथक वातगर कवि काठीया मसूरिया दीवटीया उपाध्याय वड्कार करडिकार आलविणिकार वी[6-A]णाकार वंसकार आउज्जी षाउजी पाश्चात्यपक्षे तार्किक ज्योतिषी वैद्य महावैद्य अश्ववैद्य गज-वैद्य मांत्रिकादि पंडित महापंडित इति राजवर्णनं. *

[7-A]परमेश्वर भगवंत श्रीजिन तणी वाणी, संसारसागरसमुत्तारिणी, सर्वजनचित्तनमस्कारकारिणी, बहुलमिथ्यात्वतिमिरपटलदिनकरानुकारिणी, योजनविस्तारिणी, विशेपतो अतिशयनिधानु, कुशलसुप्रधान, मोहांधकार-विदलनभास्करानतु, त्रिजगतीवनिताविलासवितानु, त्रोटिताशेषकर्म्म-संतानु, संतोषवहा अपहृतसंदेहावस्थान, त्रिलोकीतलद्योतिमान, गत-शैवपदस्थानु, उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान.

अथ गणधरः; जिनाज्ञापालनपर सकलगुणगणकरंड संसारोदधि-तारणतरंड छत्रीसगुणोपेत समग्रकलासमेतु इशउ गणधर देशना करइ, जाणे किरि अमृत झरइ, सहकाररस श्रवइ; जु मधुर वाणी, आनंद-दायिनी जनमनोल्लासिनी दुर्गतिनिर्नाशनी इसी देसना जन मध्य रही, कलिमलक्षालिनी त्रिभुवनपालिनी मिथ्यात्वविच्छेदनी क्रोधविरोधनी पापविशोधनी अज्ञानप्रतिपंथिनी मानोन्माथिनी अमृतरसानुवादिनी

* आ पछी तीर्थंकरना जन्मोत्सव आदिने लगतुं केटलुंक अशुद्ध संस्कृत लखाण मूळ प्रतमां छे ते अहीं लीधुं नथी.

हृदयाल्हाददायिनी आगमोद्गारिणी आक्षेपविक्षेपविस्तारिणी संवेगरसस्यंदिनी, श्रूयमाण हूंती करइ सुखसमूहआसना, ऊपजावइ शुभी भावना, इशी गणधर तणी देशना.

जीणि कारणि शास्वतउं सोख्यु कुणहइं प्रति दैव सांसहि नही, जेह कारणि विश्व सकलंकु करी मेल्हइ, महेश्वर नागउ, ब्रह्मा कुंभकार, नारायणलक्ष्मीनिवास समुद्रि [7-B] रहइ, चंद्र क्षयी, शुक्र काणउ, शनीश्वर कूबडउ, आदित्य तापकर, अरुण पांगुलउ, मंगल वक्र, समुद्र खारु, रावण परस्त्री कारणि विगूतउ, श्रीराम रहइं वनवासु, सीता रहइं वियोग, पांडवकौरव विरोध, कर्ण्णराइ आपणी जीभइं घोडउं बाध्यउ, विक्रमादित्य काग खाधउ पुण अजरामर न हूउ, नलिराइ रसोइ पची, हरिश्चंद्र चांडाल तणइ घरि पाणी वह्यउं, फुरुशरामि जननीवधु कीधउ.

कज्जलश्यामल केशपाश, अष्टमीचंद्रोपमानु भालस्थल, कामदेवकोदंडाकृति भ्रूभंग, विकशति नीलोत्पलविशाल लोचन, सज्जनचित्तवृत्तितुल्य सरलनाशावंस, परिपक्वबिंबीफलतुलितािधरोष्टु, कुंदकलिकोपमान दंतपंक्ति, निर्म्मलपरिपूर्ण्णपूर्णिमाचंद्रमंडलोपमान वदनमंडल, शंखसमानत्रिरेषरेषांकितु कंठकंदल, लंबमान स्कंधि न्यस्त कर्ण्णपाली, मांसल स्कंधप्रदेश, पृथुल वक्षस्थल, नगरप्रतोलीद्वारपरिघसमान प्रलंबवर्त्तुलभुजदंड, सर्वथा अलक्ष क्षामोदरगंभीर नाभिप्रदेश, निर्जितवज्रमध्य कटीयंत्र, कदलीस्तंभोपमान ऊरयुगुल, सुश्लिष्ट संधिबंधन, बत्रीसलक्षिणि लक्षितशरीर, बुहत्तरिकलाकुशल, लिखितपठितगीतप्रमुखचतुषष्टिविज्ञानविचक्षण, उग्रयौवनरमणीय, सकलजनप्रमोदजनक पुरुष नीपजइ, इति पुरुषवर्ण्णनं.

अथ राजा; जसु राय तणइ कृपाणि राज्यश्री वसइ, रसना सरस्वती वसइ, वचनालापि सुधारसु उल्हसइ, महाजन किहिं गौरव दरिसइ, सेवकलोकमन संतोसइ, हीवउ आल्हाद ऊपजावइ, तूठउ दरिद्र हरइ, रूठउ सर्वस्व हरइ, नीति अनुसरइ, अन्यायु परिहरइ,

कीर्ति कामइ, देवगुरु मेल्ही कउण रहइं सर न नामइं, आसमुद्रांतयश, आनंदमधुर प्रसन्नमुख, प्रीतिरंगितु मन, दानसन्मान अनइ आलाप अमृतसहोदर, वचन करुणारसकूपमान, औचित्यगुणचारु वाचासार सौर्यउपशमश्रीविलास तत्त्वविचारणैकफल वुहि, अस्खलितसर्वत्रकीर्त्ति सत्पात्रसंयोग धनोपार्जना जेह तणी, अमानी अक्रोधी एवंविध राजा शोभइ.

जइ सूकी तउ वउलसिरी, त्रूटी तउ मोतीसरी, जइ भागउं तउ वारहउं, थाकउं तउ सेराहं, जइ खांडउ तोइ चंद्र, जइ बालउ तोइ इंद्र, जइ ताव्यउं तोइ कांचन, जइ घशउं तोइ चंदन, जइ घाठउ तो[8-A]इ हीरु, नान्हउ तोइ [1]....रउ, जइ काली तोइ कस्तूरी, जइ कंकलाए तोइ पूरी, जइ वादलउं तोइ दीह, जइ लहुडउ तोइ सीह, जइ कुरमाणउं तोइ नागरखंडउं पान, जइ थोलउं तोइ सत्पात्रि दानु.

ठीकिरी कारणि कोइ कामितु कुंभु कुंनु फोडइ, निःकारण कोइ स्नेह त्रोडइ, कामधेनु कोइ ढीली मेल्हइ, चिंतामणि कोइ हाथितु ठेलइ, कल्पतरु कोइ उन्मूली लांषइ, लक्ष्मी आवती कउण राषइ, जिनधर्म्म पामी कोइ प्रमाद दाषइ ?

कदाचित् समुद्र मर्याद मेल्हइ, कदाचित् आदित्य पश्चिम दिशि ऊगइ, कदाचित् अमृति विषु परिणमइ, चंद्रमा अंगारवृष्टि करइ, कदाचित् पाणीमाहि पाषाण तरइ, कदाचित् मेरुचूलिका चलइ, कदाचित् बृहस्पति वचनतु स्कलइ, कदाचित् शिलातलि ऊपरि कमल विकाश लहइ, कदाचिद् गंगाजल पश्चिम दिशि वहइ, कदाचित् मानससरोवर सूकइ, कदाचित् सत्पुरुष प्रतिज्ञा चूकइ, कदाचित् मेदिनीमंडल पातालि जाइ, कदाचित् केवलज्ञानदृष्टि अन्यथा थाइ, तथापि अभव्य जीव सद्-बुद्धि [न] जाइ.

१ मूलमां अहीं एक अक्षरनुं मात्र माथुं बांध्युं छे, पण ते अक्षर लख्यो नथी.

सरस्वती आगलि कुण पढीयइ, अमृत कउणि कढीइ, माणिकु कउणि वीकीइ, मोती कउणि छडीइ, निर्गुण कउणि वंदीइ, वाउ कउणि बांधीइ, हरिण तणां नेत्र कउणि आंजीइं, कर्कटचरण कउणि रंगीइं, कल्पतरु कउणि रोपीइ, संख कउणि धवलीइ ?

सूयर कदाचित् वालीयइ, ऐरावण कदाचित् दामीयइ, चिंतामणि कदाचित पामीइ, कामगवी कदाचित् वाहीइ, हींगु कदाचित् वघारीइ, वेद कदाचित् संस्कारीयइ, रूपिणि कदाचित् मांडीयइ, सालि कदाचित् छांडीइ, हार कदाचित् शृंगारीइ, लक्ष्मी कदाचित् निवारीइ, सुवर्ण कदाचित् ऊजालीइ, हीयउं कदाचित् पखालीइ.

देवतत्त्व वर्ण्णवीइ तउ श्रीसर्वज्ञ तणउं, सुख तउ सिद्धि तणउं, कर्म्मक्षपणा तउ शुक्ल ध्यान तणी, आयुस्थिति श्रीऋषभदेव तणी, ज्ञानातिशय केवलज्ञान तणउ, तत्त्व तउ पंचपरमेष्टिनमस्कार तणउं, दान तउ धन सार्थवाह तणउं, सम्यक्त्व तउ श्रेणिक महाराज तणउं, रिद्धिपरिहार तउ श्रीशांतिनाथ तणउं, अभयप्रदानु श्रीनेमिनाथ तणउं, शील तउ श्रीथूलिभद्र तणउं, अलोभता श्रीवयरस्वामि तणी, गणधरत्व पुणु पुंडरीक तणउं, लब्धि गौतमस्वामि तणी, प्रतिबोध जंबूस्वामि तणउ, तप तउ दृढप्रहार तणउं, महाप्राणध्यान भद्रबाहुस्वामि तणउं, अल्पदेशना चिलातीपुत्र तणी, क्षमा तउ गयसुकमा[8-B]ल तणी, अतिभोगता सालिभद्र तणी, अभिग्रहप्रतिपालना वंकचूल तणी, महातीर्थता उज्जयंत तणी, चउवीस जिणालय अष्टापद तणउं, सिद्धिक्षेत्रपवित्रता तउ विमलगिरि तणी, सिद्धिव्याकरण श्रीहेमाचार्य तणउं, शास्त्रविचारणा तउ श्रीहरिभद्रसूरि तणी, अतिरूपता सनत्कुमार तणी, महाकष्ट अवंतीसुकमाल तणउं, महाविनय तउ नंदिषेण तणउ, शीलरक्षा नमयासुंदरी तणी, अस्खलित तप सुंदरि तणउं, जिनदेवताभक्ति प्रभावती तणी, लोभ तउ कपिल ब्राह्मण तणउ, द्यूत तउ नलराय तणुं, मद्यव्यसन

तउ जादव तणउं, जीवदया तु वज्रकुमार तणी, सत्यवचन तउ कालिकाचार्य तणउं, सुशीलता सुदर्शनतणी, पंचेंद्रियवसीकरण सनत्कुमार तणउं, अनुमोदना मृग तणी, भावना इलातीपुत्र तणी, जैनप्रभावना विष्णुकुमार तणी, पुत्रविरह तउ देवकी तणउ, महापाप चक्रवर्त्ति तणउं, महासंग्राम रामरावण तणउ, लवण सागर तणुं, लावण्य तउ वासुदेव तणउं, आश्चर्यतप सनत्कुमार तणउं, स्त्रीवर्णवना रंभा तणी, कुसुमवर्णना मालती तणी, नदीवर्णना गंगा तणी, स्नेह लक्ष्मणाकुमार तणउ, निस्नेहता श्रीनेमिकुमार तणी, जिनभक्ति कुमारपालराय तणी, नगरीवर्णनं लंका तणउं, पुरुषवर्णना विष्णुकुमार तणी, राजवर्णना श्रीराम तणी, काव्यवर्णना माघ तणी, इति निर्घंटावली समाप्ता.

अष्ट माप्रातिहार्यविराजमान, अतिशय करी देदीप्यमान, उत्पन्न केवलज्ञान, महिम तणउ निधान, अमृत समान जेह तणउं व्याख्यान, अनेकि राय जेहना पूजइ पाय, इंद्रादिक देव करइं सेव इशउ श्रीवीतराग, श्रीजिन चउत्रिंशदतिशयसनाथ, अष्ट महाप्रातिहार्यविराजमान, चिंतितार्थ चिंतामणि समान, निर्दलितमोहमहानरेंद्राभिमान, सकलभविकविधीयमानबहुमान, त्रैलोक्यलक्ष्मी चिंति धान, निखिलजनजनितसमाधान, योगींद्रप्रधान, दुःखितदुक्खपरित्राण, बद्धावधान, सुरासुरसमूहप्रणतपादारविंद, अगाधभवांभोधिनिर्मथनगोविंद, विहितामंदानंद, उत्पाटितमिथ्यात्वतरुकंद, अमलकेवलज्ञानावलोकितवस्तुविस्तर, योजनावनिविस्तारि त्रिभुवनभाषानुहारिणी देशनाप्रबंधप्रबोधितसमस्तजंतूत्कर, मुक्ताफलोज्वलपरिस्फुरितछ[9-A]त्रत्रय, दशितवैरिसंचय, सिद्धिवधूवक्षस्थललीलालंकार, कृताष्टादशदोषसंहार, गताष्टकर्म्मसंबंध, निरविधिपुण्यप्रबंध, अमेयु महिमोल्हास, अप्रतिमरूपविलास, निरुपमभाग्य, अनंतसौख्य; जिनेंद्र तणी पूजा, सकलकल्याणकर्त्री, दुरंतदुरितहन्त्री, स्वर्गादिसुखसंदोहदात्री, अद्भुतप्रभावदिनकरोदयाचलचूलिका, नरकादिदुःखदंदोलिभुजंगीपरममूलिका, संसारसागरनिस्तारणयानपात्रोपमान, कर्म्मकरिघटाविपाटनसिंहसमान, संपत्ति-

लतोद्भेदवर्षांबुवृष्टिविहितागण्यपुण्याकृष्टि, उन्मूलितोपसर्गवर्ग, निरस्तांतराय-संसर्ग; श्रीजिनधर्म्म सकलसत्त्वहितकारी, अतिमनोहारी, सर्वधर्म्मनायक, विवेकिलोकाप्यायक, कल्याणपरंपरादायक, विविधसमृद्धिविनायक, क्लेश-संहतिहिमानीविलयप्रचंडमार्त्तंड, मोक्षप्रासादनिश्रेणिदंड, गुणगणकुसमकरंड, करुणारसभांड, विनयप्रधान, क्षांतिनिधान, पोषितकरुणादिदान, अप्रतिम- 5
भोगपरमनिदान, सर्वसावद्यविरितिसार, अपास्तसंसार, कृतपरनिंदापरिहार, विहितगौरवसत्कार, समभावप्रवरु, सत्यवचनमनोहर, तीर्थंकरचक्रवर्त्ति-बलदेववासुदेवश्लाघनीयपददानदत्त, प्रतिपादितसूक्ष्मासूक्ष्मजीवरक्षाआधि-व्याधिविदलनप्रवण, भव्यप्राणिभावितांतःकरण, सौभाग्यभाग्यहेतु, दुखेंजन-धूमकेतु, पुरस्कृतसंतोष, परित्यक्त[अ]संतोष, अपहरितभ्रम, प्रस्तुतोपशम,१०
विसंवाददर्शितमूक.

अथाचार्य; जीणइं क्रोध अनइ विरोध, ए बिहुंना कीधा रोध, लोक प्रतिइं दिइं प्रतिबोध, माननइं कीधउं अपमान, जे छइ माया तेहना षणिया पाया, लोभनउ कीधउ क्षोभ, धर्मरूपीया गृह तिहनु मोभ, जिन-शासननइं थोभ, सिद्धांति करी प्रवरीप्रवर इशा गुरु जंगमतीर्थायमानमूर्त्ति,१५
कमनीय निजवपुकांति, तिरस्कृत तेजि तिग्मांशुतेजः, परिस्फूर्त्तिकुसुमकम-लिनीवनोन्मूलनमदवारण, विलसितज्ञानकारण, भवजलनिधितारण, चेतश्चम-त्कारण, सकलजीवलोकसाधारण, निरतिचारपंचप्रकाराचारपरिपालितार्जित-कीर्त्तिसंभार, प्रकटितसिद्धांतसार, सदुपदेशमंत्रपदप्रहितकलिकालवेताल-प्रचार, कृततमस्तोमसंहार, उपचितपुण्यप्राग्भार, लीलानिर्दलिताहंकार,२०
निर्विकार, विहितकंदर्पतिरस्का[9-B]र, सकलजगतीतलालंकार, प्रशांतकांता-कार, निरवधिगुणपात्र, समशित्रुमित्रु, चारुचारित्र, अमरनिकरपरिकरित जिम इंद्र, तारागणि परिकरित जिम चंद्र, कमलवनसंशोभित जिम सरोवर, सेवकसमूहि सहित जिम नरवर तिम शिष्यपरिवारि परिकरित गुरु, ज्ञानाचारपरिकरित पंचप्रकारआचारनिरत, पंचमहाव्रतपालक, पंचसमिति-२५
समिता त्रिहुं गुप्तिगुप्ता, ब्रह्मचारि, कूर्म जिम गुप्तेंद्रिय, वायु जिम निरालंब,

समुद्र जिम गंभीर, हस्ति जिम सोंडीर, निरस्तपापांधकार, कलिकालि गौतमावतार, अक्रोध, अमान, अमाय, अलोभ, अमम, अकिंचन, अप्रतिबद्ध, शुद्धाशय, निरवलेप, मुक्तिनगरी प्रति एक वीर, धर्म तणा लघुबांधव, कषायगुल्मवैद्य, कल्याणलक्ष्मीभंडार, संघतिलक, मोक्षयाचक, सत्यकमलराजहंस, क्रोधद्विपसिंह, विषयसर्पगरुड, संसारसमुद्रप्रवहण, इति मुनि.

मुनि महासत्त्व चालतउं तीर्थ, भविकलोकगंगाजल, अपहततमःपटल, अप्रतिबद्धविहार, अंगीकृतसंयममहाभार, दुःकरतपःकरणकृशशरीर, परीषहसहनैकधीर, परमध्यानसंपन्ननिःसंगताप्रपन्न, विषयविषधरविहंगराज, रंजितजनसमाज, व्यपगतमोहनिंदु, तपःकांतिशोषितलोभमद, क्रोधाग्निवध्यापनपयःपूर, मायातमस्विनीसंहरणसूर, मानगिरवरदलनदंभोलि, त्यक्तपुत्रमित्रकलत्रादिसंबंध, मनोगुप्तिवचनगुप्तिकायगुप्तिप्रधान, ईर्यादिपंचसमितिपरिपालननिरत, समस्तसंसारव्यापारविरत, चतुर्विधधर्म्मदेशनाकरणप्रवण, मोक्षमार्गप्रवृत्त, समचित्त, निरीहचूडामणि, पवित्रचरित्र, तेजि मार्त्तंड, सौम्यतां चंद्रः, क्षमां करी पृथ्वी, गंभीरिमां रत्नाकर, निरवलेपतां कमल, स्थिरतां द्रुमंडल, अनियतविहारतां समीर, गुप्तेंद्रियतां कूर्म्म, अप्रमत्ततां भारंड.

अथ श्रावक; जिनशासनप्रभावक, त्रिसंध्यदेवपूजाबद्धावधान, निजगुरुचरणसरोजार्चिचिरीक समान, प्रबद्धमानश्रद्धाकृपानिधान, विवेककुंजरबंधभूधर, रंजितसाधर्म्मिकनिकर, सततप्रवर्त्तितदानप्रसर, साधुसमीपस्वीकृतनानाविधनियमभर, अनित्यतादिद्वादशभावनाभावितांतःकरण, जिनवचनश्रवणवंदनकप्रतिक्रमणादिविशिष्टकरणीयप्रवण, स्वाध्यायपरायण, दानादिचतुःप्रकारजिनधर्म्मकर्म्मोद्यतु, परद्रो[10-A]हविरतु, औदार्यादिनिर्मलगुणग्रामालंकृत, लोकसम्मत, संवेगवासनावासित, उपशमाध्यासित, अवगतजीवाजीवतत्त्व निर्म्मथितमिथ्यात्व, निःकलंकसम्यक्त्वचूडामणि, संप्राप्तसमुद्भूतप्रभूतचिंतितसमवाय, विशुद्धव्यवसाय.

अथ नगरवर्णनं; विचित्रक्रीडाराम सरोवरदीर्घिकाभिराम गंभीर-षातिकावलयपरिमंडलित उत्तंगप्राकारकुंडलित धनकनकसमृद्धिनिर्भर शवभक्तित्रिकचतुष्कचत्वरसभामंडपाद्यलंकार अदृष्टपरचक्राक्रमणचंकार मंडलांतरजनाकीर्ण अतिविस्तीर्णदोसीहट्टी सुवर्णहट्टी रूपहट्टी कांशहट्टी लोहहट्टी दंतहट्टी चित्रकार मणिकार गांधी दोसी फोफल शस्त्र सूत्र घृत तैल कण इत्यादि विचित्र हट्टिकाशोभाविशाल रमणीय चतुःशाल, द्विभूमिक, त्रिभूमिक, चतुर्भूमिकादि नंदावर्त्त, स्वस्तिकादि विचित्र प्रासादमाल, संततमहोत्सवबबाल, चउरासी चहुटां, *....त्तरि पावटा, सिंख्या नही वावि अनेक शत गावि, उत्तंगतोरणप्रासाद, त्रिसंध्य सांभलीइं तूर्यनिनाद, शाकटिक तणा संवाद, लोकतणा प्रवाद, सुविशाल पथिकशाल, निरुपवाद प्रासाद, नानाप्रकार सत्राकार, तिरस्कृतत्रिविष्टप प्रपामंडप, अगाधोदरसोदर सरोवर, इशउं नगर; जिनमंदिर धवलमंदिर राजकुल देवकुल अट्टालप्रासादमाल पोषधशाल लेषशाल हस्तिशाल तुरगशाल, व्यायामशाल टंकशाल आस्थानशाला श्रीकरणसभा व्ययकरणसभा, धर्म्माधिकरणसभा देवकरणसभा पंडितसभा लेषकसभा भांडागारिक कोष्टाकार सत्राकार मठ विहार प्रपामंडप देशमंडप त्रिक चतुष्क चत्वर चतुःष्पथ राजमार्ग गांधिकापण दौष्यिकापण सौवर्णकार कांस्यकार मणिकार पूगीफल तांबूलिक मालिक सौत्रिक ल...+ ककार कांटुकिकार कणकार वेश्याकार चर्मकार मल्लकार खलकार धान्यखलकवाटक वाटिका वापी पुष्करिणी क्रीडातडाग सरोवर.

रमणीयतमोद्देश, निखिलजनपरस्परदीयमानशुभोपदेश, अप्रतिमश्री-संनिवेश, अनवलोकितकलिप्रवेश, अवनितलवनितालंकार, साधुजनश्लाघ-नीयसकलव्यवहार, अनलंघितवृद्धजनसमाचार, अदृष्टदुष्टप्रचार, प्रचुरत-धर्म्मप्रहतदुरंतदुरितप्रसर, नगरपुरमनोहराकारविसर, अविद्यमानजाति-

* मूल प्रतमां बे अक्षरनी केवल शिरोरेखा छे, पण ते अक्षर लख्या नथी.

+ मूल प्रतमां अहीं एक अक्षरनी शिरोरेखा छे, पण ते अक्षर लख्यो नथी.

शं[10-B]कर, उपशांतवेध्यावेध्यव्यतिकर, परपीडापरान्मुख, विविध-समुच्चयग्रामाभिराम, अनुविरतातिमात्रपुष्पफलावनम्रकाम्रतरतरुराजिराजिताराम, स्थानकि स्थानकि दृश्यमान समुल्लसत्पद्मिनीखंडमंडितजलाशयोपशोभित, कारुणिकविवेकिलोकनिचयांचित, निरस्तसमस्तप्रतिभीतअपहस्तितानीति, अतुच्छतरुच्छायासंवरंतपांथसार्थस्तूयमान, स्वर्गलोकोपमानपुरु, पुरंदरपुरुप्राकार, अत्यंततुंगप्राकार, विशालप्रतोलाद्वार अद्भुतसमृद्धिसंभार, सरोवरोद्यानपरंपरामनोहर, अतुच्छस्वच्छपयःपूरपूरितपरिषाबंधबंधुर, जनोर्म्मिसंकुल, त्रिकचतुष्कचत्वरअशेषदेवतायतननवधूपवेलासमयसमुच्छलद्धूपवेलासमयु विरचितमेघाडंबर, धनदाग्रमानधनजनविरस, स्वर्णदंडकलशद्युतिद्योतितनभस्थल, देवकुलमध्यसुसन्निवेश, अमलसुधाधवलितप्रासाद, दूरास्तविवाद, मनोद्धरगंधासिंधुरसंचार, चारुराजवर्ग, प्रध्वस्तसमस्तोपसर्ग, अनेकदुःप्रापदेशांतरीयक्रयाणकनिभृतहट्टराजीविराजित, धार्मिकप्रजावासित, कृतयुगनरेंद्रराजधानीसमान, सततप्रवर्त्तमानमहोत्सवि विराजमान, एवंविध महानगर.

प्रचंडानेकसामंतमंडलिकमंडलीप्रणतपादारविंद, अभ्युदयप्रतापप्रसाधितविष्टपविश्वंभराभोग, निजभुजपराक्रमाक्रांतदुर्प्पिष्टवैरिमंडल, प्रणतजनवत्सल, प्रणयलोककल्पद्रुम, राज्यलक्ष्मीविलासमंदिर, यशःप्रसरपूरितदिगंतर, निरुद्धदुष्टप्रसर, शरणागतवज्रपंजर, कमनीयलक्षणधर, व्यक्तमुक्ताफलस्तोमनिर्मलकीर्त्तिविस्तारि, अनीतिनिशानाशनसहस्रांशुप्रकर, रोहिणीरमणरमणीयगुणग्राम, सकलजनमानसाभिराम, अनुरक्ताशेषपरिजन, अखंडितशासन, परोपकारबुद्धि, प्रारब्धकृतसिद्धि, अर्जितोर्जितप्रसिद्धि, दानभोगफलितसिद्धि, पुरंदररूपातिशायकरूपसंपत्ति, सविशेषमनीषिकोन्मेषसंपन्न, सुधामधुरवचनबंधु, प्रबुद्धमंत्रिमंडलीसमेतु निर्स्सीममहिमप्रभूतप्रभावलब्धमाहात्म्य, अनुपमवैभव, अगण्यपुण्योद्भुतलावण्यवर्यचातुर्यअतिहार्यसुंदर.

अथ राज्ञी; रंभा जिम सहजरूपसंपन्न, पार्वती जिम निःसीमसौभाग्य,

अरुंधती जिम निजकांतपरिचर्यानिरत, सीता जिम विमलशीलालंकारसार, बीज[II-A]तणी चंद्रलेखा जिम सर्ववंदनीय, चक्रवाकी जिम निवडप्रेम, वचनि करी कोकिलास्वरूप, विनय करी वेतसमय, मनःशुद्धि करी गंगाजलमय, इसी पट्टराज्ञी, प्रस्निग्धकेशकलाप, विमलविलुलदलकांचली-विराजित, विशालभालस्थल, आपूरितकामकोदंडचक्रभ्रूयुगल, आकर्णांत- 5 विश्रांतनेत्रपत्र, सरलोन्नतनासावंश, सद्यखंडितप्रवालच्छवि अधरपल्लव, कुंदकलिकाविशद दशनश्रेणि, स्वर्णदर्पणप्रतिम कपोलमंडल, शरीरलक्ष्मी-दोलायमानकर्णपाली, रेखात्रयोद्भासितकंठकंदल, किंसुकतमालबाहुवल्लि, कमलकोमलकरतल, कुंभिकुंभानुकारिपयोधर, वलित्रयाक्रांतमध्यदेश, ह्रदसमानसारनाभीमंडल, कदलीस्तंभसमानजंघायुगल, मदनगजेंद्रस्तंभायमान-10 वर्त्तुलल्घुजंघाविराजित, अत्यारक्तचरणारिविंद, निर्म्मलनखप्रभापहतांधकार, समंतः तपरिस्फुरत्कायकांति, हारार्द्धहारकटककेयूरनूपुरकटिसूत्रकुंडलाद्या-भरणविशेषालंकृतु, सूक्ष्मपक्ष्मलचिंतानुकूलदुकूलाच्छादितशरीर, कर्पूरकस्तूरि-कादिवहनपरिमलाकृष्टभ्रमररिंछोलि, विविधविकाशिकुसममालामालितअदभ्र-विभ्रमतुरगिणलोककुरंगलोकवागुरासकलजनमानसमोहवल्ली, दिव्यदेवानु-15 कारिणी, कामदेवगृहणीप्रतिम, अप्रतिमसौभाग्यनिधानु, वरेण्यतारुण्य.

जिशउ मोरकलाप तिशउ केशकलाप, जिसी अष्टमी तणा चंद्रमानी उपमा तिसी ललाटपट्टनी चंगिमा, जिसां तिलपुष्प तिसी नासिका, जिसां विकसित कमल तिसां मुखकमल, जिसी दाडिमनी कुली तिसी दंतावली, जिशउ सूकडिनउ घास तिशउ मुखवास, जिसी षंजरीटतणी देहयष्टि20 तिसी दृष्टि, स्कंधलंबितकर्णपालिका एवंविध बालिका.

अतिविचक्षण, आम्नायक वापरिउ, कर्णवारनइ वषइ कुशलीउ, वैरजन अनाकलनीउ, गुहिरगंभीर उद्यमप्रधान आरंभयष्टि अभेद्यमंत्र आकृतिवंत कलावंत मर्मज्ञ उचितज्ञ बुद्धिमयरहर इशउ अमात्य; राज्य-प्रासादस्तंभ दृढावष्टंभ स्वामिभक्त प्रजानुरक्त कलाविपुल, चाणक्य जिम25 बुद्धिनिधान, राज्यभारस्वीकारमूलस्तंभायमान, चतुरशीतिमुद्रापरिपंथनैकदक्ष,

सकललोककृतरक्ष, अभयकुमार जिम राज्यपालनोपायसावधान, वृहस्पति जिम निषिलनीतिशास्त्र[II-B]परमार्थ, महत्तमुत्तम, प्रतिष्टुलब्ध, नरेंद्रद्वितीय-हृदयतृतीयनेत्रसमान, अत्युद्भुतचतुर्विधबुद्धिसंपन्न, चपलतरलराज्यलक्ष्मीक-रेणुकानियमनदृढायमानालानिस्तंभ, सकलमंत्रिमंडलप्रधानआज्ञाऐश्वर्यनिधान, स्वाम्यर्थवद्धावधानसम्यगभ्यस्तसमस्तराजगुणग्राम, समविषमकरणचारुकरण-प्रगल्भ, पुरस्कृतन्यायप्रमाण, शष्टपरिपालक, दुष्टनिग्रहक, स्थिरगंभीरप्रकृति, अदर्शिततोषरोषविकृति, सर्वव्यसनविरहित, सुगूढमंत्रप्रयोग, परिणितवय, कुलक्रमायात.

सप्तांगप्रतिष्ठितु, अश्रांतत्रिदंडगलित, गलगर्जितकालमेघ, उद्दंडसुंडा-दंड, तांडवितकर्णतील, विशालकुंभस्थल, स्थूलदंतमुशल, मधुपिंगल-नयनयुगल, शंखकुंदधवल, सिंदूरद्रवोन्मीलितशृंगार, उच्छलितजयघंटा-टंकार, नक्षत्रमालालंकार, आदर्शकमंडलाडंबरो....मरितु, बद्धसुवर्णपट्ट, सर्वांगलक्षण भद्रजातीउ पट्टहस्ति, प्रलंबपुच्छच्छटास्पृष्टभूमंडल, अभ्युन्नता-ग्रकायु, मदगंधलुब्धभ्रमद्भ्रमरतारझंकार, सिंदूरपूरशृंगारितविकटकुंभकूट, उत्तालकर्णतालन्यस्तचारुचामरयुगल, धवलदंतमुशलयुगल, कुंडलीकृतोद्दंड-सुंडादंड, अतिप्रचंड हस्तिराज, वंध्यपर्वतावतार सेनाशृंगार लक्षणविशुद्ध युद्धप्रसिद्ध जंगमसिलोच्चय पराक्रमसमुच्चय भूमिचारीजलद विंशतिनखरु एवंविधु हस्ति.

अथ गजराजः; सिंदूरपूरपूरितकुंभस्थल, अविरलगलन्मदप्रवाह, श्यामलकपोलमंडल, अपरापरमधुसिंधुरक्षोरभक्षदंतमुशल, सप्तांगक्षुण्णक्षोणीत-लसदासमुद्भूतसद्भूतप्रभूतकोपावेश, अंजनाविलशिलाविशालपृष्टिप्रदेश, गलगर्जितध्वानविधुरितु, सकललोककातरजनदुरालोक, यमुनामहासरित्प्र-वाहायमानमंडल, समरसंघट्टप्रचंड, अमंदमदपरिमलपरिभ्रमरभ्रमितनिकुरंब, विरचितनीलपत्रशोभा, प्रलयकालसंत्रासंत्रासितसंभ्रमविभ्रमदिगदंभिप्रकार, स्फारसीत्कारघोराकार, कृतांतावतार, प्रशस्तसमस्तहस्तिलक्षणोपलक्षित, देवा-धिष्टित, निर्दलितविपक्ष.

खरखुरशिषोरगतभूतल, निर्मांसमुखमंडल, लघुतरस्तब्धस्तोत्रयुगल, विस्तीर्णहृदयस्थल, उर्द्धस्कंधबंधुर, विशालशालमान, घृष्टदेशमनोहर, हण-हणारवबधिरितसकलभुवनोदर, अनिवार्यवर्यतेजप्रसर, प्रधानविविध [12-A] क्षणप्रवर, सकलजीवलोकविस्मयकर, परिमितमध्यदेश, पीनतनपश्चिमप्रदेश, स्निग्धरोमराजीविराजमानअतिप्रधाननंदावर्त्तभद्रावर्त्तप्रशस्तसमस्तावर्त्तपरि- 5
कलितशरीर, संग्रामसौंडीर, नववीथीगमनचतुर, तापत्रयक्षम, अर्थचतुर्थ-सृष्टिः, अर्द्धफलगतिविशेषप्रवीण, गिरिवरोत्तुंग, सागरकल्लोलचंचल, मनः-पवनवेगु, देवाश्वसमान, मानसंस्थानसंपन्न, प्रशस्यदेशसमुत्पन्न, सकलाभ्यु-दयकारण, सदा जयवादलक्ष्मीसाक्षेपवीक्षित, आदरशतरक्षित, सुशिक्षित, रेवंतदेवाधिष्टित, विचित्रचित्रकृतदनेकसुवर्णाभरणभूषित, शरच्चंद्रचंद्रिका- 10
भासचामरोपशोभित, परिस्फुरत्कायकांतिझलझलायमान, रूपीदर्प्पणवत् अमूल्य.

सहजवैरं जलवैश्वानरयोः, देवदैत्ययोः, सारमेयमार्जारयोः, सिंह-गजयोः, व्याघ्रगवोः, काकघूकयोः, पंडितमूर्षयोः, सुजनदुर्जनानां तथा ।

गंगा पाषइ जल नही, बंधव पाषइ बल नही, मित्र पाषइ हेज 15
नही, रवि पाषइ तेज नही; अनइ द्वितीय रीत्या, मेघ पाषइ जल नही, बांह पाषइ बल नही, अन्न पाषइ हेज नही, चक्षु पाषइ तेज नही.

सिंहकेसरसटा कोइ वीणइ, ऐरावण तणउ दंतमुशल कोइ उन्मूलइ, फणींद्र तणउ फणामंडप कोइ करि लोलइ, हरि भुजादंडि कोइ डोलइ, मंदिराद्रि कोइ स्थान चालइ, देवेंद्र कोइ सिंहासनतु टालइ, कोइ 20
पृथ्वीतल ऊपाडइ, गिरिवर कोइ तोलइ, मनोव्यापार कोइ झालइ, जिनेंद्र कोइ ध्यानतु चालइ ?

अथ सर्प्प; कज्जलराशिलीलानुकार, यमदंडभीषणाकार, उग्रोग्रविष-विकार, घोरदीर्घफुत्कार, चूडामणिभासुरोत्कटस्फुटाटोप, कृतांतकोप,

गुंजापुंजारुणलोचन, क्रूरावलोकन, चंचल्यमलजिह्वाकरालविकटदंष्ट्राजटाल, कालिंदीतरंगभंगसंकासु, धरणीरमणी तणउ वेणीदंड, उदग्रदर्प्प महाकाय, इशउ सर्प्प.

अथ सर्प्प: अतुच्छदर्प्प, प्रकटितविकटस्फटाटोप, समुल्लसद्बहुलकोप, सजलजलदश्यामल, विद्युल्लतातरलु जिह्वायुगल, शिरोभाग मणिविमल, कांतिप्रकाशितदिग्चक्रवालनिशततत्स्ववालकुशल (?), निरंतरपरिस्फुरद्विषमविषोद्गार, अवनिसर्वत्रवनितावेणीदंडप्राकार, पुच्छाच्छोटनभयंकर, मनःपवनचंचल, स्फारस्फूत्कारराैद्रकराकार, शेष इव विहितकर्णांतरस्वीकार, क्षोणिदिदृक्षानाग[12-B]लोककृतावतार, कृतांतपाशवत् जननिधावक्षतविस्तार, जंगमविषवल्लि, प्रचंडतरपवनलोल, कालिंदीप्रवाहसमान.

नवीनकज्जलजलश्यामल, संतप्तजातजात्यरूपसौदामिनीदामकृत्, अमंदमंथरमंथानमथ्यमानांभोधिध्वानगंभीरगर्जितरवविधुरितभूमंडल, विचित्रसुरपतिचापरचनाजनितजनपोत्सव, प्रच्छादितदिनकरनिकर, बहुलतमप्रचारांधकारितदिगंतराल, प्रवर्त्तितकेकिकुलतांडवारंभसंरंभ, मुक्ताफलहारानुकारिबलाकाराजीविराजित, आनंदितसकललोक, जलभरावनमु हर्षितकार्षकलोकावलोक्यमान, मुदितचातुकमधुरध्वनिमनोहर.

अथ वर्षा; आविउ आसाढ, अंतरंग संबाढ, काटईइ लोह, घाम तणउ निरोह, छासि षाटी, वीयाइं माटी, पाणी भीभलइं, गुडउ गूजरीवर्ण सांभलीइं, दिसि अंधारी, लवइ तिमरी, ऊगतउ स्वच्छ, पच्छिम दिशिइं मच्छ, उत्तरइं ऊनयउ, कालु गयणउ, पंचविध आकाशु दीसइ, तउ सर्वज्ञनीक वरिसइ, पहिलउं छाटणा तणउ सूसूआट, लोक तणउ कूकूआट, नेव त्रत्रडडइं, पोलड षडहडइं, वीज झलहलइं, परनाल षलहलइं, पाणी तणी झूणि झुणइं, भणसाल भीजइं, क्षण एक रेलि लीजइं, मार्ग निःसंचर भेद्या निरंतर, क्यार ऊलटइं, दंताल वाहीइं, क्यार गाहीइं, निशि घोर, नाचइं मोर, चिहुं दिसि वीज झलहलइं, पंषीया कुडहडइ, विणसती वमू छवीइं, भीजते घरि आवीइ, निच्छाह दीवउ जोईइ, अभीष्ट कांता भोगवीइ.

अथ समुद्रवर्णनं; समुल्लसल्लोलकल्लोलमालामालितनभोगण, परस्परसंघट्टसमुच्छलदतुच्छमत्स्यकच्छपकुलकैंकारकलकलु, गुरुतरशिखापयःपूतप्लवमानतुहिनांशुतरणिमंडल, प्रचंडपवनोत्सादितस्वनपरिभ्रमाभ्रंलिहलहरिसंचलितपक्षच्छेदनिभृतनिलीनाचल, ऊर्म्मिजलोच्छलितातुच्छरत्नजालकृतालवाल, बालतरुराजिराजिताचलवननिरुद्धतीरप्रदेश, दिनकरकरनिकरसंपर्कविघटितशुक्तिसंपुटोच्छलितमुक्ताफलविच्छुरितविपुलितसन्निवेश, मेदिनीमेषलाबंधबंधुराकृति, अनन्यसामान्यगांभीर्यसंपन्न, अलब्धमध्यभाग, अलंघितात्ममर्याद, लक्ष्मीनिवास, त्रिविधरत्ननिधान, रौद्ररुद्र.

अथ पंडित; गांभीर्यादिगुणग्राममंडित, अभ्यस्तलक्षणसाहित्यविद्याविशारद, नव्यभव्यकाव्यप्रवीण, समकविज्ञानच्छंदोऽलंकार, नाटकशा[13-A]टकादिविविधप्रबंधस्वमनीषिकोन्मेषतर्जितत्रिदशाचार्यवर्यचातुर्य, षट्तर्कसंपर्कसंजातमतिविचार, शश्वदनेकशास्त्रावगाही, व्यपगतसंदेहसंदोह, निरवद्यगद्यगोदावरीप्रवाहयाहितवावदूकगर्वगरिमास्तंभ, एवंविध अखंडि पंडित.

वन ते वर्णवीइ जे बहु वृक्षवंत, मति ते जे दयावंत, नदी ते जे नीरवंत, मेघ ते जे समयवंत, देस ते जे प्रजावंत, सर ते जे कमलवंत, घर ते जे श्रीवंत, पुरुष ते जे पुण्यवंत, स्त्री ते जे पुत्रवंत, हाट ते जे वस्तुवंत, थाट ते जे सिंदूरवंत, घाट ते जे सूथवंत, भाट ते जे वचनवंत, खाट ते जे घरणिवंत, मठ ते जे मुनिवंत, गढ ते जे अभंगवंत, प्रासाद ते जे दंडवंत, देव ते जे प्रभावंत, भाविक ते जे क्रियावंत, गुरु ते जे चारित्रवंत, दिन ते जे दानवंत, वचन ते जे सत्यवंत, बंधव ते जे स्नेहवंत, व्यवहरिक ते जे नयावंत, घरिणि ते जे शीलवंति, छइल ते जे कलावंत, वेश्या ते जे रूपवंति, वस्त्र ते जे पखालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे आहारवंत, साधु ते जे क्षांतिवंत, करह [ते] जे विगवंत, तुरंग ते जे वेगवंत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मंत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीर्यवंत, राय ते जे प्रशस्य जातिवंत.

कंकुम तणा छडा दीधा, पद्मिनी तणा पगर भरिया छइं, दमणउ कुरबक महमहइ छइ, केतकी तणा समूह, यक्षकर्दम तणां पोतां दीधां छइं, कस्तूरी तणा स्तबक दीधा छइं, वाचना श्रीचंदन तणा प्रावाह वहइं छइं, अविद्ध मौक्तिक तणा चउक पूरया छइं, कर्पूर तणा शंख, कृष्णागर ऊगाहीयइ, छडी दो छडी नर्म पंडिपाद नेत्रजादर, तिलवास-मंडप, पुरुषप्रमाण सिंहासनं, कटिप्रमाण पादपीठ, मेघाडंबर छत्र, गंगायमुना वमरं, मुद्रावतार, सीकिरिघोरंधार, गयद्रसक्क, रायद्रहबोल, रायविभाड, रायपंवायण[1] राजा बइठउ छइ, डावइं पखइं मंत्रि, वीरपउंतार दीवटीया वयगरणा यंत्रवाहक चमरहारि छडायता माणिकविन्नाणी सूयार सूडकर मसाहणी मीठाबोला सरसतरुणा इसी सभा अनइ एतला देस तणउ अधिपति; ते केहा देश, उषामंडल ग्राम कोडि[2], धवलवट ग्राम कोडि ३१, खुरसाणि ग्राम कोडि १८, गाजणा ग्राम लाष २०१, कनूज ग्राम लाष ३६, गौड ग्राम लाष १८, त्रंचूला ग्राम लाष १४, [13-B] द्रविड ग्राम लाष १२, कामरू ग्राम १०, डाहल ग्राम लाष ९, डाहुउ लाष ७, हीरालू ग्राम लाष ५, अंध्रदेश ग्राम लाष ४, उड्डीसदेश ग्राम लाष ३, वामुद्रदेश ग्राम लाष ८०, वयराडदेश ग्राम सहस्र १८, वीडवसदेश ग्राम सहस्र ७०, गूजरात ग्राम सहस्र ७०, पारीयतदेश ग्राम सहस्र ७०, मालव ग्राम लष १८ सहस्र ९२, गंगापारदेश ग्राम सहस्र २४, जेजाहुति सहस्र २४, कुंकण सहस्र ९, मलयदेश ग्राम लाष १, बाबरोल लाष १, टीवी ग्राम लाष ७२, कच्छ लाष ६, गुंदल लाष ३६, अडचिराज लाष ३६, एवंकारइ कोडि ९६ ग्राम, पाटण ७२ सहस्र, एवंविध देशस्वामी चक्रवर्ति:.

कांई तं वचन ऊचरीइ जीणइं विश्व अमृत कीजइ, तं कांई चालीइं

१ आ शब्द पछी मूलमां फरीथी 'रायविभाड' शब्द लख्यो छे ते लहियानी भूल होई लीधो नथी.

२ अहीं 'कोडि' पछी संख्यांक मूकवानो रही गयो जणाय छे.

जीणइ मन दुर्म्मति करतउं षालीइ, तं कांई सांचीइ जीणइ कोइ न वंचीइ, तं काई कीजइ जीणइं साधुवाद लीजइ, तं कांई आरंभीइ जीणइ जगि हाथ ऊभवीइ, तं कांई ऊपार्जीइ जीणइं जशकीर्त्ति लाभइ, तं काई जाणीइ जीणइं विभव आणीइ, तं कांई झूझीइ जीणइं जयत वूझीइ, तं कांई मागीइ जीणइं कुणह पूठि न लागीइं, तं काई घडीइ जीणइं जंवारु जडीइ, तं काई आराधीइ जीणइं परत्र साधीइं, तं कांई सारीइ जीणइं कालि निवारीइ, तं काई पूजीइ जीणइं भूषइं न सूवीइ, तं कांई सातीइ जीणइं दरिद्र निपातीइ, तं कांई लीजइ जीणइ धर्म्म निश्चल कीजइ, तं काई दीजइ जीणइं भव मंडाइ.

जीर्णोद्धारपुस्तकपुस्तिकालेखसंघपूजा, समवसरणभरणपौषधशालानिवेशन, त्रिसंध्यजिनार्चन, प्रेक्षिणिक, आरात्रिकावसर, अष्टाहिका, कल्याणकोद्वहन, तीर्थयात्रा, रथयात्रा, षट्पंचाशत्दिक्कुमारिकास्नात्रध्वजारोपण, महाध्वज, संघपतिता, चैत्यपरिपाटिका, परिधामनिका, उद्यापन, सम्यक्त्वारोपणदेशविरतिप्रतिपत्ति, सौवर्णाभरणकर्पूरकस्तूरिकामंडन, साधर्म्मिकवात्सल्य, अमारिघोषण, पौषधग्रहण, उभयकालप्रतिक्रमणकरण अनेकतपश्चरणाचरण, लक्षनमस्कारपरावर्त्तन, जिनशासनप्रभावना, चतुर्थषष्टअष्टमदशमअर्द्धमासक्षपण, ज्ञानपंचमी, मुकुटसप्तमी, माणिक्यप्रस्तारिका, निक्रमणतप, वर्द्धमानतप, इंद्रियजय, कसायजय, जोगसिद्ध, भद्र, महाभद्र, भद्रोत्तर, सर्वतोभद्र, रत्नावलि, कनकावलि, मुक्तावलि, यवमध्य, वज्रमध्य, चंद्रायण, सूरायण, पक्षोपवास, सर्व[14-A]सुखसंपत्ति, अष्टकर्मसूडण, नीरज, सुखसंपत्तिपरमभूषण, आयुर्जनक, सर्वांगसुंदर, सौभाग्यकल्पवृक्ष, रोहिणीतप, दमयंतीतप, धर्म्मचक्रवाल.

सगवण गज्जण सवर बर्बरकाय चिलाय तुरंड गुंड उड्डकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल अज्जल विल्लल पारस खस लउस हारोसमोसहिम(?) रोम मरुग पल्लव मालव बहलिय सउलिय

जोणग चीण हूण मरहट्ठय कोकय डुंविलय कुलखय खरमुख तुरगमुख मिंढमुख हयकर्ण्ण गजकर्ण्ण प्रभृति अनार्यदेश मनुष्य.

मगधमंडल अंग वंग कलिंग कासी [कोशल कुरु] कुसट्ट पंचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह संडिल्ल मल्य वत्स मत्स [वरणा] दशार्ण्ण चेदी सिंधु शूरसेन भंग [वट्टा] कुणाल लाट केकयमंडलार्द्ध इत्यर्द्धपंचविंशति जनपदा आर्या.[1]

कीर काश्मीर द्रविड गउड जाड लाड लांगल जांगल खस पार्श्व जादव नेपाल अंग वंग कलिंग तलिंग, मागध लाट कर्ण्णाट डाहल कउज मलउ पंचाल गोर्जर नागद्रह ऊंच वरहार मथुरा अवध्या वणारसी चंदेरी मल्लिवाल महबर महोत्र हरियाणउ भयाणउ रत्नपुर कामरू ओडियाण जालंधर सिंधु आरब वंगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थान पुरासन मूलथाण मद्र अंद्र अंतर्वेध विराट करहड वाइव हैव आर्यावर्त्त ब्रह्मावर्त्त त्रिगर्त्त प्रभृति देशाः.

जहिं नगरि दंडु देवकुले, बंधु काव्यरचनायां, छेदना तापताडना सुवर्ण्णपरीक्षायां, चिंता शस्त्रार्थपर्यालोचनि, कलंकु खड्गमंडलि, मारि सारिक्रीडाप्रयोगि, षंडना शालि तुं दाल, क्षउ चंद्रमंडलि, निःपीडनु तेलेक्षु, दंडह छेडु, पत्रंछेद विद्या, भंगु अक्षरकला, त्रासु रत्नघाषाणि, अनीतिस्थिति क्षेत्रमंडलि.

राजहंसगति जिम चालती, मयगल जिम माहती, कामिनीगर्व्व भांजती, चंद्रकला जिम गुणिहिं वाधती, कंचुक ताडती, नयनबाणि जणमण वीधती,[2] वांकउं जोइती, जनहृदय आह्लादती, सीमंतउ फाडती,

१ साडीपचीस आर्य देशोमांथी जे नाम मूल प्रतमां नथी ते मोटा कौंसमां उमेर्यां छे.

२ मूळमां अहीं 'वाधती' छे.

कंठकंदलि नवसरहारि रुलंतइ, जोइ ननु न इसी बाल, सुकुमाल तत-कालउत्सलितकामकाल सुपरीछि सुजाणिमुषि सुपरठी, भर्त्तारनइ चित्त बइठी, अशिथिल अकुटिल सहीरी गुहिरी धर्मपर नियमपर कलत्र; रूपपात्र गुणपात्र प्रसिद्धपात्र सौभाग्यवती[1] प्रसृतिप्रमाणलोचन विक-सितमुखकमल, निर्लो[14-B]म एणी जंघ, समऊरयुग्म कूर्मोन्नतचरण अल्पमाम निर्लोभ दाक्षिण्यपर दयापर मयापर क्षमापर साचाबोली हितबोली मितबोली ऊपजावकि लावकि द्रावकि समयती मानयती सतीमिती अनुरक्ती सक्ती भावती स्थिरचित्त रूपवंत दानवंत सुगण अबोली एकचित्त पुरुषवल्लभ लोकुदुर्लभ उपकारकारणि गुरुयायती ससं-तुष्टी सरली विनोदप्रिय कलाप्रिय जन्मशुद्ध अनुरागविद्ध भलीभोली ऊजली निर्मली कलत्र.

बोलती छउड ऊतारइ, पाहण फाडइ, बगाई करतां कंठ त्रोडइ, जीभइ जव छोलइ, केसि बांधी ज्वरनी बहिन, धूमकेत कुडी आहणइ, कुहणी छेहि पात्र पाडइ, टुंटि छेहि गांठि बोलइ, आंपि हूंतउं काजल हरइ, केसि बांधी शल धरइ, बोलतां मस्तकना केश ऊर्द्ध थाइं, दाघनी बेटी, चालती अलच्छी, मिरी तणी ऊगटि, अंगारनी सुडि, चालतुं पले-वणउं, साप्यात विषघडी छइ, इसी कृत्या स्त्री.

स्वान तणी जिह्वा समान पायतल, कूर्मोन्नतचरण रक्तोत्पलसदृश-नख, हंसगति, बइठी रोमराइ, गंभीर नाभि, मध्यदेशि चफली, ईट सदृश कटि, लुंकालुं पेट, सुवर्णसदृशशरीरकांति, पूर्णकुंभसदृशस्कंध, ऐरावण-कुंभसमानकुचयुगल, श्रावणनी जाती समान भुज, रताल नेत्र, कुंबा समान नमणि, वइरागर हीरा समान दंतपंक्ति, घंटारणितस्वर, त्रस्तहरिणीसदृश-नयन, चापलीलासदृशभ्रूलता, विकसितलोचनवदनकपोल, चैत्रमासि हींडोला समान श्रवण, द्वितीयाशशिसदृशविशालभाल, एवंविध बाला.

१ मूलमां पाठ 'सौभाग्यवनी' छे.

स्त्रीवर्णनं; दृष्टिअंजितसदीटी, करटांशुलिपहिरितसुवर्णमयटसरकटी-बकी, वक्रीकृतभालस्थलअलकवल्लरी, ललाटपट्टमध्यविभागिकृतकस्तूरिका-तिलक, बाहुवल्लरीपहिरितरत्नमयवलय, श्रवणि तारस्फार झलकतां कुंडल, ढीलउ धम्मिल्ल, मस्तकि समारित केशकलाप, कठकंदलि हारि करी शोभायमान.

अथ हस्ती; त्रिदंडगलित त्रिपाटप्रसरित भद्रजाती दक्षिणदंडउ माणिकदंडउ मूलचक्र वनचक्र, तिसोता पाटिलागउ झरइ, त्रिसोत कंठि गलगर्ज करइ, चोषइ दांति, मोकलइ गात्रि, सामलइ वानि, विस्तीर्ण कानि, उन्नति वांसइ, विकट हासइ, प्रतिमा मेरु वृक्ष ति बिंब, सर्वविनाणि प्रबुद्ध, वासरक्षेत्रि सूधउ, कोपि चलइ, तेजि बलइ, दी[15-A]पि कांपइ, पयभारि मेदिनी हांफइ, घांट षलकइ, पागडउं झलकइ, आगलि उन्नत, पाछलि विनत, वृक्ष भांजइ, चमकतउ चालइ, बाहीयउ देषी न सहइ, न स[ह]इ ताज्यउ, न सहइं वाज्यउं, न सहइं रूप, न सह[इ] प्रतिरूप, जिसउ तेजःपुंज, प्रत्यक्ष जिसउ जमराउ.

अथ नगर; प्रासाद प्रतोली राजकुल देवकुल त्रिक चउक चच्चर राजमार्गि गंधिकापण दोसिकापण कणहट्ट सूपकारहट्ट फोफलहट्ट तांबूलिक-हट्ट माली लडूयार सौवर्णिक माणिकहट्ट कंसारा सागउटी चर्म्मकार वेश्यापण आस्थानशाला श्रीगरणा वयगरणा राजकरण रेखकर धर्म्मिधकरण प्रियकरण पंडितशाला लेखशाला भंडारी कोठारी मांडवीया मल्ल हस्ति तुरंग रथ पायक टंकशाली व्यायामकारक सत्रूकारी अन्नाधिकारी प्रपा मठ आराम षोई वाटिका वापी पुष्करिणी सरोवर प्रभृति; आलविणिकार अलविकार कूटकार वंशकार यंत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुंगलकार आउजकार पखाउजकार गीतकार वातकार नृत्यकार पाडकार तुडिकार आरामकार शास्त्रकार मैत्रकार शुद्धकार उद्दीसकार धृतिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षीरकार शम्यकार वस्त्रकार विभूषणकार पुंतार अश्व-शिक्षाकार रथकार शाव्यकार प्रतीहार छुरीकार छत्रधार वाणहीधर

वागधर सुजाण चित्रजाण धातुनिष्पत्तिजाण ज्योतिषजाण मंत्रवादी यंत्रवादी तंत्रवादी धातुवादी अंजनवादी खन्यवादी गजवैद्य वृत्तिवायक वहीवायक आचायक त्रिहायक अंगरक्षक चलवक वस्त्रपरिधायक काठिया लोहटिया दीवटीया मसूरीया तलार तंत्रपाल चामरधार, बालउं अंतेउर, वडउं अंतेउर, कामंतेउर पाहरणि आंषणाइति छाडियाइति चारइति प्रभृति राजलोक.

माली तंबोली छींपा परीयट बंधारा तूनारा सोनारा ठांठार लोहार चमार सुई वालंध कडीया सिलवट उड गांछा कोली टाटिया बाबर डेढ डूब.

राजकुली ३६; सूर्यवंश सोमवंश यादववंश कदंब परमार इक्ष्वाक चाहुमान चालुक्य मोरी सेलार सैंधव बिंदक चापोत्कट प्रतिहार लब्धक राष्ट्रकूट शक करवट कारट पाल चांदिल गो[15-B]हिल गुहलिपुत्रक धान्यपाल राजपाल अनंग निकुंभ दधिकर कालामुह दापिक हूण हरियर डोसमार.[1]

सोगरा अतिफारां प्रधानश्रीखंडमिश्रित त्रांबावनां सुरंग सुभंग सुचंग चीगिरां सालीयां मांगलउरां महवती कोलंबी मिसरी कमरी वाटुलां चीकणां, कूटिणिगल्ल सदृश चुड्यां, गडियालां खडियालां चांप्यां रस मेल्हइं, तांबूल योग्य इशां उत्तम फल.

अथ षांडी; ईसउरी हीउरी बाकनउरी चीकणी नीलीत्रोडी नीलीफोडी, केलि तणइ पानि छांह सूकवी, एला लवंग तज तमालपत्र भरहरावी, उदयभास्कर कर्पूर, करहाडउ चूनउ, इशी प्रधान षांडी.

एकु घृतपूर्ण अनइ शर्कराचूर्ण, सातूअं कचालित अनइ गोघृतमिलित, एक मंडक अखंड अनइ सिंहरुली षंड, एकु त्रपारहेटि दूधइं क्षीरि अनइ षांड मूंकी तीरि, एकु बकातु कंसार अनइ मिरी तणउ संस्कार, एकु शालिदालि अनइ परीसी सुवर्णमय थालि, एकु सुवर्णनिर्मल अनइ सुरहउ परिमल, एकु सर्वज्ञशासन अनइ सद्गुरुपर्युपासन.

१ आ यादीमां पूरां छत्रीस नाम नथी.

अथ वृक्षवर्णनं; पुष्पित फलित मंजरित गुंछित गुल्मित पल्लवित बहुलछाय शीतलछाय सश्रीक शाद्वल विचित्रपत्र बहुलपरिमल पवित्र सफल अनेकपथिकविश्राममूर्त्ति विचित्रविहंगमाधार नयनानंददायक मनः-संतोषदायक एवंविध प्रधानपालिवृक्ष पारिजातक किरात सुवर्णजाति यूथिका जपा कुंद मचकुंद कणवीर कर्णिकार मंदार पाटला मकुल कमल वालक शतपत्रिका वर्णिका मल्लिका मालती पारधि अतिमुक्तक केतकि तिलक चंपक मरुबक दमनक करणक कदंबक अशोक प्रभृति.

चंपक राजचंपक सुवर्णचंपक पारिजातक कर्णिकार सिंदुवार मंदार अशोक तिलक विरहक कुरबक वकुल सरल मंधूक पुन्नाग नाग नारंग प्रियंगु करवीर जंबीर कदंबक कलंब लिंब वरण कंकिल्लि अंकुल सल्लकीप्रमुख वृक्षाः; कुंद मुचकुंद मंदार मल्लिका चंपक कुब्जक श्री-खंडिका कांचनार कणवीर सिंदूरी जपाकुसुम, पीठिका वर्णप्राय पुष्प बाबची मरुयउ दमणउ देवगंधारि सुरभिपत्रिका.

अथ वस्त्र; देवांगचीर चीनांशुक पटांशुक पट्टदुकूल पट्टहरी [16-A] मदव गजवडि सुवर्णपडि पंचवर्णपडि कृष्णपडि माठउं जादर भाती-गतुं जादर पोती पारेवउं पट साउल मेघाडंबर संझारावउं रावेटउं कणवीरं सौवन्नच्छलेउं मनेत्र नीलउं नेत्र रातकडाहउं वइंगणीउं कही गरूडसन्नाह उभयखर्म मरगद गुच्छ पटउलउं सावपट्ट पट्टहीर सूहवी चोपाच्छुडहुं सवाडी चंपावती स्वेत सिलाहट्टी सचोपकाची मूलवटणी सारी षीतीत कतियाणी गोजी उलसूत्री स्वर्मु समुद्रकोलाहल धडियं वीणउसीउं चीणउसीउं मलउसीउं आउंचीयउं मूगनउं मयउं मंगलिकं मेदियउं सीलउरं सिंहलउरउं वइरागरउं हीरागरउं फुल्लयागरउं पूतलीउं बहूमूलं घूणोलियं मीणीयं कालं फूटडउं रातउं फूटडउं सूपउती मेघावलि मेघडंबर पद्मावलि पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि.

हार अर्द्धहार प्रलंब प्रालंब नवसर कटक कंकण केयूर नूपुर कर्णकुंडल एकावली कनकावली रत्नावली वज्रावली पत्रावली चंद्रावली

सूर्यावली नक्षत्रावली श्रोणीसूत्र कांचीकलाप रसना किरीट चूडामणि मुद्रानंतक दशमुद्रिका अंगुलीयक अंगूथला हेमजालक मणिजालक रत्नजालक मानक गोपुच्छक उरस्त्रिक मगध वर्ण्णसर कदंबपुष्प करुलभंगक अभ्रमेषक नुटक संकलिक श्रवणपीठ श्रवणपाल वैष्टिक हस्तसंकलिका पादसंकलिका[1] उत्तरिका पादक ग्रैवेयक सर्वहार मध्यनायक कृष्णनायक नीलनायक पीतनायक श्वेतनायक रक्तनायक वृत्तनायक तिस्रनायक चतुस्रनायक त्रिसरनायक आद्यंगुलीयक मध्यांगुलीयक सर्वांगुलीयक लघुचूडक मुक्ताचूडक सुवर्ण्णचूडक मोतीसरी करंगी कंकणी पादवेष्टक पोलरकत्रिक चतुसरक नवसरक अष्टादशसरक इति आभरणानि.

अथ वस्त्र; देवदूष्य चीनांशुक गोजी चउडसी नीलनेत्र सचोपां पाटणीयां हीरपट्ट साउला विलिविलिया नर्म्म खमी उभयषर्म्म वामषर्म्म वामसऊआ मुगवनां मांगलियां वयरागरां हीरागरां पुष्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट धोतपट्ट राजपट्ट गजवडि हंसवडि बोरिआवडी ऊमावडि मूमावडि पूमावडि सिलहटी कपूरीयां चउकपडीयां पोतिमां वक्रकोटां नागवटां सारनाला खासटां अगिहिल कबीच संजरामां मदवी फूलपगरीयां सारीपी तिलवास गब्भसूत्र शजिउ वयराजीउं महिदउरउं तीतत्रागिउं कचीयंउं पीठ समुसी पीठ देवगि[16-B]रुं मंदील होलीउं तलपकाउ नर्म्म हरीफ प्रभृति वस्त्रजाति.

मरकत कर्केतन पद्मराग पुष्पराग वज्र वैडूर्य सूर्यकांत चंद्रकांत नील महानील इंद्रलील शवकर विभकर ज्वरहर रोगहर शूलहर विषहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हंसगर्भ पुलक अंक अंजन अरिष्ट चिंतामणि.

चउरंगली पाली, जडी मूठि, सारऊ आर, त्रिहउबंधि जलोई, वीछडी षेलीन, सली षीली, झलकती पाली, अणीयाली धाराली ढलकती धार, झलकती मूठि इसी छुरी.

१ हस्तप्रतमां ' पोदसकलिका ' छे.

षांडव सीलोह, पाटणी पोगर, परंडीय पोगर, त्रिजड ऊधवट कूंकूलोल पडीयार एवंविध खड्ग.

पटुपटह मृदंग करडि मर्द्दल वेणु तलिमताल कंसाल झल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहभंभ हड्डुक्क ढक्क बुक्क त्रंबक काहल काहली बरगां प्रभृति वादित्र.

अथ रोगा; कास स्वास ज्वर भगंदर गुल्मवात गल्लवात रक्तवात भस्मवात उष्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हर्षावात आमवात शोफवात विगंछावात कफवात शाकिनीवात रक्तपित्त अम्लपित्त राजिकापित्त कृमिकुष्टु श्वेतकुष्टु कृष्णकुष्टु खसकुष्टु महोदर जलोदर कठोदर वातोदर भगंदर अतिसार मूत्रकृच्छ्र उदरशूल हृदयशूल स्कंधशूल पृष्टशूल शिरःशूल शिरोरोग नेत्ररोग कर्णरोग दशनरोग उष्टरोग कपोलरोग जिह्वारोग कंठरोग प्रमेहरोग ग्रंथिरोग अरोचक क्षयरोग एवंविध रोगाः.

अथ अमात्यः; अनि वचिक्षण अम्नाय व्यापरिउ, कर्णवारनइ विषइ कुशलीउ, वैरिजन अनाकलनीय, गुहिर गंभीर उद्यमप्रधान आरंभयष्टि अभेद्यमंत्र आकृतवंत कलावंत मर्मज्ञ उचितज्ञ समर्थ बुद्धिमयरहर इशउ अमात्य; राज्यप्रासादस्तंभ दृढावष्टंभ स्वामिभक्त प्रजानुरक्त कलाविपुल, चाणाक्य जिम वुद्धिनिधान, राज्यभारस्वीकारमूलस्तंभायमान, चतुरशीतिमुद्रापरिपंथनैकदक्ष, सकललोककृतरक्ष, अभयकुमार जिम राज्यपालनोपायसावधान, बृहस्पति जिम निखिलनीतिशास्त्रपरमार्थ, नरेंद्रद्वितीयहृदय तृतीय नेत्र समान, अत्युद्भुतचतुर्विधवुद्धिसंपन्न, सकलमंत्रिमंडलप्रधान, स्वाम्यर्थबद्धावधान, सम्यगभ्यस्तसमस्तराज्यगुणग्राम, पुरस्कृतन्यायप्रमाण शष्टपरिपालक दुष्टनिग्रहक स्थिरगंभीरप्रकृति अदर्शिततोषपोषविकृति, सर्वव्यसनविरहित गूढमंत्रप्रयोग परणितवया कुल[17-A]क्रमायात प्रधानकुलीन आम्नायक व्यापारिक करणाचारकुशल अनाकुलनीउ

स्थिर गुहिर गंभीर उद्यम[नि]धान आरंभसिद्ध भेदक अभेद्यमंत्र आकृतिवंत कलावंत अतिनिपुण अतिवचक्षण मर्म्मज्ञ सदर्प्प समर्थ विश्वेश्वर बुद्धिमंत बुद्धिमयरहर.

अथ राजप्रस्थानं; पवनोद्धतधू[लि]पटसहस्रसंछन्नतरणिकिरणि, सुभटविमुक्तहक्काबुक्कारविशितकातरजन, भंभामृदंगभेरीभुंकारबधिरीकृतदिगंतर, रथचक्रघनघनारवि पूरितगिरिधरणिविवरउत्फालितरजःपुंजमलिनीकृतगगनमंडल, मत्तमयगलवलनपरिवरितु वसुधातल, उद्भटभृकुटिकोटिसंटंकभयंकरसुभटकोटिपरिकरित, प्रगुणितनिशितशस्त्रावलीसमन्वित हूतउ राजा चालिउ, त्रंबक तणे धूसके सूर्यवृत्ति प्रकटितउ, दुर्जनजनक्षोभ उपजावतउ, अंगजितमल्ल हुतउ, वंदिवृंद तणइ जयजयाकारि चालइ, जाणांइ किरि ब्रह्मांड फूटइ लगउं, नक्षत्र त्रूटी भुइं पडइं लगां, गिरिशिखर खडहडइ लगा, सधर धरा फाटी पातालि प्रवेस करइ लगी, मत्स्यगिलागिलि हुइ लगी, आपोयरि थाइ लगी, असमंजस कांई नीपजइ लगुं, इशउ प्रलय समान होइं प्रस्थानउं करइं.

अथ धर्म्मप्रभाव; क्षीरसागरविस्तीर्णनिष्कलंककुल, लोकमाहि विक्षाति, विशुद्ध जाति, भवनोद्धारधार, सकललक्षणप्रधान, समचतुरस्रसंस्थान सुवर्ण्णमयरजतकणगणनागण्य, सर्वांगसमुल्लसल्लावण्य, अद्भुतभाग्यलभ्यज्येष्ठभोगोपभोग्ययोग्य, आजन्मआरोग्य, सम्यग्रूपदेशपेशल, सकलकलाकलापकु[श]ल, विषमकार्यपर्यालोचनप्रत्यल, चतुर्विधु बुद्धिबल, जगरक्षण-क्षोभक्षम, निस्सीमपराक्रम, जनितविपक्षसंताप, अप्रतिहतप्रताप, अकृतस्वपरविभाग, लब्धजनानुराग, आर्त्तजनशरण्य, प्रद्योतन, निरपेक्षदाक्षिण्य.

ज्ञायमार्गसार, विवेकादिपवित्रितसमाचार, नित्यप्रवर्त्तमानमहोत्सव, अपरिमितविभव, प्रियवचनप्रधान, अश्रांतदान, हरहाससंकाशु यशोविभास, एवंविध पदार्थ धर्म्मप्रभाव पामीइं; अनइ पिता सर्वशो पूरक वात्सल्यजनक, मनश्चिंतितार्थसंपादनकामधेनुसंवादिनी जननी, सुस्वभाव भगिनी,

गुणरत्नमहार्णवनिविडप्रतिबिंब बांधव, मंगलशतवाहिनी निर्मलशील-पवित्र समरूपयौवनविलास प्रेमाकुल कलत्र, विनी[17-B]तविनय सर्व-गुणोपेत सच्चरित्र अव्यभिचांर मित्र, अनुरूप पवित्र परिवार, नरसहस्र-मौलिविश्रांतशासन प्रभुत्वपरिपालन, सुधाधवलित सप्तभूमिक भवन, गल-द्बहुलमहागलपरिमलमिलदलिकुलमलिनकपोलस्थली करिकरभमंडली, सुवर्णमयादर्श विभूषितललाटपट्ट, तुरंगपूरितगमनमनोरथ एवंविध रथ धर्म्मप्रभावि पामीइ.

अथ रावण; लंकानगरी राजधानि, त्रिकूट गढ, अनेकि अक्षौहिणी दल, अढार कोडि तूरी, जीणइं मृत्यु बांधी पातालि घालिउ, नव ग्रह षाट तलि बांध्या, वाउ देवता आगणउं बुहारइ, ८४ मेघ छडउ दिइं अनइ बुहारइं, वनस्पति फूलपगर भरइ, आदित्य रसोइ तपइ, चंद्रमा घडी घडी अमृत झरइ, यम पाणी वहइ, सात समुद्र मांजणउं करावइ, मातर आरती ऊतारइ, विश्वकर्म्मा शृंगार करावइं, ३३ कोडि देव अस्थानिउ लगइं, गंगायमुना चमर ढालइं, तुंबर गाइ, नारद नाद करइ, सरस्वती वीणा वाइ; रंभा नाचइ, बृहस्पति पुस्तक वाचइ, इंद्र माली, ब्रह्मा परोहित, भृंगिरीटि ऋषि अचमन करावइ, जीमूत रिषि छोरू षेलावइ, कामदेव कटारउं बांधइ, वासुगि षाट पहरउ दिइ, कुलिक उप-कुलिक पाय तलहासइं, अर्द्धप्रहर श्रीखंड घसइ, वैश्वानर वस्त्र पषालइ, चामंडा तलारुं करइ, विनायक गईभ वारइ.

अविरूप मनुष्यवर्ण्णनं; अलक्षण सविहउं मूलिगी राजधानी, जिशउ डुंगर ऊपरि बलतु दव तिशउ पीत वर्ण्णक, काकवत् स्वर, माजरि नेत्र, उष्ट्रवत् लंब होट, मूखकवत् लघु कर्ण्ण, मुखकंदराबहिर्निर्गत दंत, पेटिली कोलवत् ह्रस्व जंघ, आटेरणवत् चक्रचरण, सूर्प्पाकार पदतलयुगल.

अथ वनवर्ण्णनं; एलावन लवंगवन लवलीवन कदलीवन कक्कोलवन जातीवन पूगीवन नालिकेरीवन खर्जूरीवन अक्षोटवन वाइमवन द्राक्षावन केतकीवन श्रीखंडवन पिंडीतगरवन कालागुरुवन कर्पूरवन.

नारंग लवंग प्रियंग पूग पन्नाग नाग साग मागधी धव अर्जुन सर्ज खर्ज खर्जूर कर्पूर माल्लर बीजपूर कृतिमाल तमाल नक्षत्रमाल नक्तमाल प्रियाल हिंताल ताल तमाल सरलि कदलि निचुलि वेतस चंपक सहकार अगर तगर कृष्णागर खदिर बदिर बाण बंधूक कदंब निंब बिंब जंबु जंबीर वानीर कणवीर रुद्राक्षा द्राक्षा अक्ष प्लक्ष अखोड वट कटुज पटोली एनस वेतस [I8-A] पलाश सल्लकी अंकोल कंकोल अंकुल्ल किंकिल्लि नागवल्ली गिरिकर्ण्णिका[र] कर्ण्णिकार सिंदुवार मंदार कोविदार कल्हार दाडिमी टींबरणि करणि करणी कउठ अश्वत्थ किंकिरात पारिजात सिंसिपा जपा पाटला सप्तला सप्तच्छद कुंद मचकुंद चंदन कदन केसर चक्र केतकी मल्लिका मालती ग्रंथिपणी यूथिका स्थलकमल तिलक वकुल सेफालिका वनशालिकापुरस्सर विनिद्र पुष्पित फलित मंजरित गुंठित गुल्मित पल्लवित स्निग्धछायाशीतल सश्रीक शाड्वल निचितपत्र बहुलपरिमल पवित्र सपुष्प सफल अनेकिपथिकविश्रांतमूर्त्ति विविधपक्षिकुलाधार दृष्टिआनंदक मनसंतोषज एवंविध प्रधान वृक्षा.

हेला तउ महेश्वर तणी, सृष्टि ब्रह्मा तणी, प्रज्ञा वृहस्पति तणी, प्रतिज्ञा फरुशराम तणी, मर्यादा समुद्र तणी, दान बलि तणउं, अवष्टंभ मेरु तणउ, गरुयाई गगन तणी, तेज तु सूर्य तणउं, क्षमा धरणि तणी, परिमल पारिजातक तणउ, निर्म्मलता गंगा तणी, विवेकता नारायण तणी, वेग मन तणउ, मानु दुर्योधन तणउं, बल तीर्थंकर तणउं, सत्यता हरिश्चंद्र तणी, साहस विक्रमादित्य तणउं.

कलशांत प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, बंधनांत नियोग, विपदांत खलमैत्री, गजांत लक्ष्मी, नायकांत समर, हट्टांत व्यवहार, कसवटांत सुवर्ण्ण, राजसभांत वाद, प्रवासांत स्नेह, नामांत जोस, हारांत शृंगार, वज्रांत गणित.

मदहीन हाथीउ, लज्जाहीन कुलवधू, नीतिविकल राजा, दानहीन नायक, खासणउ चोर, मंत्रि बहिरउ, आलसू कमारउ, दुर्विनीत चेलउ, ध्वजरहित देवकुल, आज्यरहित भोजन, लवणरहित रसवती, आकृतिहीन सरस्वती, छंदरहित कवित्व, क्षमारहित तपु, यौवनरहित वेश्या, वेग-रहित घोडउ, गावडीउ घोडउ, गृहस्थ माथइ बोडउ, स्त्री कानि छूटी, ध्वज अंतरालि त्रूटी.

अथ प्रासाद; घरसिल आडघर जावुंदउ कणाली गजपीठ अश्व-पीठ सिंहपीठ नरपीठ कुंभकलस कवालि मांची अउरसिहर जंघादउ ढाउ भरणीउ माया कयकयवालि कूणघरउ छाज रहेयालि खीखिरा तुंग दांति कडां तिलकडां प्रत्यगरेष आमलसारउ पद्मसिला कलस.

अथ देवगृहाणां नामानि; केसरि सर्वतोभद्र नंदन [18-B] नंदि-शाल, भूधर स्वस्तिक अवंतक गिरिकूट वर्द्धमान नंद्यावर्त्त पुष्करपत्र आलोकदर्शन विमुक्त कुबेरच्छंद स्त्रीविहारक्षम.

अथ हस्तिवर्णनं; सप्त हस्त उन्नत, नव हस्त आयत, त्रीणि हस्त विस्तारि, दश हस्त परिधिपरिकरित, सप्तांगिहिं भूमि स्पर्शतउ, चत्वारिंशदधिकगजलक्षणचतुःशती दर्शतउ, किल ऐरावणद्वितीय इशउ इस्ति भद्रजातीउ.

जनि जनितबहुलकौतूहल, विस्फूर्जितगलगार्जकोलाहल, सुंडादंडा-ग्रलग्नभूमंडल, सरलधवलस्थूलदंतमुशल, मधुगुलिकापिंगलनेत्रयुगल, उत्तंग-कुंभस्थल, सुकुमालगलमंडलगंडशैलविपुलगंडतल, गंडतलगलद्बहुल-मदजलसौरभोद्भ्रांतभ्रमरपटल, भ्रमरपटलोच्छालितमधुकरझंकारकलकल, झंकारकलकलश्रुतिरसोत्तंसकर्णतालयमल, सर्वांगि मांसल, कुंडलितकोदंड-चंडाकारपृष्ठप्रदेशपेशल, अतिऊर्जबल, कृतांत जिम निरर्गल, मत्तमयगल, विचित्रभंगिश्रृंगारित, गजाभरणभारित, स्थूलकुंभस्थलस्थापितस्थासक मंडल, शंखचामरोपशोभित.

अकालि प्रलयकाल करतउ, निरंतर मद झरतउ, जलधर जिम गर्जतउ, अपर गज तर्ज्जतउ, पर्वतखंड पाडतउ, वनषंड त्रोडतउ, सरोवर फोडतउ, तरुनिकर मोडतउ, वल्लिगहन त्रोडतउ, पाषाण रोडतउ, सुंडादंडि आच्छोडतउ, गिरिनदी विलोडतउ, महाद्रह डोहतउ, साहस्सिक तणां मन खोहतउ, तुरंगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ, सर्प जिम वलतउ मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ, लीलां चालतउ, रभसि माल्हतउ, क्रीडा खेलतु, सूत्कार मेल्हतउ, पर्वत जिम दलतउ, पवन जिम चालतउ दंताग्रि विंधतउ, पाडतउ फोडतउ दारुतउ मोरुतउ चूरतउ स्वरतउ, जिशउ कृतांत तिशउ दुर्द्दांत, चतुर्द्दंत, अति बलवंत, परम विक्रांत, हस्ति नामइं चंद्रकांत.

मठ देवकुल खडहडत पाडतउ, चतुष्पद दडवड द्रडवडतउ, घलहल घृत तैल भोजन ढोलतउ, खलहल ढलत पर्द्दकराशि रालतउ, मसमसत क्रयाण कर्द्दमतउ, टसटसत वनभंगि नर्दतउ, सुंडादंड आच्छोडतउ, परचक्र जिम भांड भांडइ फोडतउ, लागउ नगर भांजेवा, जन गांजेवा.

पडिकार अडवडत निवड कराग्रि काढतउ, चडत पडत चटुल चरणाग्रि चांपतउ, कडयड करत हाट कस[19-A]रतउ, तडतडतउ आंत्र त्रोडतउ, रसमस कसत शस्त्र संहतउ, न गणइ, न गांठइ.

आज संसारसमुद्र निस्तरिउ, आजु दुक्ख जलांजलि दीधी, निवड कर्म्मनिगड त्रोडी, मोहमहाराज तणउं शासन चालिउं, मदनमंडलिक आज्ञा भागी, मृत्यु गलहविउ, पापअवधि पृथ्वी घातिउ, अन्यायादेश नीसारिउ, मिथ्यात्वतिमिरपटल छूटित विघटिआं, असुभ वासनासिउं रूसणउं कीधउं, घोरांधकारि नरकमंदिरि द्वारि मुद्रा दीधी, पातक ऊथाप्यां, स्वर्गलोकभुक्ति करी पाताल सांचरी, मुक्तिसौख्य रहइं संचकार दीधउ, विधिमार्गवर्द्धापनक दीधउं, नीतितोरण भरिउं,

विवेकराजा कलकलाशब्दि राज्याभिषेक कीधउ, मन तणा मनोरथ पूगा, धर्म्मराय तणइ घरि घीइं उंबर धोयउ, चिंतामणि करितलि चलिउ, कल्पतरु गृहांगणि आरोपिउ, कामधेनु घरि बाधी, रत्न तणउं निधान ऊघडिउं, आज त्रैलोक्यराज्याभिषेक पामिउं.

हा रूपमन्मथ, हा गुणमणिरथ, हा उत्पललोचन, हा अमृतवचन, हा कमलनालसरलभुजदंड, हा लावण्यरसकुंड, हा सुकुमारशरीर, हा महोदधिगंभीर प्रतिपन्नसार, हा सर्वगुणाधार चंद्रवदन, हा सौभाग्यभवन सस्नेहमन, हा प्रियसर्वजन, हा परोपकारवत्सल गुणरत्नरोहणाचल, हा जगद्भूषण गतदूषण, हा निजकुलावष्टंभस्तंभ, हा हृदयवल्लभ, हा सर्वांगसुंदर, हा गुणगणप्रियंगुमंजरि, हा गजगमनि, हा तरुणजनमनमोहनि अमृतवचनि, हा केसरिकिशोरकृशोदरि रंता सहोदरि, हा प्राणवल्लभ, हा मंदभाग्यदुर्लभ, हा महाभाग्य, हा सौभाग्य, हा रमणीयतारुण्य, हा स्पृहणीयलावण्य, हा कंदर्प्परूप, हा लोचनामृ[त]कूप, हा भुवनभूषण, हा निर्दूषण, हा बद्धवीरवलय, हा कीर्त्तिनिलय, हा पुंडरीकलोचन, हा लोकलोचनलोभन, हा सर्वांगसुंदर, हा क्षामोदर, हा महाबलपराक्रम अनुल्लंघितकुलक्रम, हा श्रृंगारसागर, हा परमनागर, हा सकलकलाविचक्षण, हा सर्वांगीणलक्षण, हा नयनिधान, हा विश्वसनीयसंविधान, हा विचित्रचरित, हा दूरीकृतदुरित, हा सकलजनवत्सल, हा प्रकृतिप्रांजल, हा निर्मलगुणसमुद्र, हा अक्षुद्र, हा महासत्त्व, हा ज्ञाततत्त्व, हा मत्तमतंगज[19-B]गमन, हा अमृतवचन, हा चंद्रवदन, हा कुंदरदन, हा प्रतिपन्नपालन, हा नीतिलालन, हा कुंकुमलोल, हा चंदनमलयाचल, हा कस्तूरीकुरंग, हा कर्पूरकाबेरीतीर, हा श्रृंगाररसभृंगार, हा त्यागभोगवीरविलास, हा लीलानिवास, हा हृदयविश्रांत, हा कांत, क्व गतोसि ?

अथ बालकत्वं; सचित्कारररोदन, जननीस्तनदुग्धपान, मंदमंदपादचरणचंक्रमण, धूलिधूसरितबालकमंडलीमध्यरमण मन्मथ[व]चनोल्लापन, लालासहस्रमोचन, हा वत्स, हा स्वच्छ, हा बाल, हा सुकमाल, हा वीर,

हा धीर, हा अप्रतिमप्रताप, हा स्निग्धालाप, हा कनकगौर, हा चतुर-चेतश्चौर, हा शरणागतवज्रपंजर, हा पुरुषकुंजर, हा चकोरचाणक्य, हा सज्जनमाणिक्य, हा उद्दंडबाहुदंड, हा लोचनामृतकुंड, हा जननीवत्सल, हा अविज्ञातच्छल, हा मदनमुद्रावतार, हा भद्राकार, हा ललितशृंगार, हा भुवनालंकार, हा प्रतिपन्नसागर, हा सुविचार, हा कुमार, क्व गतोसि ?

हा कांते, हृदयविश्रांते, हा प्रिये, हा कदाचिदप्रदर्शितविप्रिये, हा प्रियतमे, हा सर्वोत्तमे, हा दयिते, हा प्राणहिते, हा सहधर्मचारिणि, हा प्राणाधारणि, हा सौभाग्यसुंदरि, हा कृशोदरि, हा पीनपयोधरि, हा पक्वबिंबाधरि, हा कंदर्प्पदीपिके, हा लावण्यकूपिके, हा कर्णांतविश्रांत-लोचने, हा अमृतवचने, हा पूर्णचंद्रवदने, हा लीलागतिगमने, हा विकट-नितंबे, हा अप्रतिबिंबे, हा प्रेमपात्रि, प्राणदात्रि, क्व गतासि ?

अथ श्राविका; जिनमंदिरावतारणी, उदारशृंगारहारिणी, अलंकार-संभारधारिणी, कौसुंभरागांशुकप्रावारिणी, हंसलीलाविहारिणी, चरणज्ञा, ज्ञानमंजरी, झात्कारकारिणी, पटलिकाद्युपकरणपुष्पमालाधारिणी, विधि-मार्गानुसारिणी, वीणास्वरमधुरस्वरोद्गारिणी, धवलमंगलोच्चारिणी, स्वस्तिक-दानविज्ञानविस्तारिणी, जिनेंद्रपूजाभंगिविस्तारिणी, जिनमंदिरांधकारदीप-कलिकानुकारिणी, आभरणकिरणसंचारिविद्युल्लतानुकारिणी, रूपरमणीयकि अप्सरोजनानुकारिणी, सकलजनमनश्चमत्कारिणी, सुखमभ्रांतकल्पतरुलता-संचारिणी, तत्कालमिलितश्रीरक्तोत्पलवनानुकारिणी, जीहं अपूर्व शृंगार छाजइ, किशउ जं सर्वज्ञ तणी आज्ञा मस्तकि वहइं, सर्व काल एह जि मस्तकि पुप्प तणी माल, देवगुरुप्रणामक्षणि क्षोणीतलसंघट्ट ललाटि किणपट्ट, कस्तूरिकाम[20-A]यवट्ट, देवगुरुवदनावलोकन तीणइं आंजीउं लोचन, गुरुजनव्याख्यानश्रवण प्रधानकर्ण्णभूषण, वचन अनुकूल, वदन-कमलि तांबूल, धवलिमंगलोच्चार, कंठकंदलि अलंकार, विश्रब्धसम्यक्त्व

संस्कार, वक्षःस्थलि मौक्तिक तणउ हार, जिनमंदिरि नृत्यकलाव्यापार, बाहु आभरणसंभार, करकमलि दानव्यसनावतार, अंगुलीयकालंकार, लज्जाभरमंथरतरसंचरण पदपद्मि आभरण.

आकाशगामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामशामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मनःस्तंभिनी जलस्तंभिनी आग्नेयी वायवी वर्षणी कौमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरिदारणी अवलोकिनी भुजंगिनी गरुडवाहिनी संसाधिनी सुरध्वंसनी बंधिनी वारुणी दारुणी भास्करी शंकरी जया विजया घोरा कौबेरी प्रवाही मदनसेना बलमथनी गौदिनी पेसानी वागेश्वरी सिद्धावी अजरामरा इत्यादि महाविद्या.

अथ दुर्जन; कठोरालाप उलंठवृत्ति पैशुन्य भक्षकलोल कलहकंदलप्रिय उत्तालप्रकृति उत्तानपात्र धनमदोद्धुरकंधर अलीकबोला अहंकारी विद्यालवदुर्विदग्ध परपरिवाददशवदन परदोषान्वेषण सहस्रलोचन परचित्तचित्तापहारि सहस्रबाहु क्रूरदृष्टि दुरात्मा दुराराध्य दुरध्यवसाय दुरारंभ उदरंभरि चक्रपरमाधार्म्मिक धूर्त्तकितव कुंकुट निशाचर निस्त्रिंश पापव्यापार पारदारिक.

पाडउ मांकइ षीराप्राणि, वच्छ मांकइ दूधप्राणि, धनवंत मांकइ धनप्राणि, राजा मांकइ देशप्राणि, राजपुत्र मांकइ सूरताप्राणि, चोर मांकइ मावाप्राणि, पायक मांकइ नायकप्राणि, वधू मांकइ पीहरप्राणि.

शक्ति; उच्छाहशक्ति मंत्रशक्ति यंत्रशक्ति तंत्रशक्ति विद्याशक्ति उषधप्रयोगशक्ति धनशक्ति शरीरशक्ति सामर्थ्यशक्ति सहायशक्ति आत्मशक्ति परशक्ति.

हास्योक्ति वक्रोक्ति च्छेकोक्ति संकेतोक्ति दूतोक्ति प्रीत्योक्ति प्रणयोक्ति चित्तोक्ति भेदोक्ति, उक्तिवैचित्रीकुशल.

हार त्रोडती, वलक मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकिणीकलापु च्छोडती, माथउं फोडती, वक्षःस्थल ताडती, कुंतल-कलाप रोलती, पृथ्वीतलि लोलती, सकज्जल बाष्पजलि कंचुक सिंचती, दीन बोलती, सखीजन अपमानती, पुनः पुनः रोयती, अपरापर दिगमंडल जोयती, पानीयरहित मत्स्य जिम घो[20-B]लती, क्षण एक रोयइ, क्षण एक जोइ, क्षण एक हसइ, क्षण एक विकसइ, क्षण एक आक्रंद करइ, क्षण एक निंदइ, क्षण एक बूजइ, तसु चंदन तावइ, मृणालनाल जाल मेल्हइं, चंद्रयोत्स्ना ज्वलइं, चंद्रोपल बलइ, हार दहइ, कुंकुमस्तबक न सहइं, जलसिक्त वस्तु दुःक्ख करइ, जे शीतलोपचार ते भजइं विकार, इशइ मानि प्रज्वलितउ बहल बहल स्नेहांधकारविरहानल.

चक्रवर्त्तिऋद्धिः, चउद रत्न, नव निधान, सोल सहस्र यक्षेश्वर, ३२ सहस्र नरवर, ३६ सहस्र कुलांगना, ३२ सहस्र वारांगना, ३२ भेदभिन्न बत्रीस सहस्र नाटक, छन्नव्वय पाला पायक, ३६० सूपकार, ३२ सहस्र पुरवर, १८ श्रेणि, १८ प्रश्रेणि, ३० सहस्र आगर, २४ सहस्र नगर, २४ सहस्र कर्बड, १६ सहस्र खेड, १४ सहस्र वेलाउल, ३६ कोडि कुल, ४८ सहस्र पत्तन, ४९ सहस्र उद्यानवन, ९६ कोडि ग्राम, ८४ लक्ष तुरंगम, गरिमविनिर्जितगिरिवर चउरासी लक्ष करिवर, ८४ लक्ष रथ, १४ सहस्र जलपथ, २१ सहस्र संनिवेश, २८ सहस्र देश, ५६ अंतरद्वीप, १२ सहस्र मांगलिक कोमलालाप, ९९ सहस्र द्रोणमुख, ८० सहस्र विदुष, २४ सहस्र मडंब, पुत्रपौत्रसंतानि ७ कोडि कुटंब, १४ सहस्र मंत्रिजन, श्रेष्ठिसार्थवाहप्रमुख अनेकि कोडि इतर जन, इति चक्र-वर्त्तिऋद्धि.

कुलीन गंभीर मध्यस्थ मेधावी च्छेक विनीत त्यागी रसिक रूपवंत सुभग उज्ज्वलवेश देशकालज्ञ महार्थ शरणागतवज्रपंजर दयालु कला-कुशल सत्यसंध प्रतिपन्नसूरु सात्त्विककीर्त्ति संतप्रार्थनीय लीलाविलास.

त्रिभुवनतिलक, त्रैलोक्यपरमगुरु, त्रिभुवनकल्पतरु, त्रिजगदेकांगवीर, त्रिभुवनमहनीय, त्रिभुवनपितामह, त्रिजगन्नाथ, पुरंदरशिरःकमलसंचारितशासन, केवलज्ञानभास्कर, शरणागतवज्रपंजर, वीतरागमुद्रालंकार, योगींद्रजनध्येय, सकलमंगलमूल, परमदेवाधिदेव, परमेश्वर, श्रीमंत, सुगृहीत-
5 नामधेय अरिहंत.

विषया यस्य नो भग्नाः क्रोधो नोपशमं गतः ।
संसारे नैव वैराग्यं प्रव्रज्या तस्य जीविका ॥ १ ॥

गणधर सिद्धांतधर प्रवचनसमुद्धर स्थिरताधरणीधर मुनिवृंदवंदित जगत्त्रयाभिनंदित भव्यराजीवमार्त्तंड कर्म्मनिर्मूलनप्रचंडगुण-
10माणिक्यकरंड, प्रज्ञाअवज्ञातसुरसूरि एवंविध सूरि.

जिनप्रवचनालंकार, उग्रविहार, पंचविधाचारपालनैकपंचानन, दशविधचक्रवालसामाचारीप्रगल्भ, शीलांग[21-A]भरसमुद्धारधीर, दुर्धरगच्छभारधुरंधर, जिनधर्म्मसमुद्धरण, भव्यांभोजभास्कर, कुमततिमिरांशुमाली, क्षीरस्रवादिलब्धिदुर्ललित, कारुण्यपुण्यांतःकरणबांधव, जगदेक-
15कल्याणमित्र, निर्ग्रंथचूडामणि, निष्किंचनचक्रवर्त्ती, अखंडक्रियामंडण, ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी, उग्रतपस्वी, शुद्धमनस्वी, मोहराजविजयाबद्धसाम्राज्यपट्ट, आगमरत्नकषपट्ट, गणधरगुणनिधान, आचार्य जुगप्रधान.

अथ नगर; धान्यधनकनकप्रसिद्ध, देशदेशांतरप्रसिद्ध, अनेक लोकि करी विराजमान, चतुष्पथोदर, त्रिषष्टिक्रियाणकपरिपूर्णहट्ट, श्रेणि-
20शोभायमानाभ्यंतर, अमरावती समान, अलकापुरीप्रसिद्धमान, लंकापुरीलक्ष्मीलुंटक.

तीणि नगरि, सामंत मंडलेश्वर मंत्रि महामंत्रि श्रेष्ठि सार्थवाहपुत्र दंडाधिपति गृहकप्रमुखलोकसेव्यमान अनीतिनिर्नाशन गरूयारंभ परनारीसहोदर बुद्धिमयरहर विवेकनारायण दानैकव्यसन संग्रामैकनिष्णात

शोर्यलक्ष्मीलीलाविलास, आदित्य जिम सुप्रतापवंत, विक्रमादित्य जिम औदार्यवंत, हरिश्चंद्र जिम सत्यवंत, समुद्र जिम मर्यादावंत, मेरु जिम अवष्टंभवंत इशउ महाराज, प्रजापालवंत सलक्षण विचक्षण डाहूआर, अतिहि सुविचार, बहुत्तरि कलाकुशल.

अथ कुमार; उद्धतस्कंधबंधुर, वज्रमयभुजादंड, विस्तीर्णवक्षःस्थल, रणरसिकु, समरभरधुरि धवल, अतुलबलपराक्रम, रथमोडण, परदलण, शूरवीर, धीरशौंडीर इशउ राजपुत्र कुमर; क्षण एक जाइ वयगरणि, क्षण एक जाइ राजगरणि, क्षण एक जाइ हस्तिशालां, क्षण एक जाइ आयुधशालां, क्षण एक जाइ वाहणि, क्षण एक जाइ राजकुलि, क्षण एक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ राजवाटिकां, क्षण एक जाइ वाटिकां, इसी क्रीडा करइ.

रूपि कंदर्प, दलितवैरिदर्प, यशःपवित्र, उदारचरित्र, शस्त्रशास्त्रनिपुण, विनयप्रगुण, कोमलालापु निपुण ए इशउ कुमार, असमसाहसैकमल्ल, वैरिहृदयसल्ल, उग्रप्रहारि, धाडीतिलक, त्रैलोक्यकंटक, कृतांतमूर्त्ति, सिंहस्फूर्त्ति, इसउ दुर्दांत कुमर.

जिशउ नवा कल्पवृक्षनउ पोउ हुइ, रोहणाचलनी भूमि जिशउ नवा रत्ननउ अंकुरउ हुइ, पूर्व दिशिइं नवउ ऊगतउ जिशउ श्रीसूर्य हुइ, जिशउ चंदन वृक्षनउ उद्गम हुइ, इशउ लघु कुमार.

यौवनाधिरूढ, मकरध्वजावतार, सर्वांगीणगुणाधार, विवेकमूलागार, शोर्यलक्ष्मीकंठकंदलालंकार, पराक्रमविक्रमादित्यप्रकार, मदनमुद्रावतार, इशउ कुमार.

अथ मंत्रि; सम[21-B]स्तमहाजनप्रधान दाक्षिण्यकरणैकवत्सल नीतिमार्गप्रकाशनैकदक्ष प्रियवक्ता दृढप्रतिज्ञ करुणारससमुद्र प्रसिद्धपदवी प्रभु.

७२ कला: लिखितकला १, पठितकला २, गणितकला ३, ग्रह्गणित ४, शब्दलक्षण ५, पुरुषलक्षण ६, स्त्रीलक्षण ७, राजलक्षण ८, षड्गलक्षण ९, तुरंगलक्षण १०, दंडलक्षण ११, रत्नपरीक्षा १२, कनकपरीक्षा १३, टंकपरीक्षा १४, वस्त्रपरीक्षा १५, लिपिभेद १६, द्यूतभेद १७, भाषाविशेष १८, देशांतरविशेष १९, वाद्यकला २०, गीतकला २१, नृत्यकला २२, राजनीति २३, लोकनीति २४, धर्म्मनीति २५, काव्यरीति २६, साहित्यविद्या २७, तर्कविद्या २८, वास्तुविद्या २९, हस्तिशिक्षा ३०, अश्वशिक्षा ३१, रथचर्या ३२, रणचर्या ३३, मल्लयुद्ध ३४, दृष्टियुद्ध ३५, वचनयुद्ध ३६, शस्त्रवेद ३७, आयुर्वेद ३८, मुष्टिभेद ३९, पत्रच्छेद ४०, क्रियाकाल ४१, इंद्रजाल ४२, नाममाल ४३, योगमाल ४४, घटवेध ४५, राधावेध ४६, अंगमर्दनविधि ४७, भोज्यविधि ४८, धातुवाद ४९, खन्यवाद ५०, मंत्रवाद ५१, तंत्रवाद ५२, मूलिकाप्रयोग ५३, गंधयोग ५४, अंजन ५५, लेपन ५६, चित्रकर्म्म ५७, उपलकर्म ५८, लेपकर्म्म ५९, लोहकर्म्म ६०, मणिकर्म्म ६१, सुवर्ण्णकर्म्म ६२, दासकर्म्म ६३, दंतकर्म्म ६४, कृषिकर्म्म ६५, वाणिज्यकर्म्म ६६, तरुणीपरिकर्म्म ६७, जलतरण ६८, देहकरण ६९, शल्यशुद्धि ७०, शकुनशुद्धि ७१, रसायनचंदना ७२, कालवंचना ७३, कला.

जिनमंदिर धवलमंदिर राजकुल देवकुल अट्टाल प्रासादमाल लेषशाल पौषधशाल रथशाल हस्तिशाल तुरंगशाल व्यायामशाल टंकशाल आस्थानसभा श्रीगरणसभा व्ययकरणसभा धर्म्माधिकरणसभा देवकरणसभा पंडितसभा लेहासभा भांडाकार कोष्टाकार सत्रागार मठ विहार. प्रपा मंडप त्रिक चतुष्क चत्वर चतुष्पथ राजमार्ग गंधिकापण दौष्यिकापण सौवर्ण्णकार कांस्यकार मणिकार पूगीफलतांबूलिक मालिक सौत्रिक लड्डुककार कांडुकिकार कणकार वेश्याकार चर्मकार मल्लक खलक धान्यखलक वाटक वाटिका वापी पुष्करणी क्रीडातडाग सरोवर.

जुवराजकुमार राजेश्वर महामंडलेश्वर सामंत लघुसामंत तलवर तंत्रपाल चतुरसीतिक तांडकपति मंत्रि महामंत्रि गृहकहक श्रीकरिणिक व्ययकरिणिक राजकरणिक धर्माधिकरणिक सौवर्ण्णकरिणिक देवकरिणिक मंडलकरिणिक उष्ट्रकरिणिक इष्टिकाकरिणिक घोडककरिणिक यमककरिणिक पुरोहितकरिणिक दंडनायिक सेनापति पउंतार आरोहक प्रतीकार- आरिक [22-A] भांडागारिक महाभांडागारिक माणिक्यभांडागारिक कर्प्पटभांडागारिक तंडभांडागारिक कर्पूरपट्टिक कोष्टाकारिक पारिग्राहिक प्रतिहार चतुद्धरिक काष्टिक राजद्वारिक संधिविग्रहिक भांडपति महाजनिक दूत दालिउट्ट कटुक भट्टपुत्र नट विट भट्ट न..रिय[1] नागुड मुखमांगलिय अंगमर्द कूटिकार चाटुकार अंकार फलहिकार मल्लयोद्ध शज्जापाल वालबंध अंगरक्ष वीरमुद्धर धनुर्द्धर खड्गधर उपानहधर भृंगारधर स्थगिकाधर चित्रक दैशालिक मसूरिक दीपवर्त्तिक भोजिक सूपकार चक्षक नरवैद्य गजवैद्य तुरगवैद्य वृषभवैद्य मांत्रिक तंत्रिक गारुडिक हरमेषलिक लेषक कथक कविकर तालचर कविराज सभ्य सभापति लाक्षणिक साहित्यक तार्किक च्छांदसिक अलंकारिक झोतिषिक चामरधारिणी वारविलासिनी महल्ल- कलिका उपाध्याय गायन बइकार आलविणिकार वीणिकार वंशकार उतिकार मानतालकार अडाउजिय पखाउजिय पाटहिकप्रमुख राजलोक- पौरलोकचक्रवालि.

त्रिभुवनतिलक, त्रैलोक्यपरमगुरु, त्रिभुवनकल्पतरु, त्रिजगदेकांगवीर, त्रिभुवनमहिमनीय, त्रिभुवनपितामह, केवलज्ञानभास्कर, शरणागतवज्रपंजर, वीतमुद्रालंकार, योगींद्रजनध्येय, सकलमंगलमूल, परमेश्वर, परमदेवाधिदेव जेह परमेश्वर तणी वाणी, संसारसागरसमुत्तारणी, सर्वजनचित्तनमस्कार- कारणी, बहुलथलटलमिथ्यात्वतिमिरपटलदिनकरानुकारणी, योजनविस्तारणी,

१ मूल प्रतमां आ शब्दमांनो एक अक्षर लख्यो नथी; जो के तेनी शिरोरेखा बांधेली छे.

सर्व्वभाषानुगामिनी, पांत्रीसवचनातिशायनी, अतिशयनिधान, कुशलसुप्रधान, मोहांधकारविदलनभास्करानन, त्रोटितकर्म्मसंतान, फेड्यां संदेहावस्थान, उत्पन्नदिव्यविमलकेवलज्ञान, अष्टमहाप्रातिहार्यविराजमान, अष्टादशदोषविप्रमुक्त, पांत्रीसवचनातिशयपरिकलित, मालवकैशकीप्रमुखरागरंजित-
5 सुललितवाणीपरिकलित, [विनाशित]क्रोधमानमायालोभरागद्वेषमदमोहमात्सर्याहंकार, निदर्लितकर्म्ममूरज, वशीकृतइंद्रियग्राम, गुणअभिराम, सकलतीर्थंकरलक्ष्मीनिवास, त्रिभुवनविस्तारितु निजकीर्त्तिवास, संसारोदधितारण, विघ्नपरंपरानिवारण, एवंविध जिनेश्वर.

ज्ञानाचार दर्शनाचार चारित्राचार तपाचार वीर्याचार, पंचप्रकारि
10आचारनिरत, पंचमहाव्रतपालक पंचसमितिसमिता, त्रिहु गुप्तिगुप्ता, ब्रह्मचारि, कूर्म्म जिम गुप्तेंद्रिय, वायु जिम निरालंब, समुद्र जिम गंभीर, हस्तिराज जि[22-B]म सोंडीर, निरस्तपापांधकार, कलिकालि गौतमावतार, अक्रोध अमान अमाय अलोभ अमम अकिंचन अप्रतिबद्ध श्रुद्धाशय निरवलेवप, मुक्तिनगरी प्रतिइं एक वीर, स्वामीधर्म तणा लघु
15बांधव, कषायगुल्मवैद्य, कल्याणलक्ष्मीभांडागार, श्रीसंयतिलक, मोक्षयाचककल्पवृक्ष, सत्यरूपीयं कमल तेह प्रतिइं राजहंसप्राय, क्रोधरूपीया हाथीया तेह प्रति सिंहप्राय, मोहांधकार प्रति सूर्यप्राय, विषयरूपीया सर्प्प तेह प्रति गुरुडप्राय, संसारसमुद्र प्रति प्रवहणप्राय, जिनप्रवचनालंकार, उग्रविहार, पंचविधाचारपालनैकपंचानन, दशविधचक्रवालसामाचारीप्रगल्भ,
20शीलांगभारसमुद्धारधीर, दुर्द्धरगच्छभारधुरंधर, जिनधर्म्मसमुद्धरण, भव्यांभोजभास्कर, जीवदयाप्रतिपालक, कल्याणमित्र, निर्ग्रंथचक्रचूडामणि, निष्किंचनचक्रवर्त्ती, अखंडक्रियामंडण, निरीह निस्पृह निर्लोभ निर्भच्छर संसारसागरसमुत्तारणैकचित्त, अबोधजनबोधक, अज्ञानतिमिरविध्वंसक, छत्रीससूरिगुणसहित, विश्वमहित, सर्वशास्त्रपारंगम, ऊर्जस्वी तेजस्वी
25वचस्वी उग्रतपस्वी शुद्धमनस्वी मोहराजविजया[नु]बद्धसाम्राज्यपट्ट, आगमरत्नकसवट्ट, गणधरगुणनिधान, आचार्य युगप्रधान.

कृष्णचतुर्दशी तणइ दिनि चतुपथि स्नान करइ, सिद्धायतनि ध्यान धरइ, अश्वत्थप्रभृति वनस्पति वांदइ, शकुनज्ञानीया आनंदइ, वृद्धिपरंपरागत रहस्य विचारइ, तीर्थस्नानि एक पोति संचारइ, गोरोचनालिखित भूर्जपत्र मंत्रगर्भित कंठकंदलि वहइं, चच्चरिबलित क्षणण (?) करइ, परिव्राजिकाजन पर्युपासइ, मंडलि पयसी उदीवडी प्रासइ, ग्रहपूजा करावइ, देशागत द्विज वेद पढावइ, संतानार्थिनी स्त्री एतलउं करावइ.

सभावर्णनं; राय राणा मंडलिक आखंडलीक सामंत महासामंत लघुसामंत श्रीगरणा वयगरणा धर्म्माधिगरणा अमात्य महामात्य सुहासोला उचितवोला दासदीकोला गादीया मसूरीया पुडपुडीया कांबडीया दौवारिक तलार मुडउधा सेलहथ मंत्रपाल तंत्रपाल श्रेष्टि सार्थपति जीणइं सभा.

अथ नगर; धनधान्यमुषितपुरंदरपुराहंकार, निखिलनगरश्रीरत्नालंकार, उद्दंडवनखंडमंडित, उच्चैस्तरप्राकारोपशोभित, निवारितपापप्रसर, दूरीकृताखिलदुष्टदर, एवंविध नगर.

धनधान्यसमृद्ध त्रिभुवनप्रसिद्ध मदमुदितु सदाभ्युदितु अमरावतीप्रायु महाकायु आरामजलाश्रियादिरम्यु [23-A] परचक्रागम्यु अनेकदेवकुलसंकुल नृत्यत्प्रमदाकुल विद्वज्जनवल्लभ अपुण्यजनदुर्लभ प्राकारसंवलितु ईश्वरपरिकलितु प्रवर्द्धमानव्यवहारु मेदिनीशृंगारु.

अथ राजा; दानवीरु संग्रामधीरु पापनिकुंदनु सज्जनानंदनु वैरषंडनु निजकुलमंडनु सुभगमूर्त्ति उद्भूतस्फूर्त्ति प्रबलविक्रम परिपालितक्रम विद्यानिवासु कीर्त्तिविलासु प्रजारंजक अन्यायभंजक औचित्यचतुरु भावार्थविदुरु प्रौढाभिमानु इंद्रसमान.

अथ भाद्रपद मास; पूरइ विश्वनी आस, लोकोने मने थाइं उल्हास, जेहनइ आगमि वरसइं मेह, न लाभइं पाणीनउ छेह, पुनर्नव थाइं देह,

भलां हुइं दही, परीश्यां कोइ कहइ नही, सही पृथिवी रही गहगही, साचइं कादम माचइं, कारसणी नाचइं, नीपजइ सातइं धान, देषतां प्रधान, नासइ दुकाल, भाद्रवइ वूठइ सुगाल.

इशउ वासभवन, जिहांमही देवनुं गमन, मोहीइ त्रिभुवन, माहि विचित्र चित्राम, एक रूप लहइ दस दस गाम, केतलउ वर्ण्णवीइ तेहनउ ग्राम, अनेकि तिहां चंद्रोआ, चंद्रमा आवइ जेहनइं जोआ, अतिहि मणोहार, माहि मणि माणिक्य रत्न तणउ संभार, तेजि करी नसाडइं अंधकार, भला भूमिका तणा प्रदेश, शोभा तणा निवेश, जहि दीठे जाइं मनना क्लेश, पंचवर्ण्ण कुसुम तणउ पगर, ऊषेवीइ कृष्णागर, महमहइ गंधचूर्ण, सर्व गुणि संपूर्ण, उच्चैस्तर, इशउं धवलहर.

काने कुंडल, जिस्या चंद्रसूर्यनां मंडल, मुष्टिग्राह्य उदर, सर्वांगसुंदर, भ्रमरमालासंकास, मस्तकि केशपाश, हारि अर्द्धहारिइं विराजमान, गुण तणूं निधान, सुवर्ण्णवर्ण्ण शरीर, समुद्रनी परि गुहिर गंभीर, जिस्यां कमल तणां दल तिस्यां लोचनयुगल, एवंविध *

चतुर्दंत कांतिमंत, प्रचंड सुंडादंडक, कपोलि मद झरतउ, भ्रमर रहइं आनंद करतउ, शद्धि करी मेघ तणूं गर्जित जीपतउ, सर्व गुणिइं दीपतउ, महाचंचल कर्ण्ण, जेह तणउ उज्वल वर्ण्ण, महाकाय पर्वतप्राय, इशउ गज.

सूक्ष्म सकोमल रोमराइ, सघलाइं गुण वसइं जेह तणइ काइ, जाणीइ राषे दृष्टितउ पाछउ थाइ, वाटुलां अकाई चोपड्यां तीन्हां इस्यां शृंग, सुबद्ध मांसल अंग, जेह तणी कुहंदि चंग, उज्वल दंत, जेहनी शोभा अनंत, शुभ इशउ वृषभ.

* अहीं वर्ण्यविषयनो उल्लेख लहियानी भूलथी रही गयो होय एम जणाय छे. आ पहेलां वासभवननुं वर्णन आव्युं, एटले आ वर्णन एमां रहेनार गृहस्थनुं होय एम कल्पवुं योग्य छे.

स्थूलोद्धत स्कंधतटु, उन्नत कुकुदमंडल, कुटिल शृंगयुगल, कुंडलित सरल पुच्छ, सर्वांग मांसल, शंखकुंदधवल, उदग्रदर्प्पबल, सुजातसंस्थान, हिमगिरितटायमान, इशउ वृषभ, पराक्रमि करी झघाट, वाटली मो[23-B]टी संमिलित तीन्ही जेहनी दाढ, जात्य कमलनी परि सुकोमल ओष्ठयुगल, जउ देषीइं पुच्छनउं आस्फालवउं तउ कउण कहइं हूं एहरइं जालवउं, रक्तोत्पल कमलनी परिइं सुकुमाल तालउं, प्रकट जिह्वाणउं अग्र, सौर्यवृत्ति जेहनइ समग्र, मूसमाहि फिरता सुवर्ण्णनी परिइ वाटुलां, वीज सरीषां नयन, तेहनइं भइं ऊपजइं गजनइं रोक्षयन.

सौम्य आकार चंद्रनी परिचार, एवंविध सिंह, हिमगिरिशिखरगौर उद्धताग्रभागु, दंष्ट्राकराल मुखकुहर, खरनखरकुलिशभीषण, क्रूर कपिलदृष्टि, केसरभारभैरवस्कंध, मुष्टिमेयमध्यापरिमंडल, मांसलत्रिकप्रलंबलांगूलास्फालनां-दोलितमहीगोलक, कृतांतपराक्रम, त्रासिताखिलश्वापदोद्दामधामव्यतिकर, इशउ केसरिकिशोर.

लक्ष्मीवंतनइ गृहि एकि स्त्री अच्छइं, हार अर्द्धहार पिरोती, एकि सूंडे सूंडे विरोती, देषीइं आमलक प्रमाण मोती विशाल, सुवर्ण्णमय थाल, तेहनां अपार झमाल, रूपानी कचोली, देषीइं दहीमाहि झबोली, कालां पीलां नीलां धउलां इस्यां पटोलां, सूकडिना समूह, कपूरनां पूर, घणां केसरनां अलवेसरपणां, अगरना भर, सुगंधपणपूरी इसी कस्तूरी, मनोहर माणिक्य, मनोज्ञ रूडां रत्न, अनेकि विदेसी वस्तु, इसिउं व्यवहारिया तणउं भवन.

सर्वजनआशाविश्राम पूज्यवर्ग रहइं करइ प्रणाम, ऋजुपरिणाम, गुणरूप वृक्ष तणउं आराम, कीर्त्ति करी अभिराम, विनय तणउं ठाम, सुगृहीतनाम, महा शांत कांत, पुण्य करी अनंत, एवंविध संत.

जीवनउं काज सारइ, संसारसमुद्र तारइ, दुःख वीसारइ, पुण्यमार्ग

संभारइ, पाप रहइं संहारइ, श्रीजिनशासन शृंगारइ, अपार जेहमाहि तत्त्वविचार, धर्म तणउं सार, जीणि करी चित्त थाइ शांत, एवंविध श्रीसिद्धांत.

गुणनिधान, जीव थाइ सावधान, शिवसौख्यनिधान, आठ कर्मनउ यान, धर्मरूपिआ राजानु प्रधान, एवंविध ध्यान.

आविउ वसंत, हूउ जीवलोक कांतिमंत, संचहइं मलयमारुत, उच्छलइं कोकिलारुत, मउरीइं सहकारवन, सालइं विरहिणी तणां मन, महमहइं बकुल विचकिल मालती कुरबक पाडलावन, षिलइं चच्चरी तरुणीजन, महामहोत्सवइं आस्फालि [24-A] वहि आनंदमर्दल, ठामि ठामि दीसइं दोला जलक्रीडानंदसुं दल, फूली फली वनराजि, कामिउ वसि कीधउ मकरध्वज महाराजि.

पावसकालि अवतरइ मेघांधकार, उल्लसइ विद्युच्चमत्कार, विस्फुरइं जलधरगर्जारव, विस्तरइं मयूरकेकारव, अखंड पडइं सलिलधार, उल्लसइं गिरिनिर्झरझणत्कार, उच्छलइं महानदीपूर, उद्गमइं बहुलदूर्वांकुर, उच्छलइं दुर्दुरकोलाहल, संकीइं विरहिणीहृदयविरहानल, संचरइ कलहंस बलाहक, सरसु सारसइं बप्पीहक, महमहइं विकच केतकी कुटज कदंब, प्रियतमोत्सुक मेल्हइं मार्गविलंब.

जीणइं वर्षाकालि जिम जिम अनुकूल वायु वाइं तिम तिम मेघ अभ्रपडलि करीउ गगनांगण छाइं, मधुर स्वरि करीउ गाजइं, जाणे सुभिक्ष भूपति आवतां जयढक्कु वाजइं, किशलय गहगहइं, वलीवितान लहलहइं, कदंबपुष्पना परिमल महमहइं, अनवच्छिन्न धारावृष्टि करइं, पाणी करी सरोवर भरइं, मोर नाचइं, विरहिआनां हीयां पाचइं, कौटंबिक लोक माचइं, मुनि पुस्तक वाचइं, श्रावक धर्ममार्गि राचइं, इसिउ वर्षाकाल.

हुया निर्जल धवल जलधर, विस्तरइं निर्मल दिक्कुइर, वहइं अच्छ जल सरोवर, विस्फुरइं उज्ज्वल चंद्रकर, मेल्हइं मद मयूर, ओहटइं नदीपूर, विकसइं कमल सुकुल, विलसइं मत्त कलहंसकुल, कलमशालितंदुलकवलनदुर्ललित किलकिलइ शुकावली, नीली रहरही इक्षुवाडमंडली, फूलिइ उज्वज्ल कास, दीसइं सप्तच्छड पुष्पविकास, करइं नरेंद्र विजययात्रारंभ.

अथ श्रीवस्तुपालबिरुदानि २४: मातृवंशपितृवंशविभूषण १, प्राग्वाटज्ञातिगगनमंडलमार्तंड २, जिनशासकप्रभावनप्रकाश ३, जिनशासनकूर्म ४, कूर्चालसरस्वती ५, लघुभोजराज ६, सरस्वतीकंठाभरण ७, कलिकालमहाकालदैत्यजेता ८, उपकारमहोदधि ९, अभिनवविश्वकर्मा १०, केशीकलहथीयारायस्थापनाचार्य ११, षंडेरारायसांषुलामानमर्दन १२, सचिवशिरोमणि १३, गोत्रगोपाल १४, सर्वजीवदयाप्रतिपालक १५, गंभीरगुणसागर १६, सद्दवंशक्षयकारक १७, जगन्मित्र १८, विबुधजनअवष्टंभमेरु १९, पितृमातृगुरुआज्ञाप्रतिपालक २०, षट्दर्शनआशाविश्राम २१, अभिनवउ उदार पुरुषोत्तम २२, भरताचार्य २३, कविसभाशृंगार २४, [24-B] इति बिरुदानि श्रीवस्तुपालस्य.

सन्मार्गप्रवृत्त, सद्वृत्तश्लोकसार्थवाह, दुःसमयधर्मपरिम्लानसर्वज्ञशासनवनीसंजीवनीनववारिवाह, धर्मोद्धारकूर्मावतार, षट्दर्शनआधार, कविकुलकामधेनुसदृक्ष, कलाकुशलकल्पवृक्ष, याचकजनचिंतामणि, उचितज्ञशिरोमणि, गुणरत्नसागर, विवेकवयरागर, कलिविलसितनिवासनिर्वासनपरचक्रावतार, भवनाद्यसूत्रधार, सद्बुद्धिनिवास, सदुपायचतुष्टयविहितविन्यास, धीरगंभीर, उदार निर्विकार, उत्तमजनमाननीय, सर्वजनस्तवनीय, शांतशीतलसुखस्वभाव, विदितानुभाव, प्रचंड चंडप्रसाद सोहनइ कुलि आशाराजवंशावतंस, कुमारदेवीकुक्षिसरोवरराजहंस, जित कलिकाल, लघुभ्राता मंत्रीश्वर तेजपाल.

अथ सूर्योदय; उदयाचलचूलिकालंकार, निजकिरणकुरलिकाजाल-तिरस्कृतांधकार, प्रवर्त्तितसकलमहीतलव्यापार, चक्रवाकप्रीतिसूत्रणासूत्रधार, निजकरनिकरप्रतापाक्रांतनिःशेषभूमितल इसिउं सूर्यमंडल किरणजालि प्रकासइ, उद्दंड पद्मिनीखंड विकासइ, निखिलग्रहग्रामणी, तेजस्विचक्रचूला-लंकार, ज्वलितसहस्रांशुमालि, अंबरांबुराशिमाणिक्यखंड, अखंडब्रह्मांडमंडल-मंडपप्रदीप, निखिलभुवनैकनिर्निमेषचक्षु, नभःकरिकलभकुंभस्थलस्थासक, तिमिरपरदलअषोहणिएकांगवीर, चक्रवाकचक्रवालबालमित्र, पद्मिनीषंड-निर्व्याजबंधु, प्रबलप्रतापचंड.

विजृंभइ अरुणप्रभासंभार, अपसरइ निशांधकार, उच्छलइ देवकुलि मंगलशंखनिर्घोष, वल्लभि विमुच्यमानाश्लेष कामिनी करइं असंतोष, परिगलइ तिमिरनिकुरंब, उदयाचलचूलिकाअलंकार अंशुमालिबिंब, विकसइं कमलवन, संवट्टइं चक्रवाकमिथुन, हूउ निर्मलालोक सकलजीवलोक.

अथास्तोदय; अस्तमइं अंशुमालिमंडल, विवट्टइं चक्रवाकचक्रवाल, उच्छलइं बहुल बहुल तिमिरांछोलि, शयाल पक्षिकुल अपसरइ पर्वत श्रेणि, अलंकरइं तरुणी ओलि, प्रज्वलइं मंदिरोदरि मंगलप्रदीपमालिका, उन्मीलइं गगनांतरालि तारिका, [25-A] उल्लसइं चंद्रमंडलालोक, ज्योत्स्नाधवल थाइ जीवलोक.

जउ पाहिलउं बेटी जाई, माइबाप कालमुहां थाई, जसु घरि बेटी आवी, पूठि लागी चिंता आवी, बेटी घरसंमुहउ पाउ चालइ, दारिद्र वाट देषाडइ, जाउं बाली ताउं हुइ लाली पाली, हुई वडेरी, थाइ अनेरा केरी, अवाटइं चालती कुलकलंक आणइ, अणहुंती कलि सांमुही ताणइ, आपणुं घर सोसइ, पिरायुं घर पोसइ, आपणुं कुल दूषइ, पिरायुं भूषइ, घगइं न तूसइं, थोडलइं अपमानि रूसइ, न जाई बेटी, अनर्थषाणि भेटी.

जिसिउं स्वप्नराज्य, जिसिउं गंधर्वनगर, जिसिउ नदी पुलिनांतरालि लिखित प्रासाद, जिसिउं अलातचक्र, जिसी मृगतृष्णिका, जिसा माया-गोलक, जिसिउं इंद्रजालवन तिसिउ मायामय संसार.

करिकलभकर्णतालोत्ताललक्ष्मीविलसित क्षणभंगुर शरीर, गिरिनदी-पूरतरल तारुण्य, कुशाग्रजलबिंदुचंचल जीवितव्य, किंपाकफलविपाककटुक कामभोग, संध्याभ्ररागविभ्रम प्रेम.

अथ चंद्रोदय; उदयाचलचूलिकाचूलालंकार, प्राचीवदनकुंकुमतिलक, गगनार्णवकलहंस, मकरध्वजराज्याभिषेकमंगलकलस, जगल्लक्ष्मीस्फटिक- 5 दर्प्पण, चकोरकुलसंतर्प्पण, अमृतमयकिरण, तिमिरहरण, मुग्धवधूविदग्ध-शिक्षणोपाय, प्रणयकुपितकामिनीप्रसादनोपाय, विरहिणीहृदयपत्रघात, चकोरदत्तमान, चक्रवाकनिष्कारणशत्रु, स्मरराजच्छत्र, अमृतप्लावितचंद्र-कांत, प्रकाशितकुमुदाकर, रतिक्रीडातडागतलउं, नववधूटीशृंगारदीक्षागुरु, विरहिणीहृदयकुहरांगारभाजन, मानिनीमानाचलचूरणैकवज्र, चकोरकुटुंब- 10 प्रीतिनिकुरंब, कोरकितकैरववनैकबंधु, दिक्चक्रवालतमालपांडुफल, चंद्रिका-तक्रापूर्णब्रह्मांडमंथिनीभ्रक्षणपिंड, यामिनीकामिनीरत्नकुंडल जव जव उदयउ चंद्रमंडल.

नवइ यौवनि पुणमाल्यालंकारबंधन, पंचेंद्रियार्थसाधन, तांबूलबीटक-ग्रहण, छरंग[25-B]मोक्षण, सगर्वचरणक्रमण, सविकारवक्रवीक्षण, 15 सहर्षनिजरूपच्छायावलोकन, सकामकामिनीकटाक्षव्यामोहन, सहासक्रीडा-नुभवन, सप्रपंचवचनरचन, मुग्धत्वमोचन, विदग्धताप्रकाशन, कामसर्व-स्वोल्लासन.

वार्द्धकि पुण थरथरायमाणचरणचंक्रमण, निरास्वादजराचर्वण, सर्वांग-प्रकंपन, लोचनाश्रुविमोचन, मुखकुहरलालामोक्षण, कार्पण्यद्रव्यपरिरक्षण, 20 शरीरवक्रीकरण, वलिपलितादिरूपधारण, निर्लज्जतावलंबनस्खलदालमालवचन, कालांतरि दीर्घनिद्रालोचननिमीलन, पुनर्गर्भाधिकारकुटीमध्यनिलयन, रूपांतर-स्वीकरण, कालांतरि आत्मप्रकटीकरण.

जेतलाइं वन तेतलाइं चंदन, जेतलाइं सर तेतलाइं कमलसर, जेतलाइं आगर तेतलाइं वयरागर, जेतलाइं हस्ति तेतलाइं गंधहस्ति, 25 जेतलाइं जन तेतलाइं सज्जन.

चिंतामणि करि चडिउ अजी[उ] दारिद्र्यकंद, अमृतपान अजिउ व्याधि, सूर्योदय अजिउ तिमिर, मुनि दीठउ अजीउ पाप.

ठीकरीनइ कारणि कोइ कामघट फोडइ, निष्कारणि कोइ स्नेह त्रोडइ, कामधेनु कोइ अलीढी मेल्हइ, चिंतामणि कोइ हाथइं ठेलइ, कल्पवृक्ष कोइ उन्मूलइ, लक्ष्मी आवती कुण पाइं ठेलइ, धर्म लही कुण प्रमाद करइ ?

किसुं पंचेंद्रिय पाथर, मनुष्यमूर्त्ति पशु, अश्रृंग बइल, अनारण्यक कुरंग, अतृणचर गोरखर, जु इसीइं सामग्रीइं करइ प्रमादभर.

शालि किसिउं खांडीइ, चोल किसिउं रंगीइ, गंगा किसिउं पवित्रीइ, मयूर किसिउं चित्रीइ, सरस्वती किसिउं पाढीइ, अमृत किसिउं कढीइ, शंख किसिउं धउलीइ, चंद्रमा किसिउं अजूआलीइ, कपूर किसिउं वासीइ, सूर्य किसिउं प्रकासीइ, मोती किसिउं घडीइ, घृत किसिउं चोपडीइ, कमलि किसिउं गंध दीजइ, हस्ति जिम किसिउं लीला कीजइ, ब्रह्मा किसिउं पाढीइ वेद, धन्वंतरि [किसिउं] सीषवीइ आयुर्वेद, सुरगुरुनइ को कहइ बुद्धि, कुर्कुट सीषवीइ किसउं युद्धि, हंस किसीउं सीषवीइ चालिवा तणी रीति, तुंबर किसिउं सीषवइ गीति, तुम्ह रहइं गाढउ धर्मकर्मि चित्तनिवेस, कवण दीजइ धर्मोपदेश ?

जिणि आस्वादिउं शर्कराचूर्ण, तसु किसिउं हुअइ सिंधालूणि परिपूर्ण; जीणइं कीधउं अमृतपान, तसु किम हुइ आछणि समाधान; जिणि द्राक्ष-फले भरिउ हुइ [26-A] कवल, तसु किसिउ रुचइ मधूकफल; जीणि कलहंसी कीधी केलि कमल सरस्तीरि, ते किम रति करइ करीरि; जिणि कोकिलि क्रीडा कीधी चूतवनि, तेह किम लागइ पलास मनि; जु मधुकर मातउ मालती परिमलपूरि, तेह किम लागइ तूरि; जे कलभ क्रीडिउ निर्मल नर्मदाजलि, तेह कूपिकाजलि किम पूजइ भलि; जउ वृषभ चरिउ

हुइ इक्षुवाडि, तसु तृणि किम पूजइ रहाडि; जेहे पीधउ हुइ इक्षुरस, तीहं किम भावइ लींबरस; जीहं हुइ दूध पासि, तीहं किम भावइ छासि; जि लागा सर्वज्ञमति, तेहं किम हुइ अन्यत्र रति ?

किहां करीरतरु, किहां कल्पतरु; किहां लोहागर, किहां वयरागर; किहां गुंजाफल, किहां मुक्ताफल; किहां काचषंड, किहां पाथरषंड; किहां वानरवनितानन, किहां सुरसुंदरीवदन; किहां षर, किहां करिवर; किहां बकवंस, किहां राजहंस; किहां मिथ्यादृष्टि, किहां जिनधर्म ?

एक इष्ट अनइ विद्योपदिष्ट, एक ऊमाही अनइ मोरहि लवी दीघी बाही, एक धण मांकडी अनइ पाए बांधी कांकणी, एक यौवनभर अनइ चाचरि घर, एक हरि अनइ आविउ घरि, एक वसंत अनइ आविउ घरि कंत, एक बभुक्षित ब्राह्मण अनइ षीरि षंडि निमंत्रण, एक त्रिसिउ अनइ जल कर्पूरवासिउ, एक श्रांत अनइ दीठउ गादलउ जांत, एक निद्राल अनइ पाथरिउ पल्यंक विशाल, एक जीव आगइ सविकार अनइ वषाणीइ शृंगार.

कदाचित् समुद्र मर्यादा मेल्हइ, कदाचित् आदित्य पश्चिमइ ऊगइ, कदाचित् अमृत विष परिणमइ, कदाचित् चंद्रमा अंगारवृष्टि करइ, कदाचित् पाणीमाहि पाषाण तरइ, कदाचित् मेरुचूलिका चलइ, वृहस्पति वचन स्खलइ, कदाचित् शिलातलि कमल विकसइ, कदाचित् गंगा पश्चिमइं वहइ, कदाचित् मानससरोवर सूकइ, कदाचित् सत्पुरुष प्रतिज्ञा चूकइ, कदाचित् मेदिनीमंडल पातालि पइसइ, कदाचित् केवलज्ञानदृष्टि अन्यथा थाइ, तथापि अभव्य जीव कुबुद्धि न जाइ.

अमृत हूंती किसिउं कालकूटच्छटा उच्छलइ, चंद्रमंडल हुंतां किसिउं अग्निस्फुलिंग उल्लसइं, किम कर्पूरजल विगंधाइ, किम मयूराश्रुजल कलुष थाइ, कमल हूंतउ किम मल ऊमलकइ, किं चंदनतु दहन उच्छलइ,

किम विषफलि कल्प[26-B]द्रुम फलइ, इक्षुरसि किम पित्त चालइ, गरुड किम गरल घालइ, सहस्रकिरण किम तिमिर उद्गमइ, किम रत्नप्रदीप कज्जल वमइ ?

द्राक्षा तणी आकांक्षा किम महू फीटइ, शर्करा तणी श्रद्धा किम गुलि त्रूटइ, अमृत काजि किम कांजी पीजइ, दुग्धतृष्णा किम तक्रि विलीजइ, आंबा तणउ दोहलउ किम आंबिलीइं पूजइ, कस्तूरीनुं काज किम काजलि कीजइ, किम सुवर्ण्णवांछा छाजरसि छीजइ, इंद्रनीलमणि काजि किम काच लीजइ, वल्लभ माणस तणउ ऊमाहउ किम इतर जनि पूजइ ?

किहां मातंग गृहांगण किहां एरावत, किहां दुर्गत विपणि किहां चिंतामणि, किहां दग्ध मरु किहां कल्पतरु, किहां निर्द्धन संतान किहां रत्ननिधान, किहां ऊखर किहां कमलसर, किहां मुनि सकल गुणावास[1] ?

जु तुम्हारुं दर्शन तु अनभ्रमुक्ताफलवृष्टि, अकुसुमअमृतफलवृष्टि, अमंत्रकामितफलाकृष्टि, अनंजननिधानदृष्टि, निर्बीजकल्पतरुनिष्पत्ति, अनाकररत्नउत्पत्ति, अधातुसुवर्ण्णसिद्धि, अवंशि राज्यरिद्धि, अलवणि रसातिरेक, अविद्यासंस्कारविवेक, अप्रदीपप्रकाश, अनादित्यकमलोन्मेष.

छीद्री छासि केतलुं पाणी सहइ, पातली छाया केतलुं आतप गमइ, मांडव चांद्रिणइ केतलुं प्रकास, कातर केतलुं रणांगणि झूझइ, निरक्षर केतलुं कहिउं बूझइ, कृपणि केतलउं दान दीजइ, उपरोधिं केतलउ तप कीजइ, आढ केतलउं वाजइ, पाछिलउ मेह केतलउं गाजइ, कारिमउ स्नेह केतलउं छाजइ, एवंविध माणस दीस च्यारि पांच लाजइ.

एक ऋद्धि अनइ दानपरिणामवृद्धि, एक विद्यापात्र अनइ रमणीय गात्र, एक ज्ञान अनइ विज्ञान, एक तपकर्मोद्यम अनइ उपशम, एक ऐश्वर्य अनइ चातुर्य, एक रमणीय आकार अनइ शील उदार.

१. आ उक्तिनो पूर्वार्ध मूल प्रतमांथी पडी गयो जणाय छे.

शौंडीर्य जाणीइ रणसंघट्टि, सुवर्ण्ण जाणीइ कषपट्टि, पांडित्य जाणीइ वादि, बुद्धि जाणीइ विवादि, शील जाणीइ यौवनभरि, क्षमा जाणीइ अपराधि, तरणशक्ति जाणीइ अगाधि, अवष्टंभ जाणीइ संकटि, प्रहार जाणीइ कंकटि, स्नेह जाणीइ प्रतिपत्ति, जउ इसिइ विषम कालि धर्म न मेल्हइं विचालि. 5

श्वान कपासि किसिउं करइ, मंडूक पुंडरीकषंडि किसिउं करइ, नालिकेरि कीर किसिउं करइ, काक पिच्छि किसिउं करइ, करह द्राक्षावनि किसिउं करइ, उंदिर रत्नकरंडि किसिउं करइ, मंकड [27-A] नागवल्लीदलि किसिउं करइ, छाली फुंसहलि किसिउं करइ, खल्वाट शिरःकंकणबंधि किसिउं करइ, बिलाडउ कर्पूरगंधि किसिउं करइ,10 बधिर कथाबंधि किसिउं करइ ?

शांतिघोषणि वेतालोत्थापन, उरमर्द्दनि शूलोत्पादन, क्वाथप्रदानि संनिपातोत्पादन, चंदनचर्चनि संतापोल्लासन, तिम कोमलालापि कोपोत्पादन.

हस्तिराज तणउं पलाण किम खर वहइ, धुरधवल तणउ भार किमु करभ सहइ, भास्कर तणउ उद्योत किमु करइ षद्योत, जिसिउ15 हनूमंत तिसउ किमु हुयइ अपर वानर शक्तिमंत, जिसिउ केसरिपराक्रम किसिउ हरि लहइ संक्रम, जिसिउं करइ चिंतामणि ते किसिउ सीझइ अपर मणि, जिसिउ मदि ऐरावण करि अपर करि किम नाचइ तीणि परि, जिसी कल्पतरुकला तिसी किसिउं करइ करीर झलामला, जु अम्हि करुं बहुत भाव तोइ किम हुइ गुरुआं तण प्रभाव ? 20

मरहट्टी गादहि किसिउं कुंकुणउं वासइं, मालवी वांछ किसिउं मारुयं भासइ, गोबर कीडउ किसिउं भ्रमर जिम रणझणइ, धवलउ बक किसिउ राजहंस जिम चालइ, काग किसिउं कोकिला जिम वासइ, मयूर जिम किसिउं ढेलि किंगाइं, [कामधेनु जिम किसिउं] इतर धेनु माल्हइं, गुरुड जिम टिट्टिभ किसिउं ऊछलइ ?

अहह ! एउ असार संसार, जं एकइं नगरि, एक पाटक अंतरि, एक वासरि, एक क्षणि, एक जमणि, एक तणइ अमंद नांदीनिनादि उत्सवानंद, एक तणइ घरि आक्रंद, एक वर्द्धापनक तूर, एक उद्वेग पूर, एक दीजइ धवल मंगल, एक आवइं प्राण घंघल, एक आनंदगुंदल, एक कलहकंदली, एक विलसइं विचित्र पंच प्रकार भोग, एकनइ हुइं निरंतर शरीरि रोग, एक कंठि हार अर्द्धहार प्रमुखालंकार, एक वधबंध प्रकार, एक करइं विचित्र भंगि शृंगार, एक वहइं विरहअंगार.

शर्करारस गलं बाधइ, अमृत फीण मेल्हइ, दूध अरुचि करइ, फूल बींट छिणइ, कर्पूर तालूइ तवइ, गंगाजलि सेवाल लागइ, सुवर्ण्ण टंकणषार पडइ, चंद्रि लांछन दीसइ, चिंतामणि पाषाण थाइ, गंधहस्ति मदभिंभलिउ हिंडइ, तिम निर्द्धन दीसइ सज्जन माणस.

गंधहस्ति तणइ कुण माथइ मोती उक्किरइ, नागराजनइ माथइ चूडामणि कवण करइ, मयूर माथइ मांजरि कवण करइ, भद्र[27-B] जातीय करींद्र चतुर्दंत कवण करइ, हरिण तणां लोचन कवण आंजइं, भारंड पक्षि तणां ईडा कवण चित्रइ, सिंहनइ कवण चारहडि सीषवइ, कुलीननइ विनय कुण सीषवइ ?

मोती किसिउं ओपीइ, शंख किसिउं धउलीइ, प्रवालां किसिउं रंगीइं, साढसोलउं सोनउ किसिउं सोधीइ, दूधि किसी चोपडाई कीजइ, इक्षुरसि किसिउ माधुर्य कीजसिइ, सुमाणस किसउं सीषवीसइ ?

साकर तणइ साथरइ घेउर लोटइ, कढिइ दूधि साकर पडइ, सिंह केसरे मोदके द्राष कसमिसि संघडइ, कातले आंबे भवरा ज भमइ, सतरहइ दही मांड षांड आवइ.

जउ वल्लभि विनय, विनीति विभव, विभवि त्याग, त्यागि सुपात्र, सुपात्रि तप, तपि उपशम, उपशमि विद्या, विद्यां विवेक, विवेकि क्रिया, क्रियां कर्मक्षय, कर्मक्षयि केवलज्ञान, केवलज्ञानि मोक्ष, मोक्षि परमानंद.

अमृतवेलि कल्पद्रुमि चडइ, पुर्णिमा चंद्र मिलइ, महानदी समुद्र अनुसरइ, पारिजातमंजरि सुवर्ण्णकलशि बिसइ, रत्नावली रायकंठि लुलइ, मोती तणी सीप मरकतस्थालि ढलइ, कमलिनी राजहंस मिलइ, जउ सुकुल कलत्र हुइ.

कस्तूरी कुरंगमादुत्पत्ति, गोरोचना गोपित्ततउ उत्पत्ति, कमल पंकसंभव, जवाधि तिर्यंच तणउ मलनी उत्पत्ति, शंष प्राणिविशेषास्थिषंड, दुर्वा गोश्रृंगतउ उत्पत्ति, किसिउं कामिनी रत्न तणउं पारंपर्य जोईइ ?

शिरीष पुष्प केतलउं कर्कशावइ, कमलनाल तणा तंतू कोमलावइ, मलयानिलू असुखावइ, केलिगर्भ कर्कशावइ, राजचंपक पुष्प संतावइ, नवनीतगोलक कठिनावइ, एतलइ मानि सुकुमाल.

जाइ तणी कली षारीषि कीजइ, कमलिनी करिसुंडादंडवेढ सुहावीइ, अशोकपल्लव दावानलज्वाला लिहावीइ, कमलनालसूत्र शिला आकर्षीइ, जउ इसिउं अंग तपि तावीइ.

ज्वलितइ आहुति घातीइ, बूडता गलि पाषाण बांधीइ, माल पडिउ मोगरि कूटीइ, ऊकलंबिउ पाय ताणीइ, पडिउ ऊसासीइ, विषघारिया उपथि संचारीइ, क्षति क्षार निक्षेपीइ, ऊमाही मोर लविइ, जउ गुरु श्रृंगार कहइ.

सिंहगुहां पइसी कवण थाइ निःशंक, सर्प खांधि घालिउ कवण थाइ निरवधान, प्रदीपनकि कवण [28-A] निद्रा करइ, दुष्ट करिस्कंध चडिउ कवण दिसि पषा वाहइ, अंधकूप तडि बइठउ कवण ऊंघइ, कालकूट विषपानि कवण निरुपक्रम अछइ, संसार महारण्यि किम प्रमाद कीजइ ?

समुद्रइ हरणभरण, चंद्र चडणपडण, नदी वक्रवलण, सत्पुरुष घंघल.

दिवस तु रात्रि, शुक्लपक्ष तु कृष्णपक्ष, उद्योत तउ अंधकार, छाया तउ आतप, उंचउं तउ नीचउं, जिमणउं तउ डावउं, अमृत तउ विष, संपद तु विपद, सुख तु दुःख, वृद्धि तउ हानि, संयोग तु वियोग, आनंद तु शोक, भलउं तउ लामउं, जीवितव्य तउ मरणि काज.

मेरुकइ कडणि तृणू कांचनलीला कलइ, सुवर्णालंकारि मिलिउ छाजरसु सुवर्ण तणी छाया पामइ, मुकुटि बइठउ काचषंड पाथरषंड भणी कल्पीइ, मुक्ताफल तणइ हारि स्फटिकमणि मोती भणी मानीइ, सत्संयोगि किसिउ एक गुण न हुइं ?

जउ लाधउ जिनधर्म निर्व्याज तउ अनेरइ धर्मि किसिउं काज, जउ लाधी सुवर्ण तणी कोडि तु रीरी पहिरवां हुइ षोडि, जइ पामिउ रूपा तणउ भार तउ कथीर किसी सार, जउ मुक्ताफल तणी मोट बाधी तु चिणउठी किसिउं कीजसिइ लाधी, इंद्रनीलमणि पामइ तु काच कवण सातइ, जइ अमृतपान पीजइ तु कांजीइ किसिउं कीजइ, जउ द्राक्षाफल दीसइ तउ महू कवण नउ वीस[र]इ ?

कवण क्रूर ग्रहदृष्टि अवलोकिउ, कवण कालरात्रि कटाक्षिउ, कवण कालपासि विलोकिउ, कवण कृतांतदूत पुहतउ, कवण यमि निमंत्रिउ, कवण यमपुरि कतूहलिउ, कवण सिंहपृष्टि चडइ, कवण मदकरिस्कंध आरुहइ, कवण अजगरमुखि कर घालइ, कवण वज्रानलज्वाला पीइ, कवण निज गुरु अविनय करइ ?

वेताली अर्द्धवेताली उपतापिनी तालोद्घाटिनी स्वपाकी शाबरी द्रावडी कालिंगी गौरी गांधारी अवपतनी उत्पतनी वारुणी स्तंभिनी आश्लेषिणी विद्वेषिणी मोहिनी उच्चाटिनी वशीकरणी आमयकारिणी विशल्यकरणी अंतर्द्धानकरणी विद्या.

खडीसर्प, धडीसर्प, पत्रवृश्चिक, यंत्रवृश्चिक, काष्टपुत्रिकां नर्त्तन, स्वजिह्वाकर्त्तन, वालुकाभक्षण, बाहुबंधमोक्षण, अकाल मेघवृष्टि, स्थाल कच्चोला तणी आकृष्टि, अकाल सूर्यग्रहण, कृत्रिम सिंहचंक्रमण, सद्योमारण, सद्यःप्राणधारण, मुखांतः सूत्राकर्षण, आराम[28-B]नदीविस्तारण, इंद्रजाल. 5

आकस्मिक धडहडइ धरामंडल, दीसइ धूलिधूसर मार्त्तंडमंडल, गगनतलि कंकाल वेताल किलकिलारव करइं, अरिष्ट निष्टुर रव हिंडोलता फणींद्र मार्जार आगलि जाइं, रुधिरवृष्टिइं शरीर रक्त थाइं, सर्वत्र दीसइं दिगदाह, रोग विणउ उच्छलइं शरीरि दाघ, शिवा फेत्कार करइं, कर्कश पवनप्रेरित लोष्टषंड पडइं, सुभटकरकलित करवार गलइं, मस्तक फूटइं,10 गजराज मद परिहरइं, सर्वत्र ज्वालाकलापज्वलन ज्वलइं, छत्रदंड भाजीउ पडइ, पट्टवर्द्धन हस्ति ढलइं, वारविलासिनीकरगृहीत चामर गलइ, वाताहत पताका पडइं, तुरंगम मूत्र पुरीष मेल्हइं, अकालि जलदजलप्रवाहि पृथ्वी रेलइं, रथवर कलस पडइं, दिवसि शृगाल रडइं, ईदृश्यां अशुकन.

कुस्वप्नदर्शन भूमिकंप उल्कापात दिग्दाह कपिहसित पांशुवृष्टि15 अंगारवृष्टि रुधिरवृष्टि सूर्यमंडलरंध्र सूर्यधूमोल्लास काष्ठपुत्रिकाहसन श्वापदपुरप्रवेश अकालसूर्यग्रहण निर्घात वेतालकिलकिल एउ उत्पात.

लीनभ्रमण समुल्लन त्रिपदीआस्फालन बाहुसंस्फोट गलिगर्जित साहसिक रणरसिक ससंरंभ सोच्छेक.

नागास्त्र गुरुडास्त्र संवर्त्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिक्षास्त्र20 आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दानवास्त्र माहेंद्रास्त्र तिमिरास्त्र डिंभककरास्त्र नारायणास्त्र अश्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणि.

जीणइं नगरि दंड देवकुलि, बंध काव्यरचना, छेदना ताप ताडना सुवर्णपरीक्षायां, चिंता शास्त्रार्थपर्यालोचनि, कलंक चंद्रमंडलि, मारि सारिक्रीडाप्रयोगि, खंडना शालितंदुले, क्षउ चंद्रमंडले, निःपीडन तिलेक्षु, पत्रे25

च्छेदविद्या. भंग अक्षरकलायां, त्रास पाषाणि, अनीतिस्थिति क्षेत्रमंडलि, पण एक दोष जं स्थानकि स्थानकि सर्व जनचित्त हरिइं.

सततानंद, सततोत्सव, सतत मंगलोद्गार, सतताम्फालित मंगलतूर, सतत गीतझात्कार, सतत नादध्वनिकलकल, सतत इंद्रजालदर्शन, सतत कुतूहल, सतत केलिकोलाहल, सदा मुदमुदितपौरलोक, झलकती धवल पंक्ति, कि मानीइ स्वर्गलोकषंड, किसिउ उघाडिउ छइ लक्ष्मी तणउ करंड, किसिउ इंद्रपुरी तणउ अवतार, त्रिषष्टिक्याणकपरिपूर्णविपणि-वीथीशोभायमानाभ्यंतर, अमरावती समान, अलकापुरी प्रति[29-A]-स्पर्द्धमान, लंकापुरीलुंटाक, सर्वांगीण कुबेरग्रामनिवासनैकहेवाक, जिहां समुद्रजगतीयमान प्राकार, सागरप्रमाण षादिकावलयावतार, अमरनगरी-प्रकारसहोदर, निरवकर, इसिउं नगर.

जिसिउ चंद्रमंडल, जिसिउ स्फटिकोपल, जिसिउ क्षीरसमुद्रजल, जिसिउ हिमाचल, जिसिउ विकसित केतकीदल, जिसिउ शरदभ्रजल, जिसिउ मौक्तिकहार, जिसिउ मल्लिकाकुसुमप्राग्भार, जिसिउ शेषफणसंभार, जिसिउ हरहास्यप्रचार, जिसिउ कामिनीकटाक्षनिकर, जिसिउ कासकुसुम-प्रकर, जिसिउ डिंडीर, जिसिउ गोक्षीर, जिसिउ गंगातरंगप्रकर तिसिउ महारायययशःपूर.

जसु राय तणइ कृपाणि राज्यश्री वसइ, जिह्वां सरस्वती वसइ, वचनालापि सुधारस उल्लसइ, महाजन किहिं गौरव दरिसइ, सेवकलोक मन संतोसइ, दीठउ आल्हाद ऊपजावइ, तूठउ दरिद्र हरइ, रूठउ सर्वस्व अपहरइ, नीति अनुसरइ, अन्याय परिहरइ, कीर्त्ति कामइ, देवगुरु मेल्ही कुण रहइं शिर न नामइ, आसमुद्रांतयशः, आनंदमधुर प्रसन्नमुख, प्रीतितरंगित मन, दानसन्मान, अलोभ अमृतसहोदर वचन करुणारसकूप समान, औचित्यगुणचारु, वाचासार, उपशमश्रीविलास, तत्त्वविचारणैक-बुद्धि, अस्खलितसर्वत्रकीर्ति, इसिउ राजा.

प्रतापि लंकेंद्र, गुरुजनविनय रामचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, त्यागलीलां कर्ण, वचनप्रतिष्ठां युधिष्ठिर, धनुर्वेदि अर्जुन, संग्रामचर्या सूगावीर, आज्ञां अजयपाल, परनारीसहोदर्य गांगेय, रूपि कंदर्प, प्रज्ञां बृहस्पति, सौभाग्यि गोविंद, ऐश्वर्य सुरेंद्र, एकू अनेक रूप नरेंद्र, सत्यवाचां हरिश्चंद्र, निर्भय भीम, आपन्न जीमूतवाहन, वाग्देवीविलास-काश्मीर, विवेकनारायण, औदार्यि बलि, सेवकजनकल्पतरु, चतुरंग-वाहिनीसेनासमुद्र, इसिउ राजा.

निजविक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, यौवनश्रीवदनारविंदप्रद्योतन, सकल-महीपाललीलाललितशासन, रिपुकुलकालकेतु, शरणागतवज्रपंजर, पंचम लोकपाल, सेनासमुद्रावतार, सवे सीमाल भूपाल वसि कीधा, गढ सवे ढाल्या, रिपु सवे निर्वाड्या, दुर्ग सवे आपणाव्या, समुद्र पर्यंत आण फेरवी, किं बहुना, निष्कंटक राज्य प्रतिपालइ, महाशासन, अरडकमल्ल, जगझंपण, प्रतापलंकेश्वर, परराष्ट्रीहृदयशल्य, [29-B] तसु तणइ प्राणि प्रतापि राय सवे प्रार्थितप्राणभिक्षु हूंता ओलगइं, केइ हाथि दर्पण लेई ओलगइं, केई स्त्रीवेषि मुंडितकूर्च हूंता ओलगइं, केई दांति आंगुली लेई ओलगइं, केई वेलवाडी ओलगइं, केई स्कंधि कुठार घाली ओलगइं, केई हधूर चालइ लोटइ लीलइं ओलगइं, इसिउ प्रतापी राजा राज्य करइ.

प्रतापपुंज वैरिकृतांत नीतिसाधार वीरविलास त्यागभोगलीला दुर्ललितकृतांतकोप धनदप्रसाद अन्यायप्रलयकाल संग्रामवीर प्रतिपन्नसूर शरणागतवज्रपंजर अर्थिजनकल्पतरु, रूपि कंदर्प, इसिउ राज्य करइ महानरेंद्र.

महान्यायपालक धर्ममयमूर्त्ति मकरध्वजावतार श्रीसर्वज्ञभावभावित दुष्टापहार विक्रमनिवास सप्तव्यसननिषेधतत्पर, सर्वदा सदसि उपविष्ट राजा.

कृतभीमभ्रकुटि, उत्कटललाटपट्टि घटित त्रिशूल, उत्पाटितदृष्टिसंपुट, प्रकंपितदेहयष्टि, इसिउ राजा कोपि चडिउ.

अथ राज्ञी: हृदयहारिणी हंसलीलाविहारिणी निर्मलशीलालंकारिणी रूपैकशृंगारिणी कुलक्रमानुसारिणी गुणदोषविचारिणी नीतिपथावतारिणी निजकीर्त्तिविस्तारिणी सकलपरिजनधारिणी पट्टधुरधारिणी, सौभाग्य तणी भाग्यसंपत्ति, शीलशालिनी गुणमालिनी निर्जितमुरकामिनी मधुरालाप परित्यक्तपाप तत्त्वविचारिणी भर्त्तारअनुरागिणी अदृष्टमुखविकार सुविचार परिपालितकुलाचार उदार निर्विकार कृतपरोपकार इसी सुकलत्र, राजहंसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कामिनीगर्व भांजती, चंद्रकला जिम गुणहिं वाधती, कंचुक ताडती, नयणबाणि जणमण विंधती, तरुणतरट्टि, कस्तूरीतिलक ललाटपट्टि, वांकउं जोअती, जनहृदय आल्हादती, सीमंतउ फाडती, कंठकंदलि नवसरि हारि रुलंतइ जोउ न इसी बाल, सुकुमाल तत्कालउच्छलितकामझाल सुपच्चि सुजाणि सुमुखि सुपरट्टी, भर्त्तारनइ चित्ति वइठी, अशिथिल अकुटिल सहीरी गुहिरी धर्मपरि नियमपरि.

लक्ष्मीपुंज आश्रितवत्सल प्रकृतिप्रांजल, विहिल्यां साधार, परोपकारैकव्यसन नीतिबांधव परनारीसहोदर स्निग्धालाप सज्जनचूडामणि अर्थजनाचिंतामणि इति श्रेष्ठि.

चकितहरिणीलोचन, गौरपणि गोरोचन, अकुलक्रममोचन स्वकुटंबाशोचन अतिरेकसंकोचन विन[30-A]यरोचन लोकलोचनलोभन अतीवशोभन नीतिमती प्रीतिमती अभ्युदयवती विनयवती सौभाग्यवती लावण्यवती कारुण्यवती आर्जववती मार्दववती धर्मवती, अति महासती, किरि लक्ष्मी चालती, सरस्वती बोलती, रूपि पार्वती, नवयौवनारंभ कि बीजी रंभ, लीला उत्तम कि त्रिलोकोत्तम, दीसती मनोहारिणी इसी कि स्वर्ग आवी उर्वसी, सुवर्णचंपकगोरी, इसीउ आवी गोरी, राजहंसगति

कि दीसती अछइ रति, वचनविज्ञानवती कि सरस्वती, इसी कांतिमति कि लक्ष्मी चालती, स्निग्धमधुरालाप, शृंगार विण सकलाप, अखंडित-कुलाचार निर्मलशीलालंकार अकलहशालिनी अपरिहीलिनी कुलीन विनयलीन विवेकिनी अभ्युदयअनुच्छेकिनी परपुरुषअनभिलाषिणी अप्रकृतिरोषिणी, अलपइं संतोषिणी, अप्रथमभोजिनी दंतविकासमात्र-हासिनी स्वगृहैकवासिनी सर्वजनानुकूल संसारसुखमूल निर्मलचारित्री, इसी सुकलत्र.

हामकामलोचनी मदनराजधानी एकांतभक्ति अनुरक्त अत्यंतासक्त प्रेमपर विनयपर स्नेहपर शीलवंत गुणवंत स्नेहपात्र पवित्रगात्र सशृंगार सदलंकार प्रेमांधल शांत दांत जितेंद्रिय जितक्रोध परित्यक्तपरिवाद लब्धसाधुवाद सतीजनभालतिलकानुकारिणी, एवंविध जलनायिका.

जिसिउ छोडिउ सुवर्णचंपक, जिसिउ केलिस्तंभ तिसिउ गौर सौभाग्यस्तंभ, लावण्यपुंज, शृंगारसागर, विचित्रलीलाविदभ्र, मदनमुद्रावतार, लोकलोचनअमृतकुंड, तरुणीदृष्टिहरिणीवागुरापाश, राजहंसहेलागतिगमन श्रेष्ठिपुत्र, अष्टमीचंद्रशकलाकार भालपट्ट, उत्फुल्लपुंडरीक लोचन, उन्नत नासावंश, प्रलंब कर्णपाश, प्रवालपाटलाधरपल्लव, प्रसन्न मुखकमल, उन्नत स्कंध, मांसलविपुलवक्षःस्थल, सरल भुजदंड, मदनमुद्रावतार, तरुणतरट्ट, किरि कंदर्प तणउ मरट्ट, नवयौवनविलास, मदन तणउ लघु बांधव, एवंविध पुत्र.

रूपरेषाभंगि जिसी वेउल तणी पूतली, प्रियंगुपादप जिसी सरली पातली, पातालबालिका जिसी अतिपात्र, लावण्यपरिप्लवमानसर्वगात्र, कुष्मांडी फूल जिम सर्वांगि विहसती, कसवट्ट[30-B]रेखा जिम झलकती, पसुइपृथुल पत्तल नयन, चक्कल पिहुल मांसल स्तनयुगल, गंभीरनाभीकूप, अमृतमय रूप, नारंगछालि जिम युवान लाला मेल्हावती,

मुनि तणां मन मूलहइ हलावती, अप्सरायण रूपमरट्ट मलती, गौरी तणउं सौभाग्य सर्व दलती, जाणीइ किरि मदन तणी चालती चित्रशालिका, इसी दीठी बालिका. *

अथ मुनि: स्नेहकपाटोद्घाटन, सरुधिरकेशोत्पाटन, गुरुकुलवासि वसन, समविषमभूमिशयन, क्षुधापिपासादिद्वाविंशतिपरीषहसहन, अष्टादशशीलांगसहस्रभारवहन, जावज्जीवअमज्जन, नखकेशसंस्कारवर्ज्जन, ग्रामानुग्रामि चंक्रमण, उच्चनीचकुलभिक्षापरिभ्रमण, अंतप्रांतवेलातिक्रांत रूक्षाहारआदन, क्षारकटुकजलपान, अनुकूलप्रतिकूलोपसर्गवेदनाधीरण, उवाणह विण संचरण, इसिउं दुष्कर तपश्चरण.

समुद्र भुजादंडि तरीइ, तीक्ष्ण खड्गधारा संचरीइ, निरास्वाद वालुकापिंड कवलीइ, पंचमेरु पंचांगुलि तोलीइ, लोहमय चिणा दांत विति चावीइ, वज्रानलज्वाला मुखि पीजइ, आकाश निरालंब चडेवउं, एगांकि परदल जिणेवउं, गंगामहानदी संमुख ऊतरेवी, त्रिभुवनजय-पताका लेवी, चलचक्रांतरालि राधावेध करेवउ, जइ व्रतमुद्रां संवरेवउं.

महातमा महर्षि परमनैष्ठिक मुनिराजहंस, मूर्त्तिमंतउ धर्म, तपःपुंज विद्यापात्र उपशमकोश कारुण्यसमुद्र विनयनिधान, शीलगुणि संपूर्ण,

---

* आ पछी मूल प्रतमां नीचे प्रमाणे अशुद्ध श्लोको मळे छे :—

रवेरपि तमस्तोमः संतापः शीतगोरपि ।
कर्पूरादपि दुर्गंधो जलादपि प्रदीपनम् ॥ १ ॥

पुष्करावर्त्तकादभ्रात् किं स्यादंगारवर्षणम् ।
पीयूषादपि मृत्युः किं व्रतलुप्तिरितोपि हि ॥ २ ॥

किं सौधः कदलीस्तंभैर्जातिपुष्पैः नगेश्वरः ।
पद्मनाले गजालानं पृथुकश्च जवारकैः ॥ ३ ॥

सन्नाहः केतकीपत्रैः सूक्ष्मवस्त्रैः सितः पटः ।
विलनेककूलाग्नेः किं स्याच्चंपककोरकैः ॥ ४ ॥
कर्पूरस्फालिकाभिर्वा प्रासादशिखरं भवेत् ?

सत्यनिष्ठ संतोषसार गुणमणिरत्नाकर जगज्जंतुबांधव समशत्रुमित्र गंगा-जलपवित्र, तपनुं निधान, क्रियानउ भंडार, गुणनउ परमावधि, करुणा-निधि, वात्सल्यसमुद्र, नसाजाल व्यक्तां दीसइं, अस्थिबंध ढीला ढल-हलता, जिसा गामटि अजाणि सूत्रधारि ठगठगतउ साल [31-A] संचउ मेलिउ जिसिउ, जिनप्रवचनालंकार, उग्रविहार, पंचविधाचारपाल- 5 नैकपंचानन, दशविधचक्रवालसामाचारीप्रगल्भ, शीलांगभारसमुद्धारधीर, दुर्धरगच्छभारधुरंधर, जिनधर्मसमुद्धरण, भव्यांभोजभास्कर, कुमततिमि-रांशुमालि, क्षीरास्रवादिलब्धिदुर्ललित, कारुण्यपुण्यांतःकरणबांधव, जग-देककल्याणमित्र, निर्ग्रंथचूडामणि, निःकिंचनचक्रवर्त्ति, अखंडक्रियाकांड-मंडन, ओजस्वी तेजस्वी उग्रतपस्वी शुद्धमनस्वी इस्यां मोहराज- 10 विजयबद्धसाम्राज्यपट्ट, आगमरत्नकषपट्ट, गणधरगुणनिधान, आचार्य युगप्रधान.

कनकावलि रत्नावलि मुक्तावलि सिंहविक्रीडित महासिंहविक्रीडित गुणरत्नसंवत्सर भद्र महाभद्र भद्रोत्तर सर्वतोभद्र यवमध्यचंद्रायण वज्रमध्यचंद्रायण आचाम्लवर्द्धमान अष्टकर्मशातन सर्वांगसुंदर निरुजसिंह- 15 परमभूषण सोभाग्यकल्पवृक्ष इंद्रियजय कषायजय योगशुद्धिप्रमुख तपोविशेष.

कंडू कमल कास स्वास दाघ ज्वर भगंदर जलोदर गुदकीलक कुक्षिशूल दृष्टिशूल शिरःशूल कर्णशूल दंतवेदना अजीर्ण अरोचक कुष्टरोगप्रमुख रोगाः. 20

मज्जनगृह विलेपनगृह प्रसाधनगृह अलंकारगृह आदर्शगृह अंतःपुर-गृह क्रीडागृह रसवतीगृह भोजनगृह आस्थानगृह कोश चैत्य प्राय मंदिरपरिकरित विशाली प्रणाली चित्रशाली.

अविनय किसिउ, वज्राग्निकुंड, हालाहलविषांकुर, दुर्व्यसन-प्रवेशद्वार, दुःखभांडागार, अनर्थनिःस्पंद, [अव]गुणसंघात, वज्रघात, 25

स्वगौरवसंसिद्धिविघ्न, दौर्भाग्यमूलबीज, अपकीर्त्तिप्रशस्तिस्तंभ, दुर्गति-सोपानमार्ग, स्तब्धताध्ययनोपाध्याय, परमाराध्यअस्वाध्याय, अभि-निवेशप्रातिवेश्मक, अविद्याप्राणवल्लभ, दुर्नीतिबांधव, सर्वदोषसंस्थानक.

विनय किसिउ, सर्वजनानुकूल, धर्म तणउं मूल, कल्याणवल्ली-कंद, अमृतनु निस्यंद, सुगतिनउ दूय, उपशमनउ कूय, सौभाग्य-मूलबीज, सर्वजनवशीकरणनुं चूर्ण्ण, विवेकनउ आवास, सौजन्यनी जन्मभूमि, विद्या तणी खानि, कीर्त्ति तणउ मार्ग, स्वार्थसिद्धि तणउ उपाय, कुलीन तणउ अलंकार, श्रुताभ्यास तणउ सार, सुवर्ण्ण-माणिक्यव्यतिरेक आभरण, चरित्रराज तणउ आस्थान, सर्वगुण तणउं संस्थान.

राजा सु प्रतीहारि निवेदित मार्ग हूंतउ आस्थानमंडपि प्रवेश करइ; तां आगइ किसिउ अर्थ देषइ, रोमण काच ढालिउ, बहुल बहुल कुंकुम तणउ छडउ दीधउ, कस्तूरिका तणा स्तबक पड्या, श्रीखंड गूंहली दीधी, काचइं कपूरइं स्वस्तिक पूरया, अविद्ध मोती तणा चउक पूरया, प्रवाला तणा नंदावर्त्त रच्या, अंतर अंतर पुष्पप्रकर भरिउ, जाइ तणा पगर भरया, सेवंत्री तणा ताड वेढ भमिया, अगर प्रतिबोधिउ, कृष्णागर ऊषेविउ, पंचवर्ण्ण पाडू तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरी मोतीसरी लंबावी, राजा आस्थान देउ बइठउ छइ, मोरवींछ तणे वींजीणे वाउ वींजइ, ऊ[31-B]परि सजलजलदायमान मेघाडंबर छत्र धरिउं, मस्तकि त्रिसषर मुड रचिउ, दीप्तिनिर्जितमार्त्तंडमंडल निवेसियां कर्ण्णि कुंडल, कंठकंदलि मुक्ताफलग्रथितसर्वसार नवसर हार, सहस्रदल कमल हस्ति, पुरुषप्रमाण सिंहासन, कटीप्रमाण पादपीठ, पश्चिम दिगुविभागि थई-आयत, वामप्रदेशि मंत्रि, जिमणइं पुरोहित, बिहुं पषे अंगरक्षक तणी ओलि, सर्वत्र कांबडिया फिरइं एतलइ समइ.

आः पाप निरनुकंप शरणागतघातक महापातक वंचक परदार-विध्वंसक कुलांगार दुराचार असंतुष्ट दुष्ट अशिष्ट निकृष्ट अदृष्टव्य अभव्य खल पापकल निर्लज्ज अनीतिसज्ज अगणित-कार्याकार्य अनार्य चिलात ब्रह्मघातक कर्मचंडाल जीवक्षयकाल कृतघ्न चौर्यनिरत निरपराधमहाक्रोध जीवलोककृतोपताप दृष्टमहा- 5
पाप द्यूतप्रसंगी मद्यप्रसंगी वेश्याव्यसनोपहत पारदारिक च्छद्मशील अलीकभाषी प्राणिगणोपघातरत निस्त्रिंश पिशुन दोषमंदिर अधर्मबंध.

सत्रागार, मार्गि जल, भट्टारिकाभुवन गुरुजनोपदेशरसायन आदित्यकरनिकर चंद्रचंद्रिकाप्रसर मेघजल वनस्पतिफल दीपालिका-उत्सव सत्पुरुषविभव, सर्वसाधारण. 10

कुलीन गंभीर मध्यस्थ च्छेक विनीत त्यागी रसिक रूपवंत सुभग उज्वलवेष देशकालज्ञ महार्थ शरणागतवत्सल दयाल कला-कुशल सत्यसंध प्रतिपन्नसूर सात्त्विक कीर्त्तिमंत प्रार्थनीयलीलाविलास.

अथ जिन; त्रिभुवनतिलक, त्रैलोक्यपरमगुरु, त्रिभुवनकल्पतरु, त्रिज[ग]देकांगवीर, त्रिभुवनमहनीय, त्रिभुवनपितामह, त्रिजगन्नाथ, 15
पुरंदरशिरःकमलसंचारितशासन, केवलज्ञानभास्कर, शरणागतवज्रपंजर, वीतरागमुद्रालंकार, योगीजनध्येयमूर्त्ति, सक[ल]मंगलमूल, परमेष्टि देवाधिदेव परमेश्वर श्रीमंतु सुगृहीतनामधेय अरिहंत नासाग्रन्यस्त-दृष्टियुगल, श्रीवत्सलांछितवक्षस्थल, पद्मासनोत्संगविधृतकरयुगल, प्रकटी-कृतवस्त्रांचल, शरीरकांतिआच्छोटितांधकार, त्रैलोक्यसार, इसिउं जिनबिंब. 20

अविधि देशत्याग करावि उ, मोहराज लेई भूलवि उ, दुर्गतिद्वार मुंद्रिउं, मुगतिद्वार ऊमूंद्रिउं, अनर्गलकलिकालवेताल उचाटिउ, मदन-पिशाच निर्घटिउ, जीणि जिनवचन पालिउं.

देव अनाथनाथ जगन्नाथ त्रिभुवनस्वामि, विमलवाहन-चक्षुष्मंत-यशस्वी-अभिचंद्र-प्रसेनजित्-मरुदेवनइ अन्वयि नाभिनरेश्वरकुलनभस्थल- 25

सयूथमाली, मरुदेवाकुक्षिकंदराकेसरिकिशोरक, समीहितार्थकारी, सर्वातिशयसर्वस्वधारी, व्यवहारपरमार्थप्रवृत्तिप्रथमावतार, संसारभयभीतभविकजनरक्षावज्रांकुर, युगादिकृतावतार श्रीयुगादिदेव.

जिन भणीइ परमेश्वर जगद्गुरु, जगन्नाथ, त्रिभुवनाधिपति, चउत्रीस अतिशयसंपत्संपत्तिसार्वभौम, अष्टमहाप्रातिहार्यवर्य[32-A]निवासभूमि, निविडनिःपिष्टदुष्टाष्टकर्मा, भविकजनविहितस्वर्गापवर्गशर्मा, कषायकुलक्षयरात्रि, विषयव्यामोहजेता, परमात्मस्वरूप, रूपि चिद्रूप, परमयोगीश्वर, ध्येयमूर्त्ति, मुक्तिवनितावविहितानुराग श्रीवीतराग.

पूजा; सकलदुरितनिर्वासनपविका, स्वर्गद्वारकपाटोद्घाटनकुंचिका, मोक्षमार्गप्रदीपिका, चंचलश्रीवशिवशीकमूलिका, सकलकल्याणकारिका, कुगतिद्वारप्रवेशार्गल, कर्ममलप्रक्षालनसलिलधारा, जे पुण्यवंत परमेश्वरनइं करइ पूजा तेउ संसारपरिभ्रमण न हुइं.

जिनेंद्रागमसमुद्र, अश्रांतसिद्धांतदानैकवीर, प्रतीच्छकशिष्यमंडलीपर्युपास्यमान, सदा बद्धस्वाध्याय, परमाराध्य उपाध्याय.

चाप चक्र नाराच अर्द्धचंद्र असिपत्र करपत्र क्षुरप्र क्षुरिका करवाल कुंत सल्ल वावल्ल भल्ल शत्थल त्रिशूल शक्ति शर तोमर मुरवि अर्द्धमुरवि परशु पाश पट्टिश दूस लांगूल मुशल मुखंढि मुद्गर लगुड गदा दंड भिंडमाल गांजीव विस्फोटक वज्र तरुवारि प्रमुख ३६ षट्त्रिंशद्दंडायुधानि.

जइ भागउं तो वाराहउं, जइ थाकउ तो पारकरउ घोडउ, जइ ठालउ तोइ कपूर तणउ दाबडउ,. जइ जूनउं तोइ पाटू, जइ सूकी तोइ वउलसिरी, जइ कुरमाणउं तोइ नागरषंडउं पान, जइ षंडउ तोइ चंद्र, जइ छायउ तोइ आदित्य, जइ दूबलउ तोइ सीह. जइ उहटिउ तोइ समुद्र.

राजहंस किसिउं गति भूलइ, वकुल किसिउं अकालि फूलइ, तपन किसिउं तेज मेल्हइ, पारिजात किसिउं परिमल मेल्हइ, समुद्र किसिउं सूकइ, केसरी किसिउं विक्रमतु चूकइ, गंगा किसिउं पश्चिम वहइं, चंद्रचंद्रिका किसिउं दहइ, मेरु किसिउं वलइ, गगन किसिउं ढलइ, चंदन किसिउं ज्वलइ, वज्र किसिउं गलइ, सरस्वतीवाणि किसिउं स्खलइ, दृढ धर्म किसिउं अन्यायि चलइ ?

आमोसहि विप्पोसहि षेलोसहि जल्लोसहि सव्वोसहिलब्धि, वैक्रियलब्धि, पुलाकलब्धि, तेजोलेश्यालब्धि, आशीविषलब्धि, संभिन्नश्रोतोलब्धि. जंघाचारणविद्याचारणलब्धि, अक्षीणमहाणसी लब्धि, क्षीरास्रवलब्धि, मध्वास्रवलब्धि, जीवबुद्धि, कोष्टबुद्धि, पादानुसारिणीलब्धि.

मत्स्यकुल कच्छप मकर कुंभीर कुलीर शिसुमार ग्राह गोधा मंडूक हिंलक जलूक प्रतरणका इत्यादि जलचरकुल.

चंचल चलवाष चकोर कुररक कपोत कपिंजल वंजल कलकंठ कोकिला कादंबक बक बलाहक मयूर हंस सारस चक्रवाकप्राय पक्षिकुल.

एक सुवर्ण्ण नइ सुगंध परिमल, एक वल्लभ अनइ अप्रतिबंध, भद्राकार अनइ सशृंगार, एक सगुण अनइ भालउ निपुण, संकलितसकलकलाकलाप अनइ मधुरालाप, [32-B] बभुक्षित अनइ वडी भक्ति निमंत्रण, घृतपूरपरिपूर्ण अनइ शर्कराचूर्ण्ण, सुगुण क्षीरि अनइ प्रधान खांड मूंकी तीरि, शालि दालि अनइ परीसी सुवर्ण्ण थालि, एक इष्ट अनइ वैद्योपदिष्ट, एक सधन अनइ देवतानुं मान.

दीयंते महादानानि, मुच्यंते बंधनानि, पूज्यंते नगरदेवताः, क्रियंते नगरद्वारशोभा, शोध्यंते राजमार्गाः, वाद्यंते आनंदतूर्याणि, गीयंते धवलमंगलानि, नृत्यंति ललनालोकाः ।

जाय हुइ वेटउ, तउ आवइ लोक भेटउ; कीजइ वधामणउं, सकल लोक आणंदणउं; आवइं अक्षतपात्र, जाणीइ हुंती छइ जात्र; नाचइं पाउल, जाणी हुजि राजकुल; वाजइं तूर वर्द्धमान हुइं आनंदपूर; ऊभीइ तोरणस्तंभ विशाल, ब्राह्मण उच्चरइ वेदोद्गार, नारीगण करइं मंगलोच्चार; सन्मानीइं स्वजनलोक, फीटइं सकल शोक.

धनवंत निर्गुणइ सगुण, निरक्षरइ साक्षर, कुपात्रइ सुपात्र, अकुलीनइ कुलीन, कुरूपइ सुरूप, अवक्ताइ वक्ता, अयुक्तउइ युक्तउ, कृपणइ दातार, निर्विवेकइ सविवेक, क्रूरताइ संपन्नस्वस्थ, आदिंतउ सर्वजनआधार, कृतघ्नइ सर्ववित्.

धनवर्जित सगुणइ निर्गुण सकलापुण्यकलाप, वक्ताइ अवक्ता, विद्वांसइ मूर्ष इत्यादि.

समुद्र खारउ, वाउल कंटालउ, सर्प कालउ, वाउ वायणउ, जन बोलणउ, सुणइ भसणउ, ससउ नासणउ, राणउ लेगउ, स्त्री-स्वभाव लाडणउ, सांड त्राडगउ, कुमित्र फाडणउ, दुर्जन दुष्ट, स्वजन शिष्ट, आगि ताती, धाहु राती.

ते वडी चिडी नही जे वडउ फडहउ, ते वडी नइ नही जे वडउ षडहड, ते वडी छुरी नही जे वडउ धार, ते वडउं खांडउं नही जे वडउ घाउ, ते वडउ गजकलभ नही जे वडउ गडयडारव.

छुरीमानि घाउ, शरीरि मानि धाउ, पेटमानि भोजन, वयमानि चोरी, कार्यमानि चिंता, सत्त्वमानि शौर्य, धनमानि दान, पुरुषमानि सन्मान, कलामानि मान्यता, पुण्यमानि रिद्धि, साहसमानि सिद्धि.

जिम चंद्रमा कलंकि, जिम पद्म पंकि, समुद्र क्षार जलि, प्रदीप कज्जलि, कस्तूरिका उत्पत्तिस्थानि, मेरुगिरि दूरि व्यवधानि, कर्पूर वनि,

हिमाचल तुहिनि, चंदन भोगि, तप क्रोधि, मेघ श्यामतां, संसार दुःखि, धनवंत कृपणपणउं, स्त्री यदृच्छां, धर्म सविषय, तिम संसार प्रियवियोगि.

साम्रे चक्कोरवत्, पल्वले मरालवत्, एकाकी वने मृगवत्, निर्जले मत्स्यवत्, ग्रीष्मे मयूरवत्, वर्षाकाले जलधिवत्, रणे कातरवत्, मूर्षसभायां पंडितवत्, कृष्णपक्षे चंद्रवत् विरहः ।

भानुपुंडरीकवत्, निशानिशाकरवत्, शिषंडीपयोदवत् प्रीतिः ।

घिउ पाई तउ बूबूइ, घेउर पातां गाल फाटइं, दूध पातां ऊबक आवइं, कडि चडाविउ पाटू मेल्हइ, पेटि घातिउ पाउ पसारइ, पांति आपि ऊसीसा उलाइ, आंगुली आपिइ बाहु गिलेवउं करइ, ठामे दीधइ मूल हउलाइ, किसिउं कोइ परणाइ ?

रुया रूठी किसिउं पाउडणि दिइ, बाइ [33-A] भणी किसिउं पोली दिइ. भाई भणिउ किसिउं गुल दिइ, राषस मामउ भणिउ किसिउं छांडइ ?

आढि केतउं वाजइ, कृपणि केतउं दीजइ, गर्दभी केतउं दूझइ, कातर केतउं झूझइ, वंध्या गो केतउं दूझइ, समुद्र केतउं पीजइ, दुर्जन केतउं वचनि लीजइ, निर्लज्ज केतउं लाजइ, अकालि केतउं गाजइ, अकुलीन केतउं सांकइं, खईसु केतउं भाजइ, फूटउ वादित्र केतउं वाजइ, अचेतनि केतउं चेईइ, बद्धमूल प्रासाद केतउं षडहडइ, ठालउ केतउं धडहडइ, कपटपर केतउं शोचइ, दुःशील केतउं इंद्रिय पांचइ, परहाथउ केतउं हालइ, निश्चिल केतउं चालइ, शस्त्रश्रमरहित केतउं घाउ वंचइ, दूबल केतउं माचइ, टूंटउ केतउं लांघइ, सत्पुरुष केतउं झषइ ?

वत्स ! तुं सुखलालित शरीर, प्रकृतिहिं सरल, देशांतर दूरि, मार्ग विषम, जन कुटिलमन, धूर्त प्रचुर, प्रभूत दुर्जन, अल्प

स्वजन, वंचनाचतुर रमणीगण, मायासंप्रयुक्त वणिकलोक, दुःपरिपाल्य क्रयाणक, तारुण्य विकारबहुल, कार्यगति विषम, मार्ग चोरचरड-संकीर्ण्ण, अलक्ष दैवपरिणाम, इसिउं जांणिवउं.

किहां एकइं पंडित होइवउं, किहां दयापरि, किहां निस्त्रिंश; किहां सुभटि, किहां कातरि; किहां त्यागपरि, किहां कृपणि; किहां ऋजुमति, किहां कुटिलमति; किहां दक्षि, किहां विदग्धि, किहां अज्ञानि, किहां धूर्त्ति होइवउं; किं बहुना, समुद्र जिम अलब्ध होइवउं.

जांउ जागइ तांउ मागइ, जांउ जोयणउं तांउ भोयणउं, जेतिय राति तेतउं जागर, जेवडउं षांडउं तेवडउ घाउ, जेवडी वीज तेवडियइ पडइ, जेतलउं गाईइ तेतलउं साचउं, जेतलउं बोलीइ तेतलउं साचउं, दीवइ दीवाली, काल्ह कार्त्तिकी, वरिस वयसाही, नितू वधामणउं, पेटि पेटि आग्रहणी.

सुई तणइ वेहि मूंसल घालेवउं करइ, मूंसल फूलवेवउं करइ, ऊभां पीइ, कलकलतां बूकइ, बफातां गिलइ, वालि बांधी कोडीयां हणइ, लीष तणइ वेहि वाल प्रोइ, नव धायां तेर पाडइ.

इंदुः स्वैरिणीनां न सुखायते, उद्योतश्चौराणां, दीपः पतंगानां, सूर्यः कौशिकानां, वृष्टिर्जवासकानां, चंद्रोदयश्चक्रवाकानां, गर्जितं शरभाणां, वर्षा प्रावहणिकानां, मृदंगरवोऽक्षिरोगिणां, घृतं प्रमेहिनां, सुभिक्षं धान्यसंग्रहिकाणां, चंदनं विरहिणां, जिनवचनमभव्यानां, नीचानामुत्तमो न सुखायते ।

निर्जलनदीतरणमिव, मृतमंडनमिव, भस्मनि हुतमिव, कुपात्रे दानमिव, दुर्जनोपकारमिव, तुषखंडनमिव, अरण्यरुदितमिव, स्थले दृष्टिरिव, लवणाकरे बीजवपनमिव, अंधमुखमंडनमिव, श्वपुच्छावनामनमिव, बधिरकर्णजापदानमिव सर्वमेव निःफलं ।

चंद्रात् कलंक इव, प्रदीपात्कज्जलमिव, मेघाद्विद्युत्पातमिव, चंदनादग्निरिव, जलात्सेवालमिव, धनात् मद इव ।

सर्पान्मणिरिव, मृगान्मृगमदमिव, पंकात् कमलमिव, कृमात् पट्टसूत्रमिव, गुणा एव शुभाः ।

सर्पात् मृत्युरेव, अंत्यजान्मालिन्यमेव, वह्नेर्दाह एव, दुर्जना- 5 दलीकमेव ।

धाराधरस्य धारासंख्या, भूतले रेणुकणगणना, समुद्रे नीरबिंदु-संख्या, रोहणे रत्नसंख्या, दिवि तारासंख्या, मेरौ सुवर्णसंख्या, श्रीसर्वज्ञगुणसंख्या तथा मातुर्वात्सल्यसंख्या न ।

कः शशिनं शिशिरीकरोति, को मयूरं चित्रयति, कः इक्षुयष्टिं10 मधुरयति, को गंगां पवित्रयति, को मेघानभ्यर्थयति, को हंसगतिं शिक्षयति, कश्चंपकं [33-B] चंदनं सुरभयति ?

अभ्रं विना वृष्टिः, चंद्रं विना ज्योत्स्ना, प्रदीपं विना प्रकाशः, पृथिव्यां ऐरावणः, मरौ गंगापूरः, अमावास्यायां शशी ।

चमरी निजगुणैर्बंधनं सहते, मृगाः कस्तूरिकागुणैः, चंदनं15 परिमलगुणैः सर्पावेष्टनं च्छेदनं सहते, अगुरुर्दाहं, रोहणः खननं, दधिसमुद्रो मथनं ।

सुवर्णं कषपट्टे, दानं दुर्भिक्षे, पौरुषं रणे, धौरेयं पंके, वाग्मिता सदसि, साहसं दुर्दशायां, मित्रं व्यसने, कलत्रमापदि, पुत्रो वृद्धत्वे ।

सूर्यं विना दिनं न, पुण्यं विना न सौख्यं, पुत्रं विना न कुलं,20 गुरुं विना न विद्या, मनःशुद्धिं विना न धर्मः, धनं विना न प्रभुत्वं, दानं विना न कीर्त्तिः, वीतरागं विना न मुक्तिः, साहसं विना न सिद्धिः, जलं विना न पावित्र्यं, कुलस्त्रीं विना न गृहं, वृष्टिं विना न सुभिक्षं ।

कमलेनातपत्रं, चंदनेन लांगलं, सुवर्णेन कुशी, रत्नेन काकोड्डायनं, अमृतेन पादशौचं, गजेन इंधनवाहनं, कस्तूरिकाया मषी ।

यथा समुद्रे स्वयं जलानि, मेरौ स्वयं कल्पद्रुमोद्गमः, स्वयं जले पावित्र्यं, स्वयं लक्ष्मीसौभाग्यं तथा पुण्यवतां सर्वांगेषु उदयः ।

रूपवतां दौर्भाग्यं, आप्तोदरामाणां वैधव्यं, विदुषां दारिद्र्यं, नीतिपराणां व्यसनं, निर्गुणानां श्रीः, कुरूपाणां सौभाग्यं, नीचानां प्रभुत्वं यदि विधिः करोति तदा कस्योपालंभः ।

शस्त्रहीनः शूरः, मंत्रिहीनं राज्यं, दुर्गहीनो देशः, स्वामिहीनं बलं, दंतहीनो गजः, कलाहीनः पुमान्, धर्महीनो विप्रः, गंधहीनं कुसुमं, च्छायाहीनो वृक्षः, जलहीनं सरः ।

मर्कटो नालिकेरैः किं करोति, काको रत्नेन, वानरी मुक्तावल्या, विधवा कंकणेन, वणिक्ः कृपाणेन, दिगंबराः दुकूलेन, मुनिर्गजेंद्रेण ?

वीरमृदंग वाज्या, जयढक्क वाजी, समहर सामह्या, त्रहत्रहते त्रंबक तणे त्रहत्रहाटि त्रिभुवन टलटलिउं, भेरि भुंगल तणे भूभूयाटि भूकिंइं भिलकि फाटी, काहल तणे कोलाहलि कान कमकम्या, डूंडि डमांमा दुडदडी द्रमद्रमाटि भयंकर होइवा लागउ, नव नीसाणने निरंतर निनादि नदी निर्झर तण्यां नीर स्तंभ्यां, धाता दल तणउ धूलीरव द्रूमंडलि लागउ, रज रमी रूप हारतउं गगन आछादिउं, आदित्यकिरण निरुद्ध हूआं, हसमस हयदले हेषारवि हरिण कन्हा हरिण त्राठउ, उच्चैःश्रवा ऊकनिउ, ऐरावण ऊमंदिडिउ, दिग्गज ढहढह्या, बूंब वाजी, वंबेरा फाटा, साहणनइ समहरि चालतइ शेष नागराज सलवलिउ, आदिकोल कलमलिउ, कूर्मराज कुणउणिउ, नीसाणि घाइ वलइ, समरतूर आफलइ, सुभटहृदयमनोरथ मालियइं, कातर डहडहइं, वीर गहगहइं, चिंध लहलहइं, मयगल गुड्या, तुरंगम पाषरया, सूरा सामह्या, लागि वाजइं,

हस्ति मांचइं, कबंध नाचइं, प्रहरण झलहलइं, वीर षलभलइं, प्रहारि जर्ज्जर कुंजर पडइं, सूनासणा तुरंगम तडफडइं, रथ धडहडइं.

वुरा गूडर गुणयणा, वाडि विमाणा, वाडियां वीसमियां, कंठाल कसी, भंडार भरिया, हय गुडिज्या, दारका [34-A] सांवरियां, रथ जूता, रथि सारथि बइठा.

तुरंगमे खुरे पृथ्वी दलइं, काहली त्रडत्रडइं, राजपुत्र घोडे चडइं, धड झूझइं, इतर जन मूंझइं, बिहुं पखे भाट तुरंगमाधिरूढ हूंता हस्त धवलित करीउ वीरवर्ण्णनीपूर्वक सुभट तणा बिरुदावली पढवा लागा, बिहुं गमे सुभट तणा सिंहनाद प्रवर्त्तिवा लागा, बिहुं गमे बपूकार होइवा लागा, ततक्षणादेव हाकीय हाकीय परस्परियां ऊठया, बिहुं पषे शिल्ल भल्ल वावल्ल कुंतल करवाल नाराच पडिवा लागा, तेतलइ समइ वीर पुरुष तणा हस्ततउ छूटिवा लागां खड्ग-फल, फूटेवां लागां कपाल, भाजिवा लागा धनुर्दंड, वाजिवा लागी षांडा तणी झुणि, सुभट तणी कड कड वाजिवा लागी, भ[illegible]कबंध नाचिवा लागां, ध्वजचिंध फाटिवां लागां, त्रूटेवा लागां खड्गफल, नाशिवा लागां कायरदल, हृदय तणां च्यारि आंगुलां दृढ करीउ सन्नाह पहिरीउ एकमनउ होईय बिपिणुचइ धनुषि बाण सांधीउ परिवार सहित रहिउ छइ, पिता सागतउं टालउं, जइ झूझतउ पाग पाछउ वालउं.

आंषि राती, हाथि काती, हाथि सुणही, बीजइ धणुही, इसी भिल्ली.

अथ कष्टेन धनोपार्जने केई हल षेडी सयर ठाउ फेडी धन ऊपार्जइं, कोई हाट मांडी सयर षांची धन ऊपार्जइं, केउ सीअ

वाउ ताप सही देशांतरि भमी धन ऊपार्जइं, पणि सत्पात्रि न वेचइं तउ सहूइ आल. धन ऊपार्जिउं शाश्वतउ न हुइं, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं चोर हरइं, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं राय उपगरइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं अग्नि प्रज्वलइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं नट विट वेश्या उपद्रवइं, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं जाइ झगडइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं भूमि निवडइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं समुद्र पडइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं भूमि सिडइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं जलि उपतिष्टइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं भणसालइं त्रूटइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं ऊभ नट्ठ जाइ, कुपाह तणउं धन ऊपार्जिउं वाणउत्र षाइ.

ते काव्य जे सभां बोलीइ, ते आभरण जे हीरे जडीइ, ते सुवर्ण्ण जे कसवट्टइ नीमडइ, ते वैद्य जे व्याधि फेडइ, ते राजा जे राज्य पालइ, ते अमात्य जे न्याय दिषाडइ, ते कापड जे पषालिउं सूकइ, ते कार्य [जे] बुद्धिं सीझइ, ते तुरंगम जे वेगि दूजइ, ते द्रव्य जे सत्पात्रि वेचीइ.

वस्त्रशुद्धि जलि, कलंकशुद्धि अनलि, दातारशुद्धि दानि, योगींद्र-शुद्धि ध्यानि, वीरपुरुषशुद्धि मरणि, कर्मशुद्धि तपश्चरणि.

कर्पूर काबेरीतीरि, कुंकुम काश्मीरि, चंदन मलयाचलशृंगि, कस्तूरी कुरंगि, गजराज वंध्याचलि, मोती जयकुंजरि, पद्म पद्माकरि, तेजस्विता दिवाकरि, हीरा वयरागरि, प्रधान स्वर्ण्णमंदिरि, विवेक गूर्जरि, विधि विवेकीया तणइ घरि.

अथ दानं; समस्तजनमनोरंजन, संसारांभोधिनिस्तरणसेतु, यशः-प्रासादकेतु, कीर्त्तिनर्त्तकीरंगभूमि, सकलसौख्यबीजांकुरक्षेत्रभूमि, कल्लोललोलकमलावशीकरण, समग्रगुणगणामंत्रण.

अतीर्थस्नान, अदत्तबहुमान, मुक्तिदानसावधान, अचंदनविलेपन,

अनलंकारभूषण, अपरग्राह्यनिधान, अमूलमंत्रवशीकरण, [34-B] दुर्गतिहरण, अमूर्त्तउ शृंगार, संयमश्रीहार, कीर्त्तिलताकंद, धर्मनिःस्यंद, संसारांभोधितारण, दुर्गतिवारण, मोहमहीपालशिरःकील, निर्मल जइ प्रतिपालीइ शील.

देवदानवमानववशीकरणमंत्र, मकरध्वज ग्राहिवानउ परम यंत्र, लोभार्ण्णववडवानल, मोहमहीरुहदावानल, मोक्षश्रीकमल, मायावल्लीकुठार, दुरितोपतापतस्करप्राकार, मनोरथकल्पतरु, धर्मराजमहानगर, क्रोधयोधविद्युत्पात, मानाचलचूलिकाकुलिशघात, एवं तपः.

उत्तंगतोरणप्रासाद शोभइ दंडकलशप्राग्भारि, पवित्र कंठकंदली हारि, शिरःकमल केशसंभारि, नयन कज्जलि, मुख तांबूलि, गगनचंद्रमंडलि, हार मुक्ताफलि, सरोवर कमलि, जिम आधिपत्य परिवारि, गृह नारि, नदी जलपूरि, विवाह कूरि, उत्सव तूरि, जिम रसवती लवणि, सरस्वती वचनि, तिम धर्म भावनां शोभइ.

हर्ष विषाद रोग शोक ईर्ष्या विरह असुष संताप निगडन अंधकारप्रवेशन विकटाटवीपरिभ्रमण शूलिकारोपण गर्दभारोहण रज्जुबंधन क्षुत्पिपासासहन इत्यादि मानवदुःख.

वधबंधतिरस्करण अंगुलआराप्रहार नासावेध अतिभारारोप कर्ण्णलांगूलच्छेदन सकलपाषाणवहन च्छेदन भेदन क्लेदन ग्रासनिरोध इत्यादि तिर्यंचदुःख.

मिथ्यात्वनीरपूरित, कुग्राहजलचरसंभारभरित, मोहमहावर्त्तसंचलित, प्रचुरतरंगतरंगित, आपद्कल्लोलमालाकलित, मंदाग्निज्वालावडवानलकरालित एवंविध संसारसमुद्र.

त्रिभुवनसाधार, धर्मद्रुमप्राकार, मुक्तिनगरप्रतोलीद्वार, सकलतत्त्वरत्नभांडागार, दुःकर्मवल्लीवनगहनविच्छेदनैककुठार, समीहितफल-

प्रदानकल्पद्रुमावतार, चतुर्दशपूर्वसमुद्धार, पंचपरमेष्टिनमस्कार, जिनशासनसार, संपादितसकलकल्याणसंभार, विहितदुरितापहार, क्षुद्रोपद्रववज्रप्रहार, करइ भवापहार, इसिउ नवकार.

अस्खलितप्रताप, भग्नकंदर्पचाप, संसारकांतारसार्थवाह, दुःखदवानलप्रबलजलवाह, त्रिभुवनदीप, निर्मलगुणमाणिक्यसिंहलद्वीप, लीलां छलितकलिकाल, कर्मदुर्योधनप्रधन, प्रवर्द्धमानयशोधन तपोधन.

विशदशीलालंकारशालिनी, निजमानसनिर्मलताविजितनभःकल्लोलिनी, अनादिमिथ्यात्ववासनाप्रतिपंथिनी, मन्मथव्यापप्रोन्माथिनी, इसी तपोधना.

कंदमूलफलाहार, शुष्कसेवालकृताधार, जटामुकुटाधार, अलांगलाकृष्टभूमि, ब्रह्मचर्यप्रतिपालक, परोपकारक, कौपीनमात्रपरिग्रह, निःपरिग्रह, एवंविध तापस.

तैलकल्लवितकज्जलगुलिकासंकाश केशपाश, अष्टमीचंद्रमंडलायमान भालस्थल, कुंडलितकामकोदंडकुटिलभ्रूवल्लरी, आकर्णांततांडितनीलोत्पलानुकारित नयनयुगल, [35-A] सरल तरल जिसिउ गरुडचंचुप्रदेश तिसिउ नासावंश, परिपक्वबिंबीफलतुलिताधरोष्ठ, निर्मलपरिपूर्णपूर्णिमाचंद्रमंडलोपमानवदनमंडल, शंखसमानत्रिरेखांकितकंठकंदल, पृथुलवक्षःस्थल, नगरप्रतोलीद्वारपरिघासमानप्रलंबभुजादंड, सर्वथा अलक्षक्षामोदर, गंभीरनाभिप्रदेश, निर्जितवज्र कटीयंत्र, कदलीस्तंभोपमान उरुयुगल, सुश्लिष्टसंधिबंधन बत्रीसलक्षणलक्षितशरीर, उग्रयौवनरमणीय, सकलजनप्रमोदक पुरुष नीपजइ, रतिप्रीति तणा जिशा हींडोला तिसा स्कंधावसक्तकर्ण, द्विपंडीभूतराकामृगांकमनोहर कपोलमंडल, बंधूकबंधुर अधरपल्लव, कुंदकलिकासमान दशन, एवंविध वदन.

सांप्रत वर्त्तइ कलि, लोक घडिउ कपटदलि, दर्शन उच्छृंखल, आर्यजन स्वल्पबल, कराक्रांत देशमंडल, खंडवृष्टि मेघजल, पृथ्वी

मंदफल, मंत्र निष्फल, लोक सत्यविकल, नारी निरर्गल, रिद्धिभाजन खल, साधु शोकसंकुल, राजा तुच्छबल, गुरु कलहकंदल, धर्माचार्य चंचल, अनंत गुणहानि, बलग्लानि, सभ्य अबुध, नरेंद्र लुब्ध, रस निरास्वाद, लोक स्तोकमर्याद, अविवेकवास, धर्मवंतनाश, अतुच्छ मत्सर, कर्कश स्वर, तुच्छ धर्मरंग, गुरुजनप्रशंसाभंग, सुकृतकरण- 5 प्रमाद, बहुल मृषावाद, एवंविध कलि.

आभां तणी छांह, कुपुरिस तणी बांह, आढनुं तूर, नदी तणउं पूर, राय तणउ प्रसाद, मर्कट तणउ विषाद, इंद्रजालनउं पेषणउं, सूपडानउं उठींगणउं,, हरिद्रा तणउ रंग, पाणी तणउ तरंग, दासि तणउं हेज, आंबा तणउ मउर, कलालनउं लेषउं, मद्यप तणउं10 प्रतिपन्नउं, दुर्जननी प्रीति, चाउडांनी दाति, गोदंडा तणी वाट, स्त्रीजन तणउ स्नेह, जातउ जातउ लाभइ छेह.

श्रावक; जिनशासनप्रभावक, त्रिसंध्यदेवपूजाबद्धावधान, निज-गुरुचरणसरोजचंचरीकसमान, प्रवर्द्धमानश्रद्धान, कृपानिधान, विवेक-कुंजरबंधभूधर, रंजितसाधर्मिकनिकर, संततप्रवर्त्तितदानप्रसर, साधुसमीपि15 स्वीकृतनानानियमभर, अनित्यतादिद्वादशभावनाभावितांतःकरण, जिन-वचनश्रवणवंदनकप्रतिक्रमणादिविशिष्टकरणीयकरणप्रवण, स्वाध्याय-परायण, दानादिचतुःप्रकारधर्मोद्यत, परद्रोहविरत, औदार्यादिगुणग्रामा-लंकृत, संवेगवासनावासित, उपशमाध्यासित, अवगतजीवाजीवादिनव-तत्त्व, निर्मथितमिथ्यात्व, निःकलंकसम्यक्त्वचूडामणि, सांप्रतसमुद्भूत-20 प्रभूतचिंतितसमवाय, विशुद्धव्यवसाय, शिष्ट सुसंतुष्ट शांत शीतल त्रिदशगुणग्राम ऋजुपरिणाम देवगुरुकृतप्रणाम सर्वजनआशाविश्राम आत्मश्लाघापरनिंदापराङ्मुख सत्कर्मसर्वतोमुख क्रोधविरोधरहित मायागोमायुवृत्तिविरहित सर्वमित्र अजातशत्रु देवगुरुभक्त धर्मानुरक्त एकविंशतिगुणपरिकलित धर्मशास्त्रपरिमलित जिन० विवेकीया25 सुश्रावक.

जीर्णोद्धार पुस्तकपुस्तिकालेखन संघपूजा समवसरण[35-B]भरण पौषधशालानिवेशन त्रिसंध्यजिनार्चन प्रेक्षणिकआरात्रिकावसर अष्टाहिका कल्याणकोद्वहन तीर्थयात्रा रथयात्रा षट्पंचाशत्दिक्कुमारिका-स्नात्र ध्वजारोपण महाध्वज संघपतिता चैत्यपरिपाटिका परिधापनिका उद्यापन सम्यक्त्वारोपण देशविरतिप्रतिपत्ति सौवर्णाभरण कर्पूरकस्तूरिका-मंडन साधर्मिकवात्सल्य अमारिघोषण गुप्तिजेमन पर्वतिथिपोषण पौषधग्रहण उभयकालप्रतिक्रमणकरण अनेकतपश्चरणाचरण लक्षनमस्कार-परावर्त्तन जिनशासनप्रभावना सुश्रावक.

निर्मलसम्यक्त्वपरिपालनाकृतविशदगुणश्रेणिश्रेणिकनरेश्वर, ७०० सहस्र गूर्जरवसुंधरेश्वर, १४सइं च्याल प्रासादमंडितमहीमंडलाषंडिताधि-पति, चउदसइं च्याल संख्याप्रधान कुंकणाभिधानदेशपरमेश्वर रायपिता-मह अप्रतिमल्ल मल्लिकार्जुननरेश्वरशिरःसरोजपूजाप्रसिद्धप्रभावु, प्रत्यर्थि-पार्थिवसमूलोन्मूलननिस्त्रिंशस्वभाव, सपत्नपरितापनव्यसनविख्यातप्रताप-परमार्द्धिपरमेश्वर, जयश्रीस्वयंवरआनाभिधानशाकुंभरीनृपतिविनाशकीनाश, विग्रहराजराज्यपदस्थापनावसरविकस्वरयशःप्रकाश, राजर्षि परमार्हत धर्मात्मा मारिनिवारक सप्तव्यसननिवारक प्रतिज्ञानिर्वाहदशार्णभद्र न्यायवृत्तिविस्तारितजगद्भद्र प्रजापाल रिपुकुलप्रलयकाल पापव्यापार-पराङ्मुख विचारचतुर्मुख चौलुक्यचक्रवर्त्ती कृपालु राजा श्रीकुमारपाल.

प्रच्छन्नवृत्तिप्रपंचितप्रथमपुरुषार्थसार्थ, कृतपरार्थ, गुरुभक्तिगंगा-हिमाचल, देवभक्तिनिश्चल, गुप्तचार्यचिंतामणि, सुविवेकशिरोमणि, विवेकवयरागर, करुणासागर, सद्धर्मवासनानिविड, सापराय आभड.

कविसभाशृंगारहार, समस्यासत्रागार, प्राकृतपरमामृतप्रवाह, संस्कृत-समुद्रविहितावगाह, वसुधावाचस्पति, अप्रतिममति, सर्वशास्त्रपारंगम, लक्ष्मीसरस्वतीवेणीसंगम, सर्वजनोपकारी, महाभंडारी कुउडि.

रविमुक्त दीप इव, दीपोज्झितं गृहमिव, लूनाब्जं सरोवरमिव, हृतरत्न आगर इव, निर्नायकं सैन्यमिव, निःसिंहं काननमिव.

वृक्ष उपइ पल्लवि, वाउल उपइ चूर्णलवि, गगन उपइ भास्करि, माणस उपइ उपस्करि.

अनभ्यासि विद्या विणसइ, प्रमादि द्रव्य विणसइ, दुर्वचनि मैत्री विणसइ, लोभि विवेक विणसइ, अन्याय कीर्त्ति विणसइ.

षांडामानि पडीआरि, धनुपमानि पिणच, शरीरमानि छाया, पगमानि वाणही, आंषिमानि भरण, वृषमानि फल, जाषमांनि बल, भिराडीमानि धूवेल, क्रयाणामानि हाथसन, प्रीतिमानि समाचार.

जिहां गरूआ तिहां गाजणउं, कुलीन तिहां लांछण, भाणइ भउ, झूझि क्षयु, चोरी तु दोरी, चडण तु पडण, रंग तु विरंग, संयोग तउ वियोग, जिहां लाभ तिहां छेहउ, रूसणउं तिहां तूसणउं.

दृष्टि जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर, वांठ जाणइ घोडा, स्त्री जाणइ मुहमुचकोडा, गारुडी जाणइ [36-A] साप, मा जाणइ बाप, वणिग जाणइ माप, मन जाणइ पाप, मुख जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठा.

जिसिउ घाय चूकउ भड, जिसिउ डाल चूकउ वानर, जिसिउ विद्या चूकउ विद्याधर, जिसिउ ठाम भूलउ भंडारी, दाह चूकउ जुआरी, जिसिउ स्थानभ्रष्ट हरिण, इसिउ विच्छाय वदन.

लज्जाहीन कुलवधू, नीतिविकल राजा, षासणउ चोर, मंत्रि बहिरउ, आलसू कुमारउ, दुर्विनीत चेलउ, ध्वजरहित प्रासाद, क्षमारहित तप, यौवनरहित वेश्या, महिला कानि छूटी, ध्वज अंतरालि त्रूटी.

लवणरहित रसवती, वचनरहित सरस्वती, दधिरहित ओदन, घृतरहित भोजन, गुडरहित पक्वान्न, विवेकरहित सन्मान, छंदरहित

काव्य, कंठरहित गायन, वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम, नासिकारहित मुख, कर्णरहित कुंडल, सुवर्णरहित अलंकार, वेदरहित ब्राह्मण, मदरहित ऐरावण, लंकारहित रावण, प्रसादरहित नायक, युद्धरहित पायक, फलरहित वृक्ष, तपरहित भिक्ष, तांबूलरहित भोग, कंकणरहित बाहुदंड, योगरहित पाषंड, अणीरहित छुरी, मनुष्यरहित नगरी शोभा न पामइं.

गोरसांत भोजन, गजांत दान, बांधवांत वियोग, विपदांत मैत्री, गजांत लक्ष्मी, वापरांत दारिद्र, नायकांत युद्ध, हयांत व्यवहार, कसवट्टांत सुवर्ण, राजसांत प्रसाद, प्रवासांत नेह, नामांत केवली, हारांत शृंगार, कल्पांत प्रासाद, नरकांत राज्य, बंधनांत नियोग. *

दंताश्चर्बंति उपकारो जिह्वायाः, उप्टा वहंति उपकारः पुण्यवतां, खरश्चंदनवाही फलं व्यवसायिनां, लेखनं लेखकस्य फलं तद्वेदिनः, युध्यंते सेवका जयस्तत्स्वामिनः.

रविर्जगतस्तमो निवारयति, स्वास्तं न; चक्षुर्जगत्पश्यति, पुनरात्मानं न; वृक्षा अन्येषां छायां कुर्वंति, स्वयमातपं; षड्ंग परमारणे, शाणघर्षणान्न; वैद्या अन्यं चिकित्संति, स्वं न।

वामन उच्चैः फलानि ग्रहीतुं, अंधश्चित्रशालीर्विलोकयितुं, लिंबं मधुरं कर्तुं, काकं हंसं कर्तुं न शक्नोति।

दीपोत्सवसमो न दिवसः, सिद्धिप्राप्तिसमं न सौख्यं, अपुत्रस्य सुतजन्मसमा न निवृत्तिः।

---

* आ पछी मूल प्रतमां नीचे प्रमाणे बे संस्कृत श्लोको छे :—

तरवः तरणेस्तापं स चाभ्रोल्लंघनक्लमं।
पाथोधि नो श्रमं सोढा वोढा कूर्मः क्षितेर्धुरं ॥ १ ॥

वारिदो वर्षणक्लेशं क्षितिर्विश्वासमक्लमं।
उपकारादृतेमीषां ना फलं किंचिदीक्ष्यते ॥ २ ॥

प्रथमं शिरच्छित्वा पश्चादंगचुंबनं, प्रथमं गृहं प्रज्वाल्य पश्चात् तस्यैव गृहे कुशलवार्त्तापृच्छनं, प्रथमं प्राणहरणं विधाय प[36-B]श्चादनुशोचनं, पद्भ्यां मीनान् मर्दयित्वा मुखे वेदपठनं, स्वमातृदेहपण्येन द्रव्यमर्जयित्वा तद्भोगेन भोगी, केयं विदग्धता सर्वत्र योज्यं।

वेश्यागृहे सतीत्वं, चोरसाक्षिकं निधिकरणं, शुनः पार्श्वाद् दुग्धरक्षा, यौवने व्रतं।

नाउं छोटी मोटी कछोटी मोक्ष नही, विकट जटा मुकुटि मोक्ष नही, कंठकंदलस्थित यज्ञोपवीति मोक्ष नही, अखंड त्रिदंडि मोक्ष नही, हस्तधृत कपालि मोक्ष नही, स्वदर्शनमंडनि मोक्ष नही, शिरस्तुंडमुंडनि मोक्ष नही, नियंत्रित सर्वकरणि विशिष्ट तपश्चरणि मोक्ष नही, किंतु रागद्वेषपरिहारि शुद्ध निर्मल मनि.

मनदेवता कुणहइं धरी न शकीइं, क्षणि जाइ सागरि, क्षणि जाइ आगरि, क्षणि जाइ सरि, क्षणि जाइ नदीपरिसरि, क्षणि जाइ नगरि, क्षणि जाइ भूतलि, क्षणि जाइ पर्वताभ्यंतरि, क्षणि जाइ अंबरि, क्षणि जाइ पातालोदरि. किं बहुना, कुलालचक्रनी परि फिरंतु अछइ.

अजिउ व्याघ्रिसिउं क्रीडा कीजइ, अजिउ सर्प्पसिउं सांई दीजइ, अजिउ हालाहल पीजइ, अजिउ महाविषनउ कवल लीजइ, अजिउ अग्निमध्य प्रवेश कीजइ, अजिउ शत्रुसिउं वसीइ, पुण प्रमाद न कीजइ.

गढ गिरुउ अनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पाताले पयठउ, महागज तणा जिसा पाग तिसां कोसीसां, गरुई पोलि, निविड कमाड, लोहभोगल, विंजाहरी तणी पद्धति, यंत्र तणी श्रेणि, ढींकुली तणी परंपरा, षाई तणउ दुर्ग, परप्रवेश नही, हाथीआनउ ढोउ

नही, पाषरद्मां रहण नही, सूयरा विषय नही, नीसरणी ठाउ नही, भेदसंभावना नही, जिसिउ वज्रघटित विश्वकर्मानिर्मापित, देवहं किहिं अगम्य, इसिउ गढ.

साचा समी पावडी नही, ॐकार समउ मंत्राक्षर नही, मदन समउ धनुर्धर नही, लवण समउ रस नही, शील समउ शृंगार नही.

जयकुंजर हाथीया तणइ कुंभस्थलि चडिउ, पाषती अंगरक्षक तणी ओलि, मंडलिक तणइ परिवारि, पताका फुरकती, मेघाडंबर तणइ आडंबरि, सीकरि तणइ झमालि, सुषासण तणी द्रडवड, घोडा तणे थाटि, पायक तणे पहटि, बहुली लागि तणइ चीत्कारि, भाट नगारी तणइ कयवारि, राजा राजवाटिकां चडिउ.

ऊपर हूंतउ स्वर्गलोक आणइ, गगनांगण स्तंभइ, आकाशि वैश्वानर बालइ, पातालकन्या प्रत्यक्ष दिषाडइ, कडयडारव करतां वनषंड मोडइ, पर्वत तणां शिषर ढालइ, इसिउ मांत्रिक योगी.

जिसिउ गुरु तिसिउ अभ्यास, जिसी शीष तिसी दीप, जिसिउ आहार तिसिउ नीहार, जिसिउं वावीइ तिसि[37-A]उं नीषणीइ, जिसिउं कमाईइ तिसिउं अमाईइ.

परदारसंग लगइ घरबार चूकइ, धन धान्य चूकइ, षाइवा पीइवा चूकइ, उढिवा पहिरवा चूकइ, स्वजन परिजन चूकइ, देहवान चूकइ, आहार व्यवहार चूकइ, सत्य शौच चूकइ, देवगुरु चूकइ, इहलोक परलोक चूकइ, एक नरकइ जि हुइ.

प्रत्यक्षे मधुरया गिरा अमृतं वर्षतां, परोक्षे दोषं जल्पतां, नीचानां, व्यसनैर्वशीकृतानां, इंद्रियैः पराभूतानां, पल्वलजलादपि निर्मलानां, मुनि-हृदयादपि स्नेहरहितानां, निदाघकालादपि तापकराणां, कालरूपादपि प्राणहराणां, सिकताकणादपि असंबद्धानां, दवाग्नेरपि दहनस्वभावानां,

अमावास्याया अपि अंधकारमुखानां, गुरुषु विद्वेषिणां, बंधुषु बद्धवैरिणां, पितृमातृद्रोहकारिणां, मातृशूलानां, श्वपुच्छादपि वक्राणां, समुद्रजलादपि अनुपभोग्यानां, अंत्यजचरित्रादपि मलिनचरित्राणां, सर्पजातेरपि अनात्मीयानां, प्रदीपनादपि आश्रयविध्वंसिनां, नदीकूलादपि नीचगामिनां, हरिद्रारागादपि क्षणविनश्वराणां, उदयास्तु न दृश्यंते कुपुरुषाणां । 5

इतो व्याघ्रः इतस्तटी, इतो दवाग्निरितो दस्यवः, इतो दुष्टः दंदशूकः इतोऽप्यंधकूपः ।

वानर अनइ वींछी षाधउ, दाघज्वर अनइ दवानल, सिंचाणउ अनइ चडिउ चरडह हाथि, जूठउ अनइ जूआरी साथि, वैश्वानर अनइ विकराल, विषतरु अनइ विषहर. 10

जइ नाचिवा पइठी तउ घूघटउ कांइ, जइ आंषि काणी तउ काजल कांइ, जइ भीष तउ भूष कांइ, जइ साथरउ तउ सांकडउ कांइ, जइ भीषिवा पइठा तउ लाज कांइ, जइ संयम लीजइ तउ विलंब कांइ ?

परदल मिलइं, सुभट किलकलइं, नीसाणि घाय वलइं, चिंध झल-15 हलइं, त्रिषत षटकइं, सन्नाह त्रटकइं, वीर मोडणां वाचइं, राउत राउतइं ताजइं, पंभ रोपावइं, विपक्ष कोपावइं, आरेणि सांचरइं, घाइ घाउ वंचइ, रणदीक्षा लीइं, महात्याग दिइं, हस्ति हस्ति जुडइं, पाषरयां नीवडइं, रथसमूह पहटइं, हृदय बाण चुहटइं, योध उद्धसइं, बपूकारिईआ उलसइं, सुभट झूझइं, कायर मूंकइं, भट्ट मंगल करइं,20 देवांगना देषइं.

संग्रामे संग्राम सज्जता राय तणइ कडइ पाछिलइ प्रहरार्द्धि कडाहि चडइं, बाज पडइं, मंडलिक तेडां, स्वहस्ति बीडां, पडतां न सहीइं, जीण सलवलहीइं, पीव ऊरिया, षाण भीजव्यां, भूंजाई

नीपनी, मंत्रणी मुहाडि हुई, सेलहथनइ सीषामण हुई, काठीया फिरयां, स्थाना तूर विलस्यां, चउरा गूडर वाडी आंथी (?) समाव्यां, कंठाल कसी, भंडार भरभरा भरिया, रथ जूता, राउत पायक भथाइति गंगोदकि स्नान कीधां, गोत्र[37-B]देव पूज्या, नैवेद्य बलिविधान नीपनां, राउ तणे ऊतारे १६ षेत्रोत्पत्ति जातिअश्व आव्या, ते किस्या घोडा? तेजी तुरंग गह्वरा कारातोरा षुरसाणा भयणा हयाणा रोहवाल रूढमाल तोरका मंदकोरा पीलूआ भाडिजा उराहा सेराहा केकाण सूनडा सिरपंडा महूअडा दक्षिणपथा पाणीपथा मांकडा नीलडा क्याहडा गंगाजला सिंधूआ पारकरा कांबोजा, तीहं तणी सुवर्ण्ण विस्तीर्ण्ण उहरी गीवटी कलाइ, पलाण तणी समर्थाई, मुहि रूधा, वाघ सूधा, वहीआलि कस्या, असवारि वस्या, कंप देता दीसइं, हाथीआं तणे मुहि पइसइं, बपूकारिया रहइं, रणि पषे रालइं घालइं, इस्या अश्व गंगोदकि स्नान कराव्या, तीहं कंठकंदलि कठूंबरि तणी माल घाली, धूपहट धूप्या, कृष्णागर ऊषेव्या, उरत्राण ऊषेव्या, आयति कीधी लगाम, कडीआली सांवरी; तीहं तुरंगम तणे पृष्टि पंचवर्ण्ण पलाण कराव्यां, किस्यां ते? कूसी, कूंकूलोल, बिसरां बहकां, पीतलहर पागडां, थिर वड्यां, हांसरू भरियां, पुहली पातली पटाह; तेहे घोडे पंचविध पाषर सांचरी, मीणवाषर, मालवाषर, कातलीआली पाषर; राजपुत्र तेहे घोडे किस्या चड्या? दूरापाती, लघुसंधानी, दृढप्रहारी, शब्दवेधी, जीह तणउं जाणीतउं कुल, स्वामि तणउं बल, थोडउं बोलइं, निर्गर्व चालइं, देवगुरु नमइं, ठाकुर तणइ हीअइ गमइं, संग्रामदुर्द्धर, परनारीसहोदर, वादि वडइं, जेहे दीठे दुर्जनने हीए त्रासक पडइं, छांडइ घाट, घोडा तणा कानसोरामाहि साट, सांवरिआ दीसइं; परसैन्य पइसइं, भाले ताडइं, सेर पाडइं, मुहि मारइं, राउत पचारइ, षांडइ हाथ घालइं, तेहे सूरे सुभटे संग्रामि सांचरते सहोदर पुत्र मित्र कलत्र मोकलावी, सप्तांग लक्ष्मी

तणा भोग छांड्या, आपणा स्वामी तणे काजि प्राण निवेद्यां, तीहं संग्रामि सांचरतां वादित्र वाजिवा लागां, आकाशि डमरू डमडम्यां, काहली कंसाल तणे कोलाहलि कर्ण्ण कमकम्या, झलरी झणत्कार हूआ, भेरी भांकारि भूंगल तणे भूभूआटि भूमि फाडी, नीमड्यां नीसाणने नादि नदी निर्झर प्रतिनाद नीपना, ढाक बूक वाजी, तेहे वाजते ऐरावणि ऊमडिउं, दिग्गज दहदह्या, बूंगारव पाटा, तारागण त्रूटा, तुरंगम त्राठा, विहुं दलि मिलि हुंते घाट ध्रसहस्या, मोजडां कसकस्यां, मरकत माणिक्य मुक्ताफल मेघाडंबरि मयूर तणउं मंडाण छत्रदंड, अलंब चिंध चमर सन्नाह तणे सुवर्ण्णशृंग धगधग्यां, रत्नावली झलकी, गोला मगध गहगह्यां, चंपक मालती वकुल केतक प्रभृति पंचवर्ण्ण पुष्पपरिमल प्रसर्या, कर्पूर कस्तूरिकादि [38-A] सौरभ सांचरिया, असवार तणी आंहसी आवेगि असणि ऊडी, दलयुगलधूलिपटलि द्रूमंडल छाइउं, पाषर्यां तणे पायक तणे पगपदताले पातालपाणी प्रकठ हूआं, असंख्य साहणि चालते हूंते समुद्रसलिल सलसल्यां, घांट घमघमी, घाघरयाल वाजी, रथीक राउत तणे रसरसाटि रोहणगिरिशृंग रणरण्यां.

हस्तिवर्ण्णनं; फोफलवर्ण्ण, घ्राणबद्धकर्ण्ण, उज्ज्वलदंत, युद्धपात्र, निर्मलगात्र, आसणि ऊंचा, नेत्रि नीचा, दर्प्पि दलइं, कोपि ज्वलइं, मदि रेलइं, सारसी मेल्हइं, मूंक्या मांडइं, असवार ऊमडइं, अणचींतव्या डहकइं, अंकुशि लहकइं, न सहइं रूप, न सहइं चड्या, न सहइं पाला, न छूटीइं नासते, न छूटइ पइसते, सदा रूठा, हीइ विणठा, गयगड रूसइं, पायल लूसइं, मदोन्मत्त, त्रिदंडवरित, त्रिपाटभरित, चारु रूप, आरक्त कुंभस्थल, आपणी छाया देषी गुहिरा गाजइं, गोत्र नीमजइं, सेन्य छांडइं, अलुआरी मांडइं, कंठ पूरइं, गढ चूरइं, घाय रचइं, निहाइ माचइं, करदंत ताकइं, त्रुटिकार अरिरिकार हाकइं, वांटे चड्या योध ताकइं, उसरइं, पइसरइं, तीहं वीर तणा नाभिप्रमाण बहुल कूंच, आकर्ण्णांत मूंछ,

लोहनां पुहली पाटी षांडां, चउरासी फूलडी कर्केरत चउक्षुरप्र, अर्द्धचंद्र बाण, बावन्नतीरी, तोमर भिंडवाल भाला नाड्या, कोदंड धनुष चडाव्या, कुंत कराग्रि कीध, छुरी पाशु परशु पट्टिश शक्ति करमुक्त यंत्रमुक्त मुक्तामुक्त दुष्फोट तरवारि अग्नि तेल लोहबद्ध लुडि एवं-विध आयुध विशेषि ढांचां भरियां, पत्तियुद्ध प्रवर्त्तिउं; हाथिउ हाथिइ, असवार असवारि, पायक पायकि, भथाइतु भथाइति, शराशरि, षड्गा-षड्गि, गदागदि, केशाकेशि, दंतादंति, मुष्टामुष्टि, एक अंगि लोह-मइ आंगी करी, मस्तकि शरक करी हऊआ युद्धोद्यत, केई परि-कर संपूर्ण हूआ, सेवागत सवे राजान सावष्टंभ हूआ, तिसइ समइ कुणहिं रचित चक्रव्यूह, आगेवाणि सींगडिआ तणी श्रेणि, पश्चाद्भागि फारक तणी पद्धति, अनंतर विलक्षी हाथीआं तणी घटा, हस्तिघटा, बिहुं पषे पाट पाषरयां घोडां, बिहुं पषे रणतूर्य वाजिवा लागां, बिहुं पषे नीसाण घाय वल्या, बिहुं पषे भाट पठिवा लागा, बिहुं पषे सिल्ल भिल्ल नाराच पडिवा लागा, सूर्यकिरण आछाद्यां, खड्ग कलकचटिवा लागां, अपर दल नासिवा लागां, कोइ आत्म-पर-विभाग बूझइ नही, न जाणीइ आत्मदल, न जाणीइं परदल, पितापुत्र सूझइ नही, न सूझइ भूतल, न सूझइ नभोमंडल, न जाणीइं रात्रि, न जाणीइं दिन, न जाणीइं पूर्व, न जाणीइं पश्चिम, केवलूं गज गलगला रवि करी जाणीइं, तुरंगम हणहणा रवि करी जाणीइं, रथचक्र चित्कार करी जाणीइं, चिंध पताका किंकणीक्काण करी जाणीइं, तूर्य शद्ध [करी] जाणीइं, नीसाण द्रहद्रहाटि करी जाणीइं; इसिइ समरि प्रवर्त्तमानि राजा लोहसंपूर्ण सन्नद्ध हूउ युद्ध करइ, सुहड चूरइ, रथावली ऊघलावइ, मुडुउधा मांकड जिम नचावइ, पाषरया थाट हणइ, दलसमुदाय भांजइ, दलपति गांजइ, शत्रुकटक तणा कंद षणइ, समग्र तृण समान करी हणइ, वीर[38-B]व्रतविख्यात, चरित्रावदात, शूरशिरोमणि, चारहडचूडामणि, कुलक्रमागत, स्वामिसंमत, जयवादसादर, जीवितनिरादर, आरंभनिर्वाहोत्कट, महासुभट.

अथ शाकिनी: करकमलि दिती ताल, मुखि बोलती आलमाल, ऊर्ध्वीकृतमुक्तकेशजाल, दंष्ट्राकराल, हाथि धरती रक्तकपाल, मुखि मेल्हती वैश्वानरझाल, इसिउ शाकिनीचक्रवाल.

जिशा मरुदेशि कूपजल, जिसी शिला उच्च सरल तिसी आंगुली विरल, जिसा तालवृक्ष तरल तिसिउं जंघायुगल, जिसी पर्वत तणी दोनडि इसी मोटी कडि, इसिउ पिशाच.

वेताल भीषणाकार, मुखि करता फार फेत्कार, कृतांतावतार, मुखि मेल्हतउ झाल, हस्ति देता ताल, इश्या ऊछलिआ वेताल.

महांत घोर निर्मानुषी अटवी, किहाइं शिवा तणा फेत्कार, अलिंजरना सूत्कार, वानर तणा बूत्कार, भैरव तणा कलकलाट, हरिण तणा षलभलाट, घूक तणा घूत्कार, सिंह तणा गुंजारव, व्याघ्र तणा धुर्धुरारव, महाभैरव शूकर घुरकइं, चित्रक बटकइं, वेताल किलकलइं, दावानल प्रज्वलइं, रिंछ सांचरइं, विरू बूत्कार करता विहरइं, इसी अटवी, जेह अटवीमाहि सिंहनाद समुच्छलइं, मदोन्मत्त गजेंद्र गुरलगुलइं, व्याघ्र तणा बोंकार समुच्छलइं, वानरपरंपरा ऊछलइं, रिंछकुल किलकिलइं, सिंहनादभयभीत मृग खलभलइं, दवानल प्रज्वलइं, मृगयूथ एकत्र मिलइं, चित्रक वक्र विचरइं, एवडइ भीषणाकारि पडीइ अरण्य दंडाकारि, तत्र जिसा मषीपुंजनिकर, जिसा यमराजना किंकर, जिसा दवदाधा पील तिसा दीसइं भील.

अथ वर्द्धापनकं; नगर तणा प्रधान नर तेडावउ, महोत्सव करावउ, सुवर्णमय दीप ज्वालीइं, घर तणां कूड अजूआलीइं, सुवर्णमय मुशल ऊभ्यां, सौवर्णकलश स्थाप्या, घर धवल्यां, भित्तिभाग धवल्या, तलीयातोरण बांधां, प्रासादे वैजयंती कलकावी, गोतिहिरां मेल्हाव्यां, अमारि करावी, सर्वत्र मंगलाचार दीजइं, तूर वाजइं, अक्षतपात्र सांचरइं, तंबोल वापरइं, अर्थव्ययनी संभाल नही.

जिम हेडाऊ तुरंगम पालइ, जिम वणिक हथेलीनउ फोडउ पालइं, जिम तंबोली पान संभालइं, तीणइं परि पुत्र पालइ.

अथ वेश्या: चतुःषष्टिविज्ञानकुशल, कोमलालापपेशल, निरुपम-रूपलावण्यरसकूप, चतुरचाणाक्य, इंगिताकारनिपुणि, कामशास्त्रविचक्षण, चंपकलतामुकुमालि, आनंदितत्रिभुवनाभ्यंतरि, समस्तसौभाग्यनिधान, पुरिप्रधान, परवंचनाबद्धलेश्या, मदनमंजरी वेश्या.

उदारस्फारभद्राकार, धनदयक्षावतार मकरध्वजानुकार, साहंकार, सत्पुरुषसार, मुकुमार इसिउ पुरुष देषी कुट्टनी इसिउं भणइ, वच्छे करे भली भक्ति, वडी आसक्ति, इसिउं जाणे माहरइ घरि आविउ चिंतामणि, निवृत्ति करिवा आविउ कल्पतरु, जीणइं कारणि वेश्या तं कांई भक्ति प्रकासइ, जीणइं पिरायुं मन वासइ.

समुद्र रहइं लवण मूंठि भेट, रोहणाचलनइं रत्न भेट, गंगा रहइं कनकफल भेट, मलयाचलनइं चंदन भेट, मेरुगिरिनइ सु[39-A]वर्ण्ण भेट, कल्पवृक्षनइं कांइ फल भेट ?

उषरक्षेत्रि इक्षुलता, मरुस्थलि गंगातरंग, गिरिशिखरि पद्मिनी, धूलिमाहि रत्न.

सर्पनउं रूप, यमनी जीभ, प्रेतनउ पुत्र, भूतनउ भाई, शाकिनीनउ सहोदर, मोगामाहि महर्द्धिक, अगतीयानउ अग्रेसर, रक्षसनउ रक्षपाल, पिशाचनउ पाहरी, काल केसि मारूआडिनइ देशि मरुस्थलीनइ प्रदेसि, कृतांतनउ करवाल, यमनानउ तरंग, विषनी वेलि, गरलनउ प्रवाह, कालनउ कुमर, अवगुणनउ आगर, इसिउ पींडार.

हंसगति जिम चालती, मयगल जिम माल्हती, कामिनीगर्व भांजती, चंद्रकला जिम गुणहिं वाधती, कंचुक ताडती, नयनबाणि

जणमण वींधती, तरुणतरट्टि, कस्तूरीतिलक ललाटपट्टि, वांकउं जोअती, जनहृदय आल्हादती, सीमंतउ फाडती, कंठकंदलि नवसरहारि रुलंतइ, अमृत तणउ प्रवाह, मोहणवेलि तणउ कंदलउ, पूनिमनउ चंद्र, चालती चिंतामणि, मूर्त्तिमंतउ कल्पवृक्ष, पुण्यनउ पोउ, कृपा-रसनी प्रपा, पीड्यां प्रहंस्यानउ आधार, विवेकरसदीर्घिका, धर्मतरु- 5
मंजरी, उपशममूर्त्ति, इसी बालिका.

निर्मासमुखमंडल, लघुतरस्तब्धकर्णयुगल, विस्तीर्णहृदयस्थल, उद्धरस्कंधबंधुर, विशालपृष्ठप्रदेशमनोहर, हेषारवि विधुरितभुवनोदर, अनिवार्यवर्यतेजःप्रसर, सकलजीवलोकविस्मयकर, परिमितमध्यप्रदेश, पीनपश्चिमदेश, स्निग्धरोमराजिविराजमान, अतिप्रधान, नंदावर्त्तभद्रावर्त- 10
प्रमुखप्रशस्तसमस्तावर्त्तपरिकलितशरीर, संग्रामशौंडीर, अर्द्धफलगति-विशेषप्रवीण, पर्वतोत्तुंगकाय, समुद्रकल्लोलवच्चंचल, वलानउर्ध्वमुख, वेगि पवन समान, उच्चैःश्रवासमान रूपविलास, सलीलचरणन्यास, शालिहोत्रादि-शास्त्रप्रणीतप्रधानमानसंस्थानसंपन्न, प्रशस्यदेशसमुत्पन्न, सकलाभ्युदयकारण, सदाजयलक्ष्मीसाक्षेपवीक्षित, रेवतदेवताधिष्ठित, सौवर्णसांकलविभूषित. 15

अथ प्रव[ह]णभंगावसरः; जलकल्लोल गगनमंडल व्यापिवा लागा, अकस्मात् नक्षत्रमाला अदृश्य थई, विली वाउ वाइवा लागा, तलानी माटी ऊपरि आणइं, दुर्गंध ऊछलिउ क्षार जलनउ, छुड द्रु न लागइं, जलचर जीव आवी प्रवहणि वाजइं, सुकाणना बंध सल-सल्या, पवननउं पूर, कूआथंभउ डोलइ, तिवारइं मालिम छांडइ, 20
अकस्मात् धूंअरि पडिवा लागी, एतलनइं नालिनी वेगलि भागी, वस्तु चावणी कीजइं, लहरइं सिढ भीजइं, एके आपणी वस्तु तिवारइं अर्द्धमूलि दीजइं, अनेरे लोभीए तिवारइं ते वस्तु लीजइं, सारगांठडी सुगृहीत कीजइं, जउ वेला हुई आरती तउ मालिम-बुद्धि हारती, कोडवाल तरल थिउ, कूड कापिउ, सिढ संकेलिउ, 25

नांगर वाहन हीआउला वहइं नही, कदाचि वाहण भाजिसिइ इसिउं जाणी वांस वली आणी एक लोक त्रापा बांधइं, एके लोके गोत्रदेवता इष्टदेवता मंत्रआराधन कीजइं, कायर किर-किरइं, सधर धार्मिक हीइ धर्मध्यान धरइं, देव देवी रहइं इच्छ पडीच्छ करइं, तारू तरिवा सावधान हूआ, हीआहीण अणबूडइ वाहणि मूआ, चक्राकारि फिरइ, तारू पठाण करडकिउ, पाटीआनउ हूउ भंगु, नाषूआनइ मनि गिउ रंग, षेला षलभल्या, बुंबारव ऊछलिउ, आरडि मेरडि अधिक हुई, तीणइं वेलाइं वि[39-B]-रलउ कोइ पाटिउं लहइ, पाछिलउं सहू पुण्यहीन समुद्रमाहि रहइ, भारी वस्तु सघलीइ तलइ गई, बीजी तरती तरती तटि पुहती हुई, कुइ तारू तरतउ कलिकलिउ, कोई गरूइ जलचर जीवि गिलिउ, एके तरते तट लाधउ.

विरंगमाहि रंग, विरसमाहि रस, दौर्भाग्यमाहि सोभाग्य, दुर्जन-माहि स्वजन, विषमाहि अमृत, कंटकी वृक्षमाहि कल्पवृक्ष, दारिद्र-माहि निधानप्राप्ति, दंडकारण्यमाहि सलिलपूरित सरोवर.

उत्तमस्वरूपं; कपूर हाथिसिउं मोरिउं पुण परिमल न मेल्हइ, कस्तूरी कुंकुम चंदन तांबूल अगर दूध इक्षु कर्पास फूल मौक्तिक रत्न, तेउ गुणगौरव, तेउ दाक्षिण्य, तेउ सौभाग्य, ते मधुर बोलिवउं, तेउ विनयप्रतिपत्ति, तेउ गंभीरिमा, तेउ विवेक.

कालना किंकर, यमना सहोदर, प्रेतनां पेटां, कालरात्रिना कुंअर, भूतना भण्यागरा, स्मशानना सहवासि, स्थित कांधि सर्पना करंडा, रुद्राषमाला पहिरणि, एकने हाथे नागदमनी बांधी छइं, विवरमाहि उन्हां पाणी घालइं छइं, वेलि वेलि सूरा सोधीइं छइं, एकि षीलणी स्मरइं छइं, एकि गारुड मंत्र जपइ छइं, एकि नागकुलसंकेत पढइं छइं, एकि तोतला कुरकुल्लाना मंत्र जाणइं, सर्प पाताल हूंता

आणइं, मधुर स्वरि महुयरि वाइं, वानि काला, मुहि विकराला, अवसरि सूंआलइं सादइं गीत गाइं, सामउं जोइं, फण मंडावइ, शरीरनी वाकुंडिम छंडावइं, इसा गारुडी.

कपोलविच्छाया नायका निश्वास मेल्हइं, नेत्र सांकुड्यां, नयन सजल हूआं, ओष्ठ मिलाणा, चित्त चंचल हूउं, चंद्रमानी कला जिसी राहुइं ग्रसी हुइ, व्याघ्राक्रांता मृगी हुइ जिसी, दवि दाझती वनलता, हिमदग्ध जिसी कमलिनी, सूकती जिसी सरसी, यूथभ्रष्ट जिसी हरिणी, स्येन लीजती जिसी चिडी, सीहि आक्रमी जिसी हस्तिनी, कठिण कुठारिका कापी जिसी केलि भूमंडलि पडी, ग्रीष्म-कालि सूकती जिसी हुइ नदी, दावानलनी झालइं कलकलती जिसी नागवेलि हुइ, तिवार पछउं दुःखभार भरी थिकी नवे नवे विलापे विलपइ, ते विलाप किसा? तात तउं मुझ छांडी किहां गिउ, मात भ्रात नाथ कांइ हुं परित्यजी? किसिउ माहरउ अपराध, जइ इसिउ निस्नेह तउं इण संसारि? समुद्र अजीं मर्यादा न लोपइं, सूर्य अजी उदयवेलिइ उदयउ छइ, अजी मेघनी वृष्टि हुती जोईइ, पृथ्वी रसातलि नही जाइ, आकाश त्रूटी नही पडइ, अथवा ते तं माहरउं किसिउं दूषण? एह्वउ माहरउ कर्मविपाक, मइं पूर्वभवि कउणिहि फलीइ वनि दव दीधउ, बालहत्या कीधी, बालविछोह कीधउ, कइ देवनी पूजा पाइ टाली, किसिउं मइं ऋषिहत्या कीधी?

एतानि एकत्र मिलितानि स्युः, फूलि परिमल, रत्नि तेज, जलि शीतत्व, शरीर च्छाया, चंद्रिइ ज्योत्स्ना, मेघि वीज, सूर्यि दीप्ति, गंगोदकि निर्मलता, स्फटिकि अच्छता, लक्ष्मीइ कुलं.

तावदिदं सकलजगज्जीवति ईश्वरे विश्वकर्तृत्वमामनंति मनीषिणः, एकि संसारनी सृष्टि ईश्वर हुंती कहइं, एकि ब्रह्मा, एकि वैष्णवी, एकि

शांबमाया, एकि शक्तितउ कहइ, पणि लक्ष्मीकृत सृष्टि मानीइ, जेह कारणतउ योजन सहस्र परइं सजीव निर्जीव वस्तु करतलगत दिषाडइ, एक रायतन थापइ, एकि ऊथपइ, जं चीतवइ तउं करइ, संध्या ओहरी नवबाहरी नगरी करइ, पृथ्वीपीठि अमारि प्रवर्त्तावइ, पृथ्वी ऊरण करावइ, जेह लक्ष्मी ल[40-A]गइ इशा पदार्थ नीपजइं, तेह लक्ष्मी लगइ जीविउं जाणीइ, निर्गुण गुणवंत हुइ, निष्कल कलावंत हुइ, मूर्ष पंडित, अविवेकी विवेकवंत, अजाण सुजाण, दोहगी सोहगी, तेह लक्ष्मीरहित हुंतउ गुणवंतइ निर्गुण नीपजइ, किं बहुना, जीवतउ मृत धन पाषइ, जेह लक्ष्मी लगइ जीवतउ जाणीइ तेह लक्ष्मीनउ जीवितव्य केहतउ? पूर्वभवोपार्जित अति स्फीततर पुष्ट जं पुण्य तेह पुण्य लगइ जीवइ; ए लक्ष्मी अजर अमर करिवा वांछउ, तउ दान रूपिउं रसायन लक्ष्मी प्रति दिउं; जसिइं आयु पुण्य वाधइ, पुण्य आयुनी वृद्धि नीपजइ, लक्ष्मीनी वृद्धिं जग वाधइ, जीणइं पुण्यवंत पुरुषि दान रूपिउं रसायन देईनइ पुण्य रूपीउं आयु धरी लक्ष्मीनी वृद्धि कीजइ, तीणइं जाणि विश्व रहइं उपकार कीधउ.

गौतम अष्टापदे गच्छन् जिसिउ वीजझात्कार, मधुघृतहोमित वैश्वानर, वसंतमासि पल्लवोल्लासशालीउ अशोक वृक्ष, जिसिउ ऊगतउ सहस्रकिरणपरिवरिउ सूर्य, षोडशकलासंपूर्ण चंद्र जिसिउ हुइ, अभिनवि कुसमि परिवरिउ पारिजात कल्पवृक्ष हुइ, इसिउ श्रीगौतमस्वामि ऋषि तपनउ निधान, क्रियानउ भंडार, गुणनउ परमावधि, करुणानउ निधि, वात्सल्यनउ समुद्र, नसांजाल व्यक्तां दीसइं, अस्थिबंध ढीला ढलहलता जिसा गामटि अजाणि सूत्रधारि काष्ट मेलिउ सालसंचउ ठगठगतउ मेलीउ हुउ जिसिउ.

अथ विमानं: पंचवर्णरत्नप्रकाश प्रसरिउ, सुवर्णमय दंड दीसइं, गंधर्वनउं गुहिरउं गीत गान, माहि बत्रीसबद्ध नाटक, माहि

अमृतपूरित षडोषली, बिसइवा फिरवा थाहर अति मोकली, विचित्र पुष्पित कुसुमवृक्ष, मणिमय भित्ति, माणिक्यमय सिंहासन. इंद्रनील-मणिमय पल्यंक सूंआले पछेडे आच्छादिउ, किहां किहां मोतीना चउक पूरिया छइं, मरकतमणिमय भाजन, फूलना पगर, दिसदिसइं बहकइं कृष्णागर, इसिउं विमान; माहि सुवर्ण्णमय स्तंभ, ऊपरि रत्नमय पूतलीना संरंभ, असंख्य गवाक्ष्य मत्तवारण मगरमुहां, सरल तरली छाजांश्रेणि, झलहलता कनकमय कलश तणी परंपरा, इसिउं विमान.

जिम भविक रहइ सुतीर्थनइ दर्शनि, दातार रहइ सत्पात्रनइ संगमि, रोगीआनइ रोगनइ निर्गमि, सुशिष्य रहइं सद्गुरुनइ संयोगि, दरिद्रीनइं लक्ष्मीनी प्राप्तिनइ योगि प्रसंगि.

सर्पविषि जिसिउ घारिउ, जिसिउ शाकिनी छलिउ, जिसिउ वंचकि वंचिउ, जिसिउ दावज्वरि आलिंगिउ, जिसिउ भूताधिष्ठित.

साह हस्तावइं छइं, आवर्ज्या आवर्ज्या हस्तमान दिइं छइ, संचकार आपइं, नाना प्रकार वस्तु वहुरीइं, तुल मांडीइ, सुवर्ण्णादिक धातु कसउटीइं कसीइं, अर्थ परीषीइं, लीजइ दीजइ, परीक्षाशुद्ध रत्नजाति लीजइं, परदेशी वस्तुना आथ पूछीइं, वाणुत्रना लेखना टीपणां संभालीइं, प्रदेशकारणि वासण सांचीइं, लेख लिखीइं, परदेशी पाठंवणीया पाठवीइं, अवधि बोली उग्राह-णीआ देणे द्रामे पडषावीइं, ग्राहग आवर्जीइं, मीठे मधुरे बोले सह देसि सगपण संज्ञा तिसिउं साचवीइं, अवसर देषी अधिकउ ओछउ व्याज लीजइ दीजइ, देशदेशना अर्थ पूछीइं, जीर्ण्ण रिणउं पांधे पांजरे करी दीजइ, लिहणा देवा लोहडीयानी लाज न कीजइं, लेखउं करी लीजइ, राति जागीइ, दस्तरि लिषीइ, वली वली एकत्र

मेलीइं, अपरीछ्या माणसनइं पहू पहू वा पाषइ पाइकानी वस्तु आपीइ नही, आपणी मांम न लोपीइ, इसी परि जलमार्ग स्थलमार्ग तलपद त्रिहुं स्थानकि नाव्य[40-B]व्यवसायव्यवहारिए वचन प्रतिष्ठासिउं कीजइ, दाणीसिउं पाठि सलसूत्र साचवीइ, पाठ वणीया पाठवी आयतरा साधीइं.

आशीर्वाद मनुष्य मनुष्य रहइं उपकार करइ, पुण प्रत्युपकारनइं कारणि करइं, अथवा ऊरिण थावानइ कारणि करइं, अथवा कीर्त्तिनइ कारणि, अथ पुण्यनइ कारणि, बिहुं प्रकार निरुपकारी रहइं जउ उपकार कीजइ; एकि पदार्थ इस्या छइं, तीह हूंती एकेक कार्य तणी सिद्धि, जिम जल पीजइ त्रस नासइ, अन्नभोजनि भूष भाजइ, पान समाणीइं मुखि रंग अवतरइ, वृक्ष वावीइ फलनी प्राप्ति; एकि इस्या हुइं जीहं हूंता घणां काज सीझइं, जिम समुद्र एक रत्न नानाविध चिंतामणि, एक राज्यादिक अनेक पदार्थ पामीइं, यस्यैकत्र तटेन वापिनिधयः कल्पद्रुमाः, कोण केए उपकार प्रत्युपकार न करइं ते माणस कृतघ्न भणीइं, एह कारणतउ लक्ष्मी तणा उपकार कीधा आपणपानइं, पछइ एह लक्ष्मी रहइ जउ वलतउ उपकार न कीजइं तउ कृतघ्न हुईइ; तउ किस्या किस्या उपकार? लक्ष्म्याहं गमितः परा०, सत्पात्रं महती श्रद्धा०, काले देयं यथा वित्तं०, धर्मसाधनसामग्री नाल्पपुण्यैरवाप्यते०

धन्ना ते सप्पुरिसा भोअणकाले समागए जेहिं ।
गुणिणो मुणिणो विहराविऊण सेसं सयं भुत्तं ॥

संसारि संयोग हूंतइं फल गरूउं, यथा आषाढनी काली रोहिणि पूर्वनउ वाउ आर्द्रादिक नक्षत्रनइ संयोगि वृष्टि धान्यनिष्पत्ति, यथा आभरणि सुवर्णरत्नहीरामुक्ताफलादि सर्वसंयोगि राजयोग्य आभरण, रसवती भोजन शालि दालि घृत पक्कान्नादि.

सुभटनें आयुधि, सेवकनी स्वामिभक्ति, कलावंतनी कला, व्यवसाईयानी व्यवसायि, पृथ्वीपतिनी न्यायि, भाग्यवंतनइ भाग्योदयि, एतला प्रदेश माहरी वासभूमि, पुण हिमवंत पर्वति पद्मद्रहि एक कोडि वीस लाष साधिक पद्मि परिवरिउ तिहां कमलि माहरउ वास, तीणि वासभुवनि वसतां जेवडी समाधि तेवडी अन्यत्र नही, इसिइ कमलि वसिवानउ उद्यम जेह कारणतउ गुणवंत गुणवंत-सिउं संयोगि मिलइ तउ रूडउं, जिम पारिजाति नंदनवन शोभइ, भद्रजाती हस्ती विंध्याचल, राजहंस मानसरोवरि, चिंतामणि रोहणाचलि, रत्न रत्नागरि प्रवर्त्तइं, कुंडल कानि शोभइं, मोतीहार कंठकंदलि, विवेक हीइ अनइ धर्महनइ संयोगि, जिम एतला पदार्थ शोभा पामइं तिम तुझ रहइ गुण पदार्थ आश्रयिवा योग्य, तउ सगुण मनुष्यरहित तुझ लगइ पंचविध विषयसौख्यनी प्राप्ति हुइ, राज्यरिद्धि समीहितसिद्धि भंडार कोठार सार परोपकार व्यापार महत्त्व प्रतिष्ठा कीर्त्ति यश्या किं बहुना तुं सर्वगुणमय सर्वलक्षणमय, सृष्टिनिर्माण तुझ हूंतउं प्रत्यक्ष दीसइ.

तउ कमल निर्गुण नालि कांटा, पंकनउ पाडोस, संकोच विकास, काला कुत्सित कुरूप मधुप तीहंनउ संसर्ग, जलि वास, हिमि दाझइ, चपल जलतरंगनइ संसर्गि चपलपणानउं दूषण ऊपजइ, ए तुझ रहइं वसिवा योग्य न हुइं, अनेरइ थानकि वसिवा योग्य पण हींडइं छइं, साचउं पुण तिहां मन मानइ नही, तउ उत्तमनइ मुखकमलि हृदयकमलि तीणि कहिउ गुणगंभीरि धीरि सत्पात्र तणइ करकमलि तीणि वसवउं, जे निर्दोष निर्मल सर्वसौख्यकारक स्वर्गदायक सिद्धिविधायक, तिहां जउ लक्ष्मी वसइ तउ धर्मधुरंधर विवेकविचारचतुर तुम्ह सरीषउ सत्पुरुष ईणि परि लक्ष्मी वसावइ तां जिम किमइ उत्तरोत्तर रिद्धिवृद्धिदायक नीपजउ.

प्रधान मनोहर परिषत्, सुभटश्रेणि, विनोदीयाना विनोद, साहससो[बो]लाना समूह, उचितबोलानी ओलि, कलावंतनी क्रीडाभूमि, कूबडानी कोडि, वामणाना विनोद, पुण्यवंत रहइं प्रमोद, वयरीहं विषाद, कविना कल्लोल, वादीनउ विवाद, वैदेशिक विलास.

आहार अनेक हुइं सरस सुस्वाद मीठा *

* मूल प्रतमां आ पछीनां पान नथी.

[२]

सभाशृंगार

[1-B] ऐँ नमः ॥ नाभिनंदनु, सकलमहीमंडनु, पंचशतधनुष-प्रमानुं, तापोत्तीर्णसुवर्णसमानु, हरगलगवलश्यामलकुंतलावलीविभूषित-स्कंधु, केवलज्ञानलक्ष्मीसनाथु, भव्य लोकहि मुक्तिमार्गनि देषाडइ, साथ संसारअंधकूप प्राणिवर्ग पडतां दइ हाथ, युगलाधर्म निवारवा समर्थ भगवंत श्रीआदिनाथ श्रीसंघ तणा मनोरथ पुरो. 5

वीतरागवाणी, संसारसमुत्तारिणी, महामोहविध्वंसनी, दिनकरानु-कारिणी, क्रोधाग्निदावानलोपशमिनी, मुक्तिमार्गप्रकाशिनी, सर्वजन-चित्तसंमोहकारिणी, आगमोद्धारिणी वीतरागवाणी.

विशेष अतिशयनिधान, सकलगुणप्रधान, मोहांधकारविच्छेदनभानु, त्रिभुवनसकलसंदेहछेदक, अछेद्य, अभेद्य, प्राणिगणहृदयभेदक, अनंता-10 नंतविज्ञान, इसिउं ऊपनुं केवलज्ञान.

गुरुक्रियानुष्ठानपर, जिनवचनधुरंधर, सरस्वतीलब्धप्रसादवर, ज्ञानदर्शनचारित्रप्रतिपालनतत्पर, सकलगुणमणिभंडार, विज्ञातसारतरा-गमविचार, श्रीगच्छश्रीसंघआधार, स्फुरद्रूपसाहित्यतर्कालंकार, सुविज्ञात-व्याख्यातजीवाजीवादिकत्त्वविचार, विद्वज्जनसभाशृंगारहार, अमंदसौ[हा]-15 र्द, सहृदयालंकार, अक्रोधअविरोध, विबुधआदेयोदार, स्फारतरवचन-दत्ताशंसीति निर्वचन एवं गुरु.

किहवारइं समुद्र मर्यादा मेल्हइ, नदी तणा वृंद पाछां पडेलाइं, किहवारइं सूर्य अंधकार करइ, किहवारइं चंद्रमा अंगार तणी वृष्टि करइ, किहवारइं पाषाण जलमाहिं लगारेक त्तरइ, निर्भाग्या मनुष्य-20 नइ लक्ष्मी वरइ, किहवारइं दिशामंडल फिरइ, मेरु पर्वत वायनउं कर्म संभरइ, सूकउं रूंष फलफूलिं करि विस्तरइ, सूकुं इक्षुखंड

रस क्षरइ, कैलाशचूला चलइ, बृहस्पति वचनि करी स्खलइं, कुलाचल एक स्थानि मिलइ, अघटतो संयोग मिलइ, गंगाजल पश्चिम वहइ, अभक्ष्यनइ मनि धर्म रहइ, मानसरोवर सूकइ, हरिचंद्र प्रतिज्ञा थकउ चूकइ, पृथ्वीमंडल पातालि जायइ. केव[१]....

[3-A] पांडवकौरव विरोध वाधिउ, करणि राइ आपणी जिह्वां घोडो बांधिउ, विक्रमादित्य कागमांस खाधउं तुही अजरामर न हूउ, नल राजा पराय घरि सूयारपणउं करइ, हरिचंद्र चंडालनइ घरि पाणी आणइ, फरसरांम आपणी माइ तणउं शिरकमल छेदइ, माघ जेवडो विद्वांस पग सूजि भूषि मूउ, नागार्जुन स सिद्धि पूठिउ, गांगेय जेवडउ सुभट पुत्रनइ वरांसइ पडइ. सगर चक्रवर्त्ति जेवडो साठि सहस्र बेटा तणउं दुःख देखइ, भरतेश्वर बाहुबलि आपमाहिं संग्राम करइं, वासुदेव बलदेव द्वारिकांनउ दाघ ऊवेषइ, मृत्यु पग हेठि वसि, संसारमाहिं सहू परइ इंद्रियाल दीसइ, तेह कारणि शाश्वति कीर्त्ति ऊपार्जवी, जगत्त्रयमाहि प्रसिद्धि लेवी.

कुलवधू शीलेन शोभते, यथा रजनी चंद्रेण, नभः सूर्येण, वनं चंदनेन, वल्ली कुसुमेन, कुलं सुपुत्रेण, मुखं तांबूलेन, कटकं राज्ञा, वनेन सिंहः, सिंहेन वनं, मुखं नासिकया, नासिका मुखेन, पात्रं गुणैः, गुणाः पात्रेण, कमलं जलाश्रयेन, जलाश्रयः कमलेन, सुवर्ण्णं रत्नेन, रत्नं सुवर्ण्णेन, राज्यं अमात्येन, अमात्यो राज्येन शोभते,

मुनिराभरणेन किं करोति, मर्कटो नालिकेरेण किं करोति, काको रत्नमालया किं करोति, मत्स्यादको जलछादनकेन किं करोति, वानरी हारवल्लया किं करोति, विधवा स्त्री[२] किं करोति, वणिक्

१ प्रतनुं बीजुं पान नथी. आ अक्षरो पछी त्रीजुं पान शरू थाय छे.

२ आ शब्द पछी आ वाक्यखंडना केटलाक शब्द मूलमां खूटे छे.

खड्गेन किं करोति, दिगंबरः पट्टकूलेन किं करोति, असती शीलेन किं करोति, व्याघ्रो जीवद[य]या किं करोति तथा निर्भाग्य जीवः सदुपदेशेन किं करोति ?

दानं दुर्भिक्षे, सुवर्णं कषकपट्टे, पौरुषं रणे, वृषभधौरेयत्वं पंके, वाग्मिता परसभायां, पुरुषसाहसं दुर्दशायां परीक्ष्यते, कुमित्रं आपदि परीक्ष्यते, सन्मित्रं व्यसनावस्थायां परीक्ष्यते, पुत्रो वृद्धत्वे परीक्ष्यते, भार्या सपत्नीसमागमे निर्धनत्वे परीक्ष्यते, विनयोच्चये शिष्यः परीक्ष्यते, बांध[व]त्वं पृथग्भावे परीक्ष्यते, तपस्वित्वं क्रोधे परीक्ष्यते, ज्ञानं निरहंकारत्वे परीक्ष्यते तथा धर्मोऽपि निर्दंभत्वे परीक्ष्यते, यतः

तद्भोजनं यन्मुनिदत्तशेषं सा प्राज्ञता या न करोति पापं ।
तत्सौहृदं यत्क्रियते परोक्षे दंभैर्विना यः क्रियते स धर्मः ॥

यो जिनधर्मं मुक्त्वा मिथ्यात्वं प्रतिपद्यते स स्वर्णस्थालेन रजःपुंजमुद्धरति, कल्पतरु[3-B]णा छायालाभं वांछति, चंदनवन-ज्वालनेन भस्मलाभं, अगरुकाष्ठेन लांगलं, सुवर्णपिंडेन कुशी, चिंतामणिना काकोड्डयनं विदधते, अमृतधारया पादशौचं चिंतयति, मत्तकरींद्रेण काष्ठभारं, कस्तूरिकया मषीं, कदलीस्तंभेन गृहभार-मुद्धर्तुमिच्छति, कमलतंतुभिर्मत्तवारणं बध्नाति।

मिथ्यात्वसम्यक्त्वयोर्महदंतरं, सुजनजनदुर्जनयोर्महदंतरं, सुख-दुःखयोर्महदंतरं, पुण्यपापयोर्महदंतरं, छाछपयोर्महदंतरं, कर्पूरलवणयो-र्महदंतरं, कस्तूरिकाअंजनयोर्महदंतरं, कंकुमकेसरयोर्महदंतरं, सुवर्ण-पित्तलयोर्महदंतरं, गजोष्ट्रयोर्महदंतरं, आम्रनिंबयोर्महदंतरं, करीरकल्प-द्रुमयोर्महदंतरं, सूर्यखद्योतयोर्महदंतरं, समुद्रकूपयोर्महदंतरं, क्षीरकांजि-कयोर्महदंतरं, रूपकटंककसुवर्णयोर्महदंतरं ।

सत्पुरुषः परोपकाराय अवतरति, कार्पासः परार्थे विडंबनां सहते, मौक्तिकं परशृंगाराय वेधं सहते, सुवर्णं परालंकाराय

तापताडनादि सहते, अगुरुः परसौरभ्याय दाहं सहते, चंदनं परतापोपशांतये घर्षणं सहते, कर्पूरं परसौगंधाय मर्दनं सहते, कस्तूरिका परपत्रभंगीकृते वर्तनं सहते, तांबूलं पररंगाय चर्वणं सहते, दधि विलोडनं परार्थं सहते, मंजिष्ठा वस्त्ररंजनार्थं कुट्टनखंडनानि सहते, धुर्यः परार्थमेव भारमुत्पाटयति, सूर्यः परार्थमेवोद्गच्छति, जलधरः परोपकारायैव वर्षति ।

कुपुरुषेण उपकाराः निरर्थकाः, शुष्कनदीतरणमिव, वालुकाचर्वणमिव, मृतमंडनमिव, भस्मनि हुतमिव, आकाशकुट्टनमिव, तुषखंडनमिव, जलविलोडनमिव, ऊषरवर्षणमिव, शुष्ककाष्ठसेवनमिव, यमनिमंत्रणमिव, द्यूतकटकोपार्जितमिव ।

कलशांत प्रासाद, गजांत लक्ष्मी, ध्वजांत धर्म, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, बंधनांत व्यापार, हारांत शृंगार, व्यलीकांत स्नेह, कलहांत रोग, क्षयरोगांत देह, शरत्कालांत नेह.

धर्ममाहि दयाधर्म वीतरागे भाषित मुख्य जाणिवउ, जिसुं पर्वतमाहि मेरू, तुरंगममाहि पंच वल्लह किसोर, हस्तिमाहि एरावण, दैत्यमाहि रावण, वृक्षमाहि कल्पवृक्ष, रत्नमाहिं चिं[4-A]तामणि, अलंकारमाहिं चूडामणि, क्षीरमाहिं गंगानीर, वस्त्रमाहिं चीरपट्ट, सूत्रमाहिं हीर, पुष्पमाहिं कमल, वाद्यमाहिं शंखयमल, काष्टमाहिं चंदन.

मंत्र तणो जाण योगी स्वर्गलोक समग्र अवतारइ, गगनांगणि चंद्रादित्य स्तंभइ, आकाशि विश्वानर बालइ, आपणां वस्त्र आगि पषालि, पाणिमाहिं पलेवणु प्रज्वालइ, पातालकन्या प्रत्यक्ष देषाडि, कडयक करतां वनखंड मोडइ, पातालि बलि तणां बंधन छोडइ, लोहशृंखला फुकि त्रोडइ, पर्वतशृंग ढोलइ, शंबर शृंगालइ.

जिसउ वास तिसिउ अभ्यास, जिसी दीष तिसी सीष,

जिसिउ आहार तिसउ उहार, जिसिउं वाविइ तिसिउं लुणीइ, जिसु कमाइअ तिसउं प्रामीइअ फल, जिसि दीष तिसी सीष, जिसिउ आहार तिसउ उहार, जिसिउं दीजइ तसिउं लीजइ.

मन जाणि पाप, मा जाणइ बाप, गारुडी जाणइ माप, आसदो जाणइ घोडां, कडीउ जाणइ रोडां, सोनी जाणइ सोनाकडां, कंदोइ जाणइ वारु वडां, हंस जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर, मुख जाणइ मीठा, दृष्टि जाणइ दीठां.

जिहां गरुउया तिहां गाजउ, जिहां कुलीन तिहां खांपण, जिहां भाणउं तिहां भयउ, जिहां झूझ तिहां खउ, जिहां चोरी तिहां दोरी, जिहां चडण तिहां पडण, जन्म तिहां मरण, जिहां रुलण तिहां भरण, जिहां रंग तिहां विभंग, जिहां संयोग तिहां वियोग, जिहां लाह तिहां लेहउ, जिहां रूसणउं तिहां तूसणुं.

जातिमानइ आचार, विवेकमानि विचार, घरमानि प्राहुणउ, क्रयाणामानि आयु, खंडामानि पडिआर, धनुषमानि पणछ, शरीरमानि छाया, पगमानि वाणही, आंखिमानि भरण, जाखमानि बलि, भिराडीमानि पूजा, गुणमानि तिम माणसपूजा.

सत्पुरुष परोपकार किसउं सीखविइ, सालि किसउं खांडीइ, किणि रूप सिउं माडिइ, हीरउ किसुं जडीइय, मोती किसुं छडिइय, अमृत किसुं कढीइ, सारस्वत किसुं पढिइ, शंख किसुं धवलिइय, दुध किसुं गलिइय ?

घर उपइ घरणी, गगन उपइ तरणि, वृक्ष उपइं पल्लवि, तांबूल उपइ चूर्ण, वस्त्र उपइ रंगि, मउड उपइ मस्तक संगि, माणस उ[4-B]पइ शृंगारि, व्यंजन उपइ वघारि, राजा उपइ भंडारि, हाथीउ उपइ मदवारि.

अनभ्यासेन विद्या नश्यति, प्रमादेन द्रव्यं नश्यति, दुर्वचनेन मैत्री नश्यति, लोभेन विवेको नश्यति, अनौचित्येन महत्त्वं नश्यति, अन्यायेन कीर्त्तिर्नश्यति, कुसंगेन धर्मो नश्यति, आलापेन कुलस्त्रीत्वं नश्यति, अनायकेन सैन्यं नश्यति ।

सहजं वैरं जलवैश्वानरयोः, देवदैत्ययोः, आखुमार्जारयोः, सिंह-गजयोः, गोव्याघ्रयोः, काकघूकयोः, पंडितमूर्षयोः, सज्जनदुर्जनयोः, विप्रवाचंयमयोः, महिषतुरगयोः, सर्पनुलयोः ।

यदा राजा चोरीं करोति तदा को रक्षकः, समुद्रस्य तृष्णा स्फोटयिष्यति, यदि हिमाचलः शीतेन म्रियते तदा कीदृग् चरणं, यदि सहस्राक्षो न पश्यति तदा कीदृगुपचारः, यदि सरस्वतीः संदेहं न भक्ष्यति तदा को भक्ष्यति, यदि लक्ष्मीभांडागारे द्रव्यं सत्रोटं तदा कः पूरयिष्यति, बृहस्पतिर्मतिहीनस्तदा को मतिं दास्यति, यदि पृथ्वी कंपते तदा कः स्तंभः, यदि नभः स्फुटति तदा कीदृग् रिहणं, यदि पुत्रः भक्तिं न विधास्यति तदा को विधाता, यदि शिष्योऽविनयं करिष्यति तदा कः कर्त्ता, यदि सत्पुरुषः उपकार-रहितस्तदा कः शिक्षां दास्यति ?

गंगा समुं जल नही, बांधव समुं हेज नही, रवि समुं तेज नही अथवा मेघ समु जल नही, बांह समुं बल नही, अन्न समान हेज नही, अक्षी समान तेज नही.

सुवचनेन मैत्री वर्द्धते, दुर्वचनेन कलहो वर्द्धते, नीचदर्शनेन कुशीलना वर्द्धते, कुटुंबे अपथ्येन रोगो वर्द्धते, कंडूयनेन कंडू वर्द्धते, असंतोषेन तृष्णा वर्द्धते, व्यसनैर्विषयाः, निंदया पापं, घृतेन ज्वरो वर्द्धते, सत्समाचारेण विश्वासो वर्द्धते, अभ्यासेन विद्या, न्यायेन राज्यं, विनयेन गुणाः, दानेन कीर्त्तिः, औचित्येन महत्त्वं, औदार्येण प्रभुत्वं, क्षमया तपो वर्द्धते, उद्यमेन श्रीः वर्द्धते, सत्येन धर्मो

वर्द्धते, पालनेनोद्यानं वर्द्धते, चंद्रदर्शनेन समुद्रो वर्द्धते, शृंगारेण रागो वर्द्धते, वर्द्धते वृष्टिभिः धान्यानि, घृताहुत्या वह्निर्वर्द्धते, भोजनेन शरीरं, जलपूरेण नदी, लोभेन लोभो वर्द्ध[5-A]ते ।

तपः क्रोधेन विनश्यति, स्नेहो विरहेण, व्यवहारो अविश्वासेन विनश्यति, गुणवान् गर्वेण विनश्यति, कुलस्त्री अरक्षणेन विनश्यति, धान्यं अवर्षणेन विनश्यति, रूपं दुर्भाग्येन, भोजनं तैलेन विनश्यति, शरीरं अयत्नेन विनश्यति, धर्मस्तथा प्रमादेन विनश्यति ।

जडोप्यहं गुरुप्रसादात् वक्तुं शक्नोमि, वामनः आम्रफलानि गृहीतुं कथं शक्नोति, अंधः चित्रशालिं चित्रयितुं कथं शक्नोति, बधिरो वाणीनिनादं श्रोतुं कथं शक्नोति, पंगुः तीर्थानि अवगाहितुं कथं शक्नोति, पाषाणाः सौकुमार्ये स्थातुं कथं शक्नुवन्ति, निंबो माधुर्ये स्थातुं कथं शक्नोति, काको हंसं समं हि स्थातुं कथं शक्नोति, क्रमेलकः करिवरेषु स्थातुं कथं शक्नोति, एवं मूर्खोऽपि पंडितत्वे स्थातुं कथं शक्नोति ?

कुपात्रस्य विद्या वृथा, कुशिष्याय व्रतं वृथा, धनाढ्ये दानं वृथा, भुक्तस्य भोजनं वृथा, चर्वितस्य चर्वणं वृथा, पिष्टस्य पेषणं वृथा ।

बहूपचरितोऽपि दुर्जन एव, दुग्धधौतोऽपि काकः किं हंसायते, सुपुष्टोऽपि श्वा किं अश्वायते, इक्षुरससिक्तोऽपि निंबः किं द्राक्षायते, सुष्टु उपचरितोऽपि खरः किमश्वलीलां बिभर्ति, सुशृंगारितोऽपि मयूरः किं गजसाम्यं लभते, सुष्टु उत्तेजितोऽपि रीरी किं सुवर्णछायां बिभर्ति, गंगाजले स्नातोऽपि मार्जारः किं स्वच्छचित्तो भवति, सुधौतमपि सुराभांडं किं पवित्रतामियर्त्ति ?

वर्षा काल हूओ, वहतो रहिउ कूउ, मेघ तणां पाणी वहइं,

पथिक गामि जाता रहिं, पूर्व दिश तणा वाय वाजइ, लोक हर्षत थाइं, आकाश धडहडइं, खोलड खडहडइं, पंखि तडफडइं, वडां माणस अडबडइं, काष्टषंड शडइं, हाली लोक हल खेडइं, आपणा घरि कादम फेडइं, आकाश धडहडइं, तिहां मुडे मुडे चलु रेडइं, पाणी पार न लहिइं, साधु साध्वी विहार न करइ, अनेक जीवाधि नीपजइ, विविध धान्य ऊपजइ, लोक तणी आश पूजइं, गोकुलना वृंद दुडइं, अनेक कोठार भरिइं, जुना धान्य वावरिइं, आविइं रेलि, बांधि वेलि, उपजिं नीलि फुलि, कुटुंबी चण वीकइं मूलि, फीटउ दुकाल, नीपनो सुगाल, एवंविध वर्षाकाल.

विच्छाय श्याम दीनवदन हूओ, जिसिउ चपेटां आहणिउ मांकड, जिसिउ डाल चूको वानर, जिसिउ घाय चूको [5-B] सुभट, जिम दाव चूको जूआरी, विद्या चूक्यो विद्याधर, फाल चूको दुर्दर, ठाम चूको भंडारी, यूथभ्रष्ट हरिण, चोर जिम अणअशरण, राज्य चूको राजा, पदवी चूको पदस्थ, भीप चूको भीषारी.

शुद्ध सर्वज्ञोक्त धर्म करी न सकीइं, जिम मेरु पर्वत तुलाग्रि धरी न सकीइं, जिम समुद्र भुजादंडि तरी न सकइं, जिम लोहमय चिणाचर्वण करी न सकइं, जिम खड्गधार ऊपरि फरी न सकइं, जिम वैश्वानरमध्य प्रवेश करी न सकइं, जिम राधावेध साधि न सकइं, जिम पाणी पोटल बांधी न सकइं, जिम वायनउ को घट भरी न सकीइ.

संमर्द्द; मउडि मउडिइ फुटइं, हारिं हार तुटइं, हियउ हियउ दलाइं, पूठिं पूठि मिलइं, बाहुइ [बाहु] घीसाइं, उसास नीसास नासइ, तिल पडि खिसइ नही, दृष्टि परइ फिरइ नही.

समुद्र; उच्छलबहुल, कल्लोलमालामालितगगनमंडल, मत्स्यकच्छपकमठकूर्मनक्रचक्रपाठीनपीठजलचरसंकुल, अतिशयगंभीर, समुद्दंडनीरडिंडीर, अनेकसांयांत्रिकलोकसेवित, सोल जाति रत्ननउ आगर, एवंविध अपार सागर.

वृक्ष; फलित, पुष्पित, मंजरित, पल्लवित, स्निग्ध, सच्छाय, शीतलछाय, सश्रीक, शाड्वल, विचित्रपत्र, बहुलपरिमल.

कज्जलश्यामल, निर्लालितजिह्वायुगल, चूडामणिप्रभाप्रहतांधकारजाल, सज्जितसज्ज, सरलस्फारस्फुत्कारभीषण, अल्पतामर्षदूषण, अवनिवनितावेणीदंडायमान, यमुनासमानकायमान.

सिंह; पु[च्छ]च्छटाछोटितभूपीठ, सिंहनादप्रतिशद्भितवनान्तु, विस्फारितमुखकुहरविकरालदंष्ट्रादुःप्रेक्ष्य, तीक्ष्णनखविदारितकरिकुंभस्थल, पिंगललोचन, केसरभासुरस्कंधदेश, रक्तोत्पलकमलकोमलरसनासनाथ समस्तश्वापदनाथ.

अश्व; परिमितमध्यप्रदेश, विशिष्टोभयप्रदेश, निष्टुरखुरोत्खातभूमंडल, निर्मांसल मुखमंडल, स्तोकतर कर्ण्णयुगल, विशाल वक्षस्थल, हेषारवबधिरितभुवनोदर, मनोहर, दर्पोद्धुर, संग्रामसौंडीर, समुद्रकल्लोलचल.

हस्ती; मदोन्मत्त, सप्तां[6-A]गप्रतिष्ठित, भद्रजातीय, चतुर्दंती, पर्वतप्राय महाकाय, प्रसारितसुंडादंड, समरसागरतरंड, मदप्रवाह रहिं भूमंडल भरइ, जयलक्ष्मी वरइ, वैरिवर्ग दलइ, परमान मलइ, कोपि बलइ, स्थूल दंतमुशल, विपुल कुंभस्थल.

अथ मदावर लोहनी सांकल त्रोडि, आलानस्तंभ मोडि, हस्तिशाल भाजि, पउंतार गाजइ, कमाड फाडइं, मठ मंदिर पाडिइ, हस्तिनीयूथ स्मरइ, व्यंध्य मनमाहि धरइ, वनमाहिं सांचरइ.

घोटकजाति; केहाडा नीलडा हरियाडा सेसहा हडाराहा

कोहाणा भर्यणा ताई तुरगी ऊघसीया नीघसीया डाटकिया डोटकिया खेलवि[या] मल्हाविया लडाविया पुलाविया सरला तरला छोटकर्णा एकर्ण्णा.

रथ; चारचित्कारकलित, विशाल शाल भंजइ, का शालित (?), धवलपताकांचलमालित, विचित्रपरंपराविराजित, परपंथिनीनिर्दलन.

पत्तन विशाल, पथि कमल निरपवाद, प्रासाद नाना प्रकार, सत्रूकार, तिरस्कृतत्रिविष्टप प्रपामंडप, अगाधोदरसोदर सरोवर, पृथ्वीमंडलमंडन, लक्ष्मीसंकेतन, नवनिधान, विद्वज्जनकृतावस्थान, शत्रुसंघातअनाकलनीय, ईति-अनीतिअखंडनीय.

गढ गरुउ अनइ विसमो जीह तणो पाय पातालि पइठउ, पर्वतनइ शृंग बइठउ, उच्चस्तर पोलि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पद्धति, यंत्र तणी श्रेणी, ढीकुली तणी परंपरा, जलनिभृत खाइ तणउ दुर्ग प्रवेश नही, हाथीया ढोउ नही, पाखरिया रहण नही, नीसरणी ठाउ नही, भेदसंभव नही, जिसिउ वज्रघटित विश्वकर्मानिर्मापित, किं बहुना देवेंद्रइ अगम्य.

मंत्रीश्वर अच्छेद्य अभेद्य गुहिर गंभीर आकृतिमंतु कलावंत मर्मज्ञ उचितज्ञ सर्वार्थकरणसमर्थ उद्यमप्रधान सर्वमहिमानिधान बुद्धिमयरहर राजार्थसार्थलोकार्थकारक न्यायशास्त्रतारक गंभीर धीर स्थैर्यमंदर गुणग्रामसुंदर षट्दर्शनदत्ताधार निरीह निस्पृह योगींद्रावतार अमात्य.

राजा प्रतापिं लंकेंद्र, सत्य वाचा हरिश्चंद्र, साहसिक विक्रमादित्य, त्या[·6-B]गलीला कर्ण्ण, प्रतिष्ठा युधिष्टर, धनुर्वेद अर्जुन, आज्ञा अजयपाल, परनारीसहोदर गांगेय, निर्भय भीम, आपन्नसत्त्व जीमूतवाहन, विवेकि नारायण, विद्या बृहस्पति, लावण्य-लवणार्णव, रूपिं कंदर्प, प्रतापिं मार्त्तंड, उदार्य बलिराजा, अह्ठ

दानि चिंतामणि, सेवकजनकल्पतरु, चतुरंगवाहिनीसमुद्र, सौभाग्य गोविंद, एश्वर्यि सुरेंद्र, सिंहवत् शौर्यवंत, चंद्रमा जिम कलावंत, शीलि सुदर्शन, विक्रमाक्रांतक्षोणीमंडल, अतुलबल, पंचम लोकपाल, शरणागत-वज्रपंजर, सकलवैरिमहीपालदुर्जय.

अनेक गणनायक दंडनायक राजेश्वर तलवर माडंबीक कोटंबिक मंत्रि महामंत्रि गणक दौवारिक अमात्य चेटक पीठमर्द्दक श्रीगरणा वयगरणा श्रेष्ठि सार्थवाह दूत सिंधिपाल प्रतिहार पुरोहित थइआयत सेनानी, अनेक संधिविग्रही, त्रिघरणी चउघरणी पंचोली षट्तर्कविदुर, सात सेजपाल, आठ ग्रहगणक जोसी, नव पडिहार, दश प्रतिसुवर्ण्णीकार, इग्यार सामंत, बार महा-मंडलेश्वर, तेर पसाइता, चऊद चडियात, पनर पउंतार, सोल महामसाणी, सतर आडणीया, अढार झूझार, अगुणीस माणिक्य-विनाणी, वीस रत्नपारषि, परिवारि वरउ सभाइं बइठो.

सभामाहिं रावणकाच ढालिउ, कुंकम तणां छाबडा दीधा, कस्तूरिकाना स्तबक पडिया, श्रीखंड तणी गूहली दीधी, काचइ कपूरि स्वस्तिक पूरिया, अविद्ध मोती तणा चउक पूरिया, परवालां तणां नंदावर्त्त रचियां, त्वंतरातरा पुष्पप्रकर भरिआ, कृष्णागुरु उषेविउ, पंचवर्ण्ण पट्टकूल तणा उल्लोच ताडिया, मोती तणी श्रेणि त्रिसरी चउसरी लंबावी, मोरचीजणे वाउ वीजीया.

जे राय तणी आज्ञा पंचालदेशस्वामी मस्त[क] विहइ, नेपाल-देशस्वामि द्वारि रहइ, प्रसदल हिमालयदेशस्वामी पाहुड पाठवइ, द्रविडदेशस्वामी यालंधर कोरगइ, सिंधुदेशस्वामी पदपडी दिइ, कच्छदेशस्वामी दिवसोदय लगइं उलग[7-A]इ, गउडदेशस्वामी कोठारि उलगइ, मरहठदेशस्वामी वज्रपंजरि खडहडइ, जालंधरदेश-स्वामी पग पख्यालइ, सोरठो राजा आगल आस्फालि, केइ गोतहरि

तडफडइं, केइ लोहडे खडइं, केइं केइ दांति अंगुलि लेइ [उ]लगइं, केइ स्कंधि कोठार घाती उलगइं, किं बहुना जेणि सीमाडा सवं वसि कीधा, गढ सवे ढालिया, रिपु सवे निर्द्धाटिया, समुद्र पर्ज्जूत आज्ञा पाठवी, अनेक परिं प्रजा सुखिणी कीधी, इणि परि राजाधि[राज] राज्य करइ.

जिहनि राज इसिउ सूध कुणहुं सुतां सुहुन ऊघाइं, पडिऊ को न ऊपाडइं, अलहो कोइ य न बोलइं, आज्ञा कोइ न लोपइं, पराइ भूमि कोइ न चांपइं, चोर चरड को नाम कोइ न जाणि, आपणि मनि शंका कुणहू न आणइ, सोनं उछालता हीडिइ.

राजा राजपाटिकां चालिउ, गजेंद्रि चडिउ, पाखती अंगरक्षक तणी उलि, मंडलीकनइ परिवारि, पताका लहलहती, अलबी झलक्कती, मेघाडंबरि छत्र तणइ आडंबरि, सीकडि तणइ झमालि, सुखासणनइ दडवडाटि, घोडा तणइ घांकि, पायक तणइ पहटि, रथ तणे चीत्कारि, भट बंदि तणे जयारवि.

ज्ञान ऊपनइ इंद्रादिक देव आवइं, समवसरण तणी भक्ति साचवइं, एक दिव्य अति स्फार नीपजावइं, प्राकार एक तेजसंभारभासुर करइं, सुवर्णप्राकार एकि रत्नद्युतिविघटितांधकार करइं, रत्नप्राकार एवं उदार स्फार नीपजावइं, प्रतोलीद्वार एक तेजसंभारभासुर करइं, लोचनसमुल्लासन नीपजावइं, सिंहासन प्रसारितदिग्मंडल नीपजावइं, भामंडलविस्मापितजगत्रय नीपजावइं छत्रत्रय, केई संपादित भुवनोत्कर्ष करइं, केई भूमिस्थित धवल ढालइं चमरयुगल, केई दत्तेक्षण करइं प्रेक्षण, केई विस्तारइं सर्वसार वीणाझंकार, करइ केई इति स्फीत सादइ परमेश्वरनुं गान.

जिनबिंब; नासाग्रन्यस्तदृष्टियुगली, श्रीवत्सलांछितवक्षस्थल, पद्मा-

सनविधृतकरयुगुल* प्रकटीकृतवस्त्रांचल, शरीरतेजच्छटाच्छोटितांधकार-जाल, त्र्यैलोक्यसुखालवाल.

पुत्रजन्ममहोत्सव करावइ, दंपाक निसेप (?) हूउ, सर्वत्र मार्ग चोखालिया, गोम[7-B]य पाणी सिंचाइ, मंचोनमंच बांधा, वानरवालि बाधी, हट्टशोभा सर्वत्र रची, सिद्धार्थ स्वस्तिक भरिया, पूर्ण कलश स्थाप्या, जमली चूर्णरंगावली दीजइ, सुवर्णमय हल ऊभवीजइ, घटक बांधिइ, समग्र मार्ग सोधिइ, रत्नमय प्रदीप बालिइ, गोतिहरांतउ बंदि तणां वृंद टालियइ, कर्पूरि कुंकुम चंदनरसि मार्ग सिंचियइ, अर्थीलोक सर्वथा न वंचियइ, जिनभवन पूजा करावियइ, नवनवां पुस्तक भराविइ, लोक अकर कीजिइ, आखे भरां स्थाल लीजिइ, लोक तणां वृंद मिलइ, वाजित्र तणा सहस्र वाजि, कलकलि करी आकाश गाजइ.

पुत्रवधू; कज्जलश्यामलकेशकलापालंकृत उच्च मस्तक, जिसिउ अष्टमी तणो चंद्र तिसिउं भालस्थल, जिसा वसंत मास तणा हिंडोला तिसा कर्णयुगल, जिसा प्रवालां तिसा उष्टपुट, जिसी दाडिमनी कली तिसी दंतपंक्ति, जिसा विशाल करिकुंभस्थल तिसा वक्षस्थल, जिसी कमल कोमल नाल तिसी बाहुलता, जिसिउ सिंह तणो लांक तिसिउ मध्य देश, जिसी पर्वतशिला तिसा नितंब, जिसा केलिना स्तंभ तिसा बे ऊर, जिसा एरावणसुंडादंड तिसा जंघायुगल, जिसा अलना तंबोल तीसा सुकुमाल पादतल, जिसिउ यमुनाप्रवाह तिसिउं वेणि लहलहइ, जिसी चांपानी कली तिसी शरीररूप तणी रेखा, लावण्य तणो कसवट्टो, कांति तणो आगर, सौभाग्यभंडार, बोलती अमृतवेलि, जे वचनि पाहाण पल्हालइ.

भोजन; अनेक जाति तणी फलहलि, जिसा मोटां छाजां

* मूळमां 'युगुण' छे.

तिसां खाजां, जिसा महत्तद्भुत गाडु तिसा लाडु, विविध वानी तणुं पक्कान, बिअंगुली कमलशालि, मग तणी दाली, प्रीसि सुवर्ण्ण-स्थाली, पाखलि सालणा तणी पालि, माहिं सुगंध घृत तणी नालि, बिहु पहर तणि कालि, परिसइ अषंडियालि नारि.

युद्ध; परदल मलि सुभट कलकलइं, नीसाणि घाइ वलइं, पताका झलहलइं, आरेणि माडीयइ, अर्द्धचंद्र बाल खंडियइं, भट हक्कोहक्क करइं, देवांगना वीर वरइं, विद्याधरी पुप्पवृष्टि कर[8-A]इं, धनुर्धर बाण तणी श्रीणि वावरइं, आकाशमंडलि गृध्र फिरइं, सीचाणा समली सांचरइ, हाथीयानी घटा गुडइ, घोडे पाखर पडइं, बिहु गमा दल मिलइं, धूलिपटल ऊछलइं, जितइं सुभट गाजइं तेतइ कायर थरहरइ, जेतइं सुभट बांधिं कसण तेतइ कायर थाइं नासण, जेतइं खड्गि लीजइं तेतइ कायर मनमाहिं खीजिं, जेतइं वीर भाला झलकइं तेतइ कायरना मन टलकइं, जेतइं पंच शद्धि पडि घाय तेतइ कायर करइं पाय, धूसके वाजि नीसाण तेतइ कायरनां पडि प्राण, जेतइं दल आघा षिसइं तेतइ कायर षुणे खिसइं, जेतइं बे दल हीचडइं तेतइ तत्काल कायर तापडइं, जेतइं बे दल आफलइं तेतइ कातर मनि खलभलइं, जेतइं सुभट झूझइं तेतइ कातर लोक अमूझइं, जेतइं सुभट मेल्हइं प्रहार तेतइ कायर जोयइ नासवा वार, जेतइं वीर मस्तक पडइं तेतइ कायर पगि पिंडि चडइं; हाथिउ हाथिइं, घोडो घोडइं, रथ रथइं, पायक पायकइं, मथाउ[त] मथाउतिइं, खड्गायुध खड्गायुधिं, कुंतायुध कुंतायुधइं, गदायुध गदायुधइं, गर्जायुध गर्जायुधइं, हलायुध हलायुधइं, मुशलायुध मुशलायुधइं, शूलायुध शूलायुधइं, त्रिशूलायुध, त्रिशूलायुधइं, बे दल मिलइं सर्वत्र धूलिपटल उच्छलइं, कुणहूं आपणु पराउ विभाग सूझाइ नही, पितापुत्र सूझइ नही, न जाणिअ आत्मदल न जाणीअ परदल,

न जाणीअ भूतल न जाणीअ भोमंडल, न जाणिअ रात्रि न जाणीअ दीस, न जाणीअ पूर्व न जाणीअ पश्चिम, सहू एकाकार हुइं, इसिइ समय [पर]दलइ वर्त्तमानि राजा सन्नद्धबद्ध लोह चूर्ण्ण हुइ सुहुड सुहडइं, सगुड हात्थीया लूडइ, रथावली ऊथलावइ, मउडधा मांकड जिम खेलावइं, पाखरिया थाट हणइ, महायोध संमुष मणइ, दल बइ भाजि, जलसमुदाय गाजिं, एतलइ समइ मलकाहली वाजइं, मदभंभल गजेंद्र गाजइं, सींगडीयांनी श्रेणि कमइं, नीसाण तणा घाय घमघमइं, तुरंगम तणा हेषारव, घंटा तणा घंटारव, वीर रणभूमि भरी आरेणि तणी सूत्र धरी प्रलयघंघल तूर्य वाजइ.

हार अर्द्धहार प्रालंब प्रलंब मुकट करकंकण केयूर वाहएं टोडएं पींडलां नूपर कुंड[8-B]ल एकावली मुक्तावली सूर्यावली चंद्रावली नक्षत्रावली रत्नावली सौभाग्यावली श्रोणीसूत्र कांची कलप चूडामणि अंगुष्टक अंगुलीयक मुद्रिका नवग्रही बहुरखा वलय वालला नगोदर नागला खींटलां छविटियां धडि मोतीसरि.

केवडउं राज्य चक्रवर्त्ति तणउं, चउद रत्न, नव महानिधान, सोल सहस्र यक्ष, बत्रीस सहस्र मुकुटवर्द्धन राय, चउरासी लक्ष जात्य तुरंगम, चउरासी लक्ष रथ, छन्नू कोडि पायक, बहुत्तरि सहस्र पुरिवर, बत्तीस सहस्र जनपद, छन्नू कोडि ग्राम, नवाणु सहस्र द्रोणमुख, अठितालीस सहस्र पाटण, चउवीस सहस्र कर्बट, चउवीस सहस्र मटंब, सोल सहस्र खेटक, चउद सहस संबाहन, छपन्न अंतरद्वीप, पंचास कुरुद्यान, चउसठि सहस अंतःपुर, सवा-लक्ष वारांगना आधिपत्यं पुरोवृर्त्तित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं अनुभवति.

केवडुं राज्य वासुदेव तणउं, जिहां समुद्रविजयप्रमुख दश दशार, पर्जुनप्रमुख अउठ कोडि कुमार, शंबप्रमुख एक सहस्र दुर्दांत कुमार, बलदेवप्रमुख पांच [महावीर], वीरसेनप्रमुख एकवीस सहस्र वीर,

उग्रसेनप्रमुख सोल सहस मुकुटबद्ध राजा, महसेनप्रमुख छपन्न सहस बलवंत, रुपणिप्रमुख सोल सहस अंतःपरीजन, अनंगसेनाप्रमुख सोल सहस वेश्याजन.

देश: गोड द्रविड मालव नेपाल जंगल अंग तिलंग हर्मुज गूर्जरराष्ट्र महाराष्ट्र कुरु कास्मीर राट लाट धाट कर्णाट मेदपाट लाढ महाभोट विदेह उच्च मूलथाण कुंकण चीण महाचीण खुरसाण, सवालख सिंधु, ढोरसमुद्र मरहठ नमिआड ककूज अंकज अंबज कुरंक कोरंटक कौशिक पाणीपंथ पांडवा मरुस्थल.

श्राद्ध: जैनप्रासादकरण, प्रतिमाप्रतिष्ठापन, आचार्यपदस्थापन, जीर्णप्रासादोद्धरण, पौषधशालानिप्पादन, परमेष्ठीमहामंत्रस्मरण, तीर्थयात्राकरण, अष्टमंगलीकढौकन, संघजनपूजन, पुस्तकज्ञानलेखनपठनवाचन, धर्मकथन, महापूजाकरण, महाध्वजारो[9-A]पण, चैत्यपरिपाटि उद्यापन, धूपन, श्रीखंडलेपन, पुष्पमालारोपण, नानाधान्यमेरुभरण, नाटकप्रेक्षणककरण, आरात्रिकमंगलप्रदीपदीपन, खंडखाद्यभक्ष्यभोज्यढौकन, त्रिकालदेवपूजन, उभयकालप्रतिक्रमण, गुरुचरणनमस्करण, पूजाप्रभावनातत्पर, विचारताकृतादर, दानददन, शीलपालन, तपस्तपन, भावनाभावन, साधर्मिकजनावष्टंभप्रवीण, सीदमानसदनुष्ठान, जनभरणादिकार्यरत सुश्रावक जाणिवउ.

अंधकार काली लली रात्रि रात्रि प्रतिइं मलि जिसी भ्रमरनी पांष, जि० अंजनाचलनउं शिखर, जि० कुमाणसमुख, जि० स्त्री तणी वेणी, जि० यमुनाप्रवाह, जि० कज्जलनो अंबार, जि० गुलीना रंग, जि० कसीसनउ जल.

निर्द्धनोपि स एवोत्तमः पुरुषः, यथा भग्नोपि दाराहः, श्रांतोपि पारसीको हयः, रिक्तोपि कर्पूरमुद्गक, खंडोपि निशाकरः, आच्छादितोपि दिवाकरः, दुर्बलोपि सिंहः, शुष्कापि वकुलश्रीः, विद्धापि मुक्तावली,

फाटितमपि रत्नकंबलं, मलिनमपि दुकूलं, तप्तमपि गंगाकूलं, म्लानमपि इक्षुखंडं, जीर्णमपि शर्कराखंडं ।

मृष्टमपि यथा क्षारं, विषं मधुरमपि प्राणहरं, यथा कल्याण्यपि अकल्याणकारिणी, भद्राप्यभद्रा, यथा मंगलोप्यमंगलो वारः, यथा केतुरपि कल्याणसेतुः, यथाऽमृतवल्ग्यपि गडूची । 5

सत्पुरुषः परोपकारमेव कुरुते न पुनरात्मार्थं, यथा रविस्तमो नाशयति परं नास्तं स्फोट[य]ति, चंद्रः स्वामृतेन ज[ग]त्तापं निर्वापयति न क्षयं, वृक्षः पांथानामातपं निर्वापयति नात्मनः, यथा खड्गोऽन्येषां शराणि विदारयति नात्मशाणघर्षणं, यथा वैद्योऽन्यनाडिकां विलोकयति नात्मनः, यथा मंत्रवित्परविषाणि भिनत्ति तथा न स्वदेह-१० विषं, यथा रत्नाकरः परदारिद्र्यं निराकुरुते तथा कस्मान्न क्षारत्वं, यथा चिंतामणिः कल्पद्रुमाद्यकामान् कुरुते तथा स्वाचेतनत्वं कस्मान्न स्फोटयति ?

सत्पुरुषस्य कोपो मनस्येव विलीयते, यथा दरिद्रस्य मनोरथा मनसि, यथा कूपस्य छाया कूप एव०, यथा सुरंगाया धूलिः सुरंगाया-१५ मेव वि०, अरण्यकुसुमानि अ०, कांतारछिन्नकूटशैलफला[9-B]नि शैल एव०, यथा वंध्यावपुरपत्यानि तत्रैव वि०, विधवाजनस्त[नौ] हृदय एव वि०, कृपणलक्ष्मी भूमावेव यथा वि० ।

शस्त्र; तीर तोमर नाराच अर्द्धनाराच भल्ल बावल्ल कुंत खड्ग क्षुरिका तरवारि यमदंष्ट्रा पटह फुरसी कर्त्तरी शींगिणि चक्र शक्ति२० गदा मुद्गर गुर्ज त्रिशूल फलक उडणाप्रमुखा.

छुर सारलोह तणी, घणी पोगर मेल्हती, वीजनी परि झलकती, तीन्ही धाराली, वढाली, अणीआली, पइसारुइ, तीसारुई.

कष्टेन धनोपार्जना, कुणहु हल खेडि, सयर ठाउ फेडी धन

ऊपार्जइ, कुणहू हाट मांडी आपणउं सर षांडि द्रव्य ऊ०, कुणहू शीत वात आतप सही देशांतर भमी द्रव्य ऊ०, कुं[णहू] समुद्र मध्य थाइ, परतीर जाइ द्रव्य०; पराइ घरि दासकर्म करी, छाण पूंजो मस्तकि धरी द्रव्य०, कु० भूष तृस सही, मार्गमाहिं रही द्रव्य ऊ०, कु० कुड कपट करी, पापिं आपणउ पिंड भरी द्रव्य०, कु० पराउं पुण्य गांजी द्रव्य०, कु० भीष भमाडी, घणा सयर विनडी, द्रव्य ऊपार्जइ.

ते द्रव्य साचउ द्रव्य जे सुपात्रि वावि, ते काव्य जे सभाइं पढिइ, ते आभरण जे हीरे जडिइ, ते सोनु जे कसवट नीवडइ, ते वैद्य जे व्याधि फेडइ, ते अमात्य जे बुद्धिबलि लक्ष्मी जोडइ, ते धर्म जिहां पर न संतापइ, ते शरीर जे रोगिं न व्यापइ, ते शास्त्र जे जीवदया वर्त्तावइ, ते राज्य जे अन्याय निवर्त्तावियइ, ते कापड जे धोइउ सूझइ, ते कार्य जे बुद्धिमंति बुद्धि जे पहिलउं ऊपजइ, ते तुरंगम जे वेगिं पूजइ, ते सुभट जे संग्रामि झुझइ, ते धेनु जे सर्वदा दुझइ, ते धर्म उत्तम जे धर्म बुझइ.

द्रव्य उपार्जिउं कुणहं तणो स्वाशातउ न हुइ, कुणहिनो द्रव्य उपार्जिउं चोर हि उपगरइं, कु० राउल उपगरहिं, कु० द्रव्य अग्नि उपद्रवइ, कु० समुद्रमाहिं द्रव्यइं, कु० नट विट फेडइं, कु० षुंट खरड झगडइ, कु० वाट पडइ, कु० भूमि सडइ, कु० रेलि जाइ, कु० वाणउत्र खाइ, कु० साझइ तुटइं, कु० गुणे फूटइ; इसी परि द्रव्य ऊपार्जिउं शाश्वत[10-A[उं कुणहिनउं न हुइ.

जीवदयारहित धर्म न शोभइ, जिम मदरहित गजैंद्र, लज्जाहीन कुलवधू, नीतविकल राजा, बद्धमुष्टि नायक, शस्त्ररहित पायक, अतिनिप्टुर वाणिउ, षासणो चोर, आलसू कमारउ, दुर्वनीत चेलो, ध्वजरहित देवलकुल, जिम गावडि घोटु उंट, उसि पाखइ षुंट,

वेग पाषइ घोडउ, गृहस्थ माथि बोडउ, एक स्त्री [का]नइ छुटी, एक ध्वज अनइं अंतरालि त्रूटी.

क्षमा समान धर्म नही, साचा समी पावडी नही, उंकार समउ मंत्र नही, लवण समउ रस नही, सोना समउं रूप नही, शील समउ शृंगार नही.

कुमाणसनउ संसर्ग न कीजइं, वरिं व्याघ्रसुं क्रीडा कीजइ, वरिं सूता सिंह मुखि हाथ घातिजइ, वरिं सापस्युं सांइं दीजइ, वरिं हालाहल विष पीजइ, वरि आगिनी ज्वाला लीजइ, वरि वयरिघरि वासउ वसीइ, वरि चोर साथि बइसीइ, वरिं पातालविवरि पइसीइ, वरि बलतइ दवानलि जइ, पण सर्वथापि मूर्ख साथि न जाइयइ.

न स्थातव्यं न गंतव्यं क्षणमप्यसता सह ।
पयोऽपि शुंडिनीहस्ते वारुणीत्यभिधीयते ॥

वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रांतं वनचरैः सह ।
न मूर्खजनसंपर्कः सुरेंद्रभुवनेष्वपि ॥

यद्दपि मन चपल देवताए पुण धरी न सकीयइ, क्षणइ जायइ सागरि, क्षणइ जायइ आगरि, क्षणइ जायइ सरोवरि, क्षणइ जायइ नदीपरिसरि, क्षणइ जायइ झगडि, क्षणइ जायइ अंबरि, क्षणइ जायइ भूधरि, क्षणइ जायइ पातालि, क्षणइ जायइ कुद्दालि, क्षणइ जायइ भूतलि, क्षणइ जायइ कुकुहिलि कुंभकारचक्रवत् मन ए पुण धरी न सकीयइ;

[मन एव] मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः ।
बंधस्तु विषयासंगे मुक्तिर्निर्विषयं मनः ॥

मोटी छोटी कछोटी मोक्ष नही, कायधोती मोक्ष नही, विकट जटामुकुटि मोक्ष नही, निष्कारणि शिक्षा मोक्ष नही, कंठि जनोइ

मोक्ष नही, हाथि अनंती मोक्ष नही, अखंड त्रिदंडी मोक्ष नही, कन्हइ कमंडलि मोक्ष नही, मस्तकि मुंडिइं मोक्ष नही, वनवासि मोक्ष नही, किंतु रागद्वेषपरिहारि शुद्धिइं मनि मोक्ष होइ.

रागी बध्नाति कर्माणि वीतरागो विमुच्यते ।
जाने जिनोपदेशोऽयं संक्षेपाद्बंधमोक्षयोः ॥

कुहाडि अढंढ स्त्री बोलंती छउड ऊतारइ, दृष्टि देषती मनुष्य मारइ, सर्प माथइ सांध्या फाडइ, चालती [10-B] चुइहि फाडइ, नवधायां तिर पाडइ, वालि बांधि आहणइ, आकाश ऊडता पंषिया गणइ, कुंहणी छेहि खात्र पाडइ, चिहुं पुरुष देषता वाट ऊठाडिइ, बगइ करति आंघालुवि त्रोडइ, पगछेहि गांठि छोडइ, आंखि हुंतुं काजल हरइ, केशबंधी शिला धरइ, जीभइं जव छोलि, निष्ठुर वचन बोलइ, जेणि बोलावि ती माथाना केश उभा थाइ, [इ]सी चालती अलछि जाणवी;

दुरितवनघनाली शोककासारपाली,
भवकमलभमराली पापतोयप्रणाली ।
विकटकपटपेटी मोहभूपालचेटी,
विषयविषभुजंगी दुःखसारा कृशांगी ॥

तीण महोत्सवि समय बालिका हार त्रूटते, वेणीदंड छूटते, नेउर फुटते, पटोला फाटते, घटजुयल विणसते, अनेकि आभरणि खिसते, मुक्तालंकार पडते, स्वेदबिंदु चडते, जोवा तणइ कारणि चालिउ.

राज्ञी; अद्भुत भाग्यवती, सौभाग्यवती, पट्ट प्रतिष्ठावती, सत्त्वानुष्ठानवती, निर्मल शीलवती, उज्ज्वल गुण झलकती, लावण्यनिधान, अंतःपुरप्रधान निष्कलंक अकृतपाप सुकर्त्तव्यसज्ज सलज्ज विदितकार्य पूजिताचार्य औचित्यचतुर पापकर्त्तव्यकातर सकललोकमातर.

सकलकल्याणवल्लि पुष्करावर्त्त मेघ जिन धर्म; जीणइं मानि दया तीणइं मानइं धर्म, जीण[इं] मानि कर्म तीणइ मानि फलिइ, जिसियां कुल तीणइं मानि वचन, जिसी भीति तिसा चित्राम, जिसि आकृति तिसा गुण, जिणि मानि वय तिणि मानि बुद्धि, जिसिअूं भाव तिसि सिद्धि, जिसां जल तिसां कमल, जिसउ आहार तिसियां बल, जिसा वृक्ष संमालिइ तिस्यां फल, जिसि अंतकालमति तिसि गति, जिणि मानि दान तीण मानि कीर्त्ति.

अभ्रच्छायावच्चंचल, दुर्जनप्रीतिवच्चंचल, तृणाग्निवच्चंचल, स्थलजलवच्चंचल, वेश्यारागवच्चंचल, कामिनीनयनविभ्रमवत्, संध्यासमयरागवत्, वामांदोलवत्, तपनवत्, समुद्रकल्लोलवत्, सज्जनकोपवत्, नदीगिरिवेगवत्, करिकर्णवेगवत्, शरत्कालमेघवत्, [11-A] अभाग्यवतां विभव-[वत्], द्यूतकालकारवत्, पतंगरंगवत् चंचलं चित्त, अत एव सुपात्रे नियोज्यं, यतः

उत्तम पत्तं साहू मज्झिम पत्तं च भाविया भणिया ।
अविरयसम्मद्दीठी जहन्नपत्तं मुणेयव्वं ॥

व्याजे स्यात् द्विगुणं वित्तं व्यवसाये चतुर्गुणं ।
क्षेत्रे शतगुणं प्रोक्तं पात्रेऽनंतगुणं पुनः ॥

समुद्राच्चंद्र इव, कृमिकुलात् दुकूलमिव, उपलात्सुवर्णमिव, गोरोमतो दूर्वावत्, पंकात्तामरसमिव, गोमयादिंदीवरमिव, काष्ठकोतराद्वह्निरिव, नागफणादिव मणिः, गोपित्ततो गोरोचनावत्, चंद्रकांतादमृतवत्, मृगात्कस्तूरिकेव, द्राक्षाया इव माधुर्यं, शर्करातो इव पित्तोपशमः, चंदनादिव शैत्यं, मंजिष्ठाया इव रागः, मेघादिव विद्युत्, तथा सर्वोपि जनो गुणैरेव ख्यातिमान् भवति, न तु कुलेन ।

शीलं प्रधानं न कुलं प्रधानं
कुलेन किं शीलविवर्जितेन ।

बहवो जना नीचकुलेषु जाताः
स्वर्गं गताः शीलमुपास्य धीराः ॥

गौरवं लभते लोके नीचजातोपि सद्गुणैः ।
सौरभ्यात्कस्य नाभीष्टा कस्तूरी मृगनाभिजा ॥

एकं विदेशगमनं अन्यत्तत्रापि दारिद्यं, एका सेवावृत्तिर्दुष्करा अन्यत्तत्रापि पिशुनः समागतः, एकं दुरारण्ये गंतव्यं तत्रापि शंबलं नही, एकं यानपात्रभंगो द्वितीयो मकराणामुपद्रवः, एकं कुभोजनं अन्यत्तु प्रथमकवले मक्षिकापातः, एकु थिता रथा (?) अंतर्गता कंसारिका, एका यवरोटिका अन्यत्काकभक्षिता च एक पंकुला रथ्या द्वि० कच्चां कुसुता, एकं भोजनस्य असंपत्तिः द्वितीयं प्राघूर्णकबाहुल्यं, एकं दुःखं अन्यत् शाकिनीग्रस्तं, एकं कुग्राम-वासो अन्यल्लाभोपि न, एकं कन्याबहुत्वं द्वि० दुर्मुखी च भार्या, एकं उच्छिष्टं अन्यत् ऋक्षं, दग्धस्योपरि स्फोटकः तथा एकं मिथ्यात्वं अन्यत् मौर्ख्यं ।

पुण्यं विना सुखं नहि, अग्निं विना धूमो नहि, बीजं विना अंकुरोद्गम नहि, सूर्यं विना दिवसो०, सुपुत्रं विना कुलं न, गुरुं विना विद्या न, भावसिद्धिं विना धर्मो न, धनं विना प्रभुत्वं न, दानं विना कीर्त्तिर्न, भोजनं विना तृप्तिर्न, वीतरागं विना मुक्तिर्न, साहसं विना सिद्धिर्न, जलं विना पावित्र्यं न, उद्यमं विना धनं न, कुलांगना विना गृहं न, वृ[11-B]ष्टिं विना सुभिक्षं नहि, धम्मेण विणा जइ चिंतिया.

दंता चर्वंति उपकारो रसनायाः, क्रमेलको भारं वहति उपकारः पुण्यवतां, खरश्चंदनं वहति भोगश्च भोगिनां, एवं लेखनं लेखकस्य फलमागमवेदिनां, मृदंगो घनघातान् सहते फलं तु

श्रोतृणां, युद्धयंते सेवकाः परं जयः स्वामिनः, एवं वृक्षाः फलन्ति उपकारस्तु पांथानां, वर्षंति वारिदाः फलं तु कर्षकाणां ।

कदर्योपात्तवित्तानां भोगो भाग्यवतां भवेत् ।
दंता दलंति कष्टेन जिह्वा गलति लीलया ॥

प्रत्यक्षे मधुरया [वाचा] अमृतं वर्षतां, जल्पतां, नीचानां, व्यसनैर्वशीकृतानां, इंद्रियैः पराभूतानां, पल्वलजलादपि निर्मलानां, अमावास्याया अपि अंधकारमुखानां, गुरुविद्वेषिणां, बंधुबद्धवैरीणां, पितृमातृद्रोहकारिणां, मातृशूलानां, श्वपुच्छादपि वक्राणां, समुद्रजलादप्यनुपभोग्यानां, अंत्यजचरितादपि मलिनचरितानां, सर्वजातेरपि अनात्मनीतानां, प्रदीपादप्याश्रयविध्वंसिनां, नदीकूलादपि नीचगामिनां, मृत्पात्रादपि भंगुराणां, हरिद्रारागादपि क्षणविनश्वराणां, उदया न दृश्यंते कुपुरुषाणां, यतः

परवादे दशवदनः परदोषनिरीक्षणे सहस्राक्षः ।
सद्वृत्तवित्तहरणे बाहुसहस्रार्जुनो नीचः ॥

आभा तणी छांह, कुपुरिस तणि बांह, आसाढ तणउ तूर, नदी तणोउ पूर, राय तणउ प्रासाद, मर्कट तणो विषाद, इंद्रजालनउं पेषणउं, सूप तणउं उठीमणं, हरिद्रा तणउ रंग, दासी तणउ संग, आंबा तणो मउर, सीयाला तणो प्रहर, गोदंडा तणी वाट, पोइणा तणी साट, पीपलनउ पान, राधउं धान, वडपण तणउ जाउ, ढीकुया तणउं पाय, निर्ग्रंथ तणउ साटउ, दीवालीनउ तेज, मात्रेईनउं हेज, कारटानउ भाग, जमाईनउ लाग, मूर्खनउं पढिउ भांखउ, चोर खासणउ, उखरली खांट, चंद्रउए जाणे पूयरउ विगोउ, सिंध्या तणउ मेह, स्त्री तणउ नेह, तिमइ लाभइ छेह; यतः

अग्निराजस्त्रियो मूर्खसर्पराजकुलानि च ।
नित्यं यत्नेन सेव्यानि सद्यः प्राणहरा[12-A]णि षट् ॥ 25

नव निधान, १४ रत्न, सोल सहस्र यक्ष, बत्तीस सहस्र मुकुटवर्द्धन राय, ६४००० अंतःपुर, सवा लाष वारांगना, १४००० वेलाउल, ३२००० देश, २१००० निवेश, ५६ अंतरद्वीप, ९९ सहस्र द्रोणमुख, ९६ कोडि ग्राम, ९६ कोडि पदाति, ४९ सहस्र उद्यान, १८ श्रेणि, १८ प्रश्रेणि, ८० सहस्र पंडित, १००० कौटुंबिक, ३२ कोडि कुल, १४ सहस्र चतुर्बुद्धिनिधान, १४ मंत्रीश्वर, ३२ सहस्र नवबाहरी नगरी, १६ सहस्र म्लेच्छराय, १४ सहस्र मडंब, १४ सहस्र कर्बट, १४ सहस्र संधान, १४ सहस्र खेट, १८ कोडि अश्व, ८४ लक्ष उत्तम गज, ८४ लक्ष रथ, ७२ लक्ष पत्तन, १०३६ लक्ष वेलाऊल, ३२ सहस्र प्रवर देश, ६४ सहस्र कुलांगना, सवा लाष वारांगना, ३२ भेदभिन्न नाटक, ३२ सहस्र आगर, ८४ लक्ष तलारक्ष, ८४ सहस्र सूत्रधार, सवा कोडि व्यापारिणः, १४ सहस्र जलपथ, २४ सहस्र कटक, ६० सूपकार, अन्येपि श्रेष्ठिसार्थवाह-मांडबिककौडंबिकादयः.

ग्रामं वृत्त्या वृतं स्यान्नगरमथ चतुर्गोपुरोद्भासिशोभं
खेटं स्यादद्रिवेष्टं परिवृतमभितः कर्बटं पर्वतेन ।
ग्रामैर्युक्तं मटंबं दलितदशनैः[1] पत्तनं रत्नयोनिः
द्रोणाख्यं सिन्धुवेलावलयितमथ संबाधनं चाद्रिशृङ्गे ॥

इति [चक्र]वर्त्तिऋद्धि.

जिसिउ सिंध्या तणो राग, जिसिउ पाणी तणो माग, जिसिउ इंद्रधनुष, जिसिउ वातोधूत तूलपडल, जिसिउ वातहता-भ्रपडल, जिसिउ कापुरिसना बोलि, जिसिउ पोल्ल जांगि ढोल, जिसिउ नदी तणउ वेग, जिसिउ रात्रिपक्षिनउ संयोग , हाथियानो कान, ठाकुरनो मन, जिसिउ छोरडानउ दान, जिसिउ कंठहीन

१ आ पदमां एक अक्षर खूटे छे.

गान, जिसिउ कालानी सान, जिसिउ रानि रोउं, दृष्ट बंधनउं, जिसिउ सौणान[उं] राज, अणबांधउ छज, जिसी पाननी पाज, निर्भाग्यनउं काज, जिसी सुइनी धाडि, जवासानी दाडि, एणइं परि कुमाणसनी लक्ष्मी.

अश्वतराणां गर्भो दुर्जनमैत्री नियोगिनां लक्ष्मीः । 5
स्थूलत्वं स्वयंभूभवं विना विकारेण न भवं[12-B]ति ॥

छीदरी छासि पाणी न खमइं, पातली छाया केतलउ आतप गमइं, आढकइं केतउं वाजइं, कृपण पुरिषि केतउं दीजइ, गर्दभ केतउ बूझइ, कातर केतुं झु[झ]इ, वांझि गाय केतउं दुझइ, समुद्रपाणी केतुं पीजइ, दुर्जन केतुं वचनि लीजइ,10 पापी उपदेशे तिम न भीजइ.

स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा ।
संतप्तान्यपि तोयानि पुनर्गच्छंति शीतताम् ॥

इंदुः स्त्रैरिणीनां न सुखायते, उद्योतः चौराणां न सुखायते, दीपः पतंगानां न सुखायते, सूर्यः कौशिकानां न सुखायते, वृष्टिः15 जवासकानां न सुखायते, चंद्रोदयश्चक्रवाकानां न सुखायते, गर्जितं शरभानां न सुखायते, वर्षा प्रावहणिकानां न सुखायते, मृदंगशब्दोऽक्षि-रोगिणां न सुखायते, घृतं प्रमेहरोगिणां न सुखायते, मूर्खाणां विज्ञा विज्ञानं असत्या संतीति श्रूयते ।

प्रथमं शिरश्छित्वा पश्चादंगचुंबनं, प्रथमं गृहं प्रज्वाल्य पश्चात्त-20 स्यैव गृहस्य कुशलवार्त्तापृच्छनं, परप्राणहरणं पश्चादनुशोचनं, पद्भ्यां मीनान्मारयति मुखे वेदवचनं ब्रूते ।

यथा स्वयं समुद्रे जलानि, स्वयं मेरौ कल्पद्रुमोद्गमः, स्व० जले पावित्र्यलक्ष्म्याः सौभाग्यं, स्व० कुंकुमे रागः, स्व० कर्पूरे सौभाग्यं तथा पुण्यवतां सर्वांगेषु दया । 25

लंका राजधानि, चित्रकूट दुर्ग, जीणइं मृत्यु बांधी पातालि घालिउ, नव ग्रह खाट तणइ पाइ बांधा, वायु देवता अंगणइ वुहारइ, चउरासी मेघ छडा छाबडा दिइ, वनस्पति फुलपगर भरइं, जमराउ भइंसा रूपि पाणी वहइ, सातइ समुद्र स्नान करावइं, सात मातर आरती ऊतारइ, विश्वकर्मा शृंगार करावइ, शेख नागराज छत्र धरइं, गंगा यमुना चमर ढालइं, छइ रितु पुप्प पुरइं, सरस्वती वीणा वाइं, तुंबर गीत गाइं, रंभा तिलोत्तमा नाचइं, नारद ताल धरइं, आदित्य रसोइ करइं, चंद्र घडी घडी अमृत झरइं, मंगल महीषी दोहइ, बुध आरिसो देषाडइ, वृहस्पति घडीयालउं, शुक्र मंत्रि बइसइ, शनिश्चर पुठि पाग देइ खाट बइसइ, ३३ कोडि देव उलग करइं, आस्थानइं इंद्र मालि, ब्रह्मा पुरोहितपुणउं करइ, भृंग रीषि आ[13-A]चमन दिइ, जीमूत रिषि छोरु खेलावइ, कामदेव कटारुं बंधावइ, वैश्वानर वस्त्र पषालइ, कार्त्तिकेय तलारुं करइ, चामुंडा चाउरि संचारि, विणायक गादह चारि, अनइ सवा लाष पुत्र जेह तणइ, इसिउ त्रिभुव[न]-मल्ल महामल्ल रावण.

महा गहगहाटि गूडि ऊभवी, विविध वंदनमाला शोभी, विचित्र-वर्ण संपूर्ण उलोच ताड्या, मनोहर मंडप मांड्या, गृहि गृहि आरीसानी उलि झलकइं, कांचन तणी किंकणी खलकइं, स्थानि स्थानि सुवर्णमय कलशश्रेणि चडावी, नीसरणीनी उलि मंडावी, कलाण झलरी तडावी, पंचवर्ण पुप्पप्रकर भरी, अविद्ध मुक्तिक चउक पूरइं, कृष्णागर धूपहडी मेल्हियइं, रंगनइ रंगि रास खेलिइं, शृंगाररस गाइइ, वीणा वंशादि वादित्र वाइइ, पताका फरहरती कीधी, कस्तूरीनी गूहली दीधि, मोती तणा झूवषा डंबाव्या, माहिं पद्मरागपटल लंबाव्या, केलिने स्तंभे तोरण तिगतिगाव्यां, दुर्गंध ऊपजतां राख्यां, मणगमे कपूर नांख्यां, केर कुंकु तणा छडा छाबडा

नीपना, कमलनी कमल संपना, छत्र चामर गहगहइं, केतकीदल परिमल महमहइ, सव नगर सश्रीक करी, सर्वांग भूषण धरी, हस्तिराजाधिरूढ, प्रतापि पौढ, पालि लाख खांडा तणउ भडवाउ, मंडलीक तणउ समवाउ, गजेंद्रनी घटा, घोडांना थाट, पाइकना पहट, रथ तणी रामति, मेवाडंबर छत्र तणउ आडंबर, सीकरी तणउ झमाल, अलंबा तणी डमाल, भेरि तणे भांकारि, झल्लरी तणे झात्कारि, शंख तणे ओंकारइ, तिविल तणे दोंकारि, मादल तणे धोंकारि, ढोल तणे ढमढिमाट, पटह तणे गुमगुमाटि, रणतुर त[णे] रणरणाटि, घोडा तणे हिसाटि, गजेंद्रने गडगडाटि, राजा श्रीदशार्णभद्र चालउ.

लक्ष्मीवंत जइ ऊंच तो आजानबाहु, जउ खाटर तउ वामणउ वासुदेव, गोरो तो कंदर्प्प, कालो तो कृष्ण सोहगालो, घणुं जिमइ तउ पूरउ आहार, थोडुं जमइ तो पुण्यवंत, जिउ पटउलां पिहरइ तउ राजराजेश्वर, सामान्य वस्त्र पहरइ तउ अलवेसर, जउ दातार तउ व[13-B]लि कर्ण अवतार, जउ लक्ष्मी न वावरइ तउ प्रच्छन्न पुण्य करइ, जो उणुं बोलि तो भोलउ, न बोलि तो मितभाषि, भोगचपल तो कंदर्प्पावतार, अविषइ तो परनारिसहोदर, जो टालि माथि तो पुण्यवंत जि होइ.

यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः
सः पंडितः सः श्रुतवान् विवेकी ।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः
सर्वे गुणाः कांचनमाश्रयन्ते ॥

गुणवृद्धास्तपोवृद्धा ये च वृद्धा बहुश्रुताः ।
सर्वे ते धनवृद्धस्य द्वारे तिष्ठंति किंकराः ॥

निर्धन उंचउ तो मसाण खंभ, खाटरो तो हीनांग, घणुं बोलइ तो लधाड बाउलो, न बोलइ तो मुंगउ, घणुं जमइ तो

छारीउ, थोडुं जमइ तो भुंडउं ऊणाटउ, भलां वस्त्र पहरइ तोई तखारु, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरो आमवातीउ, कालो तो कबाडि, कां वेचि तो खात्रपाडउं, न वेचइ तो भडंग, विषइ तो सद्धर्मबहिष्कृतः, विषइहीन तो नपुंसकः.

वरं रेणुर्वरं भस्म नष्टश्रीर्न पुनर्नरः ।
पूज्यते पर्वणि क्वापि निर्धनस्तु कदापि न ॥

पंथ समा नत्थि जरा, दारिद्द समो पराभवो नत्थि ।
मरण समं नत्थि भयं, खुहा समा वेअणा नत्थि ॥

सोनी पारषि जवरीह गांधी दोसी नेस्ती कणसरा मपारी मणीयार सोनार कुंभार ठठार लोहार तलाल पटोलीया पटसुत्रीया माली तंबोली हरमेखलीया जोगी भोगी वइरागी नट विट पुट खरड लाठा माठा रंगाचार्य उचितबोला साहसबोला मो०बोला मेलगर मामगर कउतिगीया कुहटीया नट वट गांछा छीपा परियटा सुइ ताई तेली मोची सतूआरा बंधारा चीतारा नूतारा कोली पंचोली डवगर बाबर फोफलीया फडहटीया फडिया वेगडिया सिंगडिया भोई कंदोई देसाली कलाली गोली गवाल पशूयाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र.

१२ज्वर, १३ संनिपात, १८ प्रमेह, ५००० आमवात ८४ वायु, ३६ महावायुदोष, ४५ खाधाविकार, १०८ फोडि. २०५ गुल्मक्षयन, २० श्लेष्मा, ८ उदर, १० व्याधि, १०० सइमउ मृत्यु, ७६ [14-A] चक्षुरोग, कास, स्वास, हारिष, अतिसार, गुड, गूंवड, देहरोगा.

चंपक राजचंपक कुंद मचकुंद पुन्नाग नाग केसर नारंग लवंग कपूर वीजपूर जंबीर वकुल विचिकली सिंदुवार देवदारु नमेरु ताल तमाल हिंताल तिलक शिरीष कंक्कोल मरिच पिप्पली एला भूर्ज

कपित्थ खर्जुर पुग नागवल्ली नालिकेरी कदली दाडिमी कदंब सप्त-च्छद प्रियंगु चंदन संतानक पारिक पारिजात वृक्षावली, बहुल शीतलछायं वनं.

[1]जंबीरंब कयंब लिंब कदलीक पूगी
खजुर अजुण सज्जण सलय समी निगोह गोहंजण ।
कंकोली कदली लवंग लवली नोमालया मालई
सग्गासोअ तमाल ताल तिलया रेहिंति निद्रा द्रुमा ॥

बाल लगिं शिरस्तुंडमुंडन कीजइं, पारां तोरां पाणी पीजइं, अंत प्रांत आहार लीजि, सीत वात आतप सहीयइं, एकत्र सदैव न रहियइ, यथावस्थिते धर्म कहियइ, एतदर्थस्य कर्म[धर्म क]-हियइ,[2] शुक्ल धान धरिउं, अनंतर मरिउ, मुक्ति पयसारिउ, इणि परि सिद्ध होयइ, सकल त्रैलोक्य लगमग जोइयइ.

निरंतर जु रमइ, आपणउ सयर दमइ, सकल धन गमइ, भीष भमइ, अलीकभाषण करइ, निज कुटंब परिहरइ, अपमान आदरइ, अनर्थपरंपरा वरइ, जाणी दिव्य करइं, अनेक नीच कर्म समाचरइ, सात पूर्वज तणी लक्ष्मी क्षणि क्षय करइं, पण मस्तक ताइ रमइ.

सहर्ष सस्नेह सोल्लास सकलविकास सविभ्रम सप्रेम सोत्कंठ विहिसितवदन उल्लासितवचन, रोमांचकंचुकित शरीर, सर्वालंकारविभूषित, सर्वशंकादिदोषरहित प्रेमसंयोग.

साग पान समान कर्ण्ण, श्यामल कज्जल समान वर्ण्ण, निलाट चटित विकराल महाभैरवानुकारि मुख, ज्वलनज्वालाकलापि पिंगल

१. आ प्राकृत श्लोक मूल प्रतमां आ प्रमाणे भ्रष्ट स्वरूपमां छे.

२. मोटा कौंसमां मूकेला अक्षरो मूलमां लख्या नथी; मात्र एनी शिरोरेखा दोरी छे. जे प्रतीकने आधारे नकल थई हशे तेमां ए प्रमाणे ज हशे अथवा लहि-याने ए दुर्बोध्य लाग्या हशे. अहीं ते अनुमाने उमेर्या छे.

दृष्टि, अंगारवृष्टि करतउ, कडकडत महिष मोडतउ, पातालविवरनी परिइं पेट संकोडतउ, आपणु कपाल आस्फालतो, दुर्दरारवि ब्रह्मांड फोडतो, आकाशतारामंडल त्रोडतो, कुलाचल पर्वत पातालि घाततो, [14-B] हाथि तीक्ष्ण काती नचावतो, महाकपालि रुधिर पीतउ, गलइ रुंडमाला वहतो, अट्टहास करतो, कातर आतुर बीहावतउ, प्रत्यक्ष काल कंकाल कराल वेताल, काकीडा उंदिर सर्प घिरोलाना माल धरतु, ताल माल जंघा धरतउ, पग छापरो, कान टापरो, आंखि उंडि, निलाडि भूडि, धमिया लोहगोला तिसिया बेउ डोला, एवंविध वेताल.

लाडी चौडी कान्हडी गूजरी सोरठी मरहठी कुंकुणी खुरसाणी ससी सिंहाली डाहली प्रहली कीरी हमीरी काश्मीरी परतीरी मागधी मालवी इत्यादि लिपयः.

संप्रति वर्त्तइ कलिकाल; महाकूट कपटकाल, चाड चबाड, साक्षात् हाला सा स्वबद्धुड, परस्पर कलि गुरु शिष्या जायइ, खांध बलि, अन्याय कुरीति देशमंडलि, राजकुल रुंधां खलि, राय राणा वातइं छलि, क्षत्रिय नास दीठि दलि, भला माणसहूइं तांतलि, पृथ्वी मंदफलित्र साव निःफल, जडी मूली रसविकल, कुलस्त्री निरर्गल, ऽन्यायी राय तुच्छ दल, चोर चरड बहुल, वाटपाडा तणा कलकल, धर्मगुरु चपल पापोपदेशकुशल मिथ्यात्वनिश्चिल, लोक मायाबहुल, अल्प मंगल, इणिइं कुकालि, अवसर्प्पिणी कालि, अल्पक्षीर गाइ, निस्नेह मायइ, भक्ष्य भोजन निरास्वाद, स्त्री तणी जाति अमर्याद, रहसभेद, रसच्छेद, आऊषां स्तोक निवाणिज लोक, देह वातली, भक्ति पातलि, अल्प मृत्यु, पगि पगि अकृत्य, बाप बेटा तणा गर्थ सांतइं, आपणां छोरु कुक्षेत्रि घातइ.

सीदंति संतो विलसंत्यसंतः
पुत्राः म्रियंते जनकश्चिरायुः ।

परेषु तोषः स्वजनेषु रोषः
पश्यंतु लोकाः कलिकौतुकानि ॥

दाता दरिद्रः कृपणो धनाढ्यः
पापी चिरायुः सुकृती गतायुः ।
राजाऽकुलीनः कुलवां च दास्ये
पश्यंतु लोकाः कलिकौतुकानि ॥

सिल्ल भल्ल बावल्ल कुंत करवाल तीरी तोमर नाराच अर्द्धनाराच चक्र शंख शक्ति क्षुरप्र स्फोट कोदंडल मुशल गदा तरवारि कातरि शस्त्रिका खड्ग मुद्ग स्तद्वल भिंडमारि.

अति ताणिउं त्रूटइ, अति भरिउं फुटइ, [15-A] अति लइउ वाडि फडइ, अति मथिउं कालकूट हुइ, अति चाविउं कुचा थाइ.

जसु राज तणइ खड्गि राजलक्ष्मी वसइ, सरस्वती जिह्वाग्रि वसइ, वचनालापि अमृत वसइ, महाजनहूइं कौर दरिसइ, सेवकजन संतोसइ, दीठो आणंद करइ, त्रूठो दरिद्र हरइ, रुठउ सर्वस्व अपहरइ, अन्याय तणी वात परिहरिइ, कीर्त्तिकामिनी कामइ, देवगुरु मेल्ही कुहिनइ शिर न नामइं, मधुर प्रसन्न मुख, इंद्र पदवी तणउं सुख, परदारा-सहोदर, दानसन्मानसदादर, ऊचित्यचतुर प्रतिपन्नवाचासार सर्वजनाधार पंडितजनशृंगार असंवलितकीर्त्ति शूरवीर विक्रांत परमस्फुर्त्ति उदार-स्फारमूर्त्ति पापनिकंदन सज्जननंदन, एवंविध राजा.

उत्सिक्तान् प्रतिरोपयन्, कुसुमितान् चिन्वन्, लघुन् बद्धयन्, कुब्जान् कंटकान् बहिर्नियमयन्, विश्लेषयन् संहतान्, अत्युच्चान्नमयन्, शनैश्च वितितानुन्नामयन् भूतले मालाकार इव प्रपंचचतुरो राजा नंदतु चिरं ।

विरह हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र

गांजती, किंकिणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, वक्षःस्थल ताडती, कंचूऊ फाडती, केशकलाप रोलंवती, पृथ्वीतिल लोटती, आंसू करी कुंचूक सिंचती, डोडला दृष्टि मीचती, दीन वचन बोलती, सखी-जन अपमानती, थोडइ पाणी माछली जिम तालोवलि जाती, शोक-विकल थाती, क्षणि जायइ, क्षणि रोइअ, क्षणि हसिअइ, क्षण बअसिइ, क्षणि आक्रंदिअइ, क्षणि मूझइ, क्षणि बुझइ, तेह तणउं संतापइ, चंदणु कमलताल पुण मेल्हइ जाल, चंद्रकांति ज्वलइ, पुप्पशय्या बलइ, हार भावइ अंगार, कदलीहर मानइ यमहर, जे जलसीकर ते उद्वेग करइ, जे शीतलोपचार इंग विकारइ, इणि परि प्रज्वलित स्नेहपटल विरहानल दीपतेइ;

विरहस्तापनिःश्वासौ चिंता मौनं कृशांगता ।
अब्जशय्या निशादैर्घ्यं जागरः शिशिरोष्णता ॥

अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः ।
अलमलमा[15-B]लि मृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला ॥

अथ सा पुनरेव विह्वला वसुधालिंगनधूसरस्तनी ।
विललाप विकीर्णमूर्द्धजा समदुःखामिव कुर्वती स्थलीम् ॥

द्राक्षा तणि कांक्षा किसिउं महुडे फेटइ, शर्करानी श्रद्धा किं गुलिं पूजइं, अमृत काजि किमु कांजि पीजि, आंबा तणउ दोहलो किं आंबिलां पूजइ, कस्तूरीवान किं काजलि कीजइ, इंदू नीलमणि काजिं किं काच लीजइ, वल्लभ माणस तणउ ऊमाहउ किमिइं अनेरइ पूजइ ?

वच्छे ! सासुरा तणी इसी स्थिति जाणवी, सुसरउ उवेषइ, जेठ नीचउं देषइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठाणी कुसइ, देअराणी हसइ, नणंद नरनरावइ, सासु काम करावइ.

पापि खउ धर्मि रखउ, साच अवगणियइ जूठउ वखाणियइ, गुरु शिष्य तणउं खमइं, बापु बेटा नमइ, सासू पाटलइ वहु खाटलइ, ए कलि तणा भाव.

सीमाडा सवे वस कीधा, सवे गढ लीधा, गढवइ सवि निर्द्धाटिया, दुर्ग सवे आपणा कीधा, समुद्र लगि आपणी आण फेरि, निष्कंटक राज्य प्रतिपालतां संग्राम विषय कदाचित् उपजइ, बि पखा वृहत्पुरुषा सांचरिया, क्षेत्र मूडाविउं, बिहुं गमी सन्नद्धबद्ध नीपना, सुभटे जरहि जीण साल लीधी, मयगल गुडिया, सुंडादंडि मुहवडि घातिया, पंचवल्लह किसोर पाखरिया, जाति तुरंगम पलाणिया, वीर पुरुष महासुभट प्रगुण नीपना, चक्रव्यूह गुरुडव्यूह तणी रचना नीपनी, आगेवाणि सींगडियां तणी श्रेणि, पछेवाणि फारक तणी पद्धति, ततो हस्तीघंटा सीत्कार करती, पाखरीयानी श्रेणि हेखारव मेल्हती, पंच शद्ध तणा निर्घोष जमला ऊच्छलइं, रणतूर्य वाजइं, नीसाण घाय गाजइ, बिहुं गमे सुभट तणा सिंहनाद लागा, सिल भल्ल तीर तोमर नाराच प्रहरण पडवा लागा, बिहु पखा हाकि हाकि, हिणि हिणि, मारि मारि, नाठउ नाठउ, भागउ भागउ, इणि परि सुभट शद्ध नीपजावइं, गयण आच्छादिउं, सूर्यकिरण रुध्यां तेतल समइ फुटेवा लागां कपालमंडल, भाजे[16-A]वा लागां धनुर्मंडल, जाएवा लागां शिरःखंड, पडवा लागी खांडा तणी झड, वाजवा लागी सुभट तणी कोटकडि, नाचेवा लागां धडकबंध, पडिवा लागां ध्वजचिंध, प्रहारजर्जर कुंजर पडइं, सूनासणा तुरंगम तडफडइं, भारडीता गजेंद्र आरडइं, रीरीया करता राउत हथिआर हारइं, घाइं घूमिआ सुभट ढलइं, पडिया पाइक न ऊसासीइ, हिवा हाथियां आश्वासायइं, उंधा मउड पडइं, रेवंत रडवडइं, पडिया पंचायणनी परि हाकरइं, रोस लगीं मुंच्छभूंच्छ फरकावइ, रथचक्र

चांपीती करोडि कडकडइं, वेताल हडहडइं, भाग्यवंत जयलक्ष्मी वरइं, आपणुं काज करइं: युद्ध. *

पद्मराग १, पुष्पराग २, मरकति मणि ३, कर्केतन ४, वज्र ५, वैदूर्य ६, चंद्रकांत ७, सूर्यकांत ८, जलकांत ९, नील १०, महानील ११, इंद्रनील १२, रागकर १३, विभकर १४, ज्वर १५, रोगहर १६, शूलहर १७, विषहर १८, हरिन्मणि १९, चूंनी २०, लोहिताक्ष २१, मसारी २२, नल २३, हंसगर्ब्भ २४, विद्रूम २५, अंक २६, अंजनरिष्ट २७, मुक्ताफल २८, अहिमणि २९, चिंतामणि ३०, इति रत्नजातिनामानि.

चक्र १, धनुष २, वज्र ३, षड्ग ४, कृपाणी ५, तोमर ६, कुंत ७, त्रिशूल ८, शक्ति ९, पासु १०, मुद्गर ११, मषिका १२, भल्ल १३, भिंडमाल १४, गुरुज १५, लुंठि १६, गदा

* आ पछी सामुद्रिकने लगता सात अशुद्ध संस्कृत श्लोको मूल प्रतमां नीचे प्रमाणे छे :—

इह भवति सप्तरक्तः षडुन्नतः पंचसूक्ष्म दीर्घायुः ।
त्रिविपुललघुगंभीरः द्वात्रिंशल्लक्षणः स पुमान् ॥
नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनांतेषु ।
रक्तसप्तः सद्यः सप्तांगां स लभते लक्ष्मीं ॥
षट्कं कक्षा चक्षुः कृका नासिका नषास्यमिति ।
या स्पंदमुन्नतं स्यादुन्नतस्तस्य याचंते ॥
दंतत्वग्केशांगुलिपर्वनखाः पंच यस्य सूक्ष्माणि ।
धन लक्ष्मी ये तानि च जायंते प्रयसः पुंसां ॥
नयनकुचांतरनासाहनुभुजमिति यस्य पंचकं दीर्घं ।
दीर्घायुर्भवति नरः पराक्रमी जायते सह ॥
भालमुरो च नाभिति त्रितयं भीमा स्वरस्य विपुलं स्यात् ।
ग्रीवा जंघा मेहनमिति त्रिकं लघु महेश्वरस्य ॥
यस्य स्वरोऽघनाभीसत्त्वमिति त्रयं गंभीरं स्यात् ।
सप्तांबुधिपर्यंतं भूमेः सपरिग्रहं कुर्यात् ॥
इति द्वात्रिंशल्लक्षणानि ।

१७, [16-B] शंख १८, परशु १९, पटसु २०, यष्टि २१, सपन २२, पठसु २३, हल २४, मुशल २५, कुलिश २६, कातर २७, करपत्र २८, तरवारि २९, कुद्दाल ३०, यंत्र ३१, गोफल ३२, डाहिणि ३३, संडासिका ३४, कुहाडी ३५, हिंपुष ३६, इति छतीस दंडायुधानि.

करि तुरंग रथ पायकसेन भांडागार ५, कोष्टागार ६, गढ ७, सप्तांग राज्यलक्ष्मी.

भंभा मउंग मद्दल कडंब झल्लरि हुडुक्क कंसाला ।
काहुल तिलिमा वंसो संखो पणवो य बारसमो ॥

द्वादश तूर्यनिर्घोषनादा नाम.

हक्का १, इक्का २, मरम ३, काहल ४, पुप्फभेर भाणगं ५, पडहो ६, जुग ७, संख ८, करड ९, पागय १०, मुद्दल ११, कंसाल १२, रणनंदी १३, इति रणनंदी तूर्य.

क्षीरधात्री १, मज्जनधात्री २, मंडनधात्री ३, क्रीडाधात्री ४, उत्संगधात्री ५, पंच धात्री.

हंसलिवी, भूयलिवी जक्खा तह रक्खसीह बोधव्वा ।
उड्डी जवणि तुरक्की कीरी दविडी य सिंधविया ॥

मालविणी नडि नागरि लाडलिवी पारसी य बोधव्वा ।
तह य निमित्ती अ लिवी चाणक्की मूलदेवी अ ॥

लिपिनामानि.

सकोप नर भ्रकुटि ताडतो, विकट चपेटा ऊपाडतउ, होठ करी फुरतो, वचनविन्यासि प्रसवलतो, विभीषणकार मुख करतो, आरक्त लोचन फेरतो, दुर्वाक्य बोलतउ, महाकोपिं शरीर डोलतो, जाणे करि प्रज्वलतो वडवानल, रोषारुण जिसो रातो अरुण, निष्ठुर वदन, क्रूर लोचन, पुरुष अथ सरुप बे.

हंसगति जिम चालति, मयगल जिम माल्हती, कामिनीगर्व भांजति, चंद्रकला जिम गुणिहि बाधती, नयणबाणिं जण वीधती, माथइ सीमंत फाडती, हियइ कुंचुक ताडती, वांकुं जोती, विरहियां चित्त बोअती, अति रूपवती, साक्षात् रति तणउं रूप, लक्ष्मी तणउं लावण्य, पार्वती तणी रेखा, रंभा तणी कांति, रत्नादेवीनउं तेज, रोहिणी तणी कला, सीतादेवीनी लीला, द्रौपदी तणउं सौभाग्य, लक्ष्मी तणउं भाग्य, अग्नि देवतानो वान, रूपिणि तणउं संस्थान, कंठे नवसर हार रूलतइं, जिम दीठी चित्तमाहिं पइठी, इसि बाला.

[17-A] इंदुर्वक्त्रस्य वीप्सावदनमुपकथा पादयोः पंकजाली
पर्यायोलिः कबर्या ननु तनुमहसां वर्णिका कर्णिकारं ।
आभासः कुंभिकुंभद्वयमुरसिजयोः कामकोदंडयष्टिः
पाखंडं भ्रूलताया रतिमभिनयनां पश्य रूपस्य यस्याः ॥

हा कांत, हा हृदयविश्रांत, हा प्रियतम, हा सर्वोत्तम, हा इयित, हा प्राणहित, हा सौभाग्यसुंदर, हा चंद्रवदन, हा सुंदरगात्र, हा प्रेमपात्र.

जिसउ चंद्रमंडल, जिसउ स्फुटिको, जिसउ क्षीरसमुद्र, जिसउ हिमाचल, जिसउ विकसित केतकीदल, जिसउ प्रधान मोतीहार, जिसउ शेषफणासंभार, जिसउ कामिनीकटाक्षनिकर, जिसउ कासकुसुमप्रकर, जिसउ डिंडीरु, जिसउ गोक्षीर, जिसउ गंगातरंगपूर, तिसिउ महारायजसपूर.

ऋद्धिमंतु, पुण्यवंतु, कर्पूरे कुलगला करइ, अद्भुत शृंगार समाचरइ, नितु नवा अलंकार वावरइ, उत्फुल्ल पुष्पशिय्या आदरइ, हीडोला खाटनी लीला धरइ, भोगपुरंदर, होठ फुरइ, सकलस्त्रीजनलोचन हरइ, दृष्टि दीठो मनि विकार करइ, नवनवे लीला विलास

रमइ, मुह पूछि जिमि, कजि पुछि पहरइ, खडोखलि तणां पाणी लहरइ, ललित गर्भेश्वर, द्रव्य अविनश्वर, शालिभद्रावतार, मद[न]मुद्रावतार, अश्रांत तंबोल ममरइ, पंच प्रकारि विषयसुख अ माणइ, उगिउ आथमिउ काइ न जाणइ जाइ. *

जसु तणइ प्रदक्षिणावर्त्त शंख, चिंतामणि रत्न, फरस पाषाण सोना तणउ, उपरि सो कोटी वेध रस, काली चित्रावलि वेलि, चोटीया द्राम, जलतरणी, हीरो कचडी, पोतइ संखिणी पदमिणी बेउ लक्ष्मीनिधान कलस आणइ, लाषीकउ दीवो प्रज्वलइ, कोटि ध्वज लहलहइ, जसु तणइ रूपइं को लूंबहइं, सोनाना मयूर ऊडइं, सा नवे फुले राति विहाइ, सपाल्य सोना पहिरियइ, पटोले भूमि बाहिरियइ, चीतवीया पासा पडइ, उं करतां पाधरुं थाइं, लक्ष्मी बारणि लांबइं अनइं ऊपरवाडि पयसइ, इसिउ दिहाडउ भलउ.

[17-B] २७२ गाजण, ३४ कनूज, १८ लक्ष बाणू मालवउ, ९ लक्ष गौड, ९ करु, ९ डाहल, ७० सहस्र गुजराति, ९ सहस्र सोरठ, ४० जेजाहुत, २४ सहस गंगापार, २१ लाड देश, १४ सहस्र व्यालकुण नमियाड.

बोलती षाल पाडइ, फुंक देती पाहाण फाडइ, महाकालि, विकरालि, संपूरी आगि मूलि, साची अलच्छि जाची जेउ काल-रात्रि, वचनि सर्वांगि शूल उपजावइ, मिरी तणी उगटि, अंगार तणी सउडि, चालतउ पलेवणउं. दाघज्वर तणी बहिन, नव धायांतर ऊपडइ, बगाई करती. घांटि त्रोडइ, फुंकछेहि गांठि

* मूल प्रतमां आ पछी नीचेनी प्राकृत गाथा छे :—

विज्जाइ रूव तिन्नि वि निवडंतु कंदरे विवरे ।
अच्छच्चिय परिवुड्ढो जेण गुणा पायडा हुंति ॥

छोडइ, जिसी केवलइ हालाहलि घडी हुइ, प्रलयकालतउ नीपनी हुइ, बीछीना आंकडानी परि वाकुडी, कूड कपट करी सांकुडी, कुलक्षण तणी आंकुडी, इसि सर्वाधम स्त्रीजाति जाणवी; आवर्त्तः संशयानामविनय०

दधि दूर्वा कुसुम चंदन अक्षतपात्र नंदितूर बीजपूर सिद्धार्थ गोरोचना कुंकुम पूर्णकलश गूहली तोरण चमर जवारा, अहिव तणउ मंगल, चारु घटजुअल दीप प्रदीप मणिमाला प्रवाल वंदरवाल ए द्रव्य मंगलीक, श्रीदेवपूजन गुरुवंदन प्रमुख भाववंदन मंगलीक.

रणांध रोगांध बुभुक्षांध तृषांध लोभांध कामांध दर्पांध मद्यांध क्रोधांध विद्यांध वित्तांध अहंकारांध जात्यंध चिंतांध पुरुष सर्वथापि न देषइं काइं.

न पश्यति मदोन्मत्तः कामांधो नैव पश्यति ।
न पश्यति हि जात्यंधो अर्थी दोषान् न पश्यति ॥

जातिलाभ०

ललाटि तिलक, कने झलक, बाहे वलय, अंगुलिं अंगुलियक, कंठिं कंठिका, गलइ हार, माथि मोतीसरी, हृदय सौवर्ण्ण ऊतरी, हाथे कंकणरवझलत्कार, पगे नेऊरझात्कार, असे आभरणे आहरी नायिका, भर्त्तार अनुरागिणी, कोमलभाषिणी, अदृष्टमुखविकार, सदाचारसुविचारपर, पालितकुलाचारउदार कृतपरोपकार, सुघरणी सुसंची सुसूत्रणी सुसीला, अमृतवाणी बोलती, पाहण पहालती, हाथि मोकली, सहजि प्रांजली, सर्वगुणसंपूर्ण इति कलत्र भाग्ये लाभइ.

कुघरणि म[18-A]हा कुहाडि सदा धरइ आटोप, बइठी भरतार दिइ निरोप, डोइला हेठे किकिउ धरइ, मुहि साह्मी चीवर

बरइ, रांधणां सीधणां नितु अणाहर करइ, सकल दिवस सूअर जिम चरइ, ऊचां नीचां वाक्य बोलइ, प्रही प्राहुणो टलइ, छोरु चाकरु भिडइ, वांद गुलाम उपरि मुहिं चडइ, थकी सीकउं त्रोडइ, बोलावी माथुं फोडइ, पाणीमाहि ऊठाडइ, कुटंब सदा दुःखि पाडइ, इसि घरिनारि दुर्मुखी, संतापकारणी, उद्वेगकारिणी, कलहकारिणी, महा- 5
पाप तणइ उदयि पामीयइ, रोस चडी कुणही न मनावीय, रांधती सीधती खारु मउलुं करइ, दाधुं काचउं करइ, ढीलुं गीलुं करइ, जे खाधुं ते खाधुं, शेख माषी भिणहणतउं, मेल्हइ, हांडलउं कूडलुं खरडिउं मेल्हइ, खर ऊषरलुं, मांकुण मांचां भिरिया, जु भरियां गोदडां, कान मिलि भरियां, रालडां फुहडा, 10
पग भरिउ साडलउ, घरसाला भरिउं घुंटण, हाथि पाणी नही, पग पाणी नही, मलमलिन शरीर, दीठइ ओकारां आवइ, इसी फुहडी सूगामणी घरनारि कलिकालि घणी.

जाणे धनद यक्ष त्रूठउ, जाणे वेताल सेवाहि पइठउ, जाणे किरि कल्पद्रुम फलिउ, किरि कामघट आवि मिलिउ, किरि कामधेनु 15
गृहांगणि बांधी, किरि नव निधि तीणि लाधी, किरि चिंतामणि रत्न हाथि चडिउं, करि पूर्वभवभाग्य उघडिऊ, अथवा कल्पवेलि घरांगणइ पइठी, अथवा महालक्ष्मी मूर्त्तिवती घरि पइठी; भवंति भूरिभि०

वडां सालेवडां सांगरि मरी मांजरि वालहलि अंबहलि पूरण 20
सूरण इंदरी वडी पापड कंकोडां घीसोडां चीभडां कोठींबडां आदा करमदांप्रमुख व्यंजन; केलां वरसोलां खर्जूर बीजपूर आंबिली दाडिम कुलि चारोली इक्षुदंड द्राक्षाखंड आंबा रायण अखोड वाइम मंजार गोजां इसां भक्ष्य; पापडी चुडहडी काकरियां सलवलियां कंसार घृतपूर सुंहाली सांकुली सातपुडी खंडमोदक गुडमोदक 25
दोठां दहीवडां मरकी सिंहकेसर पंचधार लपनश्री एवंविध पक्कान्न.

परदारसंग [18-B] लागी घरबार चुकीइअ, खायवा पीयवा चूकीइ, उडेवा पहिरवा चूकीइ, स्वजन परिजन चूकीइ, देहवान चूकीइ, आचार व्यवहार चूकीइ, सत्य सौच चूकीइ, इहलोक परलोक चूकीइ, एकनि केवल नरय दुःख देखइ. खंडत्वमिंद्रिय०, सर्वस्वहरणं बंधं०

काचखंड कारिणि म निगमि चिंतामणि, बाटी कारणि अरट म विकि. अंगार कारणि कल्पवृक्ष म बालि, कांगणि कारिणी कोटि म हारि, खीलि कारिणि देवकुल म पाडि, विषय कारणि मानुषजन्म म हारि.

को चक्कवट्टिऋद्धिं चइउं दासत्तेण अहिलसहि ।
मुत्तुं चिंतारयणं कायमणिं को व गिण्हेइ ॥

सयर बाहिरि कुंकुम कस्तूरिका वासियइ, अंतरंगि अशुचि रसि विणासीयइ, शरीर बाह्य पहिरइ सोनउ घडीउं. अभ्यंतर अस्थिखंडे जडिउं, शरीर श्रीखंड तैलादिके अभ्यंगीयइ, अभ्यंतर रुधिररसिं रंगियइ, शरीर पाटवस्त्र पहिरावीयइ, अभ्यंतर मांसपिंड भावियइ, मुखि लीजि सर्व सार आहार, माहिं नीकलि पंक समान मल, लोचन लगाडिइ स्निग्ध कज्जल, माहिं नीसरइ पीहे सहित जल, कुडि पडहामणि, आयुष्क त्रुटणमणी, हंस तउ ऊडणो, इसिउ असार शरीर; इदं शरीरं०

शिखा फरहरती, उत्तरासंगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउं जनोइ, सिर भद्रिउं तिलक वधारिउं, गायत्रीसाधनु, त्रिकालसंध्याराधन, प्रभातस्नान, नित्यदान, वेद पढइ, वेदांत जाणइ, सिद्धांत वखाणइ, देवतर्पण गुरुतर्पण ऋषितर्पण पितृतर्पण इसिउ नैष्ठिक ब्राह्मण.

संचक अदाता बद्धमुष्टिक, पंडिउ भिक्षाचर रंकप्राय चमार, चक्रवर्त्ति कृपण, पितामह अगूरह्य, नामधेय, जीहनइ नाम लीधइ धान पुण न मिलियइ.

प्रभात समउ हुउ, अंधकार फीटइ, गाय तणा गाला षूटा, तारागण विरल हुउ, [19-A] चंद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडां तणी उलि लवइं, देव तणां बार ऊघडियां, प्रभातिक तूर्य वाजियां, राजभवनइ वैतालिक पढइं, विलोणा तणा झरडका ऊपजइं, पथिक मार्गि थया, ब्राह्मण तणे घरि वेदध्वनि विस्तरी, धार्मिक लोक प्रतिक्रमणपर हुआ.

समुद्र अगाधि मध्य गुहिर गंभीर असंप्राप्ततीर, तेह समुद्रनइ तीरि बावन्नउ बोहित्थ नागरिउं, आउलां सूत्रिया देशांतरोचित क्रयाणां भरियां, कूयाखंभो उभवीउ, नीजामा सज्ज हुआ, भेला लोक भाडिआ, इंधन पाणी पक्वान्न संग्रहियां, खांडियां पीसियां संवल, सिढ ताडिउं, बलि बाकुल क्रिया दिकपाल पूजिया, नाटक पेषणां करावीयां, स्वजन लोक मोकलाविउ, भले शकुने, भले मुहुर्त्त, भले दिवसि हूंते प्रवहणि श्रेष्ठि चउउ.

उष्णकाल पहुंतउ, जिसी दावानल तणी ज्वाला तिसी लू वाइं, जिसउ बावन्न पल तणउ गो धमिउ हुइ तिसिउ आदित्य तपइ, जिसी भ्रासड तणी वेलू तिसी भूमिका धगधगइ, मस्तक तणउ प्रस्वेद पाछी ऊतरइ, धर्मि जीवलोक गलगलइ, श्रीमंत तणां चउबारां झलहलइं, जलद्रां शरीरि लगाडीइं, गुलाव तणा अभ्यंग कीजइं, बावन्नां श्रीषंड घसीयइ, चउदिसीयइं वीजणा फिरइं, द्राक्षा आबलीपान कीजइं, कलमशालि तणा सीधउरा करंबा कीजइं, अच्छां कापडा पहरियइं, लू आहण्यां पाणी पीजइं;

अच्छाच्छचंदनरसार्द्रकरा मृगाक्षी
धारागृहानि कुसुमानि च कौमुदी च ।
मंदो मरुत् सुमनसः शुचि हर्म्यपृष्ठं
ग्रीष्मे मदं च मदनं च विवर्द्धयंति ॥

शीतकालि दिवसिइ गोधूमवृद्धि थाइ, बेटी आपणे सासुरे जायइं, पास रंग मुहघा थाइं, कंबलि जोइ, तीन लाभइ घरे फल्सां वापरइं, तपोधन विहारकर्म करइं, श्रीमंत घरमाहि पइसी सूयइं, दारिद्रि लोक शीतइं कांपइं, सकल लोक अंगीठे तापयइं, टाढि हडबां षडइं, रातिं मरि जिम सांकुडइं स्वाननी परि कुणइं, हाथ पाय आंगुली चणमणइं, हेमंते दधिदुग्धसर्प्पिरशना०

पंगुर्यथा बहुयोजनाटवीं लंघयितुं, वामनस्तालफलानि लातुं न शक्नोति, यथा कुब्जः साध्वरी [19-B] भवितुं न०, वातभयग्रस्त-शरीरः विषमकरणानि दातुं न०, विद्यारहितश्चाकाशे गंतुं न०, अंधः पुस्तकं वाचयितुं०, तथा निर्भाग्योपि धर्मं कर्तुं न शक्नोति ।

राज्याभिषेक पुत्रशिक्षा; वत्स ! प्रजा सुखिं पालेवी, अन्याय वाट टालेवी, भलउ न्याय आदरिवो, जसवा उपार्जेवउ, चिरपरिचिता चारही परही न करेवी, कुणहि विश्वास न जाणवउं. अकुलीन पसाउ निषेधवउ, नीच जाइसंसर्ग वर्जेवउ, महाजन समानेवउ, मंडलीक प्रति उचित्य वर्त्तेवउ, सीमाला सवे ऊससता राखेवा, लोक रुडइं नीतिमार्ग दाखिवा, चोर चरड निग्रहेवा, पायक प्रतिं यथायोग्य ग्रास देवा, किं बहुना, राज्य भलु करिवउं.

नदी; दो तड पाडती, कचवर उपाडती, रुंख उन्मूलती, कुंभिणि घातती, सींव ज हणति, जडि मूलि खणती, मार्ग लोक खलती, वलणि चलती, तरु तोषती, नीचउं जोअती, महापूरि कलकलती, कल्लोलि उच्छलती, लहरि करी सूसूती, वाहले फूफूती, जिसी कृतांत तणी मूर्त्ति तिसी रौद्र बेउ तट लेइ, आव्ही नदी.

मलयचंदनच्छटाच्छोटितभूमितल, दंदह्यमानकालागुरुकपूरपूरि मथायमान, पुष्पशिय्यानिरुपमान स्वर्गलोकविमान समान, उभय-पार्श्वोपधानशोभितः, मध्यभाग गंभीर, गंगापुलिन समान, अत्यंत सुकुमाल शयनीय.

माणिक्यदंडउ हस्ती, खुरसाणिउ घोडउ, मुरथलीनउं उंट, दंडाहिनउ बलद, भीमासननउं कर्पूर, जागडउ कुंकुम, काकतुंडउ अगुरु, दमबंधो धूप, सिंहलदिवउ हार, बावर कूलनी गजवडि गाजवडि, गाजणि गोजी, वाणारसी कांची, खेडावहा चउल, मालविउ माडउ, पांडवसिउं खाडउं, गूजरउ लोटउ, आबूउ रोटो, अंबूउं दही, ए वस्तुना आकारु.

रे रे दुराचार, अधर्मव्यापार, पतितकुल, कल कहूर, मुक्त-मर्याद, पापिष्ट निकृष्ट दुष्ट, इण परि निर्भच्छउ.

करतलकलितयोगदंड, स्कंधप्रतिष्ठितयोगपट्ट प्रसाधितप्रचंडचंडिका-मंत्र, पिशाचसाधनस्वतंत्र, शाकिनीनिग्रहसाहसिक, रसाय[20-A]न-प्रयोगरसिक, प्रदर्शितवलिपलित, वशीकरणि अमूढ, लक्ष खडी चापडीप्रमुख विद्याकुतूहली अ साधक, आकाशपातालबंधक.

पानि तणो परिगरु, देहरी तण० उमहरु, चउकी चउ खंडे झलहलइं, उआरे पाणी खलहलइं, पगथिआरां सारुयारा, वरंडी उदार, लहरीमाला उच्छलइं, मत्तवारणां उपरि पाणी वलइं, समुद्रनी परि गंभीर निरुपमान नीर उपरि जाण भरइ, खडगूए तरीइ, वालीअ गोरि जालि प्रवाह छूटइ, बंध फुटइ, देहरि दंडकलस आमलसारा सोना तणा जलकइ, जलदिरिणि कुलवधू तणे पागि नूपुर खलकइं, तडिइं कीर्त्तिस्तंभ दीसइं, लोकहियां विहसइं, मेघ मल्हार राग गाइय, वीणावंश मनोहर वाइय, देही पूजा कीजइ, जन्मफल लीजीइ.

शत पत्र, सहस्र पत्र, लक्ष पत्र, सूर्यवंशी, सोमवंशी, कमल करी सश्रीक दीसइ, जिहां हंस सरलइं, सारस करलइं, कपिंजल कलइं, वृक्षनां पान चलचलइं, राजहंस रमइं, भमर भमइं, चकोर चक्रवाक मयूर कूजइं, जलकेलि तणा मनोरथ पूजइं, महाकाय बोलि, पावडियारां तणी उली, निर्मलजलकमनीय, विपुलपालिरमणीय, पथिकजनाधार, वृक्षपरंपरासार, कल्लोलमालामनोहर, एवंविध सरोवर;

सरस्यंभो लहर्यांभो गजाश्चांबुजषट्पदाः ।
हंसचक्रादयस्तीरोद्यानश्रीः पांथकेलयः ॥

निद्रांते परमेष्ठिसंस्मृतिरथो देवार्चनव्याप्तिः
साधुभ्यः प्रणतिः प्रमादविरतिः सिद्धांततत्त्वश्रुतिः ।
सर्वस्योपकृतिः शुचिर्व्यवहृतिः सत्पात्रदाने रतिः
श्रेयो निर्मलधर्मकर्मणि रतिः श्लाघ्या नराणां स्थितिः ॥

तुम्हे सदैव पुण्य कर्त्तव्य करिवुं, मनुष्य जन्मनउं फल लेवउं, निद्राप्रांति पंचपरमेष्ठिनमस्कार गुणिवउ, श्रीसिद्धांत सुणिवउ, श्रीसर्वज्ञदेव पूजिवउ, नवे स्तवने स्तववो, श्रीसद्गुरु सेववो, कुसंग मेल्हिवउ, विकथाप्रमुख प्रमाद टालिवा, मनि धर्मोद्यम आणवो, सामायिक पोसह दान शील तपभावना प्रभावनादिक पुण्यकार्य करवो, निद्रादिक पाप[20-B]करणीय परिहरवां, म[न] उन्मार्गि जातउं वालवुं, वैश्वानरतउ कर्मवन बालिवउं, परोपकार करवो, पुण्यभंडार भरिवो, शुद्ध विहार आराधिवो, मोक्षमार्ग सांधवो, न्यायउपार्जित वित्त क्षेत्रनइ विषइ वेचिविउं, तीर्थयात्राप्रमुख पुण्यलाभ लेवउ, जीवदया कीजइ, उचित दान दीजइ, सकल लोकमाहिं प्रसिद्धि लीजइ, पूर्वार्जित पाप खीजइ, मनुष्यभव कृतार्थ नीपजावीयइ, श्रावकाचार साचवीइ, सर्व दुख प्रमार्जीइ, ईण परि श्रीधर्म समाराधतां जिम उत्तम मंगलीकमाला प्रामउं तिम श्रीधर्मनइ विषइ सदैव सावधान हुयो; इत्युपदेशः.

परमं मंगलं धर्मो....बुद्धिसमृद्धिदः.... ।
.....इष्टार्थसाधको मोक्षदायकः ॥ *

भो भविक लोको ! निर्मल विवेको, श्रीसर्वज्ञप्रणित पुण्यकर्त्तव्य करवउं, आपणा मनुष्य[भव] तणउं फल लेवउं, ए धर्म परम उत्कृष्ट मंगलीक कहियइ, एह प्रसादिं सर्व कल्याण लहियइं, जिम तेज सघलाइं सूर्यतेजमाहिं समाइं, जिम नदी सघली समुद्रमाहिं माइं, जिम सघलां [पद] गजेंद्रपगि अंतर्भवइं, जिम आकासिमाहिं सर्व पदार्थ आवइं तिम दधि दुर्वा ऽक्षत चंदन कुसम कुंकुम, पूज्य वृद्धाशीर्वाद, द्वादशतूर्यनिनाद, विवाहादि हर्षणाकल, अनेरायइ पुत्र-जन्मादि महोत्सव, सानुकूल ग्रह, वैरिनिग्रह, भलां स्वप्न, शुभशकुन-प्रमुख सकल मंगलीकमाहिं अंतर्भवइ, देखउ ज्ञानत्रय सहित.

श्रीतीर्थंकर तणइ गर्भावतारि माता अद्भुत स्वप्न लहइं; चलितासन देवेंद्र तेऊ फल कहइं, देवता गृहांगणि निधान संचारइं, रत्न मणि मौक्तिक प्रवाल पद्मराग दक्षणावर्त्त शंखे करी भंडार भरइं, कणकोठार वृद्धवंत हूइ, गज तुरंगम रथ पदाति समधिक थाइं, अनेक देश सविशेष आपणइ वसि संपजइ, संपदा वृद्धिवंति नीपजइ, अनेक राय राणा आण मानइं, जन्मसमइ छप्पन्न दिक्कुमारिका स्तुतिकर्म करइं, आपणी रली चउसठी देवेंद्र जन्माभिषेक करइं, मेरु पर्वति मिली सुवर्ण्णरूप्य वस्त्रनी वृष्टि निरंतर करइं, जं जं जो[21-A]इई तं तं आनूपांगण भरइं, बालपणि देवांगना लाभइ, देव सवे दोहिलां टालइं, अमृत संचारइं, देव पंच धात्री वधारइं, यौवनिं जं जोइई तं संपाडइ, सहू काज कीधउं जि दिखाडइं, दीक्षा लेता महामहोत्सव करइं, परमेश्वर तणी स्तुति समाचरइं, केवलिनि ऊपनइ समवसरण रत्नसुवर्ण्णरूप्यमय प्रकार रचइं, अढाइ गाऊ तीहनो घडा बंध खचइं, जानुप्रमाण पुष्पप्रकर भरइं, त्रिन्नि च्छत्र परमेश्वर मस्तिकि

* आ श्लोकनी बन्ने पंक्तिमांथी केटलाक अक्षरो पडी गया छे.

धरइं, व्यंतर च्यारि रूप्प करइं, अंगुष्टि अमृत संचारिइं, रत्नमय दंड चामर ढालइं, हर्ष लगइं आप न संभालइं, नव सुवर्णकमल पाय हेठि संचारइं, अष्ट मंगलीक नवां अवतारइं, इंद्रध्वजादि ध्वजा लहलहइं, धूपघटी परिमल महमहइं, हर्ष प्रकर्ष लगइं देव गाजइं, असंख्य भव तणा संदेह भाजइं, रंभा तिलोत्तमा अप्सरा नाचइं, सविहु नांम पतीजइं, साचइं चउत्रीस अतिशय अष्ट महाप्रातिहार्य-महित, अढार दोषरहित, ३५ वाणीना गुण सहित, इम तीर्थंकर देव धर्म लगइं सदीव मंगलीक महोत्सव अनुभवइं; अनइं दशविध भवनपति निकाय, सोल व्यंतरणानिकाय, पंच ज्योतिषीनिकाय, बार देवलोक देव, पंच अनुत्तरविमान देव जं संपूर्ण सुख अनुभवइं, तेउ धर्महीजनउं निःकेवल माहत्म जाणिवउं.

सांभलउ सौधर्मेंद्र तणी स्थिति, सौधर्मी रत्नमय भूमि, शिक्र सिंहासन सूर्य जम झलकतउ तिहां बसइ शक्र इसि नामिइं सौधर्मेंद्र दक्षिण लोकार्द्धस्वामी, एरावणवाहन, बत्रीस लाख विमानणउ आधिपत्य पालइ लीला लगइं, वैरिदुःसह, स्फुलिंग सहस्र वरसतउ, ज्वालाना सहस्र झरतउ, देदीप्यमान, दक्षण हस्ति वज्रउ लइ, चउरासी सहस्र अति स्वच्छ निर्मल वस्त्र, मस्तिक चंद्रमंडल सम त्रिन्न छत्र, कनक दंड, चमर, दिव्य आभरणडंबर, इंद्र संमानि देव सपरिवार ते त्रायस्त्रिंश इसिइं नामइं दो दुगुंदुग देव, ४ लोकपाल, पद्मा शि[21-B]वा सुलशा अचल कालिंदी भाणू ए अठ * अग्रमहिषि, सोल सहस्र देवीपरिवृत, १२ सहस्र अभ्यंतर सभा तणा देव, १४ सहस्र मध्यम सभा तणा देव, १६ सहस्र बाह्य सभा तणा देव, ७ कटक, नाट्य गंधर्व हय गज वृषभ रथ पदाति रुपक तणा स्वामी नीलंजणा रिद्धिंजस हरि एरावण मातलि दामिट्ठी हरिणे-गमेषी सर्वांगिं सन्नाह पहिरि, दृढ कशा बंधि, धनुषि गुण चडावी

* मूल प्रतमां अहीं आठने बदले छ अग्रमहिषीओनां नाम छे.

रह्या, ग्रीवाभरण विभूष्युं, मस्तिंकि नेत्रादि वस्त्रम[य] अथवा सुवर्णमय टोप धरतां, सज्जीकृतक्षेप्यास्त्र गृहीत अक्षेप्यास्त्र, मध्य बहु पासिं एवं त्रिहुं स्थानकि नम्यां, त्रिहुं स्थानकि साध्या, इस्यां वज्रमय कोटि धनुष मुष्टि स्थानकि साहिया, नीलवर्ण पूष, पीतवर्ण रक्तवर्ण पुंख, इस्यां बाण हाथि धरता, केनलाइ अनारोपित चाप हाथि लेइ रहियां, के० खेडा हा०, खांडा हा०, के० दंड, के० पाश हा० नीलवर्ण पीतवर्ण, के० रक्तवर्ण, के० त्रिवर्ण चापप्रमुख शस्त्र धरइं, सर्व स्वामीशरीररक्षासावधान, अनेथ मन अणकरतां, मंडलीनी स्थिति अलोपता, परस्परइं आतरुं पडतुं टालता, परस्पर संबद्ध, सदा विनयवंत, अत्यंत भक्त इस्या त्रिनि लाष छत्रीस सहस्र अंगरक्षक देव समश्रेणी निरंतरि इंद्र पाखती रहिया छइं; इम सौधर्मेंद्र धर्म तणइं प्रसादि महा सुख अनुभवइ, इम अनेराइ देवेंद्रनां सुख जाणिवा.

हिंवि युगलियानां सुख साभलउ; तिरुडि नित्योद्योति रत्नमय भूमि, तिहां दशविध कल्पद्रुम मनोवांछित पूरइ; एकि कल्पद्रुम अष्टभूमिका रत्ननिर्मित आवास तणो आकार धरइ, तेहमाहिं नित्योद्योत पल्यंक रत्नमय सिंहासन सहित, एकिं चंद्रसूर्यनी प्रभा आपणी कांती करी पराभवइं, एकिं स्त्री पुरुष योग्य दिव्योपभोग्य आभरण विस्तारइं, एक चक्रवर्त्तिनी रसोई पाहिंइं अनंत गुण सुस्वाद अष्टोत्तरसउ खाद्य, चोसठि व्यंजन रूप आहार दइं; एक स्थाल विशाल, वाटुली सीप कच्चोलां [22-A] भृंगारादिक भाजन सर्वे समो पइं, एकि क्षोम पट्टकूल चीनांशुक क्षीरोदकप्रमुख पंचवर्ण विचित्र भांति स्वत्स निर्मल वस्त्र पूरइं, एकि बलबुद्धिआयुवृद्धिकार शीतल सर अप्यायक पाणी आपतां तृषा चूरइ, एकि वीणा वेणु मृदंग यमल शंख पटह कंसालप्रमुख अगुणपंचास वादित्रस्वर सांभलावइं मधुर, एकि तिलकु वकुल अशोक चंपक कुंद मंचकुंदादि पुष्पप्रकर संपा उडइं प्रचुर, एकि दीवानी परि उद्योत करइं, रात्रिंना अंधकार

निराकरइं: तेह युगलीयाना च्यारि भेद, छप्पन्न अंतरदीप १ हैमवत, हैरण्यवंत २ हरि वा रम्यक तणां ३ देवकुरु उत्तरकुरु ४ एककि पाहि अनुक्रमइं अनंत गुण बल रूप सुख; ते आठसय धनुष १ एक गाऊ २ बि गाऊ ३ त्रिन्नि गाऊ ४ ऊंचां; एक १ एक २ बि ३ त्रिन्नि ४ दिन अंतरि भोजन, इगुणासी २ चउसठि ३ अगुणपंचास ४ दिन अंत्यकालि अपत्यलालना, चउसठि १ चउसठि २ अट्ठावीसं सउ ३ बिसय छप्पन्न पल्य ४ आयु; ते सवे जुगलियां दिव्य रूप चउसठि लक्षणलक्षित देहस्वरूप, समसंस्थान वज्र ऋषभ नाराचप्रधान, परम सौभाग्य सहिता, वलितविवर्जित, अशिक्षित सर्व कला तणा जाण, केवल पुण्यनु प्रमाण, जन्ममाहि रोग शोग दुःख जरा रूप मरण छींक बगाई अपमरण अल्प कषाई ऊपजइ, देवमाहिं कुणहूं न स्वामी, न दास, न मूक, न ऊतसूक, न बधिर, न विंधर, न कूबड, न वामण, न हूंड, न छोटा, न पांगुला, न आंधला, तिहां डांस मुंसा मांकुण जू प्रमुख न उपजइं, साकर पाहिं धूलि अनंत गुणी सुस्वाद पुजाइं, ए इस्यां सुख सत्पात्रदानिं युगलीयां लहइं, कुपात्रदान लगिं पट्टहस्ती पट्टतुरंगम शइं, अधकी सद्गति न जायइं अनइं अभयकुमार च्यारि बुद्धि धर्मप्रभावइं अनइ धर्मनइ प्रसादिं लक्ष्मीवृद्धि, कुटुंबवृद्धि, स्वजनपरिजनवृद्धि, गजतुरंगमवृषभरथधणढोरवृद्धि हूइं; देषउ तुम्हे अशोक माली नव पुष्पनी पूजा लगइ, नद नव भवे क्रमिइं, नव द्राम लक्ष, नव द्राम कोडि, नव स्वर्ण लक्ष, नव स्वर्ण कोडि ४, नव रत्न लाष ५, [22-B] नव रत्न कोडि ६, नव ग्राम लाष ७, नव कोडि ८, तणउ स्वामी हूवउ श्रीपार्श्व कहइं दीक्षा लेई अनुत्तर विमानि गउ, तेउ मोक्षि पुण जाइसिइ, इम धर्मनइ प्रसादि धर्मवृद्धि संपजइं अनइ धर्मइ समृद्धि उपजइ, अत्रुट अक्षय लक्ष्मी चिंतामणि दक्षिणावर्त्त शंख सौवर्णपुरइसानि सिद्धि, अभीष्ट मंत्रसिद्धि, आचिंतित

देवता चर, अद्भुत निधानलाभ, राजसन्मान, उचित दान, ए इसि अनेक समृद्धि होइ अनइं जं जं वांछि इष्टार्थ हुइ, सिद्ध सर्व कार्य, रूप, सौभाग्य, अद्भुत भोग, महा सुख, ते ते सहू धर्ममहात्म लगइं दीपतो ज दीसइ; विघ्न, क्षुद्र उपद्रव, रोग हानि दारिद्र दुःख शोक चिंता रतिप्रभृति अनिष्ट काइं धर्म लगइं न संभवइं, घणुं कस्युं कहिइइ ? धर्म लगइं अनंत सौख्य, मोक्ष, पुण्य लहियइ, एह भणी तुम्हे पूजा प्रभावना दान शील तप भावना अमारिप्रवर्त्तना तीर्थयात्रा सामायिक पौषध संवेग वैराग्य परोपकारप्रमुख पुण्य कार्यनइ तिम उद्यम करवउ जिम उत्तरोत्तर सकल मंगलीक पामउ; यतः पुंसां शिरोमणयस्ते धर्माजनपरा नराः०, इत्युपदेश.

१ नृत्य, २ ऊषित्रु, ३ वादित्र, ४ मंत्र, ५ तंत्र, ६ ज्ञान, ७ विज्ञान, ८ दंभ, ९ जलस्तंभ, १० गीतगान, ११ तालमान, १२ मेघवृष्टि, १३ फलाकृष्टि, १४ आरामरोपण, १५ आकारगोपण, १६ धर्मविचार, १७ शकुनसार, १८ क्रियाकल्प, १९ संस्कृतजल्प, २० प्रसादि नीति, २१ धर्मनीति, २२ वर्णिकावृद्धि, २३ सुरभि-तैलकरण, २४ लीलाकरण, २५ गजतुरंगपरीक्षण, २६ स्त्रीपुरुषलक्षण, २७ सुवर्णरत्नभेद, २८ अष्टादशलिपिच्छेद, २९ तत्कालबुद्धि, ३० वास्तुसिद्धि, ३१ वैद्यकक्रिया, ३२ कामविक्रिया, ३३ घटभ्रम, ३४ सारिश्रम, ३५ अंजनयोग, ३६ चूर्णयोग, ३७ हस्तलाघव, ३८ वचनपाटव, ३९ अंत्याक्षरिका, ४० भोज्यविधि, ४१ वाणिज्यविधि, ४२ मुखमंडन, ४३ शालिखंडन, ४४ कथाकथन, ४५ पुष्पग्रथन, ४६ वक्रोक्ति, ४७ काव्यशक्ति, ४८ स्फारवेष, ४९ सकलभाषाविशेष, ५० अभिधानज्ञान, ५१ आभरणपरिधान, ५२ भूतोपचार, ५३ ग्र[23-A]हो[प]चार, ५४ व्याकरण, ५५ परिनिराकरण, ५६ रंधन,

५७ केशबंधन, ५८ वीणानिनाद, ५९ वितंडावाद, ६० अंकविचार, ६१ लोकव्यवहार, ६२ प्रहेलिका, ६३, स्त्री चतुःखष्टिकलाः * .

जेवडउ अंतर मेरु अनइं सरशिव, जेवडउ अंतर माम अनइं परिभव, जेवडउ अंतर लोह अनइं कांचन, जेवडउ अंतर राम अनइं रावण, जेवडउ अंतर भइंसा अनइं एरावण, जेवडउ अंतर हाथि अनइं ऊंट, जेवडउ अंतर पाधरसी अनइं षुंट, जेवडउ अंतर सीह नइं सीआल, जेवडउ अंतर गोल अनइं वीआल, जेवडउ अंतर राणी अनइं दासी, जेवडउ अंतर दुध न[इं] छासि, जेवडउ अंतर लुंण अनइं कपूर, जेवडउ अंतर खजुआ अनइं सूर, जेवडउ अंतर पर्वत नइ स्थल, जेवडउ अंतर गुल नइ खल, जेवडउ अंतर गुरुड अनइं घुअड, जेवडउ अंतर फूटरसी नइं फूहडि, जेवडउ अंतर गाअ अनइं छाली, जेवडउ अंतर बहिन नइं साली, जेवडउ अंतर दीवाली [नइ होली], जेवडउ अंतर पुण्यवंत नइ हाली, जेवडउ अंतर हंस नइ काग, जेवडउ अंतर अलसिआ नइ नाग, जेवडउ अंतर वृद्ध नइं बाल, जेवडउ अंतर मलाषाड नइं पोसाल, जेवडउ अंतर जीव नइं काया, जेवडउ अंतर मारि नइं दया. +

....[23-B]....लखित १, पठित २, संख्या ३, गीत ४, नृत्य ५, ताल ६, पटह ७, मरुज ८, वीणा ९, वंश १०, भेरीपरिक्षा ११, द्विरद १२, तुरगशिक्षा १३, धादग् १४, मंत्रचलित १५, पलितशो १६, रत्न १७, नारी १८, नृलक्ष्मी १९, छंद २०, तर्क २१, सुनीति २२, तत्त्व २३, कविता २४, ज्योति २५, श्रुतिः २६,

* स्त्रीनी चोसठ कलानी आ यादीमां बे नाम ओछां छे; मूल प्रतना क्रमांकमां '२२ वर्णिकावृद्धि' पछी एक अंकनी भूल छे; मूलमां ए पछी तुरत '२४' अंक लख्यो छे. अर्थात् लहियानी भूलथी कोई एक कलानुं नाम त्यां नकलमां रही गयुं छे. बीजुं एक नाम छेल्ले '६२' अंक पछी रही गयुं छे.

+ आ पछी मूल प्रतमां केटलांक अशुद्ध संस्कृत सुभाषित लखेलां छे.

वैद्यकं २७, भाषा २८, योग २९, रसायन ३०, जन ३१, लिपि ३२, स्वप्नेंद्रजालं ३३, कृषि ३४, वाणिज्यं ३५, नृपसेवनं ३६, च शकुनं ३७, वार्या ३८, [अ]ग्निसंस्तंभनं ३९, वृष्टि ४०, लेपन ४१, मर्द्दना ४२, [उ]र्द्ध गतयो ४३, बंध ४४, भ्रमौद्धौ ४५, पत्राच्छेदन ४६, मर्मभेदन ४७, फला ४८, कृष्टयां ४९, वृष्टिज्ञता ५०, लोकाचार ५१, जनानुवृत्ति ५२, फलभृ ५३, खड्गक्षुरिबंधनं ५४, मुद्र ५५, ऽमायो ५६, रदकार ५७, चित्रकृति ५८, दो ५९, दृग् ६०, मुष्टि ६१, दंडा ६२, ऽसि ६३, वाग्युद्धं ६४, गारुड ६५, सर्प ६६, भूतदमनं ६७, योगो ६८, ऽब्द ६९, नामालयः ७०, इति पुरुष द्वसप्ततिकलाः. *

अथ सत्पुरुषगुणाः; कुलीन १, शीलवान् २, विवेकि ३, दातार ४, भोक्ता ५, कीर्त्तिवान् ६, सूरः ७, साहसिकः ८, सत्ववान् ९, सत्यवान् १०, गंभीर ११, प्रियवाग् १२, धीर १३, सलज्ज १४, बुद्धिवंत १५, कलावंत १६, गुणग्राही १७, उपकारी १८, कृतज्ञ, १९, धर्मवान् २०, महोत्साह २१, संवृत्तमंत्र २२, क्लेशसह २३, पात्ररुचि २४, जितेंद्रिय २५, संतुष्ट २६, अल्पभोजी २७, अल्पनिद्र २८, मितभाषी २९, उचितज्ञ ३०, जितरोष ३१, अलोभ ३२, स्वरूप, ३३, सुभग ३४, तेजस्वी ३५, बलिष्ठ ३६, प्रतापी ३७, सुसंस्थान ३८, सुगंधदेह ३९, सुवेष ४०, शुभगति ४१, [अ]मुखर ४२, सुकांति ४३, इति दिव्य पुरुषगुणाः.

अथ स्त्रीगुणाः; कुलीना १, शीलवती २, विविकिनी ३, दानशील ४, कीर्त्तिवती ५, विज्ञानवती ६, गुणग्राहिणी

* मूल प्रतमां अंकनी भूल छे; १४ अने ५५ ए बे अंक ज लख्या नथी; लहियानी भूलथी बे कलानां नाम नकलमां रही गयां जणाय छे.

७, उपकारिणी ८, कृतज्ञा ९, धर्मवती १०, सोत्साहा ११, संवृत्तमंत्रा १२, क्लेशसहा १३, अनुपतापिनी १४, सुपात्ररुचि १५, जितेंद्रिया १६, संतुष्टा १७, अल्पाहारा १८, अलोला १९, अल्पनिद्रा २०, मितभाषिणी २१, उचितज्ञा २२, जितरोषा २३, अलोभा २४, विनयवती २५, सुरूपा २६, सौभाग्यवती २७, शुचिवेषा २८, शुभाश्रया २९, प्रसन्नमुखी ३०, सुप्रमाणशरीर ३१, सुलक्षणवती ३२, स्नेहवती ३३, योषिद्गुणाः.

इति श्रीसभाशृंगार संपूर्ण। ग्रं. १०००, सं. १६७५ वर्ष, माह मासे, कृष्ण पक्षेति ॥

वर्ण्यवस्तुवर्णनपद्धति

[1-A] ॥ दे० ॥ वीतराग तणी वाणी, अमृत समाणी, संसार-समुद्रतारिणी, मोहविध्वंसकारिणी.

जिम रात्रि चंद्र सोहइ, आकाश सूर्यइं, प्रासाद देविइ, वेलि कुसुमइं, कुल पुरुषिइं, कुलस्त्री शीलइं, वेलि फूलइं शोभइ.

सीहइं वन, वनिइ सीह; पात्र गुणे, गुणे पात्र; सोनउं हीरइं, हीरउ सोनइं; अमात्यइं राज्य, राज्यइं अमात्य शोभइ.

मंत्रहीन राजा, ठाकुरहीन कटक, कलाहीन पुरुष, तपोहीन मुनि, प्रतिज्ञाहीन पुरुष, शीलहीन दर्शनी, दानहीन वित्त, वेदहीन विप्र, गंधहीन फूल, शीलहीन नारी, तिम दयाहीन धर्म न शोभइं.

नायिकानेत्रवत्, विद्युल्लताविलासवत्, संध्याभ्रडंबरवत्, वातां-दोलितध्वजाग्रवत्, समुद्रकल्लोलवत्, सज्जनकोपवत्, दुर्ज्जनमैत्रीवत्, वेश्यास्नेहवत्, गिरिनदीवेगवत्, गजकर्णवत्, शरत्कालमेघवत्, चंचलं जीवितव्यादि ।

मर्कटो नालिकेरेण, काको रत्नेन, वणिग् खड्गेन, बधिरो वीणया, दरिद्रो लीलया, दिगंबरो दुकूलेन, मुनिराभरणेन किं कुरुते ?

चंद्र विरहिणी रहइं, उजूआलउं चोरनइं, सूर्य घूहडनइं, मेघवृष्टि फडियानइं, तिम निर्गुणनइं सगुण न गमइं.

चंद्र धउलइ कुण, दूध धउलइ कुण, मयूरपिच्छ चित्रइ कुण, साकर मधुर करइ कुण, गंगा पवित्र करइ कुण, हंस रहइं गति सीषवइ कुण, कोकिलहूइं पंचम राग गाइवउं सीषवइ कुण, तिम कुलीनहूइं विणय कुण सीषवइ ?

जइ सूकी तउइ वउलसिरी, जइ वीधी तउ मोतिसिरी, जउ भागउं तउ वराहउं, जइ थाकउं तउइ सेराहउं, जइ खांडउ तउ चंद्र, जइ बालउ तउ देवेंद्र, जइ काली तउ कस्थूरी, जइ बादलउं तउ दीह, जइ लहुडउ तउ सीह, तिम थोडलउं सुपात्र दान.

किवारइ समुद्र मर्यादा मेल्हइ, सूर्य पश्चिम दिसि ऊगइ, अमृत विष परिणमइं, चंद्र अंगारवृष्टि करइ, पाणीमाहिं पाखाण तरइ, मेरुचूला चलइ, गंगाजल पश्चिम वहइ, पृथ्वी पाताले जाइ, कैवलीभाषित अन्यथा थाइ, तिम भावी पदार्थ न टलइं.

हार त्रोडती, वलय मोडती, आभरण भांजती, वस्त्र गांजती, किंकिणीकलाप छोडती, मस्तक फोडती, पेट कूटती, कुंतलकलाप रोलती, भूमि लोटती, सांजन बाष्पजलि कुच सिंचती, दीन बोलती, सखीजन अपमानती, थोडइ पाणी माछली जिम तालोवीली जाती, विकल थाती, क्षणि जोइ, क्षणि रोइ, क्षणि हसइ, क्षणि आक्रंदइ, क्षणि निंदइ, क्षणि मूंझइ, क्षणि झूझइ, क्षणि बूझइ, एवं विधि विरहानल नीपजइ.

भृगुटी भीषण ताडतउ, विकट चपेटा ऊपाडतउ, ओष्ठयुगल फुरफुरतउ, बोलतउ खलातउ, रौद्रमुख करतउ, रातां नेत्र करतउ, दुर्वचन बोलतउ, राजा कोपानल प्रज्वलइ.

सपाप लोक, दृढ राजा, सकारण स्नेह, विश्वासघात मित्र, दुश्चारिणी कलत्र, द्रव्यलोभी पुत्र, अविवेकिया राजपुत्र, अल्पवृष्टि, आपसवार्थी बांधव, असंतोषी ब्राह्मण, पाखंडिया दर्शनी, प्रतापहीन पुरुष, अपूज्य देव, अमेध्यरत गाइ, देव गुरु ऊपर अभाव, कुलस्त्री निर्लज्ज, अधिकारिया मूर्ष, विद्वांस दरिद्री, वृद्ध कामी, प्रजा दुखिणी, महुर खाईकारु लोक सहू एकाकार; कलिवर्ण्णना.

सूर्य जिम प्रतापी, सींह जिम शूरउ, हंस जिम उभय-पक्ष पूरउ, विशुद्ध हार जिम सर्व [1-B] स्त्रीवल्लभ, चंद्रमा जिम कलावंत, वस्त्र जिम गुणवंत, हस्ति जिम दानवंत, कंदर्प्प जिम रूपवंत, वैरिकुलकेतु, शरणागतवज्रपंजर, पंचम लोकपाल. सीमाल वशवर्त्तिया कीधा, सर्व गढ ढाल्या, सर्व दुर्ग आपणाव्या, समुद्र पर्यंत आज्ञा प्रवर्त्तावी, इणि परि राजा एकछत्र राज्य प्रतिपालइ.

आस्थानसभां काच ढालिउ, कूंकूं तणा छडा छाबडा, कस्तूरी तणा स्तबक, बावनाचंदन तणी गूहली, काचा कपूर तणा साथिया, अवीध्या मोती चउक पूरिया, परवाला तणा खंडना नंदावर्त्त दीधा, फूलें पगर भरिया, अगरु उषेवीइं, पंचवर्णपट्टकूल चंद्रूया शोभइं, लहलहइं मोतीसरी, राजा सयमेव आस्थानसभां बइसइ, ऊपरि मेघाडंबर छत्र, मस्तकि मुकुट, कानि कुंडल, हृदय मोती तणउ हार, हस्ति सहस्रदल कमल, पुरुषप्रमाण सिंहासन, कटीप्रमाण पादपीठ, पाछइ थईआइतु, डावइ मंत्रीश्वर, जिमणइं पुरोहित, बिहु पासे अंगोलगू तणी हारि, इसउ आस्थानमंडप.

जाणइ किर ब्रह्मांड फूटइ लगउं, नक्षत्र तूटी पडइ लगउं, पर्वतशिखर खडहडइं लगा, धरा फाटी पातालि पइसइ लगी.

नालिकेर आंबा जांबू जंबीर बीजउरां नारिंग करणां कउठ द्राख खर्जूर खारिक अखरोट वायम नंदिफल सिंघाटक चारउली दाडिम राजादन केला सोपारी, फलानि.

सर्व कुलक्षण, पीत केश, घूयड जिम चीपडी नाशिका, मार्जार जिम पीली आंखि, उंदर जिम लघु कर्ण्ण, मुख कंदराकार, पावडा दांत, मोटउ पेट, दूबली जांघ, छापरा पग, टापरा कान.

पट्टकूल; हीरवडि गजवडि नीलवडि सेवत्रीवडि सोवनवडि जादर पोती पट साउली अगहल नेत्र रावेटउं सांझारावउं मटवी फूलपगर कणवीरउं पोतिउं, सेत चउवडियउं, गोजी नरमउं ओलसालउ.

आलानस्तंभ मोडतउ, निविड सांकल त्रोडतउ, कपाटसंपट फोडतउ, आवास पाडतउ, माणुस मारतउ, वृक्ष उन्मूलतउ, मूर्त्तिवंतउ कृतांत, मदपरवश गजराज चालिउ.

कलशांत प्रासाद, नरकांत राज्य, गोरसांत भोजन, बंधनांत व्यापार, आपदांत दुर्ज्जनमैत्री. गजांत लक्ष्मी, नायकांत युद्ध, कसवटांत सुवर्ण, राजसभांत वाद, तिम प्रवासांत स्नेह.

प्रासादथरा:; खरशिल १, आडथरु २, जादूभ ३, कणाली ४, गजपीठ ५, अश्वपीठ ६, सिंहपीठ ७, नरपीठ ८, कुंभउ ९, कलसउ १०, कवाजि ११, मांची १२, जंघा १३, दढाउ १४, रुरणी [१५] प्रमुख.

महांत घोर निर्मानुषी, किहांई शिवाफूत्कार, घूक तणा घूत्कार, सिंह तणा सिंघनाद, वाघ तणा गूंजारव, सूयर तणा घरघरारव, वानर बूत्कार करइं, चीत्रक बरकइं, वेताल किलकिलइं, दव प्रज्वलइं, भील गीत गाइं, वृक्षइं वृक्ष मिलइं, कष्टिइं चलाइ, रींछ सांचरइं, विरू तणा यूथ हींडइं, साहसिक तणा हृदय कांपइं, इसी रौद्र महाभयंकर अटवी.

गढ कैलाश जिम ऊंचउ, गरूई पौलि, सधर कपाट, लोहमय भोगल, विजयहरी तणी पद्धति, यं[2-A]त्र तणी श्रेणि, टींकली तणी परंपरा; खाई गढ, पाणी गढ, कटक तणउं गढ, वयरी प्रवेश नहीं, हाथिया तणा ढोवा नहीं, पाषरिया रहण नहीं, भेदसंभावना नहीं, जिसउ वज्रमय घडिउ, विश्व कर्माइं निपायउं, किं बहुना, एक वार देव रहइं अगम्य.

तेजी उरंडा गह्वरा तोरणा खुरसाणा भयाणा हयाणा रोहवाला रुंडवाला तोरका मंदकोरा पीलूआ भादिजा ओराहा केकाणा सूनडा सिरखंडा महूडा दक्षिणपथा पाणपथा मांकडा नीलडा क्याहडा गंगाजल सिंधूया पाखरा अश्वजातयः.

जेह तणउं जाणीतउं कुल, स्वामि तणउं छल, भाला तणउं बल, आगलि थिया चालइं, थोडउं बोलइं, छ दर्शन नमइं, ठाकुरहीं गमइं, संग्रामि दुर्द्धर, परनारिसहोदर, पागइं प्राण करइं, स्वामि काजि मरइं, बोलावी दिइं घाय, जाणइं जुद्धोपाय.

कर्पूरवासी बि आंगुली शालि, मंडोर तणा मग तणी दालि, सोना तणइं स्थालि, सालणा तणी पालि, सुरहा घी तणी नालि, बि पहर तणइं कालि, परीसइ आंखडियालि, इसिउं पुण्य विणु न प्रामीयइं.

वरिसइ मेघ अनइं राति अंधारी, कुहीराब अनइ माहिं कंसारी, जवनी रोटी अनइं कागिइं बोटी, कालि नइं मसि लाई, डाकिणि नइं राउल वाई, ऊषरली पाट अनइं डाभइं बणी, सासू जूठी नणंद घणी, पालि चीपली कडिइं कीकली, वडपण अनइं फोफल घूंट, अतीसार अनइं आसणि ऊंट; दूप अषाधउं, आगणइ कुउ अनइं कुटंब आंधउ, बानर अनइं बीछी खाधउ, काणी अनइ रिसाणी, साप अनइं पंखालउ, कादम अनइं कंटालउ, बांझ अनइ विरुयाबोली, सरडी अनइ श्लेष्माणी.

आभ तूटी पडइ तउ कुण थाढ दिइ, चंद्रमाहूइं पित्त ऊपजइ तउ कउण शीतलोपचार करइ, हिमाचलहूइं टाढि लागइ तउ किहांतउ ओढणउं आणियइं, धन्नंतरि मांदउं थाइ तउ कउण वैद्य, कलेसरिनी आंषि फूलउं तउ कउण उपचार, इंद्रनी आंषि दूषइ किहां पाटउ बांधिजइ ?

एकु हरि अनइं आविउ घरि, इक इष्ट अनइं वैद्योपदिष्ट, एक सुवर्ण अनइं सुगंध, एक सीह अनइं पाखरिउ, एक घृतसंपूर्ण अनइं क्षेपिउं शर्कराचूर्ण, एक शालि अनइं परीसी सुवर्णमय थालि.

जइ किमइं घणां सत्रू तउ किसउं समुद्र घालिवा, जइ घणउं तेलु तउ किसउं पर्वत लींपिवा, जइ घणउं बीज तउ किसउं ऊषरि घालिवउं, जइ घणउं सुवर्ण तउ सांकल कराइवी, जइ घणउं दूध तउ सापहूं पियावउ, जइ गज घणा तउ इंधण अणाइवा ?

हंस जाणइ क्षीरु, मत्स्य जाणइं नीरु, आसंदउ जाणइ घोडां, कंदोई जाणइं वडां, गारुडी जाणइं साप, मा जाणइ बाप, बणिग् जाणइ माप, मन जाणइं पाप, मुख जाणइं मीठां, दृष्टि जा[2-B]णइं दीठां.

जिहां गुरुवत्तण तिहां गांजणउं, जिहां कुलीन तिहा लांछनउं, जिहां भाणउं तिहां भउ, जिहां झूझु तिहां षउ, जिहां चोरी तिहां दोरी, जिहां चडण तिहां पडण, जिहां रंगु तिहां विरंगु, जिहां संजोगु तिहां वियोगु. जिहां लाभु तिहां च्छेदु, जिहां रूसणउं तिहा तूसणउं.

जिसउ गुरु तिसउ अभ्यास, जिसी दीष तिसी सीष, जिसउ आहार तिसउ नीहार, जिसउं वावियइ तिसउं लणीयइं, जिसउं कमाईयइ तिसउं प्रामीयइ.

जीभइं जव छोलइ, बोलती छउड ऊतारइ, चालती भुइं फोडती, नव धायां तेर पाडइ, वलि बाधी कउडी आहणइं, कुहणी छेहिं षात्र पाडइ, बगाई षाती आंबानी लुंबि त्रोडइ, पग छेहडइ गांठि छोडती, आंषि हुंतउं काजल हरइ, केसि बांधी शिल धरइ, जीणइं बोलतइं माथाना केश ऊभा थाइं, साची अलच्छि, मिरी

तणी ऊगटि, अंगार तणी सउडि, चालतउं पलेवणउं, किं बहुना, अंगार तणी बेटी, दाहज्वर तणी बहिनि, साप माथइ सउथउ फाडइ, जिसी केवलिइं हालाहलि विषि जडी हुइ, इसी ढंढ स्त्री.

ऊपर हुंतउं स्वर्गलोक ऊतारइ, गगनांगणि चंद्रादित्य स्तंभइ, आकाशि वैश्वानर प्रज्वालइ, पातालकन्या प्रत्यक्ष देषालइ, कडयडाट करतां वनषंड मोडइ, पाताल बलि तणा बंधन छोडइ, पर्वत तणां शिखर ढालइं, इसिउ मंत्रवादी शक्तिवंत योगींद्र.

अढार लिपिनइं विषय कुशल, चऊद विद्याविशाल, अढार व्याकरण निर्नउ दिइ, छ तर्कि चेष्टानुवाद अर्थानुवाद सर्वानुवाद पंचावयवि दशावयवि वादीसिउं वाद लिइ, छए भाषा बोलइ, पठित काव्य अठोतरउ अर्थ दीसइ, एकपदी द्विपदी त्रिपदी चिंतित समस्या पूरइ, तुरगपद गजपद क्रोष्टपद पूरइ, अक्षरच्युतक बिंदुच्युतक गूढपद क्रियागुप्तक दीपक प्रमुखानेक शब्दार्थालंकार अवतारइ, छेकानुप्रास लाटानुप्रास सरस त्रिवर्ग पंचवर्ग परिहारकाव्य करइ, काचइ घडइ पाणी वहइ, छंदि बोलइ, छपंन लिपि तणी अलवि करइ, पांत्रीस महाकाव्य तणां सुभाषित भणइं, स्वदर्शन परदर्शन तणा भाव प्रकाशइ, आगमार्थ ज्योतिष शकुनशास्त्र वात्स्यायनशास्त्र गणित-शास्त्र धनुर्वेदायुर्वेदादि शास्त्ररत्नसागर कूर्चालसरस्वती, महा-योगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वांस.

किसिउ धर्म; अहिंसालक्षण, सत्याधिष्ठित, स्तेनरहित, ब्रह्मचर्य-गुप्त, संतोषपरम एवंविध; अथवा यथाशक्ति दान दीजइ, शील पालीयइ, तप तपियइ, भावना भावियइ, सम्यक्त्व परिपालियं, देव पूजियइ, गुरुपर्युपास्ति कीजइ, सिद्धांत सांभलियइ, तत्त्व अभ्यसीइ, विचार पूछियइ, [3-A] पोषधशाला जाईई, चंदन कीजइ, सामाइक लीजइ, पूर्वाधीत शास्त्र गुणीयइ, वर कलत्र वर्जियइ, पोषध पालियइ,

नियम समरीयइ, तीर्थ वांदियइ, प्रवचन भावियइ, अमारि घोषावियइ, कल्याणक ऊजमिजइं, अष्टाहिकामहोत्सव कीजइ, गुरु सन्मानीयइ, वीतरागदेव सम्यक्त्वमूल बारइं व्रत आराधियइं, एवंस्वरूप जिनप्रणीत धर्म मनि धरियइं, तउ सदैव सुष प्रामियइं.

लंका राजधानि, त्रिकुट पर्वत गढ, जीणइं मृत्यु बांधी पातालि घालिउ, नव ग्रह पाट तणइं पाईइं बांध्या, वाउ देवता आंगणउं वुहारइ, चउरासी देव छ डउं देइं, छ रितु पुष्प पूरइं, जमरा पाणी वहइ, सात समुद्र मांजणउं करइं, सात मावर आरती ऊतारइं, विश्वकर्मा शृंगार करावइ, शेषनाग राजछत्र धरइ, गंगायमुना चमर ढालइं, वृहस्पति घडिआलउं वायइ, शुक्र मंत्रि बइसइ, शनैश्चर पूठि पग देई खाटि बइसइ, तेतीस कोडि देव ओलग करइं, इंद्र पुष्प आणइं, संध्या पाटनी अदावणि ताणइं, अठासी सहस्र ऋषि पर्वपाणी वहइं; वेद उच्चरइं; शिव शांति करइं, वैश्वानर कापडा पषालइं; ब्रह्मा पुरोहित, नारायण दीवटिओ; विश्वामित्र आभरण घडावइ, ऋतुश्री चंद्रप्रभस्वामि रहइं फूल चडावइं, मंगल क्षेत्र षेडावइ, काम कटारउं बांधइं, धनुषि बाण सांधइ, अनंत-वासिगु अमृत झरइ, तक्षक कर्कोट भंडारिया, कुलिक उप-कुलिक पाय चांपइ, पद्म महापद्म सुक सालहीनी परि वासइं, चंडिका तरभारउं करइं, क्षेत्रपाल मसालउं धरइं, रंभा फेकरइ, सरस्वती श्रुति धरइ, गंधर्व गीत गाइं, महेश्वर पडह वाइं, ब्रह्मा वीण वाइं, पवन वुहारइ, गणपति गादह चारइ, कृतांत कोट राषइ, सनीश्चर रसोइ चाषइ, मंगल श्रीखंड घसइ, बुध सोनउं कसइ, अढार भार वनस्पति फूलपगर भरइं, धन्वंतरि वइदउं करइं, जीवरिति छोरडां रमाडइ, केतु भामणडां भमाडइ, गौरी सण कातइ, लाछि वस्तु सातइ, नारद हेरउं करइ, नव खंडि फिरइ; धनद यक्ष भंडारउं करइं, इसिउ रावण नरेश्वर.

देशसंख्या; आदिइं अयोध्या नगरी, उमामंडाल ग्राम च्यारि कोडि, वलवत्ता देश ३ कोडि, पुरसाण ग्राम कोडि १, गाजणउ ३२ लक्ष, कनूज ३६ लक्ष, चौड १४ लक्ष, त्रांबालू १४ लक्ष, द्रविड १२ लक्ष, विसु १ लक्ष, लांजउ १ लक्ष, वइराट १० सहस्र, वामदु १ लक्ष, पीतवसु १६ सहस्र, कामरु ७० सहस्र, डाहला नव लक्ष, लोहर ९ लक्ष, लाड नव लक्ष, हीरालूलि ७२ सहस्र, उंचालउ ५ लक्ष, उडीस ४ लक्ष, नालउरु ३ लक्ष २ सहस्र सातसइं सतोतर, नेपाल १ लक्ष, गूजरात ७० सहस्र, मालवउ १८ लक्ष ९२ सहस्र, उदयगिरि ९ लक्ष, मधुवाद देश ९० लक्ष, सर्प्पिराज १४ लक्ष, मूलजांवउ ३ कोडि, काकमुख उ[3-B]लूकमुख देश ५ लक्ष, शीकोत्तर १ लक्ष, स्त्रीराज १ लक्ष, भोट ३ कोडि, तत्र देशे गोमुख नराः, महाभोट ३ कोडि अश्वमुख नराः, कान्हडउ १२ लक्ष, चौड सार्द्ध ३ लक्ष, मलयगिरि ७ लक्ष, पांडीउ १७ लक्ष, सिंघलदीप १ कोडि, चीण महाचीण २ कोडि, त्रंवावती १ कोडि, देवगिरि ७ लक्ष, तिलंग ९ लक्ष, वृहद्दंत वैदर्भ देश १ कोडि, मगध देश नव लक्ष, कलिंग १ लक्ष, गंगापार २४ सहस्र, जेजाहुति ४२ सहस्र, कुंकुण ९ लक्ष ६ सहस्र, वावर १० सहस्र, बांवी देश ७२ लक्ष, कंचु देश ६६ लक्ष, गुंदल देश ९ लक्ष, अडवि राज ३६ लक्ष, इति देशाः.

लीला तउ महेश्वर तणी, सृष्टि ब्रह्मा तणी, प्रतिज्ञा श्रीराम तणी, पवनवेग कला हनूमंत तणी, ममे दुर्योधन तणी, सूर्य तणउं तेज, परिमल पारिजात तणउं, निर्मलता गंगा तणी, विवेकता नारायणनी, त्यागु चंपाधिप कर्ण तणउ, सत्यता हरिश्चंद्रनी, साहस विक्रमादित्यनउं, देवत्व सर्वज्ञनउं, सुष सिद्धनउं, कर्मक्षय शुक्ल ध्याननउं, ज्ञान केवल ज्ञानीनउं, तत्त्वचिंता पंच परमेष्टिनी, सम्यक्त्व श्रेणिकनउं, ऋद्धित्याग शांतिनाथनउ, शील

श्रीस्थूलिभद्रनउं, अलोभता वयरस्वामिनी, प्रतिबोधता जंबूस्वामिनी, तेयु दृढप्रहारनउं, अल्पदेशनाप्रतिबोध चिलातीपुत्रनउ, क्षमा गयसुकुमालनी, भोग शालिभद्रनउ, अभिग्रह वंकचूलनउ, तीर्थ उज्जयंतनउं, चउवीस जिणालउं अष्टापदनउं, सिद्धक्षेत्र विमलगिरिनउं, शास्त्रविरचना हरिभद्रसूरिनी, देवभक्ति प्रभावतीनी, दूतव्यसन नलनउं, मद्यव्यसन यादवनउं, सत्य वचन कालिकाचार्यनउं, तप सनत्कुमारनउं, अनुमोदना मृगनी, भावना इलातीपुत्रनी, जैनप्रभावना विष्णुकुमारनी, सौभाग्य वसुदेवनउं, गर्व दशार्नभद्रनउ, पाप चक्रवर्त्तिनउं, महासंग्राम नारायणनउ, स्त्रीवर्णना रंभानी, पुष्पवर्णना मालतीनी, नदीवर्णना गंगानी, स्नेहवर्णना लक्ष्मणनी, निःस्नेह श्रीनेमिनउं, जैनभक्ति कुमारपालनी, नगरीवर्णना लंकानी, पुरुषवर्णना विष्णुनी, काव्यवर्णना माघनी, कविता कालिदासनी, विघ्नापहारता पार्श्वनाथनी, अप्रकंपता श्रीवीरनी, निरसनता ढंढणकुमारनी, वाचा धनानी, शीलप्रभाव राजीमती तणउ.

शब्दशास्त्र १, अलंकार २, काव्य ३, नाटक च्यारि, नादशास्त्र ५, निर्घट ६, धर्म ७, अर्थ ८, काम ९, मोक्ष दश, तर्क ११, गणित १२, मंत्र १३, विद्या १४, वास्तु १५, विज्ञान १६, विनोद १७, कलाकल्प १८, शिक्षा १९, सिद्धांत २०, सामुद्रिक २१, वैद्यक २२, स्वप्न २३, छंद २४, शकुन २५, बुद्धिशास्त्र २६, इति शास्त्राणि.

प्रकीर्ण वर्णक

[I-A] जिम अक्षरमाहि उंकार, मंत्रमाहि ह्रींकार, गंधर्व-माहि तुंबर, छत्रमाहि मेवाडंबर, वृक्षमाहि सुरतर, गंधवस्तमाहि कपूर, नदीमाहि गंगानूं पूर, वस्त्रमाहि चीर, चीरमाहि सूत्रका चीर, गढमाहि कालिंजर, खाणिमाहि वइरागर, द्वीपमाहि जंबूद्वीप, प्रदीप-माहि रत्नप्रदीप, पर्वतमाहि मेरपर्वत, भूचर जीवने हेतु जलधर, हस्तीमाहि ऐरावण, मंडलेश्वरमाहि रावण, तुरंगमाहि उच्चैश्रुवा तुरंग, हरिणमाहि कस्तूरीउ कुरंग, धवलमाहि वृषभ, प्रसस्य दिसिमाहि उत्तरकुकुभि, नागमाहि शेषनाग, रागमाहि श्रीराग, ध्यानमाहि शुक्ल ध्यान, दानमाहि अभयदान, मंत्रीश्वरमाहि उभयकुमार प्रधान, पान-माहि नागरषंड पान, ज्ञानमाहि केवलज्ञान, विमानमाहि सर्वार्थ-सिद्धि, रिद्धिमाहि सालिभद्रनी रिद्धि, गिरूआमाहि गगन, पवित्रमाहि पवन, दर्शनमाहि जैन दरिशन, देवमाहि इंद्र, ग्रहगणमाहि चंद्र, तिम सिवुहु धर्ममाहि जैनधर्म.

जिम लवणहीण रसवती, व्याकरणरहित सरस्वती, गंधरहित चंदन, घृतरहित भोजन, षांडरहित पकवान, मानरहित दान, छंद-रहित कवित, तेजरहित रवि, विवेकरहित मनुष्य, वेदरहित ब्राह्मण, स्वर्गरहित एरावणु, लंकारहित रावण, शस्त्ररहित पायक, न्यायरहित नायक, फलरहित वृक्ष, तपोरहित भक्षु, वेगरहित तुरंगम, प्रेमरहित संगम, नासिकारहित मुख, वस्त्ररहित शृंगार, सुवर्णरहित अलंकार, तांबूलरहित भोग, प्रसिद्धरहित योग, कंकणरहित बाहु, चरणरहित

बाल, राज्यरहित भूपाल, स्तंभरहित प्रासाद, दान पाषइ प्रसाद, मुष्टिरहित कृपाण, ठउलीरहित बाण, अणीरहित छुरी, मनुष्यरहित पुरी, जिम पाणीरहित सरोवर.

तीणिइ सोनइ किसूं कीजइं जीणि त्रूटइ कान, तीणिइ उपाध्याइ किम्युं कीजइ जीणइ चूकीइ ज्ञान, तीणिइ ठाकरि किम्यु कीजइं जीणिइं पगि पगि पामीइ उपमान, तीणिइ धरमिइ किम्युं कीजइं जीणिइं बाधइ मिथ्यावाद, तीणइं वरइं किम्युं कीजइं जीणिइं ऊपजइ विषवाद, तीणिइं मित्रिइं किम्युं कीजइं जीणिइं धरइं प्रमाद, तीणइं घरि कीम्युं कीजइं जीणिइं[1] जेहमाहि फूफूइ सापु, तीणइं स्त्रीइ किम्युं कीजइं जीणिइं नितु संताप, तीणिइ रामतिइ किम्युं कीजइं जीणिइं सपाप?

एक जीव सहिजइ उत्तम स्वभाव, पुन्य ऊपरि भाव, उपगार करइ, परमर्म हीए न धरइ, असत्य न बोलइ, हासइं परदोष न प्रकासइं, अनेरानइ मनि धर्मरंग प्रकासइ, उन्मार्गि न चालइं, गुरुउपदेश झालइं, धर्मतत्त्व न हालइं, नवे क्षेत्रे वेचइ धन, जिसिउं बावनुं चंदन इस्या शीतल मन, इस्या कहीए स्वजन; संपजइ सुमित्र सज्जन सुजाण, ते जाणिवुं पुन्यतणं प्रमाण; इसां धर्मफल देषी, प्रमाद ऊवेषी, आलस परिहरी, आदर करी पुन्य तणइ विषइ लाभ लेवो.

जिम प्रासाद शोभइ ध्वजाधारि, जिम हृदय शोभइ हारि, जिम गृह शोभइ [1-B] उत्तम नारि, जिम मस्तक शोभइं केशप्राग्भारि, जिम कर्ण शोभइं सुवर्णालंकारि, जिम शरीर शोभइ चंद्रमंडलि, स्त्रीकर्ण शोभइ सुवर्णकुंडलि, सरोवर शोभइ कमलि, मुष शोभइ निर्मल नेत्र, रात्रि शोभइ चंद्रमंडलि, विवाह शोभइ कूरि,

१ मूलमां आ शब्द अनावश्यक छे.

उत्सव शोभइ तूरि, नदी शोभइ पूरि, जिम सम्यक्त्व शोभइ प्रभावना तिम धर्म शोभइ भावना.

तां ईश्वर तणइ गौरी गंगा कलत्र, विनायक कार्त्तिकेय पुत्र, गजाशुर त्रिपुरदैत्य मकरधज शत्रु, विकटचिरित्र जटाजूट बांधइ, धनुषबाण सांधइ, त्रिशूल शस्त्र, गजचर्म वस्त्र, षट्वांगधारी, अर्द्धांगि नारी, श्मशान वसति, वृषभ गति, रंडमाला विभूषण, अनेकि दूषण, इस्या ईश्वर तणी करतां भगति किम पामीइ मुगति? अनइ जे विष्णु, शंखचक्रगदाधर, सहसगोपांगनावर, एवंविध करइ पापव्यापार, ते हूतो किम हुइ संसार पार? ईणी परि ब्रह्मादिक देव जाणिवा, एह कारण मुगतिहेतु ईहं ऊपरि भाव नाणिवा.

संसार असार, दुखनु भंडार, जिसिउं पीप[ल]नूं पान, जिम्यु गजेंद्रनु कान, जिम्यु वीजनु झबूकु, पोइणिनिइं पाणी तणउ टबकु, जिम्यु बहुवोलानी जीभनु लोलु, जिम्यु कागनु डोलो, जिम्यु धजनु अंचल, तिसिउ संसार चंचल; वैराग्य.

वन ते जे वृक्षवंत, नदी ते जे नीरवंत, कटक ते जे वीरवंत, देश ते जे प्रजावंत, प्रासाद ते जे ध्वजावंतु, वाट ते जे सूधवंत, हाट ते जे वस्तवंत, वचन ते जे सत्यवंत, शष्य ते जे विनयवंत, प्रधान ते जे बुद्धिवंत, राजा ते जे न्यायवंत, तिम धर्म ते जे दयावंत.

बालपणइ लालीइं, जेतलइ यौवनभरि जाए, तेतलइ मावित्र साह्मा थाइं, कृत्य अकृत्य न गुणइं, वडां तणां वचन निहणइ, मावित्र साह्मां नीठर बोल भणइं, अहंकारि हणहणइ, लक्ष्मीमदि. कुपात्रि वरसइ, कुस्थान विलसइ, पराई भूमि ग्रसइ, चाडूए वचनि उल्लसइं, रूडी वात कहतां साह्मा धसइं, श्वान तणी परि भसइ, अपर रहइं हसइं, पाप करी उद्धसइं, धर्मवार्त्ता हीए न वसइं, इस्या जे पुत्र अभक्त अजाण ते पापनउं प्रमाण.; अपुत्रवर्णन.

जे पुत्र विवेकविचारवंत, सहिजिइं संत, सौभाग्यवंत, गुरूयां प्रति भक्तिवंत, गुणवंत, देवगुरु तणइ विषइ तत्पर, तु पुत्र पामीइ जइ पोतइ पुण्य तणउ भर; सुपुत्रवर्ण्णनं.

दाण पूंछी हल मोभ भाग भेट तलारक्षक वद्धापन मलवरक बल चंचा चारिका गढ वाटी छत्र आलहण थोटक कुमारादि-सुखडी इति क्रमेणाष्टादश करा जाता. *

---

* आ पछी मूल प्रतमां नीचे प्रमाणे चार अशुद्ध श्लोको छे :—

प्रजापतिसुतो ब्रह्मा माता पद्मावती स्मृता ।
अभावि जन्मनक्षत्रं एकमूर्ति कथं भवेत् ॥

वसुदेवसुतो विष्णु माता वै देवकी स्मृता ।
रोहिणी जन्मनक्षत्रं एकमूर्ति कथं भवेत् ॥

पेटालसुतो रुद्रो माता वै सत्यकी स्मृता ।
मूलं च जन्मनक्षत्रं एकमूर्ति कथं भवेत् ॥

कृतयुगे जातो ब्रह्मा त्रेतायां तु महेश्वर ।
द्वापरे जातो विष्णु एकमूर्ति कथं भवेत् ॥

[५]

जिमणवार-परिधान विधि

[1-A] ॥ दं० ॥ जिमणवार लिखीइ छइ; राजानइं बइसवानइं सुवर्णमइ[1] पाट, बीजानइ बइसवा चुकीवट, विशाल सेजवट. मतबालु[2] ए आवइ,[3] तिवारइं बइसवानां आसन[4] हवइ, आरोगवानइ समइ,[5] आपआपणे[6] आसने[7] बइसइ. सुवर्णमइ[8] आडणी ऊपरि सोनांना[9] थाल,[10] रूपानां सोनानां विशाल त्राट, जिमणहार[11] जोइ वाट. सोना रुपां कांसा तणां[12] कचोलां, जिस्यां उत्तमानां[13] चित्र भोलां.[14] समस्तनइ प्रीसवा[15] भणी स्त्री आवइ,[16] पद्मिनी[17] हस्तिनी शंषिनी चित्रिणी[18] एहवी स्त्री सोल शृंगार सारी,[19] सुवर्णमइ करवइ ढलकतइ, चुडइ षलकतइ, कंकण

१ सुवर्णमय, बीजी प्रतमां आ पछी 'जेहना शुभघाट' छे. २ मतवाल. ३ संचरइ. ४ आसन्न, तेनी पछी 'मांड्यां वासन' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ५ समय, पछी 'सहुनइं मई' एवा शद्ध बीजी प्रतमां छे. ६ आपापणइं. ७ आसण. ८ सुवर्णमय, पछी 'रुडी मांडणी' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ९ सोनाना. १० तेनी पछी 'बावन्न पलनि थाल रुपा कांसाना वाट' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ११ जिमनार. १२ कांसाना थाल, तेनी पछी बीजी प्रतमां, 'वांसलानां काचला तणां' एवा शब्द छे. १३ उत्तमनां. १४ भालां. १५ पीसवा. १६ तेनी पछी बीजी प्रतमां 'सकाम भावइं' एवा शब्द छे. १७ बीजी प्रतमां पद्मिनी हस्तिनी चित्रिणी शंषिनी ए शब्दोने १, २, ३, ४ अनुक्रम नंबर आपेला छे. १८ चित्रणी. १९ तेनी पछी बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे पद्य छे:

आदौ मज्जन चीर हार तिलकं नेत्रांजनं कुंडलं,
नाना मुक्तिक पुष्पहार करलां झंकार तुं परं, *
अंगे चंदनलेप कचुकमणी छद्रावली घंटिका,
तांबूलं करकंकणं चतुरिता शृंगारिका षोडश. १
शृंगार १६ अति चतुर नारी कटिमेषला टलकतइं.

* आ चरणमांथी एक अक्षर पडी गयो छे.

झलकतइ, हाथ ललकतइ, शीतल गंगोदकिं हस्तोदक[1] दीधां. तदनंतरं प्रसन्नइ कालि, सुवर्णमइ थालि, मोटइ झमालि, नवयोवन[2] समइ आवी[3] ऊजमालि, प्रथम प्रीसाइ[4] फलहुलि; छोहारी षारिकि, जालिकी षारिकि, पिस्तानी षारिकि, भुंगडी षारिकि, सिलेमानी खारिकि, नीली खारिकि; अखोड बदाम, कागदी बदाम, कठ बदाम, शकरी बदाम; पस्तां निमजां चाइम चारुली जरगोजां अंजीर; हेरेबी[5] द्राष, कसिमसी द्राष, नीली द्राष, गोस्तनी द्राष; वरसोलां दाडिम, आदमी[6] दाडिम, पाकां दाडिम, हरमजी दाडिम, तेहनी कुली; खल्हइलां मलबारी नालीअर,[7] कोलंबी नालीअर[8], मुठीआं नालीअर, दीवाई नालीअर, तेहनी पडहिडी; चंगाल खजुर, फडद खजुर, पैमी[9] खजुर, रतबी खजुर, नवइशाक[10] खजुर, मधुफलद खजुर, हरमी खजुर, मधुरुं मांकडुं, दीपशिषा समान; हरमीजी सीरु, आदनी सरकु, सेलडीना कटकडा,[11] तरुणां करणां नारिंगां[12] जंबीरां कमरक[13] दोडंगां सदाफल अमृतफल फालसां सकरलींबु कमलकाकडी सींघोडां, टोपरांना कटका; कुंकणां[14] केलां, सोनेलां केलां, राजेलां केलां, सुठेलां केलां, वाघेलां केलां, नाथसिंघेलां केलांनी पातली कातली, बीजुरानी चडुडी, आंबानी कातली, प्रीसि नारि पातली, षडबूजां गोटा, नीकोल्यां राईण, इसी फलहुलि प्रीसाइ.[15]

अथ पक्वान; सातपडां खाजां, चुवडां खाजां, एकवडां खाजां; फीणी खांड गली खाजली, दोठां, घारां, घेवर, शषिवदन[16] सुंहाली, घृतवर्णा[17] घारडी, पतास फीणी, दहीथरां तिलसांकली फाफडा पूरी

१ हस्तोदकिं. २ यौवन. ३ 'समइ आवी' ए शब्दोने बदले बीजी प्रतमां 'मोटी झमालि आवता' एवा शब्द छे. ४ प्रीसाय. ५ हरेबी. ६ आदिमी. ७ नालेर. ८ नालीयर. ९ पेसी. १० नवईशाप. ११ कडकडा. १२ बीजी प्रतमां 'नारिंगां' पछी 'चंगां' शब्द छे. १३ कमर. १४ कुंकणीयां. १५ पीसाय. १६ शिषवदनी १७ घृतवर्णी.

गुंझां गुंदवडां परीमीडां घूघरी गुलपापडी गुंदपाक महिसूफ कूलिरि,[१] मुगनुं उसड; हवइ विधिना लाडू, जिस्या अमृतमइ[२] गाडू, घृतिं तल्यां[३] साकरनइ आधिं[४] मल्या, मिरीचिना[५] चत्कार,[६] कर्पूर-परिमलसार, स्थूल बहुला गार, अत्यंत सुकुमाल[७] महोज्वल इस्या मोदक, सेवईआ लाडू, मोतीआ लाडू, झगरीआ लाडू, [I-B] बाबा मुगीआ लाडू, अडदना लाडू, माठा लाडू, वाजणा लाडू, दलीआ लाडू, सतूना लाडू, पिपरिना लाडू, गुंदना लाडू, करहंडना[८] लाडू, दोठांना[९] लाडू, कसमसीआ लाडू, मसमसीआ लाडू, यासी लाडू, ताजखांनी लाडू, पखालीआ[१०] लाडू, जाडी सेवना लाडू, सिंहकेसरी लाडू,[११] उसडना लाडू, दूधना लाडू, दहीथरांना लाडू, खाना लाडू, करकरी लाडू, आसंधिना लाडू, मेथीना लाडू, समकितीया लाडू, पडवासना लाडू, समीना लाडू, टोपरांना लाडू, चारुआ लाडू, द्राषडीआ लाडू, इसि लाडू, तिलवट[१२] लाडू, चूरिम[१३] लाडू, एतले प्रकारे लाडू प्रीसाइ.

वली शी शी वस्तु प्रीसाइ? शकरपारा,[१४] साकरीआ चिणा, दूधपाक कोहलापाक सेलडीपाक गुंदपाक नालीअरपाक[१५] कौचांपाक[१६] आदापाक पिंपरिपाक इंद्रसां मरकी मांडी सेवदल हेसमी जलेबी खरमां चांदखांनी, साकरनां वरसोलां, साकरलिंगां,[१७] साकरना कूजा,[१८] साकरना हारडा, दूधसाकरि[१९] पल्हाल्या पउंआ,

१ कूलरि. २ अमृतमय. ३ तलां. ४ आधि. ५ मिरीना. ६ चमत्कार. ७ आनी पछी बीजी प्रतमां 'माहारसाल' एवा शब्द छे. ८ करहड. ९ दोठाना. १० पखालीया. ११ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां नीचेनुं अशुद्ध पद्य हांसियामां मूळ प्रतथी जुदा अक्षरे लखायेलुं छे:

" कं दोसं धरता दले सरलता, तणस्य संपूर्णता
रूपे सुंदरता रसे मधुरता कस्य परिसदृशी ।
एकस्य सद्य हकारलिन वा धिक धारम्नितं सत्य वो
दीर्घायुः भवसाधर विधिरागे पारं विना निर्मिताः ॥

१२ तिलवटना. १३ चूरिमाना. १४ साकरपारा. १५ नालीयरपाक. १६ कोंचापाक. १७ साकरलीमां. १८ आद. १९ दूधसाकर.

तल्या गुंद, बाउलनुं[1] षइरी[2] घवीउ कडाहीउ गुंद. हवइ गल्या[3] पूडा,[4] षाटा पूडा, चाउलीना[5] पूडा, अडद मगनी पहितिना पूडा, अडद मगनां ढोकलां, सेव उसाई, लापसी ति केहवी छइ,

दुग्धं गोधूमचूर्णं घृतगुडसहितं नालिकेरस्य खंडं
द्राक्षापर्जूरशुंठीतजमरिचयुतं पेशलं देवपुष्पम् ।
पक्त्वा लोहे कटाहे टलविटलटलत्पावके मंदकांतौ
धन्यो हेमंतकाले प्रचुरघृतयुतां भुंजते लापनश्रीम् ॥

एहवी लापसी प्रीसाइ.[6] पछइ खीर.[7] हांसा गहुं, काठा गहुं, जालीया[8] गहुं, वाजीया[9] गहुं, वांसीया गहुं, एतले प्रकारे गहुंना मांडां; ते किम ?[10] खांडमांडा, पूरणमांडा, आछा मांडा, करकरा मांडा, आकाशमांडा, एतली[11] पडसूदीना मांडा. लहचूई पोली, खूबी रोटी, वारू[12] वडां, वेढिमी, वडां तो[13] केहवां छइ ?

[14]हिंग्वाजी रैर्मिरीचैर्लवणदलयुतैरार्द्रकैः पूर्णगर्भैः
स्निग्धः स्वादु सुवृत्तः परिमलबहुलः कोमलः कुंकुमाभः ।
लग्नो दंतांतराले मरुमरुमरुतस्पष्टविस्पष्टशब्दै-
र्धन्यानां कः कपोले प्रविशति वटकः प्रेयसीप्रेमदत्तः ॥

घणइ तेलिं सीनां, खाटइ भीनां,[15] हाथ चुवलइ,[16] मुहि पडियां[17] गलइ, स्वर्ग थिकु[18] देवता देषी टलवलइ. अडदनां वडां, मगनां

१ वातलउ. २ षयरी. ३ तल्या. ४ आ शब्द पछी आवता 'षाटा पुडा' ए शब्दो बीजी प्रतमां नथी. ५ चुलाना. ६ पीसाइं. ७ आ पछी नीचेना शब्दो बीजी प्रतमां मळे छेः '१०० गायनां दूध, ५० नीपाई अनुक्रमे, १ नीपाइं रूडा आषा चोषानी षीर मुकाइं पछइं.' ८ भीलीया. ९ वासीया. १० 'ते किम' ए शब्दो बीजी प्रतमां नथी. ११ एकली. १२ वारु. १३ ते. १४ श्लोकनी शरूआतमां बीजी प्रतमां 'यतः' शब्द छे. १५ सीनां. १६ 'हाथ चुवलइ' ए शब्दोने बदले बीजी प्रतमां "घणइं वेगरइं मिलइं" एवा शब्द छे. १७ पड्यां. १८ थकी.

वडां, इस्यां अनेक प्रकारिं वडां,[१] इस्ति[2-A]पद वडां, भींनां वडां, घोल वडां, आर्द्रक वडां, मरी[२] वडां, राई वडां, मोतीआं[३] वडां, कांजीआं[४] वडां, दालिआं[५] वडां, खांड वडां, कुहाडीआ[६] वडां, एतले प्रकारे वडां जाणिवां. पछइ साकर[७] जाणवी:[८] तिवराज[९] साकर, चीणी साकर, घसी साकर, मादलीआं[१०] साकर, उत्तराधी साकर, कालपी साकर, आगरी साकर. पछइ षांड आवइ; फूल खांड, सींगलुहरी[११] खांड, बुरा खांड, चीत्रुडी[१२] खांड, वागडा खांड, मालवी खांड[१३], नीझरी खांड, उत्तराधी खांड, आगरानी[१४] खांड,[१५] एतली षांडनी जाति जाणवी. हवइ गुलनां नाम;[१६] मलबारी गुल, वागडीउ गुल, सोरठी[१७] गुल, मालवी गुल, नवसारी[१८] गुल, नंदरबारी गुल, नमीआडु[१९] गुल, महीयाशाही[२०] गुल, पंड्याणी गुल, नागुहुरी[२१] गुल, जेहनइ जिसी[२२] रुचि तेहनइ[२३] तिसिउं गलिउं प्रीसाइ.

पछइ[२४] राइभोग शालि,[२५] सुगंध शालि,[२६] कमल शालि, तिल-

१ 'इस्यां अनेक प्रकारिं वडां' शब्दोने बदले बीजी प्रतमां 'एटले प्रकारे वडां जाणिवा' एवा शब्द छे. २ मिरी. ३ मोतीयां. ४ कांजियां. ५ दालियां. ६ कुहाडीयां. ७ शाकर. ८ आ शब्द बीजी प्रतमां नथी; पछी 'षांड गुल मुकीयइं' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ९ तिविराज. १० मादलीयां. ११ सिंगलुरी. १२ चित्रोडी. १३ पछी 'ईडरी खांड' छे. १४ आगराइ. १५ पछीना 'एतली षांडनी जाति जाणवी' ए शब्द बीजी प्रतमां नथी. १६ 'हवइ गुलनां नाम' ए शब्दोने बदले बीजी प्रतमां एकलो 'गुल' शब्द आपेलो छे. १७ सोरठीउ. १८ नवसारीउ. १९ नमीआडउ. २० महीयासाथी. २१ नागहुरी. २२ जेहवी. २३ तेहनइं. २४ पछी बीजी प्रतमां 'शालि ६० प्रकारनउं कूर प्रीसइं ते वहीस्यइं' एवा शब्द छे. २५ बीजी प्रतमां शालिनी ६० जातने अनुक्रम नंबर आपी गणावी छे. २६ बीजी प्रतमां आपेलां शालिनां वधु नाम: चांद्रणी वेरडा डांगरी ढुंढणीया करडीया शार्लीया, मुडी कमोद पेसलवेलि कमोद, मुंठी कमोद, जीरा कमोद, शंषी कमोद, मालवणि वालेरी मुंगीउं चीतावेलि मजीठी मोहणी कोबरवेलि हरिवाल बावन्ना सीधलु हरिमुषी गोलंयालपंषी खिमुई शालि, कुंकमवर्णी शालि, वाधउरी शालि, चारुली शालि, गोरडु कागपंषी झुरासाणी जातषंपी वाना मांजरवेलि पाटमांजर पोति पूटणी जटाली मुषी गमतमल पलासी अडाउं गोत्रवेलि धानवेलि शुद्ध वांनवानां.

वासी शालि,[१] जीरा शालि, महा शालि, साठी[२] शालि, कमोद शालि, कनडी शालि, घरसु शालि, धानुरी शालि, वागडी शालि, करम शालि, वालरु शालि, कुंआरी शालि, चाद्रिणी शालि, वरडा शालि, डांगरी शालि, ढूंढणीया शालि, करडीया शालि, सालीया शालि प्रमुख, तेहना चोषा, दूबलीइं खाड्या,[३] सबलीइं छड्या, निषूतीइं वीण्या, अलवेसरि आण्या, सुमतीइं सोहिआ,[४] इस्या चोषानु भगनीइं[५] समारिउ,[६] उंन्हु[७] तिन्हु[८] अणीआलु सुंहालु[९] सरस, सुकोमल,[१०] जिसिउ[११] केवडु[१२] कुंडेली जेवडउ, सबली स्त्रीइं उसायु[१३] इसिउ[१४] सालिनु कूर, वीषरी[१५] वीणीइ[१६] मनरंगि फीणीइ.

मंडोरा मग,[१७] करडूआ[१८] मग, नीलूआ[१९] मग, तेहनी दालि, कान्हमी तूअरि,[२०] मसूरि[२१] तेह तणी दालि, बभुक्षानी[२२] कालि, फोतिरे छांडी, हलूइ हाथि खांडी, त्रिछद्द कीधी, घणइ पाणीइ सीनी,[२३] वानि[२४] पीयली,[२५] परिणामि शीअली इसी दालि. छालीनुं घृत,[२६] गाईनुं घृत, भइंसिनुं[२७] घृत, तत्कालनुं[२८] ताव्युं,[२९] घाईसिउं[३०] नामिउं, मंजिष्ट वर्ण, अवधारइ कर्ण, सरही धार,[३१] साक्षात अमृत

१ सालि. २ शाठी. ३ षांड्यां. ४ सोह्या, आ शब्द पछी 'बहुजल धोया, रुडइं पात्रइं जोया, हाथ रुडे डोया,' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ५ भगतीइं. ६ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'रुडे ठामडे धारिउं' एवा शब्द छे. ७ उन्हउ. ८ तीन्हउ. ९ सुहालउं. १० सकोमल ११ जिस्यउं १२ केवडउं १३ 'सबली स्त्रीइं उसायु' ए शब्दो बीजी प्रतमां नथी. १४ ईसी. १५ सीष १६ वीसाइं. १७ आ पछी 'धूंषला मग' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. १८ करडूया. १९ नीलूया. २० आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'वाघमी तूअरि' एवा शब्द छे. २१ मसूर. २२ बभुक्षानइं. २३ बीजी प्रतमां 'घणइ पाणीइ सीनी' ए शब्द नथी. २४ वावि. २५ पीइं. २६ 'छालिनुं घृत' ए शब्दो बीजी प्रतमां ए ज पंक्तिमां 'भइंसनुं घृत' ए शब्दोनी पछी आवे छे. २७ भइंसनुं. २८ तत्कालि. २९ ताविउं. ३० कइसिनुं. ३१ आ पछी बीजी प्रतमां 'रसा घणउ भार' एवा शब्द छे.

एवंविध घृत. पछइ शाक[1] प्रीसाइ,[2] चुली फली, ग्वार फली, कडा फली, सडसडती फली, मगना नीलूआ,[3] मोगरी[4] उढवी[5] कइरां कंकोडां कारेलां रायकारेलां तोरईआं घीसोडां सेलरां राईआं टीडूरां सडसडती डोडी, कलकलता कसुंभा, चमचमतां चीभडां, मिरीभरी[6] खांडिमी, वघारिउं पूरण, परि[2-B]इरीइ[7] [सूरण], बांगलां,[8] वघारिआं खडबूजां, वघारिआ[9] आंबारस मतीरां, वघारिआं[10] फूट, चिणानां[11] बाकला, वघारि[12] मसूर दालि, वघारी आंबागोठी, तूअरिना नीलूआ, चिनामी दालि, वघारि बूबूल,[13] काकडी,[14] कोहलां, कालिंगडां, कोठीबडां, आरीआं, चीलनी भाजी, ढीबडांनी भाजी, सोआनी भाजी, तांदजानी[15] भाजी, चिणेजी[16] भाजी, कणझिरानी भाजी, मेथीनी भाजी, फांगीनी भाजी,[17] अडदनी भाजी, कली[18] पापड, लांगना[19] पापड, मगना पापड, चोषानी पापडी, जारिनी पापडी, मालनी पापडी, तेहनां साजीआं.[20] चुलानी वडी, अडदनी वडी, घसि[21] वडी, छमका वडी, सुंतली वडी, षेरु, राईतां,[22] घारडां, पनुली, वघारिआ वाल, वाल्हुलि सूरी, वाल्हुलि चिहुं वानीना पलेव, कडूआ[23] कसायला तीषा मधुरा पाडोसणिनी जीभि[24] जम्या[25] कडूआ, जिसिआ[26] सद्गुरु तणा उपदेश तिस्या कसायला, जिसी सुकिनी[27] जीभ एहवा तीषा, जिस्यां

---

१ शाकि. २ आ पछी बीजी प्रतमां 'सहुइं प्रीसवा धाइं' एवा शब्द छे ३ लूआ. ४ सांगरी. ५ वडवी. ६ मिरीभिरी. ७ आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'सूरण' शब्द छे. ८ बोगलां. ९ वघारया. १० वघारयां ११ चणाणा. १२ वघारया. १३ बबूल. १४ 'काकडी....कोठीबडां' ए पाठ बीजी प्रतमां 'कंकोडां कारेलां' ए मुख्य प्रतना (उपर, पं. ३) शब्दोनी पछी आवे छे. १५ तांदलजानी. १६ चिणानी. १७ 'फांगीनी भाजी, अडदनी भाजी' ए शब्दो बीजी प्रतमां नथी. १८ काला थुलाना. १९ लांगनन. २० साजीयां. २१ घईसि. २२ रायतां. २३ कडूया. २४ जीभ. २५ जिस्या. २६ जिस्यू. २७ सोकिनी.

मातानां चित्त तिस्या मधुग पलेव. स्वादनइं अर्थि लींबुआना रस सुंकाइ,[१] पछइ मिरी मांजरि, लींबुआं षारां, बीली,[२] खारी सुंठि, खारी कइरी, कोहलाना फाफडा षारा[३] सेक्या, खारां कयर, खारी हलद्र, खारा वासेटा, एवंविध[४] सालणां. सेक्यां सुंतल्यां[५] तल्यां[६] ताव्यां[७] तीषां तमतमां[८] षाटां षारां[९] कडूआं कसायलां मीठां मधुगं गलिआं[१०] चोपडां, काचां[११] पाकां छोल्यां छुवरयां[१२] वघारियां[१३] अणवघारियां,[१४] इस्यां सालणां. एलचीवाणी, द्राषवाणी, साकरवाणी, आंबलिवाणी,[१५] षांडवाणी, विचि इस्यां पीजइ पांणी. वारु शालि तणा करंबा,[१६] कपूरिं वास्या,[१७] एलचीनुं उल्लास, भोज्य लक्ष्मीनुं निवास, मांहि दही तणु प्रयोग, जेणइ[१८] जिमणहारनइ हुइ[१९] अभियोग, अमृतमय थोल, जिस्या खीर समुद्रना कल्लोल. हाथे मिलिउ गलणे गलिउ,[२०] अत्यंत धवल प्रीणीइ मुखकमल इस्या[२१] थोल, ऊपरि उन्हां टाढां पाणी,[२२] सीकरीवासित कपूरवासित[२३] पाडलवासित[२४] एलचीवासित इस्यां पाणी, खीरोदक चीर हाथ-लूहाण.[२५] पछइ चाउरे[२६] [3-A] आसणे आवी बइसइ.[२७]

१ मूकायइं. २ आ शब्द पछी 'करपटां कयर षारां' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ३ षार. ४ एवं विधि, तेना पछी आवतो 'सालणां' शब्द बीजी प्रतमां नथी, पण एने स्थाने 'गिरिमिरी वांसगांठि आदां' एवा शब्दो छे. ५ 'सुंतल्यां' शब्द बीजी प्रतमां नथी. ६ तला. ७ ताव्या. ८ आ पछी बीजी प्रतमां 'तमतमां' शब्द छे. ९ कल्यां. १० चोल्यां. ११ सुतलां. १२ मघास्यां. १३ अणवघारां. १४ आंबिलवाणी, ए पछी बीजी प्रतमां, 'इक्षुवाणी' शब्द छे. १५ आ पछी बीजी प्रतमां 'पांमी इंनु पूजीइं अंबा' एवा शब्द छे. १६ आ पछी बीजी प्रतमां 'जिम वासहु करइं आस्या' एवा शब्द छे. १७ जेहनइं. १८ हुयइं. १९ गलीयउ. २० 'इस्या थोल' ए शब्दो बीजी प्रतमां नथी. २१ आ पछी बीजी प्रतमां 'आपइं चतुर नारि आणी' एवा शब्द छे. २२ कपूरवासित वाणी. २३ पाडलवासित वाणी. २४ लूंहणे. २५ चाउर. २६ बइंस्यइं.

हवइं तंबोल,[१] अडांगरां पांन, तबकी पांन, षाषरीआ[२] पांन, चेउली पांन, श्रेष्टिवेलिआं[३] पांन, कपूरवेलिआं[४] पान, नागरखंडां पांन, मागुलुरां[५] पांन, बीटि सांकडां,[६] अल्प नसाजाल, एवंविध[७] मनोहर पांन.[८] तबकी सोपारी, चेउली सोपारी, कीली सोपारी, चीकणी सोपारी, लालीआं[९] सोपारी, रोठां[१०] सोपारी, भमरागर सोपारी, कुचीगर सोपारी, तानुरां सोपारी, मडावां सोपारी, नीली सोपारी, कातली, तबक खरवडी, तबकी[११] काथु, केवडीउ[१२] काथु,[१३] लिविंग[१४] एलची बोदा काठी जाइफल जावित्री[१५] कर्पूर[१६] कस्तूरी तणइ संयोगि चुसरां[१७] पाननां बीडां[१८] इम[१९] सर्व परिवारनइं भोजन तंबोल दीधा.

ईसपना[२०] लोबान,[२१] शलारसबती,[२२] कृष्णागर भोग धूप समस्त परिवार आगलि ऊषेवाइ.[२३] धूपेल चांपेल मोगरेल करणेल जइतेल[२४] एवंविध तेलिइं चोला भीजाइ.[२५] चूउ जबाधि पोहिसा कचूलु गुलाब सुरतर[२६] अबीर बावन्नाचंदन सूकडि केसर मिलियोगिरा[२७] कपूरकाचरी नखला गहुंला कस्तूरी बरासकपूर,[२८] चीणीउं कपूर,[२९] गुलाल एवं-विध छांटणां. चंपकपुष्प[३०] मालती[३१] केवडा पाडल जाइनां[३२] फूल,

१ आ पछी 'आपइं तंबोर' शब्दो बीजी प्रतमां छे. २ षाषरीयां. ३ ०वेलियां. ४ ०वेलियां. ५ मांगलुरां. ६ 'बीटि सांकडां' आ शब्दो पछी 'मांहि नही लाकडां' एवा शब्द बीजी प्रतमां छे. ७ एहवां. ८ 'मनोहर पांन' ए शब्दोने बदले बीजी प्रतमां 'आपइ भुपाल' एवा शब्द छे. ९ लालीआ. १० रोठा. ११ तवकी. १२ केवडीयो. १३ काथो. १४ लविंग. १५ जावंत्री. १६ मिरीकपूर. १७ चुसठि. १८ आ पछी बीजी प्रतमां 'एकइं नही रुडां इकइं नही' एवा शब्द छे. १९ ईम, आ पछी बीजी प्रतमां 'द्रव्यना लाहा लीधा' एवा शब्द छे २० ईसपान २१ लोब्यान. २२ शलारसवती. २३ उषवेवाइं, आनी पछी बीजी प्रतमां 'गायन बइंठाणाय' एवा शब्द छे. २४ जायतेल, बीजी प्रतमां आ शब्द पछी 'घणइ वत्त्या' शब्दो मळे छे २५ भींजवीइं २६ गुरुतरु. २७ मिलियागरं २८ कपूरबरास. २९ आ शब्द बीजी प्रतमां नथी. ३० चंपकपुफ. ३१ मालतीपुष्प. ३२ जायनां.

सेवंत्रां, जूईनां[1] फूल, वुलसिरीनां[2] फूल, दमणउ सरूउ मचकंद कमल जासु गुलाल वेलि मोगरु करणी वालु पारिजातक[3] एवंविध[4] फूल परिवार प्रति अपाइ[5].

हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ; गुडीआं[6] शणीआं कस्तूरीआं प्रतापीआं कुसंभीआं[7] मोलीआं मांडवीआं मीणीआं वाटलीआं जलोदरीआं मगीआं जोडदरीआं प्रागीआं चुकडीआं[8] टसरीआं पूरीआं अमरीआं सूहवीआं मूगीआं चलवलीआं चारुलीआं परवालीआं मांडलीआं खाजलीआं पिंपलीआं पोपटिआं हांसलीआं चंपकदुर्गीआं[9] विद्यापुरीआं देकापाटकीआं काश्मीरीआं धूमराई खीरोदक पदांशुक चीनांशुक खांडकी तनुसख मनसष[10] कमखा चलाषा मलाषा देवदूष्य[11] बंधालग कौठालग कलगइ कोकची[12] पंचवर्ण यज, दुरंगी यज, मांगलुरी यज, गढगजी सवागजी चुगजी पंटणी पटपाटू, पंचवर्ण छींट, नीलवटां चक्रवटां धौंत[3-B]वटां मुहिवटां नाटी दोटी धटी कठपीठ पाघडी वींडी रेट चूनडी पातलसाडी, नंदरबारी पाघडी, पामडी लोवडी, वाहणवही लोवडी, पछेडी चूनडी गजवडि[13] बोरीआवडि हंसवडि सुवर्णवडि[14] कालावडि फाडां ठेपाडां कुमरपछेडु, गोमेद लूगडूं, अदाण[15] कर्मदाण कंतरांइणी गजकर्णी पइठाणी[16] सलहिती बारवती फरोदस्ती चूडाभाति शकलात पोतु तास्तु नीलनेत्रां बासत्था, मिशरु बासत्था, कद दोकद चुपदा मासपदा तनुबंध[17] शरबंध कमरबंध मगवनां कमलवनां दरीयाखाना

---

१ जूहीनां. २ वलिहारी. ३ हारिजात. ४ एम विधि. ५ अपावइ. ६ गुडीयां, बीजी प्रतमां अन्य वस्त्रोनां नामने छेडे पण '०आं 'ने बदले '०यां' छे ७ आनी पछीनो 'मोलीआं' शब्द बीजी प्रतमां नथी ८ चउकडीयां. ९ चंपकदुगीयां. १० मनसुष. ११ 'देवदूष्य' शब्द बीजी प्रतमां नथी. १२ कठपीठ, आनी पछी 'षेस' शब्द बीजी प्रतमां छे. १३ गजवटि. १४ सुवण[illegible]डि. १५ अद्दण. १६ पइंठांणी. १७ तिनुबंध.

कतनीझूंना[1] प्रताप सचोप, पटणी कथीवु, फिरंगी[2] कथीवु, सानु-बाफ जरबाफ श्रीबाफ सुफ कमखा[3] खरमु नरमु मेघाडंबर मंजीर दाडिमसार[4] जादर हीरागर वइरागर फूलपगर चीर वलगार चुतार[5] पीतांबर चादर रक्तांबर नेत्रांबर षासरी सालूर[6] चौलहिरां[7] नीलु-हुरां[8] जरजरी मलबारी लाछरी[9] अधोतरी[10] अमरी गंगापारी मोती- 5
चूरि टमरु मशरु रत्नकंबल छाइल मकबल अगल साउला उर-साला वाला पटुलां वाकलां घनवेलि कमलवेलि कपूरवेलि सेलां पटुली षमरतली झमरतली चेउली मह्युमालू[11] चारसा[12] षरबास षेस[13] कतास अतलस खासु कमसू भइरव, मिश्रु भइरव, रेशमी भइरव, लाहि महीमुंदीशाही[14] मलमलसाही प्रमुख नानाविध[15] भातिनां,[16] नाना- 10
विध[17] देशनां वस्त्र आणी समस्त परिवार,[18] नगरलोक पहिरावी[19] नांमस्थापना कीधी.[20]

---

१ कचनीझूंना. २ फरंगी, आ शब्द पछी बीजी प्रतमां 'एरंडी' छे. ३ कमरवाफ. ४ दामिमसार. ५ चउतार. ६ गालू. ७ चोलहिरा. ८ तीलुहुरी. ९ लाछउरी. १० अधातरी, आनी पछी 'देवदूषा' शब्द बीजी प्रतमां छे. ११ महुसाहु. १२ चोरसा १३ बीजी प्रतमां 'षेस' नथी. १४ महिमुंदशाही, आनी पछी बीजी प्रतमां नीचेनां वस्त्रोनां नाम मळे छेः 'चीणीदाम गोयागरी सागीयां, नीली पांजणी, पीली काली कादूई राती पंचवर्ण पांजणी, पछेडी, पाट पछेडी, नीझरी पछेडी, सोनादोरी पछेडी.' १५ नानाविधि. १६ आ पछी बीजी प्रतमां 'नानाविध जातिनां' एवा शब्द छे. १७ नानाविधि. १८ आ पछी बीजी प्रतमां 'स्वजनवर्ग परवर्ग नरनारी' ए शब्दो छे. १९ पहिरावइं, आ पछी बीजी प्रतमां नीचेनी पंक्तिओ छे :

'देशलोक, बंदीजन, जाचक, प्रतिबंधन वस्त्र आपइं, दरिद्रानां दरिद्र कापइ, सहुनइं पहिरावी. लोभनी वात नावी; राजा युवराजा प्रधान श्रीकरण कोठारी धान्यकोठारी धनभंडारी वस्त्रभंडारी नगरलोक सहुइंनइं राजा बुलावइं, पद पाच सात पाछलि आवइं, चतुर नारी गीत गावइं. मोती थाल भरी वधावइं, मृदंग पडह तूर वजावइं, पंच शबद नीसाण गजावइं, एहवा उछव करावइ, मस्तकि छत्र धरावइं, पापिष्ट दुष्टनइं डरावइं, पंपीया जीवनइं चरावइं.'

२० आ पछी बीजी प्रतमां 'कीर्त्तिरूपिणी ध्वज दीधी' एवा शब्द छे.

इति श्रीजिमणवारपरिधानविधिः संपूर्णः। [१]पूज्यश्रीसोमविमल-सूरिशिष्यआचार्य्यश्रीआणंदसोमसूरिशिष्यपंडितरत्नसोमगणि तत्शिष्य विद्यासोममुनिलषितं। संवत १६७५ वर्षे फागुण वदि ७ गुरौ वासरे। श्रीरस्तुः। कल्याणमस्तु ॥

---

१ बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे पुष्पिका छे:

गणि हस्तीरुचि लिषतं बीबीपुरे पारिष जेठा स्ववाचनाय ॥

भोजनविच्छित्ति

[1-A] ॥ दं० ॥ अथ ग्रंथांतरतो भोजनविच्छित्तिः कथ्यते. मांड्यउ उत्तंग तोरण मांडवउ, तुरत नवउ बइसिवानउ आंगणउ, ते तु नीरु रतन तणउ; ऊपरलइ मालि, मध्याह्न कालि, केलिपत्रइं छाया, इस्या मंडप नीपाया, तलइ मांड्या पाट, ऊपरि पाथरया रेसमी घाट. चाचरइ चाकला, ऊपरि बइठा कुंअर पातला; सषरा मांड्या आसण, बइसतां किसी विमासण? आगइ मुंकी उंची आडणी, भूषनी विहाडणी, ते किम जाइ छांडणी? उपरि सोनानां थाल, अत्यंत घणुं विशाल, विचिमांहि चउसठि वाटकी, लगार नही जाति काटकी. कीजै रंग रोला, झाझा मेहल्या सोनारूपाना कचोला. किसी नही कुरुष, तिहां बइठा बत्रीसलक्षणा पुरुष, फांदाला फुंदाला दुंदाला झाकझमाला सुंहाला, आंषि अणीआला, केशपाश काला, केइ जमाई, केई शाला, केई जोधाला, चालती हालती झाला, इस्या पांति बइठा बालगोपाला. सघली पांति बइठी, तितरइ प्रीसणहारी पइठी; ते केहवी छै? सोल शृंगार सज्या, बीजा काम तिज्या, सुजाण सहेली, लाडगहेली, हंसगतइं चालती, गजगतइ माहालती, कांम कामनी पालती, आंषिनइ मटकारइ मदननी वागुरा घालती, कस्तूरीअलंकृत भालपट्ट, तरु[ण] तणां भांजइ मरट्ट, पूर्ण चंद्र समान वदन, हेला मात्र जीत्यु मदन, कांने कुंडल, साक्षात शशिसूरमंडल, हाथनी रूडी, बिहुं बांहैं षलकइ चूडी, लहकती वीणी, उपरि ओढी ओढणी झीणी, कुण करइ मूल, रतनजडित सीसफूल, जिसी देवनारी इसी मनोहर राजकुमारी; लघुलाघवी

कला, मन कीधा मोकला, चितनी उदार, अति घणुं दातार, दउलती हाथ, परमेसर देजे तेहनु साथ; धसमसती आवी, सघलानइ मनि भावी, गंगोदक दीधा, थाल कचोलनइं हाथ पवित्र कीधा.

पहिलुं फलिहलि प्रीसइ, सघलानां हीयां हीसै; पाका आंबानी कातली ते बूरा षांडम्युं भरी अनैं वली पातली; पाकां केलां ते वली षांडम्युं कीधां मेलां; सषरां करणां ते वली पीलां वरणां; नीलां नारिंगां, रंगइ दीसतां सुरंगां; पाकी नीकोली रांइणि, प्रीसी भांइणि; दाडिमनी कली, षातां पूजइ [1-B] रली; निमजां नइं अषोड, षातां पूजइ कोडि; द्राष नइ बिदाम, केई कागदी केई श्याम; सिलेमी षारिक नइ पजूर, ते प्रीम्यां भरपूर; नालेरनी गरी, मालवी गुलम्युं भरी; लींबू षाटा नइं मीठा, एहवा तु किहाइं न दीठा, चारुली नइ पिसतां, लोक जिमइ हसतां; वली सेलडी नइ सदाफल, ते पणि प्रीम्यां परिवल, षातां भाजइ तापनी झल; सीताफल नइ बीजोरी, एहवी फलिहलि प्रीसइ नारि गोरी.

हिवइ पकवान आंणइ? ते केहवां वषाणइ? मालवानी भूमि, तिहांना नींपना गोधूम, हाथम्युं मसल्या, धोइनइ दल्या; छाणीइ सूधी, नीपजै पडसूधी, हलूइ हाथइ चालइ, मांहिथी थूलउं टालइ, एक लौं पाटउ, मांहइ दीजइ साटउ, वेलणम्युं वेलीइ, हलूइम्युं मेल्हीइ, घृतम्युं मिल्या, लोह कडाहैं तल्या, शब्द कलकलइ, निर्धूम अगनि बलइ, नीपनां शतपुडां ग्वाजां, तुरत कीधां ताजां, सदला नैं साजां, मोटां जांणे प्रासादनां छाजां, चिहुं पुणे साजां, एहवां षाजां प्रीम्यां, पछइ प्रीम्या लाडू, जांणे नाहांना गाडू, कुण कुण तेह नांम, जीमतां मन रहे ठाम; मोतीआ लाडू १, दलीआ लाडू २, सेवईआ लाडू ३, कीटीना लाडू ४, तंदूलना लाडू ५, तिलना लाडू ६, त्रिगडूना लाडू ७, मगरीआ लाडू ८, झगरीआ

लाडू ९., माठा लाडू १०, सिंहकेसरीया लाडू * ११; पाटण तणा कंदोई, घृतम्युं मइदो मोई, वणी सेव पातली, सुरहां घीमांहै तली, घणइ पाकम्युं मिली, साकरना पेरास्युं अधभली, मांहि लविंग तणा चमुत्कार, अत्यंत सुकमार, कपूरपरिमलवास्या, अतिवर्तुल, महाउज्वल, एहवा लाडू प्रीस्या: पछइ प्रीसी मुरकी, पाइवा जीभ फुरकी; सेव झीणी, फगफगती फीणी; घृतनी घारी, स्वादस्युं आहारी; साकरस्युं रुली, इसी प्रीसी तिलसांकुली; शकरपारा मांडी, कोई न सकइ छांडी. वली बीजा आंण्यां पकवान, जीमतां वाधइ मुखनु वान; कुण कुण जाति, नवी नवी भाति; दहीवडां, गुंदवडां, इंदरसां दहीथरां, चांदसाई फीणां; सषरां नइ सोट, तेहमांहिं नही षोट;
ताऊ घेवर, पायल घेवर, तल्या गुंद, कुंडलाकृत जलेबी, मीठउ मगद, आछु माल निगद; प्रीस्यु सीरु, जिमतां मन हुइ अ[2-A]धीरु,

गोधूमश्वेतचूर्णं घृतगुडसहितं नालिकेरस्य खंडं
द्राक्षाखर्जूरशुंठीतजमरिचयुतं ऐलचीनागपुष्पम् ।
पक्त्वा लोहे कटाहे टलविटलटलत्पावके मंदकांतौ
धन्यो हेमंतकाले प्रचुरघृतयुतां भुंजते लापनश्रीम् ॥

पछै प्रीसी लापसी, तेहवी सहूइ नाहांना मोटा धापसी; खांडनु चूरिमउ, साकरनुं चुरमउ. पछै प्रीसी शालि ते जिमीइ विचालि; ते कुंण कुंण भेद, साभलतां ऊपजइ उमेद. सुगंध शालि, सुवर्ण्ण शालि, धउलि शालि, राती शालि, पीली शालि, सुद्ध शालि, कौमुदी शालि, कलम शालि, कुंकणी शालि, देवजीरा शालि, रायभोग शालि, साठी शालि; प्रवाली साठी चोषा, अषंड चोषा, निबलीयइं षांड्या, सबलीइं छड्या, हलवइ हाथइ सोह्या, नखवतीइ वीण्या, उत्तम स्त्रीइ ओरया,

* सिंहकेसरिया लाडु विषेनी एक प्राकृत गाथा अहीं हांसियामां लखेली छे—

चउसट्ठिकुसुमरसो अट्ठारसराजदव्वसंजोगो ।
सोलसगंधदव्वा दहबीये सिंघकेसराये ॥ १ इति.

सुजाण स्त्रीइ ओसाया, सुहव स्त्रीइं ऊतार्या, एहवा अणीआला सरस फरहरा कूर प्रीस्या. वली दालि प्रीसी, ते कुण कुण अनइ केहवी? मंडोरा मुंगनी दालि, काबिली चिणानी दालि, गुजराती तूअरनी दालि, उडदनी दालि, झालरनी दालि, मटरनी दालि, नीपनी सुकालि, हलूइ हाथिं षांडी, तुस गया छांडी, सोनानइ वानइ, जिमतां मन मानै, ईहां काम नही छोकरी, प्रीसइ डोकरी; पछइ परिघल घी प्रीस्यां, पणि ते केहवां? आजनां ताव्यां गाइनां घी, भइंसिनां घी; सुरहां घीनी धार, संतोषीइ जिमणहार, नाकपेय घी, सदा आदेय घी; हवइ पोली प्रीसीयइ, पणि ते केहवी? आछी पोली, घीमांहिं झबोली, फूंकइं मारी फलसइ जाइ, एकवीसनो एक कुलीउ थाइ.

हिवइ पत्रशाक प्रीस्यां; पणि ते केहां केहां अनैं केहवां? नीलीछम काई डोडीनां शाक, टीडूरानां शाक, टीडसानां शाक, चीभडांनां शाक, कोहलानां शाक, कंकोडानां शाक, कारेलानां शाक, काकडीनां शाक, केलानां शाक, लींवुनां शाक, करमदानां शाक, कालिंगडानां शाक, आरीयानां शाक, तूरीयानां शाक, मीठकचरीनां शाक, षडबूजानां शाक, मतीरानां शाक, वींगणनां शाक, मोगरीनां शाक, आंबोलीयानां शाक, खेलरानां शाक, वाहालोलनां शाक, चउलाफलीनां शाक, सरघूयानी फलीनां शाक, कडाफलीनां शाक, शांगरीनां शाक, काचरानां शाक, आमलानां शाक, कयरनां शाक, फूलनां शाक, फोगनां शाक, नीला मिरचनां शाक, नीली पींपरिनां शाक, राईनां शाक, षारिकनां शाक, द्राषनां शाक, नीलीगरीनां शाक, गुयारनी फलीनां शाक, बावलीआनां शाक, सुंठिनां शाक, कइरीनां शाक, षागठीनां शाक, वडीनां शाक, खेरानां शाक, नीलूआनां शाक, पापडीनां शाक, तूअरिनी दालिनां शाक, उढवानां शाक, चिणानां शाक; राईतां मिरीतां षाटां षारां मीठां गल्यां तीषां तमतमां तल्यां वघार्यां

छमकारयां पुंगारयां. वली प्रीसी भाजी, ते उपरि सहू कोई राजी, ते कुण कुण? सरसिवनी भाजी, सूआनी भाजी, मूलानी भाजी, वधूआनी भाजी, चिगानी भाजी, चीलनी भाजी, तांदलजानी भाजी, मेथीनी भाजी, अफीणनी भाजी; पापड, पापडीनां शाक, सेक्या पापड, तल्या पापड, वघारया पापड. हवइ वडां आवइ, ते केहवां?

हिंग्वाजीरैर्मरीचैर्लवणपटुतरैरार्द्रकैः पूर्णगर्भै
स्निग्धस्वादं सुगंधं परिमलबहुलं केसरैः कुंकुमाभं ।
क्षिप्त्वा दंतांतराले मुरुमुरुकुरुते स्पष्टवत् स्पष्टशब्दं
धन्यो हेमंतकाले प्रहसितवटकं कांतया दत्तहस्तं ॥

मिरचालां वडां, तल्यां वडां, कोरां वडां, [2-B] कांजीवडां, घोलवडां, मुंगनी दालिनां वडां, उडदनी दालिनां वडां, घणइ घोलइ भीनां, घणइ तेलइं सीनां, मिरचांरा घणा चमुत्कार, अत्यंत सुकमार, हाथि लीधां ऊछलइ, मुंहडइ घाल्यां तरत गलइ, घणुं स्युं? स्वर्गना देव-देवी पणि षावानइ टलवलइ.

हिवइ पलेव आवइ, पणि ते केहवी? मिरच सुंठि सहित चोषानीं पलेव, ज्वारिनी पलेव, हलदीया पलेव, पीपलीया पलेव, सुंठीया पलेव, सबडकीया पलेव.

हिवइ भोजन विचइ पीवानां पांणी आवइ, पणि ते केहवां? साकरनां पाणी, षांडनां पांणी, गंगानां पांणी, पालर पांणी, कपूरवास्यां पांणी, एलचीवास्यां पांणी, टाढां हिम शीतल पांणी.

हिवइ दहीना घोलघोल आवइ ते केहवा? गायनां दही, भइंसिनां दही, सुथरां दही, काठां जांम्यां दही, मधुरां दही, सषरा सजीराला सलवणा जाडा दहीना घोल, तेहना भरया कचोल, चाउलांम्युं जीमतां थया रंग रोल. वली सषरा करंबामांहि घणी राई, जीमतां ढील न काई, ऊपरि जीरालुंणनु प्रतिवास, करणहारी पणि पास.

हिवइ चलूनां पाणी आवइ ते केहवा केहवा ? केवडावास्यां पांणी, काथानां पांणी, कपूरवास्यां पांणी, पाडलवास्यां पांणी, चंदनवास्यां पांणी, एलचीवास्यां पांणी, सुगंध पाणी, गंगोदक पांणी, तिणस्युं चलू कीधा. हिवइ मुखवास दीजै छै, ते केहवा ? वांकडी चेल सोपारीनी फाल, नीली सोपारी ते पणि केसरकपूरवासित; वली तीपा ताजा लविंग, जावित्री नइ जाइफल, मोटा डोडा एलाफल, पाकां नागरवेलिनां सुथरां पान, घणा आदर नैं मान, घणा गीत नइं गान, घणा तांन नइं मान.

पछइ भला वस्त्र पहिराया ते कुण कुण; देवदुप्य वस्त्र, रत्नकंबल पामडी षीरोदक मसज्जर चीणी बुलबुल चसमा अतलस लाहि अटाण षासा सेलं मुलमुल नरमा दोरीआ श्रीशाप श्रीबाप बास्ता अधोतरी महिंमुंदी दुदामी भयरव टसरीयां मुगटा सिणीयां कसवी जरबाप मुखमल कथीपा इलाइचा नारीकुंजर प्रमुख पचरंगी वागा पहिराया.

वली काश्मीरी केसरनां छांटणां कीधां; वली भला भला विलेपन सुगंध लगाया; बावनाचंदनना विलेपन कीधा, सुगंध अरगजा लगाया; वली सषरा चोआ चांपेल फूलेल केवडेल मोगरेल जबादि पोइंसडा लगाया. वली जाइ जूही कुंद मुचकुंद केवडु चांपु मिरूउ मोगरु केतकी मालती वेलि वुलसिरी सेवंत्रां प्रमुख फूल पहिराया. पछइ वली मुकट तिलक कुंडल हार दोर वीरविलय अंगद वहिरषा नवग्रहां मुंद्रडी कंदोरु हथसांकली पगनी सांकली प्रमुख पहिराया. एहवी कुटंब सांहांमी ज्ञातिनी भगति कीधी सिद्धार्थ राजागृहे.

इति भोजनविच्छत्ति जांणवी । संपूर्ण : ॥

वीरभोजन वर्णक

[1-A] ॥ दे० ॥ माडिउं ऊत्तंग तोरण मांडवुं, तुंरत नवउ बेसवानउ आगणु, नीलरत्न तणुं सपरा माडि आसन, बिसतां किसी विमासन ? आगिं मूकी सोनानी आडणी, ते किम जाइ छाडणी ? उपरि सोनानां थाल, अत्यंत घणुं विशाल, विचमइ चउसठि वाटकी, लगार नही जाति काटिकी, गंगोदकि दीधां, थाल कचोला हाथ पवित्र कीधां, सघली पाति बिठी तेतलि प्रीसणहारी पैठी, ते केहवी ? सोल सिणगार सज्या, बीजा सघला कांम तज्या, हाथनी रूडी, बिहु बाहि षलकिं चूडी, लघुलाघवी कला, मन कीधा मोकला, चित्तनी उदार, अति घणुं दातार, दोलती हाथ, परमेसर देजे तेहनो साथ, धसमसती आवी, सघलानिं मन भावी, पहिलुं फलहल प्रीसइ, सघलानां हीया हीसइ, पाका आंबानी कातली, षाडसिउं वादली, पाका केला, षाडसुं कीधां भेलां, सषरां कर[1-B]णां, ते वली पीला वरणां, नीलां नारिंगां, रंगि दीसता सुरंगा, नीकोली रायण, ते प्रीसी मनभाइण, दाडिमनी कुली, पातां पूजै रुली, निमजा निं अषोड, पातां उपजि कोड, द्राष नइ बदाम, केइ कागदी केइ श्याम, सिलेमानी पारिक नें षजूर, ते प्रीस्या भरपूर, नालेरनी गिरि, मालवी गोलसुं भरी, निंबु पाटा नि मीठां, एहवां कदे न दीठा, चारोली न पस्तां, लोक जीमता हस्ता, सेलडी ने सदाफल, ते पिण प्रीस्या परिघल.

हविं पकवान आणि ते केहवा वपांणि ? सतपुडां पाजां, तुरत कीधा ताजां, सदला नि साजा, मोटा जाणे प्रासादना छाजा, पछिं प्रीस्या लाडू, जाणे नाना गाडू, जेहना नाम, जमतां मन न रहि

ठांम, मोतीया लाडू, दलिया लाडू, किटीया लाडू, त्रिगडूंना लाडू, मगीया लाडू, सिहकेसरीया लाडू, वली बीजां आण्या पकवान, जिमतां [2-A] धाधइ मुपनुं वान, ते कुण कुण जाति? नव नवी भाति, दहीवडा, गुंदवडा, फीण सपरा सोट, ते माहिं नही पोट, पातली सेव प्रीसी, उत्तरतां घेवर, तल्या गुंद, कुंडलाकृत जेंलेबी, सीरा लापसी, मीठउ मगदल, साकरनुं चूरमुं, षांडनुं चुरमुं; पछइ प्रीसी सालि, ते जिमिइ विचालि, ति कुण कुण भेद? सांभलवानी उमेद, सुगंध सालि, कौमदी सालि, कलमल सालि, कुकणी सालि, देवजीरा सालि, रायभोग सालि, तरणि सालि, वली साठी चोषा, अषंड चोषा, निबलीयें षाड्या, सवलीयें छड्या, हलवइ हाथि साह्या, नषवतीयें वण्या, उत्तम स्त्रीइ उस्या, सुजाण स्त्रीयें उतारया, एहवा अणीयाला सुंगध सुरस कुर प्रीस्या; वली प्री[2-B]साइ दालि, लोकना मन हीसइ, मांडोरा मगनी दालि, काबली चिणानी दालि, गुजराती तूअरनी दालि, उडदनी दालि, झालरनी दालि, मठनी दालि, वरणे पीयली, परिणामिं सीयली; वलि परिघल घी प्रीस्या, आजना तावियां घी, सुरहा घी; हवि पोली प्रीसी, पणि ते केहवी? आछी पोली, घीमांहि झवोली, फूकरी मारी फलसइ जाय, एकवीसनु एक कोलीयो थाय.

हविं स्याक प्रीसिं ते केहवां? नीली छमकारी डोडीनां स्याक, टिडोरीना स्याक, टिडसीनां स्याक, कंकोडानां स्याक, करमदाना स्याक, कारेला स्याक, केलानां स्याक, अरियानां स्याक, तूरियानां स्याक, मुंटकचरानां स्याक, षडबूजानां स्या[3-A]क, मतीरानां स्याक, वेंगणनां स्याक, मोगरीनां स्याक, तरबुजानां स्याक, निबूयाना स्याक, आंबलीयाना स्याक, वालहोलना स्याक, चोलानी फलीनां स्याक, सरघूआनी फलीनां स्याक, कालिंगडानां स्याक, षेजडानां स्याक, काचरीनां स्याक. आमलाना स्याक, कयरनां स्याक. फूलनां स्याक, फोगनां स्याक, नीली मरिचनां

स्याक, राईनां स्याक, षाटां स्याक, षारा स्याक, मीठा स्याक, गल्या स्याक, तल्या स्याक, वघार्‍यां स्याक, धुंगारिया स्याक, छमकारिया स्याक; वली प्रीसी भाजी, ते उपरि सहु को राजी, सरसवनी भाजी, सोग्रानी भाजी, मूलानी भाजी, वघुग्रानी भाजी, चणानी भाजी, चंदलाइनी भाजी, मेथी भाजी, भरुअची भाजी.

हिवइं वडां आवइ ते केहवां? विलि मरिचनां वडां, कांजीनां वडां, घोल वडां, उडदनी दालिनां वडां, मुंगनी दालिनां वडां, [3-B] कुलथीनी दालिनां वडां, घणें घोलणे भीनां, घणि तेले सीनां, चमत्कारियां अत्यंत, मुहडि घाल्यां तुरत गलइ, घणूं स्युं कहीइ? स्वर्गना देव देवता पणि षावानइ टलवलि.

हवइं पलेव आवइ, ते केहवी? चोषानी पलेव, ज्वारिनी पलेव, बाजरीनी पलेव, हलदीया पलेव, पीपरियानी पलेव, वसुठियानी पलेव, सवडकीया पलेव; हिवइं भोजन विचइ पाणी पीवानि आवइं, ते केवा? साकरना पाणी, षांडना पाणी, गंगाना पाणी, कपूरना वास्या पाणी, एलचीवास्या पाणी, टाढा हिमना पाणी, कराहनां पाणी.

हिवइं दहीना घोल आवइ; गाय दही, भेंसना दही, सषरा दही, षाटां दही, घणूं जाम्या दही, मधुरां दही, सलवणां जीरा घोल तेहना भ[4-A]रीया कचोल, चावलस्युं जीमतां थया रंग रोल, वली सषरा करंबा आण्या, करंबांमाहि राई, जीमतां ढील न काई, ऊपरि जीरा लूंणनो प्रतिवास, करणहारी पण पास.

हिवइं चलना पाणी आवइं ते केहवां? केवडाना पाणी, काथाना पाणी, चंदनवास्या पाणी, पाडलवास्या पाणी, तिणस्युं चलू कीधा, हिवइं मुषवास आवइं, वांकडी सोपारीनी फाल, लवंग, जायफल, जायपत्री, पाकां नागरवेलना पान, घणा गीतगान, घणा तान नें मांन.

पछि वस्त्र पहिरावइ; देवदूषित वस्त्र, रतनकांबल, चीर, सोनइरी पामरी पीरोदक पासा अधोतरी नरमानी मुलमुल मसजर [4-B] चीणी बिलींदी जरबाफ, सुषम वस्त्र वुलवुल, चसमां, अवल कथीपा, अटांण वस्त्र, टसरीया भैरव नारीकुंजर, सषरां सेलां, सीलू थान घणा मुगटा, अनेक जातिनी पाघडी, पोति धोति प्रमुष पाच वर्ण वागा पहिराव्या, स्त्रीयो प्रति सोल सिणगार पहिराव्या, बहुमूल्य वस्त्र आपि पुरस प्रतिं तिलक करइं, स्त्रीयो प्रति पग पीलइ, इम लोक नि स्वजन वर्गनइं घणी परि संतोपइ. वली कासमीर केसरना छाटणा करि, वली भला विलेपन कस्तुर अंबर सौंधा सुगंध लगाड्या, बावनाचंदन विलेपन कीधा, सुगंध, अरगजा लगाडि, वली चूआ चंदन चापेल तेल, मोगरेल तेल, फुलेल तेल, केवडेल तेल, जयवेल तेल, पोइडां अनेक फूल, जाय जूई कुंद वेल मोगरो वोलसिरी मालती केवडो दमणो मरूउं जातिकुसुम ते स्वजनवर्ग प्रतं वधावी सहु प्रति संतोपि.

इति श्रीवीरभोजनविधि संपूर्ण । लिषितं शिवभद्र ॥

[८]

भोजनभक्ति

[1-B] भोजनविधि; भोजनभक्ति किधी उपरले माल, मध्याह्न काल; केलपत्रछाया इसा मंडप नीपाया; निर्मल पांणीए पखाली, आगे मेली सोनानी थाली; कीधा रंग रोला, झाजा मेलीया रूपासोनाना कचोला; तिहां बेठा बत्रीसलक्षणा पुरुष दुंदला फुंदला जाकजमाला मुंछाला, केई जमाइ केई साला, ईसा पांती बेठा राजवी ढीचाला; सुजाण सहेली लाडगहेली, जीसी देवतानारी इसि मनोहर राजकुमारी, ढलकते हाते, सोनानी जारी साथे पहली दीधाँ हाथधोवण, विनय करी लुली लुली प्रथम पिरीसे फलहली, ते कुण कुण? अषरोट चारोली केला रांयण नालेर द्राख आँबानी साख. पछे पिरीसीयां खाजा जाणे देहरांना छाजा, चिहु खुणे साजा, गरमागरम ताजा. पीछे आया लाडु, ते किसी जातीना? सेवइया कंसारीया दालीया किटीया अडदीया मगदीया केसरीया सिंहकेसरीया; इसा मोदक, राव रांणाना मनमोदक. पछे पिरसी भली फीणी, चासणी कीनी झीणी; दूधवर्णा दहीथरा, सक्करपारानी मांडी, किण मनुष्ये छांडी, इसा पुरिसीया पक्कान, [2-A] जिमवा भणी सौ थया सावधान. पछे पिरसीयो सीरो, जिमवा मन थयो [अ]धीरो; जीमणमे पुरसी लापसी, नाना मोटा धापसि; पछी आसी शाली, मंडोवरा मुंगनी दाली; बाखडी गायनो गिरत, सरहरति धार, संतोषीये जीमणहार. पछी चारु पुरसिया सालणां, ते कीसा कीसा? मुंगीया केरडा दाहलोल, काचा केला, चोलानि फली, नीला चिणां, अंबोल काचली, बावलीया करेला, वली सुंठनी पलेव, हिंगवघारी कढी, पातला तलीया पापड, तलीया नागवेलना पान, जीमता बीमणा भावे धान, विच विच

चमचमतां शाक, ऊतरे जीभदांतांरा थाक; स्वभावे शुद्ध, पिरसीया वाखडी गायना दुद्ध, कचोला भर भर गटगट पिद्ध. एक वात मानो सही, बिजी बात सर्वे रही. ताजां आणीयां दही, पछे विलंब करवो नहि. करंबा आणीया रंग रोल, झीरा-लूणवासीयो घोल, [2-B] दहीवडा बनाविया घोल, नाषीयो राई तणो झोल. हवे चलु कीजे, उत्तम वस्त्र हात लहीजे. नागरवेल पांनबीडा आरोगीजे. केसर चंदन अरगजांना छोटणा कीजे. फूलमाला कंठे ठविजे. इति.

'अहो श्यालक बोलि' वर्णक

[1-A] प्रथम रंग भरे गणनायक, वृषभलांछण फलदाइक, सकलमोदिक, मोदिकवलभं जयति विजयति गणनाइक. अहो सीआलक०

प्रथम पहिलूं रंग रंगावतार, देवी श्रीपारवती तणु पुत्र, तेत्रीस कोडि देवता तणु प्रतिहार, सींदूरइसार, सेवंत्रांभार, मोदिक आहार, एहवा एक श्रीगणेस वर्णवीता सोभइ. अहो सीआलक बोलि.

कमलभूतनया कमलासना सकलहंसमनोहरवाहना,
सकलशास्त्रविद्यागुणसारदा विजयते वदने मम शारदा.

अहो सीआलक०

सारदा सरस्वती वर्णवू, पणि कसी एक छइ जे सारदा सरस्वती ? कमलभू ब्रंह्मा तणी बेटी, कमलमुषी, राजहंसवाहिनी, अनेक-वेदवेदांकशास्त्र धरती, आयुरवेद धनुरवेद सांमवेद अथरविणत्रेद विद्या अलंकार छंद जोतिकशास्त्र, नादवीणापुस्तक धरती, एवं-वद्धि सारदा सरस्वती वर्णवितां सोभइ, अहो सीआलक बोलि.

सिद्धांतसारं दुरितापहारं सिद्धांगनामानसतारहारं ।
गुणैरपारं जितमोहमारं श्रीमंत्रसारं नित वर्णयामि ॥

अहो सीआलक०

हूं ते पंचपरमेष्ट नवकारमंत्र वर्णवूं; पणि कस्यु एक छइ जे पंचपरमेष्ट नवकार ? जिम देवमांहि इंद्र, ग्रहगणमांहइ चंद्र, नागमांहइ नागेंद्र, योगमांहइ योगेन्द्र, जे पंचपरमेष्ट माहामंत्र समरियां थिकां हूंतां राजार्थी राज पांमइ, भोगार्थी भोग पांमइ, विद्यार्थी विद्या

पांमइ, धनार्थी धनसंयोग पांमइ, जे माहामंत्र तणि प्रभावि करी डाकिणि त्रासइ, भूतप्रेत नासइ, मोगा मांन मूंकइ, व्यंतरी थानक चूकइ, सर्व रोग पलाइ, विघन विलइ जाइ; असु चंतामणि तणी परि सार, माहामंत्र नवकार, अह्मारइ कुलि वर्णवीतु सो[1-B]भइ, अहो सीआलक बोलि.

द्वीपं कुमारी नगरेश कांती सौराष्ट्रको मालव कुंकणस्य ।
कणाष्टगंगा जिन आदिनाथ देसा समग्रं अह्म वर्णयामि ॥

अहो सीआलक०

अह्मारा देसदेसाउर वर्णवू; पणि कस्या छइ जे देसदेसाउर ? आदि पहिलू गूजरात अनि देवकी भूंमि कीधी; जंबुद्वीप भरतषेत्र कुमारिकाषेत्र कासी कांती ऊजेणी अजोध्यां अमया मथुरां कनोज मालवु श्रीरंग गाजणु, लक्षणवंती दिली, नवकोटी मारूंआडि, संधु सवालक्ष, ऊच मलतांन हींदूस्थांन, देवकूं पाटण, चीण माहाचीण भोट माहाभोट संषोद्धार, एतला संजिगत अह्मारा देसदेसाउर वर्णवीता सोभइ, अहो सीआलक बोलि.

वारू सोवनमि वीटी घडावु, माणिक मोती हीरे जडावु, जु लोभ हुइ तु भंडार रषावु, नहीतरि सोवनमि वीटी प्रतक्ष अपावु, अहो सीआलक बोलि.

सासूसली आपु सोवनकेरी, हवडां नही लीजइ बीजी अनेरी, बे कर जोडी वरराज मागइ, सासूसली आपतां वार न लागइ, अहो सीआलक बोलि.

हर्षप्रदा चंद्रमुखी मृगाक्षी स्वरूपसौभाग्यगुणैर्विनीता ।
वांछाकृते कल्पलतेव लक्ष्मीः श्वश्रूः सदा मे वरराज्य शोभते ॥

अहो सीआलक०

अह्मारी सासू ज वर्णवू; पणि कसी एक छि जे सासू? सदैव हरषि गात्र, पुंनि करी पवित्र, सोल कला संपूर्ण, चंद्रमाना सरीषू मुष, मृग सरीषां लोचन, शील सोभाग्य रूप लावण्य विनयादिक गणे करी चित्त पुंन्य, मनोवांछित पूरवा तणि विषइ कलपवेलि समांन, सकल सणगार तणि विषइ सावधांन, एहवी एक अह्मारी सासू वर्णवीती सोभइ, अहो सीआलक बोलि.

चंदनभरी कचोली [भरी]यनि रंगि रोली, प्रीसइ रस घोली, हाथि लिउ पांन कु[2-A]ली, पहिरणि पीत पटुली, कांचली कांनीआली, उढणि नवरंग फाली, रूपनी चित्रशाली, अहो सीआलक०

अह्मारी सासू तणु सणगार वरणवू; पणि कसिउ एक छि जे सासू तणु सणगार? करि कंकण सोवर्णमि चूडी, रूपइ रंभा अनि रूअडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउलि हार, सरिसु मोती तणु हार, झूमणां तणु झमकार, कंठि कनकमय पदकडी, महाविगन्यांनि जडी, नाग पोलरी अनि निगोदरी, प्रमुष षीटली सहित घूघरी, इसु सासू तणु सणगार वरणवीतु सोभइ, अहो सीआलक बोलि.

हूं ते अह्मारूं अणहीलपुर पाटण वर्णवू; पणि कसू एक छि जे अणहलपुर पाटण? सघट घाटे करी विचत्र चित्रांमे करी अभिरांम, महामहोछवे भलां आरांम, पंचासर प्रमुष देवदेवाला, जे नगरमांहइ दांनशाला पौषधशाला धरमसाला, गढ मढ मंदिर प्रकार, चुरासी चुहुटांनी हटश्रेणि, मांहइ वस्त संपूर्ण वरतइ; सित द्रव्य, सहिश्र द्रव्य, लहिरि निरमल पांणि परिपूर्ण रांणीकी वावि, सहिसल्यंग सरोवर, षांन सरोवर, असिइ माहाकाव्यि करी, कीरतिथंभि करी, सारदा सरस्वती नदीए करी, देसदेसाउर वदीतूं विक्षातमांन छइ; एहवू एक अणहलपुर पाटण वर्णवीतूं शोभइ, अहो सीआलक बोलि.

धारा गिरिनगरी त्रिभोवन जांणूं, नगर अहिमदावाद पुहुवि वषांणूं,
जसराज धंना आलिमषांन, सोनी विवहारीआं लष्य यत्तूमांन.

अहो सीआलक०

हूं ते नगर अहिमदावाद वर्णवू; पणि कमूं एक छइ जे नगर अहिमदावाद? जे नगरमांहइ चुरासी चुहुटां तणी उलि, बारे दरवाजे लोहमि पोलि, जिसी रमलि कीजइ रवाडी तिसी एक भली वाडी; जेह दीठइ आणंद हूआ, [2-B] तस्या एक भला कूंआ; जे दीठइ हुइ मनोहर, तस्यां भलां भलां सरोवर; जे दीठइ पामीइ उहलास, तस्या भला आवास; साभरमती तणूं नीर, सितिरि षांन बुहुतिरि ऊबरा अनि मीर; जे नगरमांहइ सोनहटी नांणुटी दोसीहटी बुद्धिहटी, अनेक फडीआ फोफलीआ सोनार; अवरि बीजा व्यापारी तणु न जांणूं पार; एहवू एक अह्मारू नगर पातसा अकबर सहित वर्णवीतू शोभइ.

पातसा श्रीअकबर वर्णवू; पणि कस्या एक पातसा श्रीअकबर? जंबूद्वीपमांहइ प्रवर्त्तंतु छइ, अन्य पराय रांणा, मोटा मीर मलिक, माहाभड षांन, षोजा सरक्षिल साहणा, ते सघला करइ सेवा कुंजर भणीइ हस्ती, कुंभस्थलि मद झरइ; अरव छइ जे घोडा, हेरंमा हरीअडा नील नीलडा कालूंआ काजला किहाडा कोसीरा अहिठांणा पइठांणा ऊजला जीहडा सीहतंग टारतेजी तोषार तोरका हेरंमकारी गंगाजला पुरसांणी सीधूआ कासमीर कुंकणा ऊदिरा, अनेक वांनि नवनवा, नीला काला स्वेत राता पीला एहवा एक अश्व पायगि शोभता छइ, जे श्रीपातसा अकबर तणि राजि, सितिरि षांन, बुहुतिरि ऊबरा, मुगटवरधन मुडाद्धा, महामंडलेश्वर मुडाद्धा, देसदेसाउर जीपीनि आपणी आगन्या प्रवर्त्ताइ छइ; अनेक नीपजाव्यां छत्र, मेघाडंबर छत्र, सोवर्णमि छत्र, रगत रातां छत्र,

पीत पीलां छत्र, अलंब नेजा, माहा मरातप ढोल, ददांमां नीसांण सरणाई रणतूर रणकाहल नफेरी तबल अनेक भेर तणे निरघोषि करी कटक सोभतूं छइ; पातसा अकबर तणि वईसणि भलभलां नगर, देवकूं पाटण, घोघा नगर, पंभाइति नगर, भरूअच मांगलहुर जूनुगढ चांपानेर [3-A] मांडवगढ, अणहलपर पाटण, रांणपर वीसलनगर वडुदरू नडीआद्र धुलकूं धंधूकूं, तपति श्रीअहिमदावादमांहइ पातसा श्रीअकबर सोभता दीसइ. अहो सीआलक बोलि.

रसवादिनी रसवती जिवती जिनानां, माहाबलं ते सरवक राजमांना,

शषावि अह्म भोजन मांनदाता, अह्म सोभिते भोजन प्रकार नानां. अहो सीआलक०

अहमारी रसवती वर्णवूं; पणि कसी एक छि जे रसवती? माहरइ ससरइ, देवांस पुरषि, ऊपनि मालि, प्रसन्न कालि, वारू मंडप नीपाया, पंचवर्ण पटुलां, तेणे चंदरूऐ छाया, तिहां बाजोठ आडणी आडणीआ चाउरि चाकला पाटला बइसणां मंडाव्यां, बावन पलनां थाल कचोलां अणावु, साते जिगते फलहलि प्रीसावु; सातपडां पाजां, सेरीका लाडूं, जसा हुइ अनमानि गाडू, मेहलतां वाजइ, मोटइ प्रांणइ भाजइ, सेवीआ लाडूं, माठा लाडूं, मगीआ लाडूं, दलीआ लाडूं, मोतीआ लाडूं, द्राषडीआ लाडूं, दहीथरां तिलसांकली फीणा वरसोला, साकरीआ चणा, कोहलापाक, दूधपाक सेलडीपाक षरगां पाजां जलेबी हेसमी, वारू पडसूधी तणा आछा मांडा, लगार नही षांडा, राजेलां केलां, कुंकणीआं केलां, रांयण नीकोल्या, आंबा तणी कातली, प्रीसइ नारि पातली, ललकती ज वेणी, षलपंती ज चूडी, लहिकतइ ज हाथि, षांड प्रीसती ज वादइ, जमु सहूं को सवादि, भलभलां भावतां भीनां वडां, सालणि सालेवडां,

पापड नि पापडी, मू जमसि जीभ बापडी? तीषां तमतमां राईतां, मीठां मद्धुरां गल्यां तल्यां मचमचां इम्यां सालणा तणी युगति, सुगंधी दालि तणा चोषा, बिहू अणीए आषा, हसतीइ षांड्या, हरषीइ वीण्या, सरूपती रांणीइ सोहिया, अलवेसरीइ उरिया, षभितीइ चूहलि पग देई उसाव्या, असु कूर प्रीसिउ; मंडोरा मगनी दालि, पासि सालणा तणी पा[3-B]लि, ऊपरि घृत तणी नालि; हवइ कपूरवासित दही तणा करंबा, एलचीवासित पांणी, सोवनमइ भृंगार भरावु; रंग पांन, फोफल वांकडी, चेल चीगराई, मांगल्हरां पांन, इम्यां मुषवासित देवरावु; एहवी एक अह्मारी रसवती वर्णवीती शोभइ, अहो सीआलक बोलि.

श्रीसूत्रधारं घटितं प्रधानं प्रधानसारं बहु बुद्धिमानं।
मांगलिक कार्ये सकले प्रशस्यते, तं पाटवाक्यं अह्म वर्णयामि॥

अहो सीआलक०

हूं ते अहमारु चुकीवट पाट वर्णवू; पणि कम्यु एक पाट? ए चंदन-काठ किहां नीपनु? मलीआगिरि परवति, माहा मसवाडि, सुकल पषवाडि, बीज तणि दिहाडि, भलइ सूत्रधारइ मूलव्यु, च्यार वरस कलाव्यु, पांचमि वरसि प्रमांणि चडाव्यु; पीतल्मय पाईआ, रूपा तणी, पाटी, सोना तणी भमरी, ऊपरि पद्मागर रतन वइठां छि; सारूआरु घाट, नीपनु पाट, गाइ तणि गोमइ, गंगा तणि नीरि, अहिवु स्त्री पांहइ गूहली देवरावु, ऊपरि मोती तणु चुक पूरावु, अह्म वररांजेंद्र आव थिकां हूंतां इम्यां मांगलिक वरतावु, अहो सीआलक बोलि.

डावी हंस डालिं गहइगही, जिमणी भइरव भलइं गहइगही,
षर डावु हूउ तीणी वारि, शुभ शकनना करुं विचार.

अहो शालिक०

१ आ पछीनुं लखाण जुदा हस्ताक्षरोमां छे.

अह्मारुं शकन वर्णवुं; पणि किस्या छइ जे शकन ?

डावी देव जिमणी भइरव, डावु षइर डावु राजा,
डावा लाली जिमणी मलाली, तंदल भरुं भाणं,
नीरभरिं बहिढूं सवछी गाइ, सपलाणु घोडु, रासु धोरी.

एतनि प्रकारे करी अह्मारा शकन वर्णवीता शोभइ, 5

अहो शालिक बोलि.

गुजराती सुलतानोनुं प्रशास्तिकाव्य

अने

अमदावादनुं वर्णन

श्रीसरसति धुरि वीनवउं, मागुं बुद्धिप्रकाश,
अहमद गुण वक्खाणतां मझ मनि पूजउ आस. १

दिन दिन दीसई दीपतउ मलिक मीर कोटिर,
श्रीअहिमद आणंदकर सोहइ साहसधीर. २

सोहइ सोहइ साहसधीर, बुद्धिहिं बावनवीर,
सोवनवन सरीर सुंदरतरो;
अति जाणइ समरकल, रमइ छइल छल,
भटि भांजई परदल चतुर नरो. ३

इह उदयउ अविनपाल, अतुल बल विशाल,
मोटिममल मूंछाल महिमधरो;
कवि कहइ सुजस, सद मलिक श्रीअहिमद,
दलइ दूजणमद सुहडवरो. ४

युद्धकलारसि रंजिउ श्रीमहिमुद सुरताण,
मनशुद्धई मानइ घणउ, आपइ अति बहुमाण. ५

आपइ अति बहुमाण, महिमुद सुरताण,
भूपति भुजप्रमाण रंजति मणं;
ढमढमइ ढोलनींसाण, पडइ कायर प्राण,
सुहड युगतिजाण चतुरपणं. ६

मनि मेल्हिय मरट माण, अरिअण मानइ आण,
करइ तुझ वखाण सुपरिकरो; कवि कहइ० ७

तुझ सेवक सूरा सवे बंधइ टोडरमाल,
भाले भल फूंमत घणां, घोडे घूंवरमाल. ८

घमघमइ घूघरमाल, घोडे झाकझमाल,
सोहइ करि करवाल तुज्झ घणं;
खल कुरंगग्रहण पास, अरिघरि पाडइ त्रास,
पूरइ सुजणआस, सगण भणं. ९

रणि हणिअ चरड यूथ, टालिय सयल दूथ,
कीधउं सगले सूथ, आणंदकरो; कवि कहइ० १०

सज्जन सवि संतोषीइ, मेहिल्या दुज्जण मोडि,
गरुआ गढ लीधा घणा, जित्त पवाडा कोडि. ११

जीती जीतीय पवाडा कोडि, किहांइ न आणी षोडि,
सेव करइ करं जोडि भूपति भरो;
गज तुरिय न लाभइ पार, सधर सुहड सार,
छाजति अवनिसार तुज्झ करो. १२

रूपिइं राजन जिसिउ मदन, मानिनी मनजीवन,
सुअणजणरंजण सहसकरो; कवि कहइ० १३

सबल दान बहुमान कणय कब्बाहि समप्पइ,
हेलां हयवर कोडि जोडि मग्गण थिर थप्पइ;
वसुहां वर वड वीर धीर, दुज्जणजणगंजण,
सुभटपणइ सुरताण श्रीय महिमूद मनरंजण;
समरथ सूर तोगां बदिरसुत अहिमद आणंदि मिल्हई,
दुत्थिय दुक्ख आरति टलइ, सयल सिद्धि वंछित फलइ. १४

सबल लोह सन्नाह, सबल घोडे असवारह,
गज्जइ गयघट गुडिय पवर पायक नवि पारह;
सधर जोड हथिआर सार समरंगणि सज्जिअ,
पंचशबद वाजित्र घाइ नीसाणे वज्जिअ;
मोटिम्म मेरु मलिकह मुकुट श्रीअहिमद उद्दम दमइ,
अरिमुंड दंडा ऊछालतउ असि गेडी रामति रमइ. १५

इति छंदांसि ॥

विराजते श्रीमहिमूदराजाधिराज एषः प्रभुतां दधानः ।
दुर्व्वारवैरिप्रकरस्य जेता वेत्ता च शास्त्रस्य जनस्य नेता ॥

अहो वर, जिनधर्मधुरंधर ! सांभलि, राजाधिराज श्रीमहिमूद पातसाह वर्णवउं. किसा एक जे छइ राजाधिराज श्रीमहिमूद पातसाह ? षान षोजा मलिक मीरुंबरा मलाणा सहणा सलेदार तेहि करी सेवायमान; मदवारि झरता, तिहां भमरा रणझणता, सारसी मूंकता, कल्लोल करता, इस्या एक जात्य हस्ती; अनइ कालुआ किहाडा किसोयरा गंगाजला हंसला नीलडा हरीअडा कछेला भुंगरा इस्या तुरंगम; अनइ अश्वरथ, वृषभरथ, अनइ इक सुवर्णमय रूपमय रसित विविध प्रकारि जे छइ पालषी, चकडोल, अनइ तरुआरि स रमता, भाला ऊछालता, हाकहीक करता एहवे पायके परिवारिउ; छत्र धरातइ, चमर वींजातइ; नफेरी सरणाइ बरगां ढोल झालर डुंडि दमामां दडदडी मृदंग नींसाण प्रमुख वाजित्र वाजइ, तेणइ आकाश गाजइ अहंमदावाद नगरमाहि; किसिउं अहंमदावाद नगर ? गढ मढ मंदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ षाइ आराम वनषंड बिभुंइआ त्रिभुंइआ आवास, चउरासी चहुटां, तिहां व्यवहारिआनी गजघटा; श्रीमाली पोरुआड ओसवाल गूजर कहोल वाइडा हुंबड मोढ, लाडुआ श्रीमाली, अडालजा, पोरुआ प्रमुख चउरासी न्याति; बांभण वाणीआ कुलबी पडिल तुरक तेली कोली

प्रभृति अढार जाति, च्यारि वर्ण तेहि करी सश्रीक इसिआ एक अहंमदावाद नगरमाहि चतुरंग कटक चालतइ, तेहनइ भारि सेषनाग हालतइ, तुरंगमि चडिउ, लोकि तरवरिउ, सत्तरि सहस्स गुजरातनु धणी, जुनुगढ चांपानेर प्रमुख विषम गढ लीधा, मनवंछित काज हेलां सीधा, सघला राजा आण मनाव्या, सेव कराव्या, इसिउ एक राजाधिराज श्रीमहिमुद पातसाह वर्णवीतउ शोभइ, अहो श्यालक बोलि.

फूलभरि अंबर शेष, शेष अहिंदर नीसाउरि,
पुप्फदीन मूलताणि, शेष जक्खा भट्टाउरि,
आउचउद्धाजे (?)फरीद जंगां लीलाहरि,
ढीली जि शेष ते नाम पीर जंपइ हमीरहरि;
अचलीआ जि शेष रुकमदीन शेष षट्टु भोजालीआं,
गढ उच्च शेष दीठा सवे, बरकति शेष जवालीआं. १

जे नितु रोजु करइ, नितह निम्माज गूंजारइं,
पंच वषत समधरइं धणी जे एक संभारइं,
त्रीसइं रोजां धरइं, दोस विण जीव न मारइं,
अवर उरति परिहरइं, क्षत्रि संग्रामि न हारइं;
दिइ दान जिमणइं करइं, साहिब्ब सेव सच्ची करइ,
कुराण न्याइं पेषि चलइ, सो मुशलमान भस्त जि वरइ. २

पंच वषत निम्माज ताज कुलहराह सोहइ,
पोजा षान वजीर मलिक उंबरे मन मोहइ,
हाथी तुरिय तुषार षार अरिअण ऊतारइ,
वज्जइ ढोल नीसाण आण जगि सघले जाणइ,
एकवीस छत्र चामर ढलइ, छपन कोडि लक्ष्मी वसइ,
पातसाह मदाफर टोडरमल्ल रंगि रूपि रूअडइ हसइ. ३

इति छंदांसि ॥

[११]

हस्तिवर्णन

अथ हस्तिवर्णनं; आलानस्तंभ मोडी, निवड लोह तणी शृंखला तोडी, पुंतार पाडी, कपाटसंपुटु फाडी; पडिहारु गांजी, चरणसंबंधीयां त्रिगडां भांजी; वरंडा पाडतउ, माणस मारतउ, राउत रसाडतउ; अटाल टलवलावइ, हाटु हलहलावइ, आराम उन्मूलइ, ऊभां मनुष्य ऊलालइ, क्षत्रिय खलभलावइ, खंडगृह षडहडावइ, धवलगृह धंधोलइ, तरल तुरंगम त्रासइं, नाइका नासइं, इसु मूर्तिमंतउ कृतांतु, महाकाय पर्वतप्राय, सप्तांग मदप्रतिष्ठितु, देवताधिष्ठितु, त्रिदंडगलितु, सारसी करतु, मदप्रवाह झरतु हस्तिराजु निर्व्याजु, कृष्णवर्णु सूर्पमानकर्णु, लीलां सांचरइ, जयश्री वरइ, शत्रुवर्गु दलइ, परमानु मलइ, कोपि बलइ; महीतलि चालतउ, मेघ जिम गाजतउ, इसिउ हस्तिराजु चाल्युं.

इति हस्तिवर्णनं ॥ छ ॥

परिशिष्ट १

प्रयागदासकृत

कपडाकुतूहल

[12-B] ॥ दे० ॥ अथ कपडाकतूहल[1] लख्यते[2] ॥

जरदोजी जांमो वण्या[3], पाटु सुथन[4] पाइ,[5]
साहिब घरें[6] पधारीया, सो गल[7] वलगुं[8] जाइ.[9] १

कंचू[10] नीलक को कीयो, उपरि चीर उढाइ,
लिंघो[11] लुंगी[12] भाति[13] को सुंदर नें बहोत[14] सुहाय. २

अतलस अति सोभा दीइं,[15] पहरी[16] पीया[17] कें[18] अंग,
सुंदर उभी मोहलमें[19] स्ये परि[20] घणी[21] सुचंग. ३

कंत बहोत कर[22] रींझींआं[23], सुंदर सुं[24] सुष जाण,[25]
कांमणि उभी मोहलमइं,[26] सोदे[27] दुमामी आण.[28] ४

पीउ कें[29] पेहरण बासतो, केसर अंग लगाय,
चोरस पहिरु[30] गुलाब को,[31] चल्यो सुंदर के[32] जाइं.[33] ५

---

१ कपडारा दुहो. २ लषते. ३ बण्यो. ४ सुथण. ५ पाय. ६ घरे. ७ गले; तेनी पहेलांनो 'सो' शब्द बीजी प्रतमां नथी. ८ बिलगुं. ९ जाय. १० आ पंक्ति बीजी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'कंचुली को लेगो कीयो, उपर उढायो जाय.' ११ लेगो. १२ लोगी. १३ बण्यो. १४ बहुत; आनी पहेलांनो 'नें' बीजी प्रतमां नथी. १५ दिये. १६ पहर. १७ पिया. १८ के. १९ महिल मे. २० उपै; तेनी पहेलांनो 'स्ये' बीजी प्रतमां नथी. २१ घणो. २२ करा. २३ रीझयो. २४ 'सुं' बीजी प्रतमां नथी. २५ जांन. २६ महल मे. २७ सुंदर. २८ आन. २९ पिया कै. ३० पहेर. ३१ की. ३२ पै. ३३ जाय.

रमें[1] सब कामणि, गावइं गीत विलास,
साडि[2] पहिर[3] अटायणरी,[4] आवी[5] प्रीतम पास. ६

जरकसी[6] जामो[7] [13-A] कीयो,[8] लेहस्यां[9] पाग[10] बणाय,[11]
सुंदर[12] श्रावण त्री जसी, सो गलें वगी जाय. ७

थरमो[13] थिरक्यो[14] अंग परि[15] डगली[16] आवी[17] दीय,[18]
ठाढो[19] बाजें[20] हो प्रीया,[21] तो लीजें[22] अंग[23] लगाय. ८

कसबी कणो बनाय[24] के[25] अवर[26] केसरी पाग,
बरिहण के[27] घरि प्रीउ[28] गयो, ओआकें[29] माथे भाग.[30] ९

साहिब परणी प्रीत[31] सुं, साचो[32] मो सुं भाव,
मो सु गणीरा साहिबा, वेग[33] पटोली लाव.[34] १०

मुलमुल मुहुंगा[35] मोल की,[36] ताको बागो कीन,
सुंदर आवी सामहि,[37] पीउ[38] केंडि[39] कर लीण.[40] ११

पीतम[41] पोढ्यो[42] मेहलमें,[43] दिउं[44] ऊलंभो जाइं,
भेरु में[45] बहु भांति[46] हइं,[47] सो[48] देज्यो मूझ ल्याइ. १२

---

१ आ पंक्ति बीजी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'गोरी रमै कांमनी, गावे गोर ज गीत.' २ साडी. ३ पहर. ४ अटांण की. ५ बीजी प्रतमां आ चरण नीचे प्रमाणे छे: 'आवे पिया कर प्रीत.' ६ जरकस को. ७ जांमो. ८ बण्यो. ९ केसर. १० पाघ. ११ बणाय. १२ आ पंक्ति बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे छे: 'सुंदर सावण ति जसी, गलै बिलंगी जाय.' १३ थीरमो. १४ थरक्यो. १५ पर. १६ देषत. १७ आवे. १८ दाय. १९ ठंडज. २० बाजे. २१ पीया. २२ लीजे. २३ कंठ. २४ बणाय. २५ कर. ३३ बेग. २६ ओर. २७ विरहन कै. २८ पीउ. २९ वाकें. ३० भांग. ३१ परीत. ३२ बीजी प्रतमां आ चरण आ प्रमाणे छे: 'साहबय साचो मोहि सुहाय.' ३४ ल्याय. ३५ मुंहगा. ३६ को. ३७ साहिबा. ३८ पिया. ३९ पकर. ४० लीन. ४१ परीतम. ४२ पोढ्या. ४३ महिल मे. ४४ बीजी प्रतमां आ चरण आ प्रमाणे छे: 'दिवलो दीयो संजोय.' ४५ मे. ४६ भांत. ४७ हे. ४८ बीजी प्रतमां आ चरण आ प्रमाणे छे: 'दीजे मूझ कुं सोय.'

मछीपट्टण [13-B] मनभावतो, कांचु[1] दियो[2] सिवाइ,[3]
प्रीतम[4] पोढे[5] पिलंग[6] परि,[7] सुंदर ढोलें[8] वाइ[9]. १३

मिसंजर[10] के मिस मन भयो, पीउ जो लाय बुलाय,
मोल मुहेंगो थें लीयो, सो माहरे आवी दाय. १४

तनसुष[11] की साडी वणि,[12] कांचू[13] बन्यो[14] सुचंग, 5
रतनजडित का[15] बेहरषा,[16] सोभत[17] सुंदर अंगि.[18] १५

षासो षासी नारी हथ,[19] पिउजी[20] दीधो[21] लाय,[22]
सुंण[23] सुंदर[24] साहिब कहें,[25] सो[26] मेलो आघो जाय. १६

पाग[27] बिण[28] प्रीतम कहें,[29] तपई[30] सूथण पाय,
वागो[31] कीनो[32] अरगजो,[33] सुंदरनें[34] बहोत सुहाय.[35] १७ 10

सूप रूप[36] मनभावतो, सुंदरि[37] रही[38] रीसाय,[39]
साडि[40] करि[41] केसरि,[42] पिउजी[43] लिं[44] मनाय. १८

लषारस में[45] लषगुणी,[46] भाति[47] बो[त][48], दिसंत,[49]
सुणि[50] की ता कामणि कहें, सो माणें ऋित वसंत. १९

---

१ कंचू. २ दीयो. ३ सिवाय. ४ परीतम. ५ पोढ्यो. ६ पलंग. ७ पर. ८ ढोले. ९ बाय. १० बीजी प्रतमां १४मी कडी नीचे प्रमाणे छे:

मंसंजर मनभावतो, ऐसे पीया मु लाय,
मोल मोहगो नु मिलै, आवे माहरे दाय.

११ तनसुषी. १२ बनी. १३ कंचुं. १४ बणो. १५ को. १६ बेहैरषो. १७ सोहे. १८ अंग. १९ नार कुं. २० पीया ज. २१ दिधो. २२ ल्याय. २३ सुणी. २४ सूंदर. २५ कहे. २६ बीजी प्रतमां आ चरण आ प्रमाणे छे: 'ईम लेई दीधो जाय.' २७ पाघ. २८ बनी. २९ तणी. ३० तपाई. ३१ बागो. ३२ सोहै. ३३ अंग पर. ३४ 'नें' बीजी प्रतमां नथी. ३५ सोहाय. ३६ श्रीसाप. ३७ नारी. ३८ रहि. ३९ रिसाय. ४० साडी. ४१ कीधी. ४२ केसरी. ४३ सुंदर. ४४ लै. ४५ मैं. ४६ लाष गुण. ४७ भांतां. ४८ वहोत. ४९ दीसंत. ५० आ पंक्ति बीजी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'सुणी कामण कहे माणि षरि बसंत.'

टुकडी[१] रूपईआ गज तणी, सुंदर रहें नु सुहाय,
पितम महुगा मोलरी, सो दियो मुझ ल्याय. २०

साल्[२] सूंदर के[३] बन्यो,[४] जेहड वाजइत[५] पाइ,[६]
केसरी[७] भरियो[८] वाटको, ले[९] करी पीऊ[१०] पें[११] जाइ.[१२] २१

वरसाल[१३] बहु[१४] भाति[१५] हे, भीजतो[१६] घरि[१७] आय,[१८]
मो सु गणिरा[१९] साहिबा,[२०] दो[२१] दुमेंण्या[२२] ल्याव. २२

जांमसाई साडी वणी, मोती हार बनाय,[२३]
गवर[२४] रमें[२५] करि[२६] कामनी, चली पिउ[२७] पे जाइं.[२८] २३

मुगपटण[२९] मनभावतो, कंता केसरी[३०] पाग,
जिणि[३१] कैइसो पिऊ छइ, ता सुंदर को भाग. २४

चून[14-A]डी[३२] सूप बनाय कइं, सज्जन वंछित सिणगार,
कांमणि[३३] चाली कंत[३४] पें,[३५] गलें[३६] मोहल[३७] हार. २५

---

१ वीसमी कडी बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे छे:

टुकडी राची रंग पर, प्रीतम मोल मंगाय,
रतनजडत कांचू बण्यो, दीजे मुझने लाय.

२ सालु. ३ सुंदर के. ४ वनो. ५ वाजत. ६ पाय. ७ केसर. ८ भरीयो. ९ चली; पछीनो 'करी' शब्द बीजी प्रतमां नथी. १० पिया. ११ पे. १२ जाय; २१मी कडी पछी बीजी प्रतमां नीचेनी पंक्तिओ छे:

कंचू कीधो तासतो, कामनि मन हरषंत,
मेमत सुणि सुंदर कहे, षेलो रत बसंत.

१३ बरसाले. १४ वहु. १५ भांत. १६ भीजतो. १७ घर. १८ आव. १९ गणीरा. २० साहबा. २१ मोह. २२ दुदामी. २३ वनाय. २४ गोरी. २५ रमे. २६ सब सव. २७ पिया. २८ आय. २९ मुंगीपटण. ३० केसर की. ३१ बीजी प्रतमां आ चरण आ प्रमाणे छे: 'तन की आसा पुरि हे.' ३२ आ पंक्ति बीजी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'चूनडी तो चोषी वनी, सिर्झी सोलै सिणगार.' ३३ कामणि. ३४ पिउ. ३५ पे. ३६ गल. ३७ मोतन को.

जांमो[१] जामावाडि[२] को, पिउ[३] पेहरिं[४] घरि[५] आइ,[६]
दुलहण[७] मनि[८] आणंद भयो, दुसमण[९] दुष पाइ.[१०] २६

सुणि सुंदरि[११] साहिब कहें,[१२] याछे[१३] रेणइ[१४] सिवाय,
कंचु मुलताणी[१५] तणो पेहरयो[१६] सोहत[१७] षुसि. २७

ताषो आषो लावयो[१८], कामण[१९] प्यारा[२०] कंत, 5
मोल मुहगो[२१] मनि[२२] समो, सोक्युं[२३] रहें[२४] निरषंत. २८

सुंदर उढइ[२५] चोरसो, लगो छति सुं आइ,[२६]
अरसपरस[२७] होइ पोढसुं,[२८] कुउं[२९] वाजसि[३०] वाय. २९

कचियो प्रेम[३१] पिछेंवडो,[३२] किधी[३३] सेज तीयार,
गोवर[३४] रमे मंदिर गई, पिउ माणि तिण वारि. ३० 10

प्रिराग[३५] गंगदाससुत[३६] नगर ऊदयपुर[३७] वास,
कपडकतूहल किध[३८] तिण देवीहंदे दास.[३९] ३१

---

१ जामो. २ जामावाड. ३ पिया. ४ पहेर. ५ घर. ६ आव. ७ दुलहनी. ८ मन. ९ दुसमन; ए पछी बीजी प्रतमां 'तव' छे. १० पाय. ११ सूंदर. १२ कहै. १३ आछो. १४ वेति. १५ मुलतांनी. १६ पहिरण. १७ बीजी प्रतमां पंक्तिना छेल्ला बे शब्द 'मुझ सुहाय' छे. १८ लावज्यो. १९ कांमी. २० पीयारा. २१ मोहगो. २२ रे. २३ करि. २४ हिये. २५ ओढै. २६ आय. २७ आप सरीसो; पछीनो 'होइ' बीजी प्रतमां नथी. २८ उडसे. २९ जब. ३० वाजे; पछी बीजी प्रतमां 'सीतल' शब्द छे. ३१ परेम. ३२ पछेवडो. ३३ बीजी प्रतमां आ चरण आ प्रमाणे छे: 'दीधो पिया सीवाय.' ३४ आ पंक्ति बीजी प्रतमां आ प्रमाणे छे: 'गोरीरो मन उमहै, पिया आवणकी बार.' ३५ पिरयगदास. ३६ गंगादाससुत. ३७ उदेपुर. ३८ 'किध तिण'ने बदले 'जिन कह्यो' ए प्रमाणेना शब्द बीजी प्रतमां छे. ३९ आनी पछी बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे एक कडी मळे छे:

कपडबतिसी कव कही, पीउ प्यारीह तआंण,
सुंदर रीझी पिउ परे, असे कर नव वषाण.

इति श्रीकपडाकुतूहल संपूर्ण, श्रीरस्तु। श्रीराधनपुरे वास्तव्यमिति, श्रीआदिनाथ प्रसादात् ॥[1]

['कपडाकुतूहल' हस्तप्रतना पृष्ठ 12-B पर, ५ थी ११ पंक्तिओनी डाबीजमणी बाजुओए लीटी दोरी पाडेलां खानांमां नीचेनां वस्त्रोनां नाम लखेलां छे :—

"जरदोज कसबी मुंगीपटण तपई अतलस मुलमुल जामावाडि लषारस बासतो मछीपटण तापो सालू जरकसी दुमेणां कचीयो तनसुष नीलक पटोली सुप चुंनडी अटांयण मीसंजर तासतो चोरसो."

आ ज हस्तप्रतना पृष्ठ 13-Aना पद्यबन्ध लखाणनी डाबी-जमणी बाजुओए लीटी दोरी पाडेलां खानांमां नीचेनां वस्त्रोनां नाम लखेलां छे :—

"मुलताणी तापो मछीपटण तासतो टुकडी दुमैंणां बासतो मीसंजर भेरू तनसुष चोरसो अटायण दुमांमी सालु जरकसी कचीयो चुंनडी जामसाइ मुंगीपटण जामावाडि सुप लषारस षासो तपई थिरमो कसबी पटोलि मुलमुल."]

['कपडबत्तीसी' हस्तप्रतना पृष्ठ 2-A नी जमणी बाजुए लीटीओ दोरी पाडेलां खानांमां नीचेनां वस्त्रोनां नाम लखेलां छे :—

"षासो टुकडी जामसाइ मुलतानी तपाइ सालु मुगीपटण तापो श्रीसाप तासतो चुनडी चोरसो लाषारस दुदामी जामावाड कचीयो."]

---

१ बीजी प्रतनी पुष्पिका आ प्रमाणे छे: 'इति श्रीकपडबतीसी संपुरण; लीषतं गुलाबचंदरी, गणोद मधै' ॥

परिशिष्ट २

क्रयाणक-वस्त्र-आभरण नामावलि

[I-A] ॥ ई० ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥

कस्तूरी १, कपूर २, केसर ३, लोबान ४, अंबर ५, कपूरकाचरी ६, गहूला ७, अगर ८, मलयागिरुं ९, कालुंबरी १०, अफीण ११, सिलाखल १२, सूकडि १३, छड १४, छलीरु १५, नागकेसर १६, तगर १७, ब्राह्मी १८, मरकोश १९, चालउ २०, अषोड २१, पेस्तां २२, तज २३, तमालपत्र २४, उपलोट २५, नषलउ २६, रोठां २७, षारिक २८, टोपरां २९, द्राष ३०, साकर ३१, चारुली ३२, बदाम ३३, जरगोजां ३४, अजमो ३५, सूआ ३६, जीरुं ३७, वेसण ३८, विरहाली ३९, हलद्र ४०, मिरी ४१, बाउली गुंद ४२, गोखरू ४३, सूंठि ४४, असेलीउ ४५, सरसिव ४६, जाइफल ४७, जावित्री ४८, लवंग ४९, एलची ५०, कउचां ५१, पडवास ५२, मायां ५३, फटकडी ५४, बलबीज ५५, संकोरांणे ५६, धावडी ५७, विडंग ५८, पींपरि ५९, मेथी ६०, पींपलीमूल ६१, काथउ ६२, हूंसि ६३, हूंबेर ६४, सांष ६५, उटींगण ६६, समुद्रशोष ६७, तेजबल ६८, महाबल ६९, साटहडी ७०, अजमोदि ७१, षुरासाणी अजमो ७२, जवानि ७३, चीतरु ७४, गोरोचन ७५, निसोत्र ७६, मोथि ७७, गलो ७८, कचूरो ७९, अरडूसो ८०, कलिंजर ८१, धमासउ ८२, आमलां ८३, बहेडां ८४, हरडइ ८५, सोरठी ८६, नेपाला ८७, आकलकरो ८८, चीणीकबाबां ८९, खसखस ९०, कमलकाकडी ९१, झायफ[I-B]ल ९२, प्रियंगु ९३, त्राहिमाण ९४, जवासउ ९५, क्रियातुं ९६, भारिंगी ९७, चवक ९८, काकडासींगी ९९, वज १००, अतिबल

१०१, खयर १०२, कूमठउ १०३, देवदारु १०४, दारु हलद्र १०५, वंसरोचन १०६, बेरजओ १०७, कडू १०८, एलीओ १०९, चोल ११०, सिहाली १११, षेरु ११२, सोनहली ११३, आसंधि ११४, षारु ११५, महामेद ११६, चंपावित्री ११७, लोह ११८, अभ्रक ११९, सीसूं १२०, तरुउं १२१, लोध्र १२२, चमेड १२३, मोरथुथुं १२४, षापरीउ १२५, हेमज हरडइ १२६, बोल १२७, सरमउ १२८, कालउ सरमउ १२९, रसांजण १३०, सुहागउ १३१, हींगलो १३२, जेठीमधु १३३, सारवा १३४, कंपेलउ १३५, मूर्वा १३६, तवषीर १३७, मींढी आउलि १३८, विमलउ १३९, गज पींपरि १४०, एरंडीमूल १४१, बीलीमूल १४२, बीजोरीमूल १४३, गिरिमालउ १४४, एरंडी १४५, कनकफल १४६, मोचरस १४७, पुष्करमूल १४८, इंद्रवारणी १४९, कडउ १५०, वाकुंभउ १५१, मरडासींग १५२, चंद्रोस १५३, कांकसीबीज १५४, मूलाबीज १५५, गंधक १५६, गडीउ १५७, आलमसारु गंधप १५८, चिणोठी १५९, पातालगुंद १६०, लांबीगुंद १६१, कालउं जीरुं १६२, बोदारसींग १६३, दषूण १६४, दाडिमसार १६५, पाढ १६६, नवसार १६७, सूरो षार १६८, फटकु षार १६९, ऊसीर १७०, पदमष १७१, फलीउ सींधव १७२, बिड लवण १७३, काच लवण १७४, सुंचल १७५, समुद्र लवण १७६, जवषार १७७, तालीस १७८, पलास पापडउ १७९, कांकणी १८०, [2-A] घसीउं सींधव १८१, सीसप १८२, बहुफली १८३, सादडीउ १८४, रेडक १८५, पीत पापडउ १८६, सिवनिटींडूं १८७, पाडल १८८, अरणी १८९, बीलीछालि १९०, सरसछालि १९१, रोहिणिछालि १९२, लींबछालि १९३, आमलवेतस १९४, पटोल १९५, इंद्रजव १९६, साजी १९७, रोहीस १९८, वांसगांठि १९९, रासनां २००, सताउरि २०१, कंठासेलीउ २०२, राल

२०३, योगिनी २०४, पसारणी २०५, कालिंद्री २०६, पहाणविष २०७, वरधारु २०८, नाकछींकणी २०९, मीण २१०, मरिच २११, कंकोल २१२, मालकांगणी २१३, बेरजी २१४, भस्पति २१५, करमाणी २१६, अजमो २१७, कसेलउ २१८, बालबिल्ल २१९, ईसपन २२०, भांगि २२१, भीलामां २२२, मालवणि २२३, बाबची २२४, इंगोरां २२५, सींघोडां २२६, लसण २२७, बोदारसींग २२८, गूहीउ देवदार २२९, केचेलां २३०, कचेरो २३१, कालुं बाबरुं वीओ २३२, मरुउ २३३, नाहि २३४, छूमारु २३५, फारु २३६, गाजरबीज २३७, वाजी २३८, गिरिणीबीज २३९, सरघूबीज २४०, महिंदी २४१, उस्नान २४२, तरण २४३, पाषाणभेद २४४, संखाहूली २४५, लाष २४६, षडी २४७, बीलीकंटक २४८, सींबलीकंटक २४९, समुद्रफीण २५०, मींडहुल २५१, मेदनीउ २५२, ऊंधाहूली २५३, आकूलां २५४, जरहर २५५, उसीर २५६, काली मूंसली २५७, हाथाजोडी २५८, हरियाल २५९, भेलषी २६०, भूतकेसी २६१, मणसिल २६२, हीराकसी २६३, समरहठी २६४, इसपगुल २६५, अपामार्गी २६६, बोडी जवासी २६७, ऊभी रींगणी २६८, रुद्रज[2-B]टा २६९, मयूरसिखा २७०, मेद २७१, मरडासींग २७२, खीरकंड २७३, राजहंसी २७४, दसमूल २७५, सलेमानी २७६, षारेक २७७, कुंकणां केकलां २७८, मडावा २७९, चोल सोपारी २८०, चीगरां सोपारी २८१, गुलजीभी २८२, दूधेली २८३, भांगरो २८४, वेऊ २८५, आगीउ २८६, करंजबीज २८७, बांबि २८८, सुरभि २८९, सोवनमुषी २९०, आसंधि २९१, नगोडि २९२, रतांजणी २९३, कडाहीआं २९४, वेकरीउ २९५, मारिउं त्रांबूं २९६, लोहवंग २९७, चरणमूल २९८, महूडां २९९, गूंदीछालि ३००, जांबूछालि ३०१, महूसार ३०२, वडछालि ३०३, पींपलछालि

३०४, आंबिलीछालि ३०५, अशोकछालि ३०६, पोस्त ३०७, जाइपान ३०८, लींबूईपान ३०९, वउलसिरी ३१०, अरीठा ३११, डोडीपान ३१२, कुठिपान ३१३, धवीउ गुंद ३१४, आदनी गुंद ३१५, कतीरु गुंद ३१६, खयरी गुंद ३१७, खयरसार ३१८, सुवर्ण्ण ३१९, कांसूं ३२०, जसद ३२१, लोहडु ३२२, रूपुं ३२३, प्रवालू ३२४, मोती ३२५, चोष ३२६, मरुउ ३२७, सणबीज ३२८, भींडीबीज ३२९, पत्रजीवा ३३०, कांगफल ३३१, मांगफल ३३२, निशासू ३३३, तूरी ३३४, शंषदराज ३३५, फरफराणि ३३६, गउल ३३७, षजूर ३३८, षांड ३३९, हींग ३४०, अघाडो ३४१, कुंदरुगुंद ३४२, नीनोरीआं ३४३, वछनाग ३४४, लोकनाथ रस ३४५, अहिषरु ३४६, दांति ३४७, हरडां ३४८, कोठवडी ३४९, चित्राछालि ३५०, केसु फूल ३५१, कंकोल ३५२, मोहेरु ३५३, सहदेवीमूल ३५४, गिरणीमूल ३५५, सालवनी ३५६, पीठवनी ३५७, कोबो ३५८, खुरासाणी ३५९, ओवि विजय ३६०.

इति त्रण्यसय साठि क्रयाणकानि संपूर्णानि ॥

अथ वस्त्राणि: [3-A] देवदूष्य, १, देवांग २, चीनांशुक ३, पट्टदुकूल ४, नीलनेत्र ५, वायंगणनेत्र ६, पांडूअ ७, पट्टहीर ८, पट्टसाउलि ९, पंचराइआ १०, नर्मखर्व ११, फूलपगर १२, जादर १३, नेत्रपट्ट १४, धौतपट्ट १५, राजपट्ट १६, गजवडि १७, सुवर्ण्णवडि १८, हंसवडि १९, कालपडि २०, भुहचिआं २१, पट्टकूल २२, पट्टहीर २३, साडी २४, घाटडी २५, चीर २६, कमषा २७, अतलस २८, लाहि २९, जादर ३०, क्षीरोदक ३१, षाराचीनी ३२, शणीआं ३३, गुआकरी ३४, आगराइ ३५, शणकी ३६, मिश्रू ३७, तास्ता ३८, जरबाप ३९, मुखमल ४०, कफइ ४१, कथीपा ४२, मसंजर ४३, अतलस पापडी ४४, पामरी ४५, कसबी वस्त्र ४६, पीतांबर ४७, शिरबंध ४८,

नरमो साल्हू ४९, भयरव ५०, अटाणषासा ५१, श्रीसाप ५२, श्रीबाप ५३, मलमलसाही ५४, दुपटा ५५, अधोतरी ५६, समीआणी ५७, टूकु ५८, भरूची बास्ता ५९, महिमुंदी धटी ६०, पटी ६१, छायल ६२, नारीकुंजरा ६३, साडला ६४, छींट ६५, चादर ६६, चोरसादिक ६७, रत्नकंबल ६८.

इत्यादिक व[3-B]स्त्रनामानि ॥ छ ॥

अथ आभरणनामानि; मुकुट १, कुंडल २, हार ३, अर्द्ध-हार ४, बाजूबंध ५, बहिरषा ६, त्रिसर ७, चतुःसर ८, षट्सर ९, अष्टसर १०, नवसर ११, अढारसर १२, एकावली १३, कनकावली १४, रत्नावली १५, मुक्तावली १६, वज्रावली १७, हीरावली १८, प्रवालावली १९, सूर्यावली २०, चंद्रावली २१, नक्षत्रावली २२, श्रोणिसूत्र २३, कटिसूत्र २४, रसना २५, मुकुट २६, पट्टशिषर २७, चूडामणी २८, चिंतामणि २९, कुंडल ३०, कटक ३१, कंकण ३२, अंगद ३३, मुद्रानंदक ३४, दस-मुद्रक ३५, मुद्रिका ३६, अंगुलीयक ३७, हस्तांगुलक ३८, कदंब ३९, पुष्पक ४०, तिलभंगक ४१, कर्णपीठ ४२, चक्रक ४३, अजर ४४, मेष ४५, मुदक ४६, संकल ४७, विशिष्ट मौक्तिक-भंग ४८, उत्तेरिका ४९, कर्णपालिका ५०, संकपालिका ५१, पदक ५२, ग्रैवेयक ५३, हेमजाल ५४, मणिजाल ५५, रत्नजालि ५६, गोपुच्छक ५७, उरस्त्रिक ५८, मर्मक ५९, वर्णसरिक ६०, पदकडी ६१, हांस ६२, झां[4-A]झर ६३, नेउर ६४, सांकलां ६५, ग्रैवेयक ६६, पागडां ६७, वींछीया ६८, अंगूथली ६९, वाला ७०, झालि ७१, झूमणां ७२, रूपालहिरियां ७३, राषडी ७४, फूली ७५, सींथो ७६, चाक ७७, षींटली ७८, त्रोटी ७९, त्रिसंथिउं ८०, कर्णाभरण ८१, कडी ८२, मुरकी ८३, दर ८४, गंठोडां ८५, तुंगल ८६, चंपकली ८७, मौक्तिक-

सर ८८, गांठिआ ८९, बरघली ९०, पूंछिआ ९१, सरलीआं ९२, गलसिरी ९३, टीलां ९४, टीली ९५, चांदला ९६, आडि ९७, नवग्रह ९८, मूंद्रडी ९९, अंगूठी १००, वेढ १०१, वींटी १०२, करजालउं १०३, मादलीआं १०४, मउड १०५, नाक-
5 फूली १०६, अकूटा, १०७, नाग १०८, नागला १०९, नगोदर ११०, आंजणां १११, उगनीयां ११२, सींदूर ११३, कुंकुम ११४, रोला ११५, वांकडा ११६, छरीटीआं ११७, घूघरा ११८, जवईयां ११९, वलीयां १२०, चूडी १२१, चूडला १२२, कांकणी १२३, लालि १२४, वेढला १२५, गोफणा १२६,
10 मेषला १२७, असाबउ १२८, वांकडां १२९, वांकडी १३०, हथसंकली १३१, सांकलां १३२, सोनालहरीयां १३३. अंगूठी १३४, तावीतो १३५, [4-B] दोरो १३६, कडलां १३७, कटि-मेषला १३८, कणदोरा १३९, कडली १४०, वाली १४१, वेलिआ १४२ प्रभृत्याभरणानि संख्यया.

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२	घणां	घणां,
७	३	आंबहुलि,	आंबहुलि
७	२३	शरभाणानां	शरभाणां
१०	२०	हिंसयाः	हिंसया
११	१३	वर्धते.	वर्धते ।
१२	२२	नीचानां	नीचानां,
१२	२५	शक्तकरणादपि	सिकताकणादपि
१३	१२	तंडभाडारिक	तंडभांडारिक
१३	१७	शष्यापाल	शय्यापाल
१८	२	सुदर्शनतणी	सुदर्शन तणी
२१	१३	तुरगशाल,	तुरगशाल
२१	१४	व्ययकरणसभा,	व्ययकरणसभा
२१	२३	प्रचुरत-	प्रचुरतर-
२३	१२	समंतः	समंततः
२४	४	....प्रधानआज्ञा....	....प्रधान, आज्ञा....
२७	१०	नाटकशा	नाटकशा-
३०	१६	शस्त्रार्थपर्यालोचनि	शास्त्रार्थपर्यालोचनि
३३	१६	खडियालां	खडियालां,
५५	५	उज्वज्ल	उज्ज्वल

५५	२४	जित कलिकाल	जितकलिकाल
५९	१२	गादलउ	गाडलउ
८१	४	वुरा	चुरा
८१	१५	भटकवध	भटकबंध
१०५	१५	....जीवादिकत्त्व....	....जीवादिकतत्त्व....
११४	११	उच्चस्तर	उच्चैस्तर
११८	२३	त्रिशूलायुध,	त्रिशूलायुध
१२४	१५	....भमराली	....मराली
१२८	१८	चाद्रिशृंङ्गे	चाद्रिशृङ्गे
१४३	८	भिणहणतउं,	भिणहणतउं
१४९	१	....बुद्धिसमृद्धिद :....	....बुद्धिसमृद्धिद :
१६४	७	छ डउं	छडउं
१७८	२	लींबुआं षारां,	लींबुआं, षारां
१९०	२१	अरियानां	आरियानां

'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना प्रथम प्रकाशन विषे केटलाक अभिप्रायो

Shri G. V. Mavlankar (Speaker, Indian Parliament ; President, Gujarat Vidya Sabha, Ahmedabad)—" It was a new thing to me to know that our old literature has a number of works in prose. Then there are a couple of points which I appreciate very much. The first is that the book is printed in Devanagari script. The other point is the gradual compilation of a vocabulary consisting of words of special importance. It is essential to have such a vocabulary for the study of our old literature. "

Dr. Suniti Kumar Chatterji (Emeritus Professor of Comparative Philology, University of Calcutta ; Chairman, West Bengal Legislative Council)—" I congratulate you on the very fine piece of work which you have brought under the auspices of the University of Baroda. This is a very auspicious start. The book, because of both its language and subject-matter has very great interest for all the students of Indian linguistics and philosophy as well as general culture ; and the editing has been done in a very fine scholarly style, and on the top of that, the printing and the get-up are excellent. It was a very good idea to print the Introduction and everything in Gujarati in the Devanagari character. Your work is a valuable addition to the mass of texts in early Gujarati which has been made already available by other scholars. The University of Baroda can be most heartily felicitated for inaugurating this series of *Prācīna Gurjara Granthamālā*, which I feel perfectly confident, will become a very honoured series among the various well-known series of texts published by different institutions of India. "

Dr. R. L. Turner (Director, School of Oriental and African Studies, London University)—" I have now been very carefully through your Shashtishataka Prakarana and I should like to take this further opportunity of saying how much I appreciate

the additions you have made and how useful this type of work will be for elucidating the history of the modern Indo-Aryan languages. I have found the vocabulary in particular of the greatest use for my work for the Comparative Dictionary of Indo-Aryan. I would like to congratulate you on so successfully initiating this series of old Gujarati texts. "

Professor Alfred Master (Retired Professor of Indian Philology, School of Oriental and African Studies, London University)—" The edition as the part of a planned series is very welcome, as the number of critical texts in old Gujarati published is still very small, considering the vast amount of manuscripts extant. As it is still necessary to emphasise the linguistic rather than the literary significance of old Gujarati texts, the publication of a manuscript of Somasundarasūri's commentary written only fourteen years after his death is of particular importance. The book is well-planned, clearly printed and well-bound, so that it is a pleasure to the student to handle and read. "

Professor G. H. Bhatt (Director, Oriental Institute, Baroda; in the *Journal of the Oriental Institute*, Vol. II, p. 405)—" We congratulate Dr. Sandesara on his excellent edition, and we are sure, the new series under his able guidance will, in course of time, supply the necessary sources of a Gujarati Dictionary to be prepared on historical principles—a long-felt desideratum. "

Dr. A. N. Upadhye (Rajaram College, Kolhapur; President, Prakrit and Jainism Section, 11th All India Oriental Conference)—" The Introduction gives useful material, and the text of the Bālāvabodhas is very well presented.....I am sure, you will bring out many such books which would give us a connected account of the development of Apabhramśa prose. "

Dr. J. Filliozat (Professor of Sanskrit, College de France; in *Journal Asiatique*, no. 2 of 1953)--

" Premier volume d'une Prācīna Gurjar Granthamālā ' "Serie d'ouvrages anciens du Gujarāt, " publiée á Baroda par L' Uni-

versité Mahārāja Sayājī Rāo, avec une préface en gujarāti par Mme, Hamsa Mheta, Vice Chancelier.... L' édition est trés soigneuse et trés bien présentée....." (First volume of Prācīna Gurjar Granthamālā 'series of ancient works of Gujarat' published at Baroda by The Maharaja Sayajirao University, with a preface in Gujarati by Mrs. Hansa Mehta, Vice-Chancellor...The edition is very careful and very well presented..).

श्री· कनैयालाल माणेकलाल मुनशी (गवर्नर, उत्तर प्रदेश; प्रमुख, भारतीय विद्याभवन, मुंबई)—"तमे तो खूब काम करी रह्या छो; अने प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला घणी ज उपयोगी थशे. तमारा प्रयत्नोने सफळता इच्छुं छुं."

श्री· हरसिद्धभाई दिवेटिया (वाइस-चान्सेलर, गुजरात युनिवर्सिटी—'भाषा तेम ज विवेचन बन्नेनी दृष्टिए पुस्तक मूल्यवान छे अने तमारा विवेचन अने विद्वत्तापूर्ण शब्दकोशथी ते वधारे मूल्यवान बन्युं छे."

श्री· कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी (वाइस-चान्सेलर, शेठ ना. दा. ठा. महिला विद्यापीठ)-"साधारण रीते एवी मान्यता प्रसरी गयेली के जूना गुजरातीमां गद्य हतुं ज नहि.....आ संशोधन, ने ते पण शास्त्रीय रीते करीने तमे आपणा साहित्यनी परंपरा पर नवो ज प्रकाश पाड्यो छे."

विख्यात विवेचक **प्रो· रामनारायण विश्वनाथ पाठक**—"वांचतां संपूर्ण संतोष थयो. तमे जे उद्देशथी ग्रन्थमाला शरू करी छे तेने सिद्ध करवा बधी रीते उपयोगी नीवडे तेवी संपादनपद्धति योजी छे. आ पुस्तक हवे पछी प्राचीन गुजराती भाषाना पुस्तकसंपादननो एक सारो नमूनो थई पडशे. मुद्रण चोख्खुं अने मूळ पाठ अने बालावबोध स्पष्ट जुदा तरी आवे एवी रीते करेलुं छे ते योग्य ज कर्युं छे. अंते आपेलो शब्दकोश भविष्यमां गुजराती भाषानो पूर्ण कोश करवो हशे त्यारे पूरो उपयोगी थशे."

प्रो· रसिकलाल छोटालाल परीख (अध्यक्ष, भो. जे अध्ययन-संशोधन विद्याभवन, गुजरात विद्यासभा, अमदावाद)—"महाराजा

सयाजीराव विश्वविद्यालय स्थापी मुंबई राज्ये युनिवर्सिटीना साचा अर्थमां —'गुरुशिष्यमंडल'ना अर्थमां—विद्याकीय संस्थानो अखतरो आदर्यो छे. आ युनिवर्सिटी अनेक विद्याशाखाओ विकसाववा प्रयत्न करे छे, तेमां तेनो प्रशंसनीय अने सौथी वधारे आवश्यक प्रयत्न गुजराती विद्याविभाग खोलवानो छे. सद्भाग्ये आ विभागना अध्यक्ष तरीके डॉ. सांडेसरा जेवा कृतपरिश्रम संशोधनकुशल विद्वाननी निमणूक थई छे. डॉ. सांडेसराए प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानी योजना करी तेना पहेला ग्रन्थ तरीके नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक प्रकरण' अने तेना त्रण बालावबोधोनुं संपादन करी प्रकाशन कर्युं छे ते तेमनी कार्यपरायणता अने संशोधनदक्षता व्यक्त करे छे.

गुजराती भाषानुं वास्तविक स्वरूप जाणवा माटे तेनां विकास अने घडतरने जाणवां जरूरी छे. सुनीतिकुमार चातुर्ज्याए बंगाली भाषानुं अने फ्रेन्च भाषाशास्त्री सद्गत ब्लॉके मराठी भाषानुं जे शास्त्रीय पद्धतिए निरूपण कर्युं छे तेवुं गुजरातीनुं थवुं हजी बाकी छे. अंग्रेजी भाषानो जेवो शब्दकोश ऑक्सफर्ड युनिवर्सिटी तरफथी बहार पड्यो छे तेवो गुजराती भाषानो शब्दकोश संशोधकोनी प्रतीक्षा करे छे. पण आ प्रवृत्तिओ हाथ धराय ते पहेलां कालक्रममां प्राचीन गुजराती साहित्यनी कृतिओनुं शास्त्रीय पद्धतिए संशोधन अने प्रकाशन बहोळा प्रमाणमां थवुं जरूरी छे. आ जरूरियातने लक्ष्य करी डॉ. सांडेसराए आ ग्रन्थमाळानी योजना अने आ ग्रन्थनुं संपादन कर्यां छे ते शास्त्रीयताना साचा मार्गे जाय छे एवो मारो अभिप्राय छे.....

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालयना, प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालाना आ पहेला प्रकाशनने अवकार आपतां अने तेना संपादकने धन्यवाद आपतां मने आनंद थाय छे. आवी ग्रन्थमाळाने अवकाश आपवा माटे गुजराती भाषाना अभ्यासीओ वाइस-चान्सेलर श्रीमती हंसाबहेनने अभिनंदन आपशे."

विख्यात साहित्यकार **श्री. रमणलाल वसंतलाल देसाई** ('सयाजी-विजय', ता. २९मी मार्च १९५३ना अंकमां)—"वडोदरा राज्यनी 'प्राचीन काव्यमाला'नी श्रेणीनी याद आपती अने ए श्रेणीना कार्य-

उद्देशने विस्तार आपती 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला'ना पहेला ग्रन्थ तरीके प्रसिद्ध थयेलुं 'षष्टिशतक प्रकरण' संपादनकार्यनो एक यशस्वी नमूनो बनी रह्युं छे."

प्रो. विष्णुप्रसाद र. त्रिवेदी (अध्यक्ष, श्री. चुनीलाल गांधी विद्याभवन, एम. टी. बी. कॉलेज, सूरत)—संपादननी समग्र पद्धति नमूनेदार छे.....ग्रन्थनो देखाव आकर्षक छे, तेनुं संपादन प्रशंसापात्र छे; अने तेनुं तात्पर्य सद्वृत्ति अने सद्धर्मना शोधकने उपयोगी नीवडे तेम छे."

प्रो. अनंतराय म. रावळ (गुजरात कॉलेज, अमदावाद)—"आपणी भाषाना अभ्यासीओने भाषाविकासना इतिहासमां खूटता अंकोडा पूरा पाडती तेम ज साहित्यना अभ्यासीओने अभ्यास अने विवेचन माटे नवो भंडार संपडावती प्राचीन गुजराती कृतिओनुं प्रकाशन आ पुस्तकथी प्रारंभती, तमारा विश्वविद्यालयनी 'प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला' गुजराती साहित्यनी मोटी सेवा करशे."

प्रो. डोलरराय मांकड (आचार्य, दरबार गोपाळदास महाविद्यालय, अलियाबाडा)—"युनिवर्सिटीने योग्य ए प्रकाशन छे. आपणा प्राचीन गद्यना अभ्यासमां ए घणुं उपयोगी नीवडशे, एमां शंका नथी. संस्कृतनी पेठे जूनी गुजरातीमां पण आवी विवरणशैली हती ते पण आ प्रकाशनथी स्पष्ट थाय छे."

प्रो. गौरीप्रसाद चु. झाला (सेन्ट झेवियर्स कॉलेज, मुंबई)—"प्रस्तावना अने शब्दकोश बन्नेमां तमारी लाक्षणिकता—विद्वत्तानी, विचारनी अने शैलीनी—अंकाई छे. अभिनन्दन अने 'ग्रन्थमाला'ने शुभेच्छा!"

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल (कॉलेज ऑफ इन्डोलॉजी, बनारस हिन्दु युनिवर्सिटी)—"नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित 'षष्टिशतक' ग्रन्थ को तीन बालावबोध टीकाओं के साथ प्रकाशित देख कर अत्यन्त प्रसन्नता हुई. आपने बडौदा विश्वविद्यालय से प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला का संपादन आरम्भ कर के अपने लिये उत्तम कार्य का सूत्रपात किया

है। **गुजराती भाषा में जैसा आपने भूमिका में लिखा है इतना अधिक प्राचीन साहित्य बच गया है जितना अन्य किसी प्रादेशिक भाषा में नहीं**। गुजराती का यह साहित्य गुजराती के लिये ही नहीं, हिन्दी की प्राचीन व्युत्पत्तियों के लिये भी अनमोल है। शब्दनिरुक्ति की जो समस्या गुजराती के लिये है, वही हिन्दी के लिये है, वही बंगला और मराठी, पंजाबी के लिये भी है। असम और उड़िया भाषा के लिये भी अपभ्रंशजन्य शब्दों की व्युत्पत्ति की सामग्री प्राचीन भाषा-साहित्य में से उपलब्ध हो सकेगी। मेरी दृष्टि से ११वीं शती से १५-१६वीं शती तक का साहित्य संस्कृत परिवार की भाषाओं के लिये एक जैसा उपयोगी है। इस गुजराती 'षष्टिशतक' में कितने ही हिन्दी शब्दों की व्युत्पत्ति मुझे मिल रही है। इस ग्रन्थ से मेरा परिचय कराने के लिये आप का कृतज्ञ हूं।"

प्राचीन गुर्जर ग्रंथमालानां प्रकाशनो

१. नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित **षष्टिशतक प्रकरण**—त्रण बालाव-बोध सहित. एक ज प्राकृत प्रकरणग्रन्थना पंदरमा-सोळमा शतक आसपास थयेला त्रण जूना गुजराती गद्यानुवादो; प्रस्तावना, परिशिष्टो अने शब्दकोश सहित. संपादक : डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. ३०+१९३, मूल्य पांच रूपिया.

२. महीराजकृत **नल-दवदंती रास**—सं. १६४१मां कर्ताना हस्ताक्षरोमां लखायेली प्रति अनुसार. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. २४+१७४. मूल्य सवाचार रूपिया.

३. **प्राचीन फागु-संग्रह**—विक्रमना चौदमाथी अढारमा शतक सुधी रचायेलां आडत्रीस फागु-काव्योनो समुच्चय; प्रतिपरिचय अने कृतिपरिचय, फागुविषयक अभ्यासलेख अने शब्दकोश सहित. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा अने श्री. सोमाभाई पारेख. पृ. ७२+२९०. मूल्य आठ रूपिया.

४. **वर्णक-समुच्चय**—सांस्कृतिक अने साहित्यिक इतिहास माटे महत्त्वना पद्यानुकारी गद्य-वर्णकोनो समुच्चय. भाग १—मूल पाठ. संपादक: डॉ. भोगीलाल सांडेसरा. पृ. १२ + २२०. मूल्य साडासात रूपिया.

प्राप्तिस्थान—**प्राच्य विद्यामन्दिर, वडोदरा.**

*

हवे पछीनां प्रकाशनो

५. **वर्णक-समुच्चय-भाग २**—सांस्कृतिक अने साहित्यिक अध्ययन तथा शब्दसूचिओ.

६. उदयभानुकृत **विक्रमचरित्र रास**—शामळना एक पुरोगामी कवि-रचित पद्यवारता. संपादक : स्व. प्रो. बलवंतराय क. ठाकोर.

७. नरहरिकृत **ज्ञानगीता**—अखाना वृद्ध समकालीननुं वेदान्त-विषयक काव्य; संत-कविओनी परंपराना अभ्यास सहित.

८. भालणकृत **नळाख्यान**—मध्यकालीन गुजरातीनां लक्षणो जाळवती श्रद्धेय प्रति अनुसार पुनः संपादन.

९. वस्ताकृत **वस्तुगीता**—वेदान्ती कविनी एक सुन्दर काव्यरचना.

१०. **प्राचीन पद-संग्रह**—संत कविओनां काव्यगुणयुक्त पदोनो संग्रह.

११. यशोधरकृत **पंचाख्यान**—एक ब्राह्मण विद्वाने १६मा सैकामां करेलो 'पंचतंत्र'नो गद्यानुवाद.

१२. **बिल्हणपंचाशिका**—सुप्रसिद्ध संस्कृत शृंगारकाव्यना जूना गुजराती गद्य अने पद्य-अनुवादो.

१३. **चाणक्य नीतिशास्त्र**—संस्कृत नीतिग्रन्थना जूना गुजराती गद्यानुवादो.

१४. **रत्नचूड रास**—सं. १५१०मां रचायेल एक विशिष्ट कथाकाव्य.

१५ मलयचन्द्रकृत **सिंहासनबत्रीसी**—सं. १५१९मां रचायेली, सिं. ब. विषेनी सौथी जूनी उपलब्ध गुजराती कृति, सिं. ब. विषयक वार्ताचक्रना तुलनात्मक अभ्यास सहित.

आ उपरांत प्राचीन गुजराती साहित्यनी बीजी केटलीक विशिष्ट कृतिओना संपादननी आयोजना थई रही छे.